

२०	महारावलजी श्री दूहोजी १२५	३७	३७	महारावलजी श्री जसवन्तसिंहजी - १४२ ॥	६४
२१	महारावलजी श्री चडसीजी १२६	४०			
२२	महारावलजी श्री केहरजी १२७	४२	३८	महारावलजी श्री बुधसिंहजी १४३	६५
२३	महारावलजी श्री लखमराजी १२८	४५	३९	महारावलजी श्री अखे सिंहजी १४४	६७
२४	महारावलजी श्री बेरसीजी १२९	४६	४०	महारावलजी श्री मूलराजजी दूसरे - १४५	६८
२५	महारावलजी श्री चाचूजी १३०	४७			
२६	महारावलजी श्री देवीदासजी १३१	४८	४१	नकशा महारावल श्री मूलराजजी के कुंवर जैत सिंहजी दूसरे के परिवार का	७५
२७	महारावलजी श्री जैत सिंहजी पहिला - १३२ ॥	४९	४२	महाराजा धिराज महारावल श्री गजसिंहजी - १४६	७८
२८	महारावलजी श्री लोनकरजी १३३	५०	४३	महारावलजी श्री रनजीतसिंहजी - १४७ ॥	८२
२९	महारावलजी श्री मालदेजी १३४	५२			
३०	महारावलजी श्री हरराजजी १३५	५३	४४	महाराजा धिराज महारावलजी श्री बैरी सालजी १४८	८०
३१	महारावलजी श्री भीमजी १३६	५४	४५	जमीमद तवारीख हाजा जि समे दीवान नथमलजी के आसनाद वगैरह हैं - ॥	८७
३२	महारावलजी श्री कल्यानदासजी - १३७ ॥	५६			
३३	महारावलजी श्री मनहरदासजी - १३८ ॥	५६	४६	मारवाड में भाटी सरदार	१०१
३४	महारावलजी श्री रामचन्द्रजी १३९	५८	४७	राज्य मारवाड में सींद निकली व बाकी रही की बिगत	१०२
३५	महारावलजी श्री सबलसिंहजी - १४० ॥	६०	४८	कल्पब्रह्म महारावलजी श्री	१०३
३६	महारावलजी श्री अमरसिंहजी १४१	६१			

४८	जसवन्त सिंहजीके वंसका भादी व सोढा सरदारों के नाम वं गांम व नाजीम वटिकाने की पैदा व गेरह - ॥	१०५	५८	नकशा खास शहर जैसलमेर व कुल परगनात व देहात मय पक्की छानियों व गेरह - ॥	१२८
५०	अथ इतहास (दफ्ता जका अनुबान पढो) -	१११	५९	परगने जैसलमेर - ॥	१३०
५१	अथ कीर्तिलिस्तीरो सम्बा दलिस्तीने - ॥	११८	६०	परगने देवी कोट - ॥	१३७
५२	तितम्मानम्बर ११ व लोतस रदार - ॥	१२३	६१	परगना कोट फतह गढ - ॥	१४१
५३	नोट मोल्वी मुशद अलीजी कार्य थिस पंजाल्य कीओ उसे हिन्दी व फारसीमें - ॥	१२५	६२	परगना लक्वा - ॥	१४६
५४	हिस्सा दोयम (नगराफि या मुल्क मांड रियासत जैस लमेर)	१२५	६३	परगना मदाजलार - ॥	१४८
५५	नकशा इलाके जान (या मु ज्का) जैसलमेर	१२६	६४	परगना खाभा - ॥	१५२
५६	हीवायचः यानी समभोता (ग्रंथका प्रारंभ)	१२७	६५	परगना सम - ॥	१५४
५७	शहर जैसलमेर के अंदर व बा हर के पक्के कुवां का हौल -	१२७	६६	परगना उर्फ शाह गढ	१५७
			६७	परगना देवगढ उर्फ चोट गढ	१६०
			६८	परगना खार - ॥	१६०
			६९	परगना खुईयाला - ॥	१६२
			७०	परगना राम गढ - ॥	१६४
			७१	परगना तराईट - ॥	१६५
			७२	परगना किशनगढ - ॥	१६६
			७३	परगना बाशहा - ॥	१६६
			७४	परगना देवा - ॥	१६८
			७५	परगना मोहन गढ - ॥	१७१
			७६	परगना नांचराणा - ॥	१७३
			७७	परगना नोख - ॥	१७५

७८	जगरफिया मुल्क मांड में को	१८३	८२	हरयाव व हकडा व श्री तीम	२२५
	ट बी कमपुर का दिल चस्पहा			डारायजी - ॥	
७९	नकशा कुल परगना त के गांव	१८७	८३	हेस की पैदावार व दस्त कांरी	२२६
	छानी आबाद - वीरान व गेरह			चीजे - ॥	
८०	गोश वारह कुल परगना जाते	१८८	८४	बोली इल्म व हुनर - ॥	२२८
	हेकाव व छानी जो सम्बत १२४५		८५	शहरवास वेद स में इज्जत दारी	२३१
	वैसाख सुदी ३ है - ॥			वडी कोम का हाल - ॥	
८१	देश में - ॥	२००	८६	पुश कराने - ॥	२३३
८२	अहवाल खां नो का - ॥	२०१	८७	ओसवाल - ॥	२३४
८३	नदी व बाला (नले)	२०५	८८	महेसरी - ॥	२३६
८४	हे खने लायक मकान जो गठ	२०७	८९	भाटिया - ॥	२३८
	व शहर इलाके जात में है -		९००	परगना त मै न वाल - ॥	२४०
८५	जैन के मंदिरों का हाल - ॥	२०८	२०१	इज्जरी - ॥	२४१
८६	बारिश व खेती का हाल - ॥	२११	२०२	कौम मुसलमीन - ॥	२४२
८७	हाल कहत साली का - ॥	२१४	२०३	अजायब बातें प्रति स है - ॥	२४३
८८	दरख्त व घास चारह छोड	२१५	२०४	कलमी फौज ( पलटन )	२४५
८९	नकशा बीड यानी जोड को	२१८	२०५	रिसालत - ॥	२४६
	बीड जाते हैं जो सरकारी रख		२०६	अहवाल अशयाय न शावसक	२४७
	वाल् हो - ॥		२०७	सकनों का रिवाज अज हद है	२४८
९०	जिऊ चौपाया - ॥	२२१	२०८	फला फलस ( स्लोक )	२५०
९१	माल जो सालयाने की लाग	२२३	२०९	चक्र ( प्रश्नोत्तर )	२५१
	है व खरोटा - ॥		२१०	चिडया और मेला का हाल -	२५२

११९	टंकसाल - ॥	२५६	वसन विक्रमी - ॥	
११२	रोना यानी दांरा की चिट्ठीसा यरवनकशा शरहमत सूलव आमदनी सायर - ॥	२६२	१२३ सरकार शैलत महारअगेज वहादुर - ॥	२८३
११३	सायरमापा - ॥	२६८	१२४ इग लिस्थान मे वजीरआजम केलकव व नाम व नारीखचा गवर्नरजनरल कैसरहिन्दव नारीखचाजी - ॥	२८४
११४	वरसौत - ॥	२६९	१२५ साहिवान एजन्टगवर्नरजन रल राजपुताना - ॥	२८५
११५	नमका - ॥	२७१	१२६ पोलिटिकल एजन्ट भारताडव जैसलमेर के रजीडन्ट गारवी राजपुताना - ॥	२८६
११६	दीवानी फौजदारी - ॥	२७२	१२७ यजन्टी में नकशा व रिपोर्टेमे जते है - ॥	२८८
११७	फीस - ॥	२७३	१२८ यती नियत साहिववहादुरश हर खास व ईलाके जैसलमेर में तशरीफ लाये - ॥	२८९
११८	इस्ताम्न - ॥	२७४	१२९ नकशा रियासत हायजो सूने अजमेर व आबू के राजपुतानेमे आवाही व आमदनी वगैरह अजरुय महमशुमारी	२९०
११९	बटे शहर दरैलतक रस्ते में नकानाम व हर कोस वगैरह कोमयन प्रती के शादी दगमी में खचि वगैरह की रीत - ॥	२७५	१३० नकशा रियासत हायजो सूने अजमेर व आबू के राजपुतानेमे आवाही व आमदनी वगैरह अजरुय महमशुमारी	२९१
१२०	नकशा निती उरी सुरी के ही इलाके जैसल मेर मे कोमय जप्रती के वेदी माथे की शादी इईका सम्मत ५ निती सुदी १ थी - ॥	२७६	१३१ रियासत उदयपुर - ॥	२९३
१२१	अथतीसरा भाग लि खते बादशा हान देहलीके नाम और लकव व कोमवजल	२८०		



१३२	रियासत जैपुर - ॥	२८५	१५०	तवारीख कोली - ॥	३३५
१३३	रियासत जैपुर - ॥	२८६	१५१	राज्य टोंक - ॥	३३७
१३४	नकशा रियासत उदयपुर के १६ सरदारों का - ॥	२८८	१५२	तवारीख टोंक - ॥	३३८
१३५	रियासत जोधपुर - ॥	३००	१५३	राज्य अलवर - ॥	३४२
१३६	रियासत मारवाड़ में जागीरदार गेवरेख चारों के गांव व माल मदनी की तादाद - ॥	३०२	१५४	मेव और खानजादा - ॥	३४३
१३७	गज मूर्द्धालत मारवाड़ - ॥	३०७	१५५	तवारीख अलवर - ॥	३४४
१३८	जोधपुर के अजयल और दूसरे दरजा के सरदारों का नकशा - ॥	३०८	१५६	राज्य भरथपुर - ॥	३४७
१३९	राज्य बीकानेर - ॥	३११	१५७	तवारीख भरतपुर - ॥	३४८
१४०	तवारीख बीकानेर - ॥	३१२	१५८	राज्य धौलपुर - ॥	३५१
१४१	तवारीख राज्य किशनगढ़ - ॥	३१६	१५९	तवारीख धौलपुर - ॥	३५२
१४२	इतिहास किशनगढ़ - ॥	३१७	१६०	राज्य प्रतापगढ़ - ॥	३५५
१४३	राज्य बूंदी - ॥	३१८	१६१	तवारीख प्रतापगढ़ - ॥	३५५
१४४	तवारीख बूंदी - ॥	३२०	१६२	राज्य बांसवाड़ा - ॥	३५६
१४५	राज्य कोटा - ॥	३२५	१६३	तवारीख बांसवाड़ा - ॥	३५६
१४६	तवारीख कोटा - ॥	३२५	१६४	राज्य सरोही - ॥	३६५
१४७	राज्य भालरापाटन - ॥	३३०	१६५	तवारीख सरोही - ॥	३६६
१४८	तवारीख भालरापाटन - ॥	३३१	१६६	राज्य शादपुरा - ॥	३६८
१४९	राज्य कोली - ॥	३३४	१६७	शेरगावाटी - ॥	३७३
			१६८	तवारीख शेरगावाटी - ॥	३७३
			१६९	दफा ५ सूबे अजमेर - ॥	३७५
			१७०	तवारीख अजमेर - ॥	३७८
			१७१	अजमेर के जागीरदार - ॥	३८२

१७२	राजपूताने की मजमूई कैफियत	३८३	उनके नाम - ॥	३८५
१७३	राजपूताने की १८ खुदमुखतार रियास्तो कानकशामयजिलेअ जमेर - ॥	३८४	१८८ इतिश्रीतवारीखजैसलमेरका तीसरा भाग संपूर्ण शोभ	३८६
१७४	राजपूताने के चार भाग - ॥	३८५	१८९ इल्लमास (विज्ञापन हिन्दी फार सीमे)	३८६
१७५	राजपूताने में सरकारी फौज - ॥	३८६	जमीमा व तितमे जात	
१७६	सरकारी खिराज - ॥	३८७	मुतअल्ल के तवारीख हज	
१७७	शहनशाही नोकरी देने वाली सैन	३८७	१९० जमीमानम्बर १ (तरागोट के उन डों का ताल)	९
१७८	राजपूताने में विद्या की उन्नती - ॥	३८८	१९१ जमीमानम्बर २ (इतदास कोम गालत जा १२ पाडुहै)	३
१७९	मणिकालिज अजमेर - ॥	३८९	१९२ जमीमानम्बर ३ - (पहाडों का हल)	५
१८०	तवारीख के मुतअल्लिक जानने के योग्य वाते (मनसब)	३९०	१९३ जमीमानम्बर ४ (अतीत मंडलिया)	६
१८१	माही मरातद - ॥	३९०	१९४ जमीमानम्बर ५ (साप्)	८
१८२	सरदार जागीरदार - ॥	३९१	१९५ जमीमानम्बर ६ (रियासत भाव लपुर)	१०
१८३	हिन्दोस्थान की मजमूई कैफियत	३९२	१९६ नकशा गठु व शहरों का जो इला के जात में हैं - ॥	११
१८४	हिन्दोस्थान में देशी रियासत - ॥	३९३	१९७ जमीमानम्बर ७ (दुकान)	१२
१८५	दुन्या के बड़े नगों की आबादी	३९४	१९८ जमीमानम्बर ८ (कोदार अजपू रणी) - ॥	१३
१८६	राजपूताने में राज्य करने वाले रा जपूत (सूर्यवंसी व चन्द्रवंसी रा जपूत)	३९४	१९९ जमीमानम्बर ९ (तजवीज)	१३
१८७	राजपूताने के सिवाय हिन्दोस्था न में जितनी रियासतें कायम हैं	३९५		

२००	जमीमानम्बर १० (महकमे गिराई)	१४	२०३	इती (खातमा ग्रंथका)	१६
२०१	जमीनानं ० ११ मुतअल्लके इतिहास स पु. गल्लरागरानं देवकेलनजीव चाचा जीवगेरह जोतवारिखेके सफदे ११९ परप्रानुको है ॥ (बाकी हाल)	१५	२०४	तितममे जात तितममानं ० १ तवारिख जैसलमे	१ से ८ तक
२०२	जमीमानं ० १२ (गियासत खैरपुर सिंध)	१६	२०५	बिनय पत्र उरदू व हिन्दी मे या इल त्मास ॥ तमाम हुई सूची पत्र ॥	८

### अथ सुतजी का इतिहास

जगत में सबसे बड़ी भीत चीन देश के उत्तर में शत्रुओं से मुल्क बचाने के लिये इस समय से २२० वर्ष पहिले चीन के महाराजा फाग फूर पहिले नाथन ने अपने मुल्क की सीमा पर इस दीवार को बनाया था जिसको २००० वर्ष हुये यह दीवार बड़े २ पहाड़ों और नीचे पाटियों दरयाओं नालों आदि पर दोती हुई २२५० मील लंबी हुई इससे पश्चिम को बनाई गई है उचाई २० फीट मोटाई नीचे २५ और उपर १५ फीट है ० यो डों के सवार परान्दो कर इस पर घोड़े दौड़ाते जा सक्ते हैं यह दीवार पत्थर से चुनी गई है आदमी की उमर एक फ्रान्स के विद्वान आलमने मा मूली आदमी की अवस्था ५० वर्ष की बतला कर उसके घोंदि से किये हैं ६०० दिन सोने में ६५०० दिन काम काज में ८०० दिन चलने फिरने में ४००० दिन खेल कूद में २५०० दिन खाने पीने में १०० दिन बीमारी में दूध पिलाने का हुनर सन ६०० ई० में पहिले पहल जा रि हुवा था जे बी बी बी सबसे पहिले सन १५०० ई० में बनाई गई दिया सला ई पहिले पहल सन १००२ ई० में बनाई गई ॥

### सुचना

हे पाठक महात्मने इस ग्रंथ को शुध करके छपवाने में कोई कसर बाकी न्ही छोड़ी परन्तु मनुष्य का स्वभाव भूलने का है इसके उपरान्त श्री जी हजरत हारावल बैरी साल जी साहिब के स्वर्ग वा शदोने से महताजी श्री नथमल जी साहिब दस दीवान का जिन्होने इस ग्रंथ की सामगरी के सोचने में बड़ा ही परिश्रम किया है चित उदास हो गया जिससे हम कह सकते हैं कि वह वसीवाते रह गई होगी जिनकी नि सबत आसा है कि अब की बेर छपने में शामिल हो सकेंगी आप लोग भूल को क्षमा करें ॥

सब पाठ को का सुभचिन्तक सेवक खमी चन्दर ईस जैसलमे २० दिसम्बर सन १०८२ ई०

इति

# तवारीख जैसलमेर

نسبہ تواریخ خلیفہ (۲) (۱)



नम्बर २



नम्बर १

तसवार जनाव दीवान महान नथमल

जीसाहव

नदीरुल मुहामरिबासन जैसलमेर

तसवार श्री श्री १०८ श्रीमहा रावल ॥

वैरीसाल नीसाहव बहादुर वैकुण्ठवाशी  
एक सो अहनालो सेवे फारमार वाय जैसलमेर

## काविता

सोरठा ० विंछु गवल वैर शलजिका पुरी जैशान। धारे न्यावी धर्म सो दीपे न-  
यो दीवान ॥ १ ॥ श्री गवल रिपुशाल नाम सुनत रिपु कंपमन। सन्निव सकड-  
नथमाल सांम दंम भय भेद गुन ॥ रावैर जस वातां जुग जातां जावेन ही ॥ इल  
पर अरु यातां सांतों दधिक तांते सिरे ॥ उवड पन बुद्धि विशाल की कवि मुख सो  
भाकरे ॥ मण धारी नथमाल वाणी गाढा पन वचन ॥ ४ ॥ मतरो अति के माश -

सतबतोर धार्किससे। ओपतवंश उजास नीति प्रीत पालक नथा ॥५॥ कहियो राम कथा  
ससिहर में इमृत श्रवे। नैण बीच नथा जाहिर ही देखे जगत ॥६॥

## निवेदन

इस किताब के पढ़ने वालों की सेवा में खाकसार मुहमद मुराद अली होशियार मालव  
व पबन्ध करता राजपूताना गजट व चिराग राजस्तान यंत्रालय अजमेर अर्ज करता है कि  
श्री महाशयल बैरीशाल जी साहब बहादुर के जीवन चरित्र ग्रन्थ में जो ऐन ही हस्वहात  
सरदारों भाई बेटों व अहल कारों आदि मुलाजमों वल्कि और ही लायक सरखशों के  
मान कुर्ब बढाना मंगित ब्राह्मण चारण भाट वगैरह आम प्रजा का पालन करना उन  
की भलाई व रिश्तास्त की उन्नति का ख्याल रखना और जो अहदनामा राज व सरकार  
अंगरेजी के बीच में उनके बुजुर्गों ने किये थे उसका सच्चे दिल से खैर खाही के साथ पूरे को  
परनिवाहना सब देशी विदेशी सूरवीर दातार व सच्चे आदमी से दिल में खुसरहना और हर  
एक सरखा को जो जैसा है पेशानी व बातों से सही सनाखत कर लेना परन्तु दयालुना से  
बुरे का भी अपमान न करना सब के गम में सरीक होना और दिल से तो धर्म श्री बल्लभ  
कुल याने पुष्टि मारग का रखने पर ही दूसरे सब धर्मों को जाहिर में मानना सिधमहात्मा साधु  
सन्यासी आदि मात्र अतीत अभ्यागत फकीर वगैरह का सत्कार करना वगैरह सबहुत  
कुबलिव दिये हैं नदापि मैं कहता हूँ कि हजारों गुण अबलों नही लिखे गये जो सारे गुण मुफ  
सल लिखे जावे तो ग्रन्थ पूरा ही न हो मेके बस इतने ही में समझना चाहिये कि इस जमाना में  
सचमच राजे परीक्षित अबतरे हैं पुरानी चाल को बहुत पसन्द फरमाते हैं वलात्मा तो ऐसे  
कोई भी नही होंगे ॥

जाय गोरेंदुवा

**चुंकि** ऐसे निष्कलंक खानदान का जो १५ हजार वर्ष से पुराना राज प्रतापी राजाओं के सम  
यमें सब तरह तरकी पा पाकर मुल्क व आबादी आमदनी व कुर्ब साहाना से कम होते जाने  
और ऐसे जमाना में ही वैसे ही रहने का बड़ा ही तप्राजुबहुवा तो तबारीख के देखने व वाकि

फकारों से वर्ताव की बातें सुने पर ख्याल कि पातो इतने सब व सहो जाने गये तो समझ कर  
वर्ताव रहेगा तो ठीक है (१९) राजनीति रीतियां ने दुकम वसनद तहरीर की पायदारिश्वा  
हिसाब जमा खर्च की सफाई नही रख कर हर जमाना में रईस व सदा रमनोपिंगकार सवाई  
जो भोमो चार की रीत है सगते रहे कि मिलने वालने लिखने में सादगी व सब देश विदेश  
का धन लूट कर लगाने लुटाने व मरने मारने की हीज बड़ी नाम वरि सम रहे न मालूम  
सौ बत में कैसे दोना व दूर शब्द सर रहे हैं ॥ (२०) अतापी राजा पिंडा कह की की भाई के सिवाय  
हर पींडी में मात्र सदा उमराव व लिक बाज व कर बुद भाई देते भी गनीम के सबेदन कर मु-  
लक लूटने व गमाने में कोताई नही करे नीति व धर्म नही समझने पर की फूट हीर ही ॥  
(२१) बादशाहों के दुकम हाजरी में न फरत रखने से मुल्क व कुर्व लक व नये सिर नही  
पाकर कब्जे का मुल्क चाहिमत से पाया हुआ लक व में ही कमी होती रही सिर्फ इसी कह  
ने पर रहे कि भाटी भोला व अठखीला हद से परे है हां १ महारा व ल भीम जो बादशाह की  
खिदमत में हाजर हुवा या तो मान कुर्व व मुल्क सब से वंद कर पाया ही था और न वरे जा चुड  
या सो जाहिर शाम है (२२) जागीर में गेहुं व कर्से न होने पर भी गांव की पैदाश लावा खां व खीयी व  
वरि सिंहों के पाटवी सरदार नही ले सकते भाई वने कर लेते हैं जमाने सावक में तो धांडा पाड  
करावर रखते थे सो अब रहान ही सब तर हुलाय कपना से पटते जाते हैं श्रीजीम मद्रहने चा  
लता से गामों में जरअत कराने कर सा वसाने कूवा बनाने की इजाजत के कई गांव व जमीन  
पाटवी भोग वने की सत पर अंज से नो अता फरमाये परन्तु सदा रों ने तो मोटी अकल से  
पुरानी सोढ की रीत ज्यू भाई हिसे कर ही लीये वे चारी लाज किसके भुजां पर रहे (२३) कोई  
मुलाजिम कैसा ही खैर खाही से बन्दगी पडू वने वाले परिवार सृष्टि न हर जमाने में हि-  
मालय का पटा होता है व उसकी औलाद का जो नशीव हां इस समय श्रीहजूर ने दिलेरी व  
दूर अन्देशी से ऐसी बुरी चाल कई पलट दी हैं मगर अंगवानों को खुदा ऐसी नीयत व रक्यो  
तब चले क्योंकि (दोहो) लघु कदली के मधुर फल बड़े पात अंगवान । तरु मोटे छोटे दलन

\* महारा व ल जी श्री भीम सिंह जी अकबर बादशाह के दरबार में बड़ी इज्जत रखते थे और बादशाह  
की महर्बानी के चिन्ह आज लों जे सुलमे से दिरवाई पडते हैं अ-मः मोलवी मुराद खली ॥



फलखाटे इपत्तान ॥ १ ॥ दोखे दूसरी गिया मतों जो थोड़े ही घर से सेहूँ हैं राज नीति से तरब  
नेव जागीर में १ सदा रमा लक होने के वाइस उसके मुजां पर लाज रहने व हक काम क्त  
के हकम हाजरी में तन मन धन से तत्पर रह कर किस कदर मान कुर्ब व मुल्क पाये व पार है हैं  
और बन्दगी फुहं चने वाले की परिवारश पुस्तेंना करने से बड़ा पन जाहिर होने के अलावा  
दूसरे मुलाज्मीन कैसी खैर खाई से हाजरी दिखाने में कोशिशें करते हैं ॥

पस- राज खुदा दाद तो है ई मगर खूबी यहां की बेशक सबसे ऊपर है कि मालक तो सब को देता बेटी और वह मालक को मा बाप व प्रत्यक्ष परमेश्वर जानकर हर काम में ऐसी तरबूरी रखी है सो देखकर हुक्काम वक्त बड़े रदांना दूर भन्दे सभी है गन हैं कि इतनी सी पैदा पर इतने बड़े जंगली मुल्क का बन्दोबस्त व सब तरहराज का ठाठ व राज प्रताप दिवहतर ई सो से रावता दोस्ती व सगपन दीकानुता सो गात याने सब स्मात व रावर खकाम कानात व नाने रिमौज कर्ने व गैर हरे महद से परे ही है दरहकी कतये कार खार्ड लायक पसन्द व प्राश्रय के है हम कहते है कि यह नतीजार्ड स की नेक नीयती व प्रधान की समदारी का है- अगर्चः महता सालम सिंहु जी दीवान साबक को ठाठ साहबने किसी के कहने से बुग तो लिख दिया मगर वह उस वक्त में ऐसे न करते तो जेसलमेर का राज तिक्के बोटी हो जाता-

चलत

सं-१८८४ शांभुनवदी ६

सं. २८०६ पोषसुदी ३

३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१
१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०
११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१२
१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१२	११
९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१२	११	१०
८	७	६	५	४	३	२	१	०	१२	११	१०	९
७	६	५	४	३	२	१	०	१२	११	१०	९	८
६	५	४	३	२	१	०	१२	११	१०	९	८	७
५	४	३	२	१	०	१२	११	१०	९	८	७	६
४	३	२	१	०	१२	११	१०	९	८	७	६	५
३	२	१	०	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४
२	१	०	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३
१	०	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२
०	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१

इतजन्मकुंडलियोंसेजाहिरहैकिश्रीमानमहारावलबैरीशालजीजेसलमेराधीसकाजन्मपोष  
सुदी३सं०१८०६काऔरमहताजीश्रीनथमलजीसाहबमदारुलमुहामराजकाजन्मआश्विनकी  
६सं०१८०६विक्रमीकाहैपरमेश्वरसेहमारीप्रार्थनाहैकिश्रीजीहजूरऔरउनकेप्रधानऔरसर्वपरि

**शोक** महाशोकके यह त्वारिख ठपकर पूर्ण होने पाई थी कि श्रीमहारावल बैरीशालजीसाहब का फागुन वरी पूर्ण नाशी सं० १८४० मुताबिक १० मार्च १८४१ ई० को मंगलवार के दिवस को सादे सज्जे देहात हो गया है यहा

वारह्मणारेह्मणारसालविंजीवहे॥

श्रीगुरुभ्यन्मः

# THE HISTORY OF JEYSALMERE

श्री श्री १०८ श्री हज़ूर अन्वर महारावल जी श्री  
वैरीसाल जी साहब बहादुर जैसलमेरा ची शों के

अहद में चंद्रतहास

जिसका नाम



सेवक लक्ष्मीचन्द जी ने वहुत पुराने की महनत और प्राचीन  
समय के इतहास व सरकारी कागज़ात से इकट्ठा करके श्री महता  
नथमल जी साहब बहादुर मदारुल मुहाम अर्थात् प्रधान  
राज्य जैसलमेर की आज्ञा अनुसार बसहायता से तैयार किया  
और सम्वत् १९४८ विक्रमी भैषिन्य कार्तिका की आज्ञा अनुसार

चिराग़ाराजस्थान व राजपूताना गज़ट्र यंत्रालय  
अजमेर में मोल्वी मुहम्मद मुराद अली होशि

द्वारा कार्य धक्का के प्रबन्ध से रूपा



॥ श्री ॥

श्रीगुरुभ्यः

## कवित स्तुती

धन्य वह्नभाधोम धन्यविहलगिरधारा  
 सातू धन्यस्वरूप-सगा भगपार उतारगा ॥  
 धन्य वैहवाधर्म धन्यजेजंनउरधास्या ॥  
 कृष्ण नाम द्रढ कियो सवै जंजाल निवास्यो ॥  
 पुष्टि प्रकास प्रगटे प्रलुआप कृष्ण श्री अंसको  
 दासनुदासमें हूं सही श्रीबलभकेवंस को

## दोहा

मेरे मन में तुम बसो ऐसी क्युं कहि जाय  
 याते यह मन आप के लीजै चरन लगाय ॥

दफे १ दीवान महानथ मलजी के रवान्दान का इतहास ॥ ब  
 कार्वारि का हाल

## इतहास

जाहिर हो कि भर्थ अंड के हसन गुजरात हेस में हलवर मोरबी नामी म्हर में सोम  
 वंसी कोम झाला मकवांरा गोत्र के राजपूतों का पुराना राज ॥ १ श्री जैगोपाल जी ने छोटे  
 भारी को देकर आप जैगो पाल गढ सहर बसाया राज्य धानी करी इन के कुं ॥ २ धर्म  
 पाल जी वो देस ही त्याग कर गढ किरोहर में भारी राव श्री केहर जी पास आये और  
 गढ नानवा ननवांरा बहोरो से लेकर राज बाधा ॥ ३ देहराथ जी के दीवान श्री स्वा

कुलदूरिया ॥ १८ देवचंद ॥ १९ पचानजी ॥ २० सूरजमलके मंभलेबेटे वंद्रावन के  
 केई घर आगे में हैं जैशालमेरियां से सगणिया नही रहा परं गोयंदाराणी कहाते हैं ॥  
 तीसरे भाग चन्दके भी गोयंदाराणी हैं ॥ २१ गोयंदजी मोजे ने हड़ार्द में क्लोचों के कटका  
 से वितकु नाय बाकोमार के आपही काम आगे उहांतलार्द पर दो बड़ी साल वचैतरा सं  
 १८२८ में नथमलजी ने बनाया दो बेटे थहारूदास व अथैराज के गोयंदाराणी हैं ॥ २२ ॥  
 थहारूदास ॥ २३ धनजी ॥ २४ दामोदरदास ॥ २५ बालकिसनजी ने श्रीबालमकुन्दजी की  
 सेवा पधार्द सो विराजे हैं जबसे हरपीडी में बसी हुत करते हे कि श्रीठाकुरजी की सेवा व श्री  
 हजूर साहब को भी ईश्वर समझ कर वंदगी तन मन से करती और सालमचन्दजी ने दूतनी वधती  
 कही कि किसी की बुराई मत करो अगर कोई बुरा करे तो भी उसको भलाई करके शरमिंद ह  
 करना चुनाचे सेवाके धराणी ने अज्जतक तो ऐसे ही निभा दी है ॥ २६ सरदारमलजी ॥  
 २७ अजवरामजी के बड़ा सालमचंदजी व छोटा ॥ २८ विजेचन्दजी ॥ २९ नथमलजी  
 जो ६ वर्ष की उमर सं ३ से नोकरी अच्छी देने लगे तो दूजत व कदर पाते २ सौ १७ में बड़ा  
 चाप की जगे दीवान होकर सौ १८ में असते फा दिया फेर १ महीना कैद व डंडा हुवा बाद  
 जनाय कलां साहब बहादुरजी पास वकील गये साहब ममदूह पृथुश हुए सब हाल किताब व  
 रपोद में लिख कर सनद खुश नूदी व राजकी सची पौरख्वाही का खरीता व खत लिखा दिया  
 फेर सौ २१ से दीवान का काम करते करते सौ २७ में छोडा तदपि श्रीजी साहब की उमर -  
 दराज हो कदर दानी व निरंतर म्हरबानी से दीवान इनकोई वरता और जना व रजीडं साहब  
 से सलाह व सिफारिश करके त्हेरीर व मीर मुनशी को बुलाया जब फेर सौ ४० जैठ सुदी १२  
 तीसरी रफे दीवान होकर बमूजिब हुकूम आकायनामदार सौ ४१ के मिघर वदी १ से मूसूल  
 सायर का नये कायदे मूजिब जारी किया कि जबसे वजाने में नगद रुपये आने से दीवान को  
 कामका बडा ही आराम हो गया फेर मान्द्र ओहदों के अगले हिसाब का तो चोपानीया बनवा  
 लिया और आयं दे नया हिसाब हर वक्त तैयार रहने की तजवीज बहुत ही सुगम कर दी - फेर

आनदनी आबादी में तरकी और रईयत के आसूदगी व सुधार की बाब में सदहा तद्वर्ष  
 कई तो नारी नारी जितना खुलासा मौके पर लिखा है व कई खिबर खतों कि मुनासिब वक्त  
 पर ज़ारी को जावेंगी ज्युद्ध इस साल प्रभु को कृपा से मुराद वर आद कि पखावाल जाय-  
 वितनोरे चमार वगैरे हज़ारों घर दुखों से आकर आबाद हुस और बहुत दूर दूर के-  
 लांग आने को तयार होये चुनाचे केई तो आकर मिलागये व केई अरजी व कागद मौजूद  
 हैं तथा हों जा में बहुत से नये कुये व बंधा तयार हुये ॥ व आमदनी में भी पातर पुवा  
 नरकी भई कृष्णा भी करीब १ लाख रुपये के उतारा गया इसकी हज़ारों जन बावर्जी डंड  
 साहब कर्नल पोवलट साहब बहादुर जी को मालूम होने पर साहब मौसूफ ने साहब व कतां  
 बहादुर जी को रपोट में अपना फ़रज़ा हर किया कि हमने नथ मलजी की दीवान किया  
 जित से यह नतीजा आया इस बात से खंड पस या मुक्त पोर व बदरबाह लोगों को ररक  
 पैदा हुआ तो खार्द नखाई शिकायतां व काम में हरकतां करने लगे उनका भी किसी  
 तरह से दूतक बहरज़ नई कर के फ़ायदा हांकया जिससे दीवानी फ़ौजदारी का काम  
 सुस्त चलने लगा इसका तो बन्दोबस्त जनाव साहब मन्दूह से मदद लेकर करना चाहा-  
 परन्तु ६ साल तक मुतवातिर कहत सालिपां और १॥ वर्ष से तो माय कारवाई ही अवतर  
 हो गई तो भी बहुत से निकल गये अगरचे माल यरसांत तुंता रुका वगैरे के रुपये करीब  
 १ लाख लोगों में लेना है सो ज़माना अच्छा आने से वसूल होगे लेकिन बिल फल तो आ-  
 मदनी धने वरवर्चन्यादे लगाने व राय विरा हो नै कर्त्तो करीब ६० हज़ार के होगया ॥  
 अमरला चारी है और कहावत सच है कि नरची चीरी तीर है दूरची तीर तत काल ॥ जिग  
 क्रिये स्वर्ग लोक को बल्होचे पाताल ॥ मगर कारवाई की तरफ़ इन्साफ़ की निगा  
 ह से गौर किया जावे तो बखूबी मालूम होता है कि मुलाज़मान आलबख़ाद न कि स  
 ४० पाँड़न नखा के सिवाय वधताई व अगली खर्ची में कितने रुपये मिले हैं तथा हर  
 एक काम व कारवानों में और हर एक देहात व कोम व जमीन पड़ी न वगैरे में कहा

तक निगाह पहुँचाकर के सो नीयत से उन्हा २ तदवीर सो चीहैं और बेती बढारो - व  
रुंयत को इ। गेर से बुलाने व सार बाँकों को बुलाकर के बाँके वास्ते देहा न देधाने व विसा  
पूनमचन्द को भजकार कर सा बुलाने और से से ही वैपार की तरकीमे और बहुत वरसों  
का गर्द हुरद रियाया पलीवाल साहूकार सुनार वगैरे की आमदरक्त में सरकारी बाष  
व आपस के कारजे वगैरे तकलीफात मियानिमें वगैरे २ कहां तक को प्रिशैं की गर्द मगर  
औ वरांग कर सहेवां जैसे सब उपाय यह लागे सेवा व महे सरीयां की आमदरक्त के  
काम आधी हांसल न हुरद जिस का सब ऊपर लिखा ही है अब भी श्री इश्वर नाथ  
जमाना अच्छा करै और हाकिम वक्त सिद्ध दिल से काम में मदद दे कर लोगों को  
हुकुम व कायदे के यावन्द और खैर ख्वाही व सुधार की तरफ रजू करै तो उमेद  
कवी है कि रोज़ बरोज़ तरकी होकर चन्द साल में आवादी रुचन्द व आमदनी  
सह चन्द बल्के ज्यादा और लोगों को आराम व फायदा व हर तरह का सुधार भी  
धातर व्याह आसानी से होसक्ता है और नथमलजी के सरीर में बहुत मुदत से बी  
मारी के बायस काम की संभाल जैसी कि चाहिये नही होसती और ख्याल भोगूंगे  
को सपना सा होगया है मालूम होता है कि जमाना अच्छा बंध जावे तो इस्तीफे की  
अर्ज करंगे शुभ ॥ ३० कलेयारामल को गोद लिया ॥ × ॥

श्री गुरुभ्यन्मः श्री रामकृष्णायन्मः

**दफ़े २ तवारीष महाराजगानरियासत जैसलमेर ॥ व  
जुगाराफिया मुल्क माड**

सबक लखमीचन्द बल्द बेतसीने म्हाता नथमलजी दीवान राज मोसूफ की सहा  
यता व काविराज शिकजी दानजी म्हाता अजीतसिंहजी परोहित बुधलालजी व्या  
स गणेश दासजी म्हाता इंदराजजी की सलाह व मदद से बनार सो सब साहवां न पसंद  
करा सं० १८५५ का बैसाख मुद २ बार अगु मुताबिक तारीख ३ मई सन १८५५ ई०

यह किताब वांचने व सुनने वालों से चीनती है कि तहरीर वगैरे में नुक्स हो सो माफ  
 फरमावे कि अचल तो मैं कोरे इस्म पढ़ा हुआ नहीं कि १ जवान में तहरीर - व  
 जायदे से तकसा करता दूसरे तवारीखी हाल भी पूरा पूरा हाथ न लगा - कहते हैं  
 कि सब हाल की ह्यात थी सो जताब दाडसा हब व दादरता जुमा करने को लगे थे उस  
 का एलासा बंदूकी ही बहुत तहकीकात करके दाडनामे में लिखा है पस्तु वो किताब  
 पोखी न आरे सुना है कि मेवाड़ में १ जती पास थी सो वीकानेर में जती पास है वो मांगने  
 की तहरीर करी मगर पतान लगा लाचार दूसरी किताबों में मुखतलिफ हाल दरवा  
 व याकफ कारों से सुना जिसका सोध करके थोड़ा २ खुलासा इस में लिखा है तदीप  
 दतना तो बेशक है कि दूसरी किसी १ किताब में नहीं है ॥ और जुगराफिया तो नया  
 हो बनाया है जिस में कुहदेस के गाम व दानी मरा आवादी व नीवान मंदिर डुंगर नदी  
 दररख आसचारितक चंगरे २ जो इस वक्त मौजूद है सब लिखा गया है गांमों की आ  
 मदनी का हाल मालूम नहीं हो सका सो आयदे के लिये तरकीब ठीक निकाली है  
 सो हो गई तो मालूम हो जावेगा सिवाय इस के बाज बाते जैसे मारवाड़ रपोट में है  
 यह किताब वांचने व सुनने वाले जिस बात के ग्राहक हो सूची पत्र दे पकर समझें  
 और कार सुख त्याग जो तो भूत वर्तमान की वाकफों के सिवा राज वलीगों के आगाम व  
 फायदे के लिये आयदे वरतने की जो जो रायें इस में मौके २ पर लिखी हैं गौर से देख  
 कर वाजिब जानें व हो सके सो करे शुभम् ॥  
 इतने शब्द आदि के एकत्रा से लिखे हैं सो वांचने में खयाल रहे । इलाका ॥  
 कुंभ । प्रोहित । प्रगता । संवत । तारीख । ठाकुर । खडीन । उर्फ । कोस  
 कुवां । कुट । मीठा । तलाव या तलाई । बेरीयों । पुर्से । पूर्व । अग्नि । दक्षिण  
 न कहत । प्रश्न । कथव । उत्तर । ईशान । गांव । तमीहार । भोमिया - कई  
 शब्द अंक याने अरसे लिखे हैं सो तहरीर में हरफ वांचने चाहिये

दफ़े ३

# अथ बंसावली श्री मद्भागवत अनुसारेण

प्रथम १ श्री आदि नारायण जी के नाभि कमल से ॥३ ब्रह्मा ॥४ अत्रि ॥५  
सोमसे ॥ चंद्रवंस दुआ ॥६ बुध ॥७ पुक्रवा चक्रवती दुआ ॥ तस्म ॥ पुत्र ॥ कः ॥ शु  
ताव ॥ सत्यायु ॥ रय ॥ ज्य ॥ विजय ॥ ८ आयु ॥ पाटवैठा ॥ तस्म ॥ पुत्र ॥ च्यार  
॥ रभ ॥ अनेन ॥ रज ॥ ९ निघूष ॥ पाट ॥ १० ययाती ॥ तस्म ॥ पुत्र ॥ च्यारका  
वंस चला ॥ अनुसे ॥ अनवंस ॥ दुधु ॥ से दुधवंस ॥ मलेकु दुवा ॥ तुरवंस से ॥ तुर  
वंस ॥ ११ यदु ॥ पाटवीथा ॥ परन्तु ॥ पिता ॥ की ॥ विषीत आज्ञा ॥ नही ॥ मां  
नगौसे ॥ पिता की ॥ गादी ॥ नही ॥ पाई ॥ न्यारा ॥ राज ॥ बांधा ॥ यादव ॥ कही  
जे ॥ यदु के ॥ दोय पुत्र ॥ हुवे ॥ शहस्राजीता राजावांसे ॥ सहस्र ॥ जुध ॥ जीते ॥  
१२ क्रीष्ट ॥ पाट बेठा ॥ १३ क्रजमान ॥ १४ स्वाती ॥ १५ उस्नका ॥ १६ चित्रर  
ध ॥ १७ सशिवंदु ॥ १८ प्रथुअवा ॥ १९ धर्म ॥ २० उषा ॥ २१ स्वीक ॥  
२२ ज्यामध ॥ २३ विधर्म ॥ २४ क्रथ ॥ २५ कुंत ॥ २६ धृष्ट ॥ २७ निव्रति ॥  
२८ दरसाहा ॥ २९ व्योम ॥ ३० जीमूत ॥ ३१ विक्रति ॥ ३२ भीमरथ ॥ ३३ नवरथ ॥  
३४ दसरथ ॥ ३५ सुकन ॥ ३६ कारंभ ॥ ३७ देवरात ॥ ३८ देवसन्न ॥ ३९ मधु ॥  
४० कुरुवंस ॥ ४१ अनु ॥ ४२ पुरुहन्त ॥ ४३ आयु ॥ ४४ सात्वत के पांच पुत्र हुवे ॥  
भजमान ॥ देवाग्रध ॥ महाभोज ॥ का ॥ भोजवंशि ॥ वृषा ॥ ४५ अंधक ॥ पाट ॥  
४६ भजमान ॥ ४७ विदुर्य ॥ ४८ सूर ॥ ४९ समी ॥ ५० प्रतिहन्त ॥ ५१ स्वयं  
भोज ॥ ५२ हृदीक ॥ ५३ देवमीठ ॥ ५४ सूरसेन ॥ ५५ बसुदेव के बडे पुत्र राम  
यानेवल्लदेवजी जो श्रीशेष भगवान का अवतार और दूसरे ॥ ५६ श्री कृष्ण  
चंद ॥ से पिकुला हाल मुखतसिर नीचे लिखा है ॥

श्री कृष्णचंद पूरी पुर्बोति अवतार का हाल वेद पुराणादि सब शास्त्रों  
से जाहर है मथुरासे द्वारका पधार राजधानी करी कुनरापुर के राजा

भीष्मक की पुत्री रुक्मणीजी लक्ष्मी को अवतार के स्वयंवर में मान्न राजाजमां  
 दुसे श्रीकृष्णचंद्र भी पधारे तो सत्कार नहीं होनेसे क्रतकैथ के घर डेर किया  
 स्वर्ग में इंद्र ने रुक्मजीमा भेजा वहां ही राज्या भिषेप हुआ जरासीध के सिवाय  
 सब राजावां भेटा दी वाद लवाजमा पीछा भेजा । १ मेघडंबर छत्र रख लिया कि  
 पहर देगा जब तक राज बराह देगा सोमोजूद है इसी से कृत्वाला जादम त रा-  
 जावां मे शिरो मरा है तथा कुलदेवी का खिका को साहरो कहते हैं श्री कृष्ण की  
 साहिता में जरासिंध से स्वांगसे जाई जब से स्वांग गहियां व स्वांगीयां कही जी ।  
 २ प्रद्युम्न कामदेव को अवतार । ३ अनुकृप । ४ कन्ननाभ को अर्जुन के साथ-  
 भेजा सोमपुरा में राज बैठे वाकी सब पादवां को लेकर प्रभास गस जहां या दवा-  
 स्थल हुआ । ५ प्रतिवाह । ६ उग्रसेन । ७ मूरसेना । ८ सुखेन के गोद प्रतिवाह के दन वाहुं  
 वाहु बल कावेया । ९ नाभवाहु बैठे । १० सुबाहु शिकार को गस सुवर के पीछे पाताल  
 पधारे वहां वाराह भगवानु का दर्शन हुआ जब से सुवर की तरफ कहै और नाग क-  
 न्या पर न्या जब ससु नाग मरा व नाग मरायां का हार देकर कहा कि दूजा विवाह  
 मत कीजे फेर कुंवर रत्न हुआ वाद दूजा विवाह सै भर में राजा की बेटी सुभाग सुंदरी  
 से हुवा जकजस लेखा पाताल गई और कुंवर को वरदान दीया जिस से पृथम-  
 समुद्र तक तुरकों से जीत धाती लीवी फेर दी पुत्र हुय १ खीर का चूड़ा सना सरवर  
 या सोरठ देश गुजरात में भीमीयां जादम है पहिले गिरनार में राज्या दूसे रजद भां-  
 गा का जादव मातां जंवा की कृपा से वेयाने डंग बहेडे का राजा हुआ अब करेली  
 हैं । ११ रत्न कुवर राणी सुभाग सुन्दरी अजेन के राजा वैरशी की पुत्री स्वप्ने में गज-  
 सिरागारीया देखा राजा कही कुंवर गज प्रतापी हुसी ॥ खुरासान के वाद शाह फ-  
 रीद शाह से दो जुध जीते श्री स्वांगीयां जी की कृपा से फेर ३ कुंवर हुय भीम जत  
 सराव सैन विक्र सैन । १२ गजवाहु श्री स्वांगीयां जी की आज्ञा से युधिष्ठिर संवत



३०८ में गजनी बसाई गढ़ बसाया दोहा ॥ तोन सत्त अतशक धरम बैशाषे सित  
 तीन । रवि रोहिणा गज बाहु नै गजनी रची नवीन ॥ १ ॥ खुरासान की महरूम  
 से फोज आई कुंज सहर में लड़ाई हुई ३०००० तुर्क ४००० हिन्दु खेत रहे फोज साही  
 भागी गज की फतै हुई जब से पश्चिम का पात स्हा कही जे ॥ कंदरप को लराजा क  
 शमीर से जुध जाच्या सोन हुआ कन्या परन्या फेर श्री स्वांगी यांजी कही तुरकों का  
 खून बहुत हुआ है सो अब वह बधे गे तेरे पीते से गजनी छुटे गी । १३ रुज सैन । १४  
 प्रतिबाहु से गजनी छुटी । १५ दत्त बाहु । १६ बाहु बल । १७ सुभाय । १८ देवरथ  
 । १९ प्रथी स्हा । २० मही पत । २१ मजाद पत बहादुरी व दातारी में नाम मशहूर  
 किया ७ लाख सवार थे गजनी भी लीवी थी ॥ जेहल भाट को क्रोड पसाव दीया  
 ॥ मात्र राजा जमा करके जिग किया सग परा की मजाद बांधी पंजाब में हकूमत  
 जमाई थी । २२ सेवात सैन । २३ सूर सैन । २४ उदी प सैन । २५ अप्राजित ने गजनी  
 व पंजाब व काबुल में आध यवनां से लिया ॥ अवधास सहर बसाया ॥ मथुरा लाहोर  
 मुलतान गजनी वगैरे बहुत से मुल्क में राज रहा । २६ कनक सैन । २७ सुगन सैन  
 । २८ मधवान जैत ने मथुरा में राजा जमा करके जिग किया और अवधास में शवा बड़ी  
 बहागात् महलात् बसाया । २९ कृत सैन । ३० भगवान सैन । ३१ विदुर्य । ३२ वि  
 क्रम सैन ने पिंडीरां को निकाल कर लाहोर में राजधानी करी मथुरा खाल से रक्वी ।  
 ३३ कुमोद सैन के कुं० गज सैन का बेया । ३४ रुज पाल राज बैठे पंजाब में बनपुर गढ़  
 बनाया और वंगाल के राजा हरि सिंह से जुध जीता ॥ यवना को हिन्दो स्थान में आने  
 नहीं दिया । ३५ वजीत जी के कुं० ८० में २७ काबं स चला पांचवां कुं० । ३६ मूरत पाल  
 राज बैठे । ३७ रुकम सैन । ३८ कनक सैन । ३९ उत्रा सैन गजनी में पाट लाहोर खाल से  
 । ४० शोवायत सैन । ४१ प्रत सैन । ४२ राम सैन । ४३ सूर देव । ४४ देव सवाय । ४५  
 शंकर देव । ४६ सूर्य देव । ४७ प्रताप सैन । ४८ अरुनी जत । ४९ भीम सैन से गढ़



ननपुर व गजनी कूदी लाहौर मथुरा अवधामें राज रहा ॥ यवनों से जुधमें सतलज  
 पर काम आया । ५० चंद्रसैन यवनों से वैर लिखा । और पंजाब के राजाओं को तावै कि  
 या । ५१ जगसवात लाहौर में पाट । ५२ वैरा । ५३ देव नस के कुं नही था जगसवात के  
 कुं का कलदे का पोता । ५४ मूल राज मथुरा में राज । ५५ राय देव । ५६ सतुराव के कुं  
 नही था अवधामें का कलदे के नसका । ५७ देव नंद लाहौर में राज । ५८ नगा भूप  
 । ५९ सुध । ६० रोहतास । ६१ प्रत सैन । ६२ महोतन । ६३ वासुदेव । ६४ अल भाग  
 । ६५ वीर सैन । ६६ सुभेव मथुरा में पाट । ६७ सूरत सैन । ६८ गुरा पयोध लाहौर ।  
 ६९ जगमाल के भाई भार्य सैन को मथुरा में फभा सती दान ने चूक किया और बयाने  
 के राजा प्रजपाल को मथुरा दी उन्होंने ३१ पीड़ी राज किया । ७० भीम सैन के कुं  
 अर सिंह का वेदा । ७१ तेजपाल । ७२ भूपत सैन । ७३ रसावप के ग्यार्ये कुं रत्न सी  
 यवनों से गजनी के कर पिता की आज्ञा से न्यारा राज बांधा इन के कुं साल बाहन  
 लकोट सहर बसाय रहा स किया । ७४ चंद्र सैन । ७५ मूल मन । ७६ साल मन  
 । ७७ सारंग देव । ७८ देव राय । ७९ जस पत । ८० जग पत । ८१ हंस पत ने विक्रम  
 सम्यत २ में हंसार गढ नरायण राजधानी करी ॥ तीर्थी पर घाट बसाय रागाया । ८२  
 देवा कर सं ४६ । ८३ भारमल सं ७१ । ८४ खुमांरा सं ९५ । ८५ जजनि सं १२६  
 । ८६ जुज सैन सं १५२ । ८७ गज सैन सं २१० कुल देवी की आज्ञा से कुं साल बाहन  
 को श्री ज्वाला की यात्रा के बहाने भेज कर साल बाहरा गढ बनाय राजधानी करादे  
 और हंशार में हकूमत जमाई ॥ पिंडा गजनी में रहे ॥ सहर से ५ कोस पर यवनों से  
 भार लड़ाई हुई वारु शाह १ लाख आदमियों और गज सैन ३० हजार लोक सा  
 य पर लोक की सिधास पीछे वाद शाह का शाहजादा जलालुद्दीन बहुत फोज ले  
 कर आया जब गज सैन का भाई सहर देव कई दिन लड़े वशा का कर मरे गजनी में  
 वाद शाह का सूबा रहा ॥ साल बाहरा सं २५१ साल बाहरा में राज वैदे-

तस्मिन् १२ में बड़ा रिशालु तो फिरता ही रहा बहुत राजाओं से जुद्ध बचोसर जीता-  
 वाज २ की कन्या परन्या परं ० १ राजा भोज की पुत्री सिवाय सब का त्याग किया कि  
 जिसका जिससे शक् हुआ उसको उसके हवाले की दोहा: फूलवती हठीयो धर्यो  
 धारु धर्यो सुनार । सांगादे सतराखीयो राजा भोज कुमार । १। इनसे रिशालु ने  
 बहुतसे प्रश्ना किये सब का माकूल जवाब दिया प्रश्नोत्तर कृप्य: कोन नूलते तुछ-  
 कोन काजल से कारो-कोन लोह ते कठन-कोन सोना से सारो-कोन विछु पर डंक-कोन  
 महरा ते मातो-कोन रवि पर तेज-कोन अग्नि से तातो-कोन दूध ते उजल-कोन जिभ्य  
 अमृत भरी अन्न बतावो दुरातिगों सकर ते पहिली कवन गरी ॥१॥ दोहा .  
 कहान अग्नि में जले कहान सिंधु समाय । कहान अवल करस के काल कहान ही  
 धाय ॥ कोन पुर्ष जननी बिना कोन मोत विन काल । कोन सागर पाल बिना कोन  
 मूल विन डाल ॥२॥ की धीया चो पदी की वाल्ही वीरा । की कपासा कां बलो-  
 की ठंडो नीरा ॥३॥ अलाहा जुल कयास बहुतसे प्रश्नोत्तर हो चुके तो कुंवर बोला  
 कि चुनड़ी का पल्ला पानी में भिगोय चिराग पर जलावो सो पानी जल जावे चुनड़ी  
 को दाग न लगे चुनाचि से साही किया फेर कुंवर रागी ने भी कहा कि आप ही पघड़ी  
 का पल्ला ऐसे जलावे जब कुंवर ने भी ऐसा कर दिखाया इसकी वार्ता बहुत लम्बी मश  
 हूर आम है कि चारों दुम वगैरह सब जानते हैं ॥ दूसरा कुं० बालबंध राज बैठे -  
 बाकी धमांगद - सीहवख - कालक - पारब - रूप - सुषा - लेख - जसकारा - नेम  
 - भामाट - नीपक - गंगेव - जोगेव - यह १३ ही दूसरे राजावां का मुल्क लेकर  
 राजा भये सो पंजाब में पटियाला . कपूरथला . नायगा \* महेसर वगैरह पहाड़ी  
 राजा हैं कर्दका तो ठिकाना बहाल हैं कर्दवीत गये और जो हैं पटियाला . कपूरथला .  
 वगैरह अगरचे शिष वगैरे मत के दाद सराज पूताने में रिशतेदारी नहीं रही ताहम  
 जैसलमेर को अपना बुजुर्ग जानकर सेसा ही बरतावर खते हैं और यह रिया स्तै - ॥

\* अब सहील सरमोर नाहन है पहाड़ी रियासत मशहूर है ॥ बन्दः मुरार अलोअकी अनदू

होशियार जमाना साज्ज रहत है चुनाचेगदगाहना दिल्ली वसरकार दौलतमदरा  
 अंगरेजी की मदद व हाजरी करने से खिलत खिताब व तगमा व लके मुल्क बहुत  
 सां पाया है ॥ जोगीर खगोर पनाथ व पूर्ण भगत की कृपा से अटक पर भारी महल  
 त व बागात व किला बनाया पिता का बैर से राजनी में दुखल किया जलालुद्दीन का  
 सखा गाजी खान १४७०० लोक से और १०००० हिन्दू खेत रहे ॥ कुंवा लवंध की  
 गजनी में बैठा था पपीछा शाय सगर्ग पधारे जव वाल बंध साल वादगा आए कुं  
 भूपत को गजनी में रखा जिसके पुत्र चिगता के पुत्र देवसी भाऊ रवी मखा  
 नहम जुपाउ धारसी बीजल भए बाद मुल्क लेने पयवनों की सोहवत से सु  
 खारे के मन्त्र वक बादशाह की शहजादी से शादी करी उस वाल डका शाह सुहम्मद  
 खुरखारे का बादशाह और चिगते के आठ ही बेटों का चिगता कोम मुसल्मान हुआ  
 फेरवी खल के बेटे गोरि ने बलख से ४० कोस गोर राह पसाय बादशाह हुआ और  
 कोम गोरि कहिजे दिल्ली में गोरियों ने अबल बादशाह करी ॥

१८९ बाल बंध सं २२९ दिल्ली के राजे जैपाल की पुत्री राजकुं वसे भर के  
 राजा की पुत्री बिलैकुं चहुवान वगरे १२ रानी थी ॥ पुत्र १० बडे नामी भए स्क  
 पाटवी श्री भांटी नी दूसरे समार्जी सिंध देश में गढ़ सन्धा हूरा वसो मेर बनाया पडेहा  
 रों को जीत कर जाम पदवीली कोम समात में मौजे नगर खैयै किले कोट में सं ९०९  
 लाख फुलारी हिन्दु वं सूर्ज कहां जिया नेक वरू व दातार ऐसा हुआ कि आज  
 तक सुबह को लखे फूलारी की बेला कहें हैं इन पंच वं स में कोम जाड़े जां को देश कह  
 वनगर भुज में रहत है चन्हीं के इतिहास में दूसरी तरह लिखा है जिसका हल अलग  
 लिखा गया ॥ तंजि मंगरीयै के ५ बेटों के कोम मंगरीयै कहिजे ॥ चौथे कल  
 राव कलूर कोट कराया चवेयों के कल रहे ॥ पांचवे जं भजं भला कोट कराया ७ वेद  
 को जं भ ॥ छठे भैस डेच के भैस डेच ॥ सातवें लख ड के लख ड ॥ आठवे जेहू जां वंध कोट

कराया जेहूँ हुआ ॥ नवमें भूपत का हाल-जपर लिखा गया ॥ दशवे अक्षरावका  
 पोता भार गिराजके खोले दिया भारीजी से आदि जेह तक आठों ही के वंश के  
 भारी कहें जे आगे यादव कहलाते थे ॥ २॥ ९० भारीजी सं० ३३६ लाहोर-  
 रानी पड़ेहार मंडोर के राजा भीमदे की पुत्री हंशावती वराजे पुनपाल की पुत्री  
 कछुवार्द वड़ेहार अनडजांम की पुत्री वगैरे ॥ छोटा कुंवर सिंगराव ने कस्बा सरस्व  
 रफ सरसा पंजाब के कांठे आवाद किया ॥ सं० ३४२ में गढ भटनेर वनाय राजधानी  
 करी ॥ बघेले राजा वीरभान को मार कर दारुणा जुद्ध जीत कुनरा पुर लूया और १४  
 प्रवाडे जीते ॥ कुं० मसूरगव के सारा का सारा जाट हुआ और अभैराज अभैर  
 गढ कराया अभैरीये भारी है ॥ २॥ ९१ भूपत सं० ३५२ भटनेर रानी राठोड  
 राजा चंद्र की पुत्री गढ महोबा - पुवार राजा सूरज की पुत्री गढ आबू - ॥ कुं० भांभा  
 सी व अतैराव का अतैराव भारी है ॥ २॥ ९२ भीम सं० ३९५ भटनेर रानी ५ दर्या  
 गोराज सिंध की पुत्री दर्या पुर पटरा गोडराजा मांराकदे की पुत्री गढ श्रीनगर -  
 चावडी राजा लखरासी की पुत्री कछुवार्द राजा पालरादे की पुत्री नखर वडगूज  
 राजा हरी सिंह की पुत्री ॥ २॥ ९३ सतौराव सं० ४१६ भटनेर रानी चहुवांरा राव  
 सियाजी की पुत्री कछुवार्द राजा आसलदे की पुत्री चावडी गोड गेहलोत  
 कं० फूलराव भांरासी ॥ श्री स्वांगी याजी के वरदान से गजनीलीवी तथा पंजाब  
 में हकूमत जसाई शहर मुलतान वीरानथा सो आवाद किया महलात वदो मंदिर-  
 श्री आदिनाथराजी व श्री नरसिंहजी का तथा लाहोर में भी भारी मंदिर बनाया-  
 भटनेर में ४ बावडी बबाग बनाया श्री गंगाजी पर सदावर्त वगैर हकदुत पुन्य किया  
 ॥ ९४ खेमकरा सं० ४५४ भटनेर ३ रानी गेहलोत पुवार गढ पूगल की मक-  
 बांरा गढ विठंके की ॥ कुं० मांडरा जूहंड ॥ २॥ ९५ नरपत सं० ४७२ लाहोर  
 ३ रानी सोलखराजी - तुवर दिल्ली की - तुवर ॥ कुं० गजू व बजू दोनों के राज का

तंकरारहुआ हजारां मनुष्य मो जव सब की सलाह से मेघडंबर रुद्र तो गजू के-  
 और राज कजू के रहे नामी सरदार रुद्र के साथ वरुवार गेस सुंवर मारने से वादशाह  
 नाराज हुअे जव अर्ज कर आई कि भाटी व पड़े हारे के सुवर की तलाक है पूजा के-  
 लिये जो ता पकड़ा है फिर श्री स्वांगीयां जी की कृपा से सुवर जी तो दिखवाया जव सुवर  
 हो कर फोज साथ दी सो कजू से मुल्क लेकर गजनी लाहोर अवधाय में राज किया-  
 और हंशार व भटनेर कजू को दिया । वाद कजू के जोगद नरवर के कछ वाधे रा-  
 जा पाखादे का दीहता कुं० मूलराज व भंडु डांग व देहे वालों से जुद्ध जीत कर-  
 मथुरा में राज बैठा ॥ १॥ ९६ गजूसं० ५३२ लाहोर शरानी पड़े हार रागा सुमे  
 सरकी पुत्री गद मंडोर मकवाही राजा मांघ की पुत्री ददयाणी राजा सुंज की पुत्री  
 वध दूसरी । लाहोर कारज कुं० लोमनराव को दे कर आप राजनी वैदे ॥ कुं० सागी ॥  
 ९७ लोमनराव सं० ५३९ कुवरानी पुवार राजा वीर सिंह की पुत्री गद लुंद्रवा ॥ कजू-  
 का कुं० भंडु वरुवार से वादशाह जादी को ले आया जव ईरान खुरासान वरुवार से  
 फोजां आई ७ छडार्द के वाद गजू गजनी में लोमनराव लाहोर में मूलराज मथुरा  
 में भंडु हंशार में जगसबाय भटनेर में आकाकर के काम आये दुत फो लाखा आद  
 मी मरे व थायल हुस पांच गद रुदे । यवनां वयादवां के हस्जमाने में बहुत सी लडा-  
 दयां हुई और याद कजीत ते रहे यवन हिन्दो स्थान का मुंह देख न सका इसका हाल  
 कि ताव शाह नामे वगैरह में लिखा ही है आगि वरुवार याद वही जू मुल्क के लालच से  
 यवन हो गए वाद बोचड आने से अवफते मंदर है । फिर समा मंगरीया लखड ।  
 कलरं । जंभ वगैरह बहुत सुसली न हुये कई हिन्दु रहे व कई भाटी वेपारी व जाय  
 वगैरे आन जात हुअे लोमनराव का कुं० रैगासी मेघडंबर रुद्र व आदि नारायण का  
 स्वरूप जो श्री कृष्ण चंद्र के सिव्य है लेकर भाग निकला था व हस्वरूप हमारे श्री गद  
 जैसलमेर टीकमजी के मंदिर में विराजै है हर राजो तो की वार तक तो हर दस मी की

रेवाडी यानी पूजन का ठाठ दशेरे मूजिब होता था फेरही मुजरामालुम वगैरे रीत  
 थी अवतो सिर्फ पात्र मंदिर में गावें तथा श्री दरबार साहिबों के प्रोहित तिलक की ज्व  
 पंचशब्दी या साथ ही वे हैं ॥ भारी कामुल्क गजनी चकतों को - मथुरा बेथाने के या  
 दवों को - दूजा देश पंजाब याकों पड़े हारों पिडिरों वाराहों भालों वगैरे को देकर  
 फोजां पीछी गई ॥ १०॥ ९८ रावरे रासि सं० ५३५ ॥ ९९ भोजसी सं० ५५६  
 १०० मंगल राव सं० ५७६ विरवे में मुमरा बाहरा गढ वनाय राज बांधा हो रानी  
 पड़े हर रांगा मूज की पुत्री गढ जूना पुवार राजा सांवत की पुत्री गढ मंडोर ॥ कुं  
 हुण यवनों की फोजां आई जव मंगल रावजी कुं० मंड मराव कोले भागे दूजा कुं० सेव  
 श्री धर के घर में छिपे या कसती रास की चुगली से बादशाह तलब किये जव सेठ ने  
 कुं० खालरसी मूढ राज शिव राज को तो जायों के फूल को नारियां के केवले को कुंभा  
 रां के परनाम सो खालरसी का खोल हरी मूढ का मूढ जाट के वले का केवला कुभार  
 हुआ ॥ १०१ मंड मराव सं० ६१६ पुवार की घरती किनारे दरियाव रुक डे के सं० ६५६  
 में गढ मरोट वनाय राज बांधा ॥ पुंगल से पुंवारों जांधें से नुरां लुद्रवे से लोद्रा पुवारों  
 बिठंडे से बाराह वगैरे राजावों टीका भेजा और धार से सोढा राजर हो कुंवरनी  
 के विवाह का नारियल दे तावे दार हुस जव से सोढा अव्वल दर्जे के भारीयों मूज ब  
 उमराव हैं और हर पीडी में राजा सोढें परणी जगों से खांपलायक वनीर ही वर  
 ना - यवन हो जाते क्यों कि उनको परनाते थे सं० १९०० में ठा ॥ राज श्री के स  
 री सिंह जी साहवां तलाक लिखवाई कि अब कोई यवन को परनावे तो दूजा सोढा  
 उनको जाति बाहर करे नहीं तो भारी जाति सोढां से संग पराना रखें ॥ तथा जो  
 पड़ोसी पुवार वगैरे अदावत रखते मान को नेस्त नाबूद किये ॥ १०२ मूर सैन  
 सं० ६६७ मरोट ७ राणी चहुवां राजा सुजान की पुत्री गढ से भरम कवाराणी राव  
 सिंघल की पुत्री ५ दूजी ॥ १०३ रघु राव सं० ७०२ मरोट ३ रानी सोलर राणी

राजा मांडरा की पुत्री गढ़ बिरनाल गोयल राव जाम की पुत्री गढ़ खेड़ आली रा-  
 जा आभड़ की पुत्री गढ़ हलवद ॥ १०४ मूलराज सं० ७१३ मरीट ३ राणी इंदियाणी  
 राव धारु की पुत्री होरापुर पुवार राजा उदैराज की पुत्री गढ़ मंडोर तुवर राव शंकर  
 की पुत्री गढ़ सातलमेर । कुं० गंगेव चोटड का चोटड हुआ । मुमरावा हरा-  
 व भदनेर पीछा लिया ॥ १०५ राव उदैराव सं० ७३९ मरीट ७ राणी बोडाराणी राणा  
 केसव दास की पुत्री गढ़ पाटरा सोलखराणी राव देपाल की पुत्री गढ़ तोड़ा ५ दूजा-  
 कुं० सिंगराव का सोगराव है तीजे जालरासी ॥ १०६ मंगमराव सं० ७८६ मरीट  
 होराणी इंदाली २ बाघेली राजा समन की पुत्री गढ़ चराट की । कुं० जैगो गली तीजे मू-  
 लराज के वेटे लउवे कालगवा चूहल का चूहल चो भेर राजपाल के वेटे गोगी के खंगर  
 का खंगर घूकड़ का घूकड़ कुलरीये का कुलरीया वगैरह उभे चडा मुसलमान है ।  
 परन्तु नवरविमें स्थापना वगैरे हिन्दु परो की रीत कोरै हैं । कुं० केहर व मूलराज ने  
 सोवतके ५०० चोडे पाडे सो जालोर के देवडे अरु रासी की पुत्री परनीजे जयत्या  
 गमें दिये मूलराज की पुत्री बाराह राव जशरथ के कुं० चूते को परनार ॥ १०७ राव-  
 केहर सं० ८१६ मरीट ४ राणी सोनगिर इंदाली पुवार सोलखराणी पाटवी-  
 कुं० तिरामजी हुआ । छठे कुं० जाम के वंश का यागियां भाटिया जो साहुकारां  
 में लायक है हाल अलहदा लिखा है । दूजे कुं० उतेराव के सोम का सीम और स्त्री  
 से जीये बीखे अजै का उतेराव भाटी है । तीजे कुं० चनहड़ के केलड़ भारू भो-  
 जा शिवदास का चनहड़ ॥ चौथे कुं० खाफरी ये के दो वेटों का खाफरी  
 या वषहीम के ३ वेटों का वहीम हुआ - कोट किरोहर सं० ८२७ जेष्ठ चदि ५  
 कणया वाद देवी तिगोटीयों की आज्ञासे बडे कुं० तिराम के नामसे कोट  
 तिगोट बनाय शहर वसाय राजधानी करी व तगोटियों देवी का मंदिर बना  
 या सो मौजूद है सं० ८८७ प्रतिष्ठा पुर कोट बरातां बागह फीजां लाया सो हार

गया ॥ १०२ राव तराजी सं० ६२ तराोट १५ रंगी सोलखरी राव उ-  
 दयारचकी पुत्री गढ़ जांधे गेहलोत राव भोगादत्त की पुत्री गढ़ चीतोड़ १३  
 दूजी । दीवी बीझासरीयों की कृपासे कुं० विजैराज दुआ इब्नवताय गढ़ की  
 आजाकरी सो सं० ८७३ में गढ़ बीझासरी कोट कराया तथा फोज कर चडे सो बि-  
 ठंडे के वाराह बहुतसे मारे बाको भागे फतह पाय विजैराव पीछे आर फेर वाराह  
 लांगाह वगेरह फोज कर आर जब श्री स्वांगीयों जी चूड दीवी जिससे जुद्ध जीते  
 चूडाला विजैराज कहोजे फेर वाराह राव जूने के पुत्र नांदेचै साथ हुमेन साह की-  
 भेजी गजनी के बादशाह की फोजां मुल्तान से आई जब देवी पालंब के रूप विजैरा-  
 व के घोड़े की किनोती बीच में बैठ जुद्ध जीताया फोजां सारी दार तलाक रवाय  
 पीछी गई जबसे पाटवी घोड़े पर पालंब का चिन्ह मंडै है बहुतसे भाटो काम आ-  
 सव भागे तथा आनजाति हुये । कुं० माकड़ के मोल्ले व महेपै कामाकड़ सूधार  
 और आल के ४ बेरा देवसी धिरपाल भूरासी देवीदास बीझासरी में सांटां चार  
 रो से रहवारी तथा राखेचै के राजपाल का ५ बेटे गजहथ कल्पांगा धनराज  
 नांटे हेमराज काराखेचा साहूकार और मुला मागा चूडा तीनों हीका मह  
 जन महे श्री मुला मागा चामक हुये । कुं० जैतुंग के बेटे रतनसी बन्चाहड ने  
 कोट बिकमपुर सूनाथा कबजे किया फेर चाहड के बेटे कोल्ले गा० कोलासर व-  
 गिरराज ने गा० गिरराज सर वसाया जैतुंग कहीजे और प्रतापी हुये केई गांव  
 वसाए सो हिनोज है । तराोट में श्री लक्ष्मी नाथ जी का मंदिर कराय तराजी तो  
 सेवा अखतैयार करी विजैराव राज बेटे ॥ १०६ कुं० विजैराव सं० ७७ । ७ कुं० व-  
 रंगी भुटी राव जजे की पुत्री गढ़ जांधे दरयारागी राजा भोज की पुत्री गढ़ पार  
 कर पडेहार राणा जीवरा की पुत्री रावोड राजा लाखरा की पुत्री वाराह राव  
 भाराजी की पुत्री गढ़ विठमै । ४ कुं० देवराज सांलाकराव गाहड घोरड हुए



चूड़-कैप्रताप १००० तलवार गैवसे चलती थीं दरान खुरासातके बादशाह  
 व भालां वाराहं वगैरे से २२ प्रवाड़े जीते भालां पुवारां वगैरे का जमान दबाद ॥  
 गद तरागीट मरोट किराहूर भयनेर मुंमरा वाहुरा वीसरागीट में राज रहा  
 पुवारां भालां वाराहं वगैरे ने सलाह कर भंवर देव राज को नलेर भेजा जान  
 बिठंडे गद वहां चूक हुआ १३ सो लोक से विजैराव काम आये श्री स्वांगीयां जी के  
 हुकम से देव राज को गई जाने गले भागा सो खेत में प्रोहित देवायत को सां पगया  
 सोने दान करत लगा पीछे से बाहर आर पागी बोला यदं से सां दूक लास दुई  
 पाहा रुवां पूछा चोर यहार देवायत कही ५ बेटे छठा में हूं बहाल बोले भले  
 नीमो नवदो दोनने बेटे देवायत कायेटा रतनु देव राज भेला जीम्या जिस से रतनु  
 चारहा हुस सो पोष पात पाट बाहे और दूसरे बेटों का प्रोहित आज तक जी इज्जत  
 समु साहब हर औ हूँ पर रहते हैं । वाराहं पुवारां भालां वगैरे की फोन्तां तरागी  
 ट आदं तराफ नी साको कर काम आस रुहु गद छुटे सं २५५ में ॥ तथा गद  
 के नेग के कहने से देव राज की माता श्री आदिनायरा का स्वरूप व मेघांड वरुन  
 जिकर पाहर गद नां धै गद देव राज भी वहां आकर १० वर्ष छिपे रहे फेर देवायत बिठ  
 दिगया देव राज को सासू रवासे मिला और वाराहं से वचन रावल जी गी रतन्ता थ  
 सिद्ध की मार फत से देव राज को वहां ले गया जी गी राज तो कशमीर गये थे करर कं  
 था वरस कुं पा की झोली रवा की मैड़ी में थी जहां देव राज सोता था ५ महीने वहां रु  
 रह वना कही जे जव झोली खुा के मैड़ी को आगलगाय जा धै चले आये पीछे से जी  
 गी राज बिठंडे आये वाराहं वरा कही झोली नल गद सिद्ध बोले नसीब में थी व  
 स को मिली । देव राज जो उपवास कर कुल देवी आराधी नव प्रणाम हो राज तेज  
 बढ़ने का बर्दान व शत्रु जीतने के लिये शखड़ग दिया उससे ५२ प्रवाड़े जीते पीछे हो  
 हर पांही में फतह पारं दुनाचे चंड सी जी से दिल्ली में इस खड़ग के प्रताप बादशाह

महरान दुस सो हाल थोडा साम ओके पर लिखा है और वो हीरक डग घड सी जी-  
 कारवां डा नाम से मौजूद है मेघाडंबर कुत्र जैसा ही मुबा के जान के दर्शरे दीवाली व  
 गैरह की पूजा होती है ॥ फेर राव जै से भैस के चमड़े जितनी जमीन मांग के गढ की नीव  
 दी भुटा मनाई की जब देवराज की माता जाकर कहा ॥ दोहा सुराज जाइ क-  
 विनती वैरा न पछालेह । का भुटा का भाटीयों कोट अडावरा देह ॥ १ ॥ परन्तु  
 नहीं मांती भुटा फौज ले आए कि गढ छोड़ देश से निकल जाओ । पीछा कहा कि  
 फलां २ सरदार आकर बचन दे चुनाचे इस बहाने से १२० नामी सरदारों को गढ-  
 में बुलाकर वहां हीरक के जब फौज भाग गई फेर आदमी ने ज भाटी व गैरह जो  
 दूर थे बुलाए और किले कोट लारवै जी से १० हजार फौज व २५ तोषां रतनुला  
 या । तथा और ही बहुत सी फौज रक्खी ५२ बुर्ज से गढ दीरावल सो देरावर है व-  
 रियार हुआ और जोगीरतन्नाय जी भी आये देवराज बहुत ही सत्कार किया जब  
 प्रषा होकर मंहरावल का रिताव बसि दु देवराज नाम दे के दरवाजे आसन बंधुई  
 कर बैठे ॥ भुटा से जुध कर राव जै को मार गढ जांथा मर मुल्क दरवल में लिया ॥  
 फेर बिठंडे जाने की सलाह करी सो १ सी कोतरी मन्ती के रूप में सुनकर खबर पहुचा  
 वे मन्ती को मारी तो रांगी दुख्खी पेट से कुं० छैने को निकाल धाय को सोपायाद फौ-  
 ज ले गए सो भाला पुवारों वाराहां को मार के वैर लिखा किते आन जाति किये - व-  
 हा म्हा और तो के पेट व्याक करने लगे जब सासू कहा मोठां० सडीन को जै अत  
 देवराज नुरवाक है । जुगरह सी वत नीत अनीत न कीजिये ॥ १ ॥ पीछे आय लंसा  
 हां पर चडे अलीपुर में १० सो कोमार प्रवाडो जीते दू० काल सकर को धाकतल प-  
 ल परवै पर मारा डुवी रुठे देवराज धारा काली धार ॥ २ ॥ गढ नान रों के भाला राव-  
 देहराय जी की पुत्री के सर कुं० परने और शाला माधोराय जो बंदगी में रहा जब  
 रावर की पट्टे दी जिस से कोम रावरी हुये । बिजै राव के कुंवर गाहड के ४ पुत्र करी

महेश पन्नायरा लखमरा के गाहड़ और कुं. चोटड के पुत्र गोरधन मेहा नाथ के घोहड़ कही जे ॥ श्रीदेवराज सिद्ध से पीछे राजाओं के नाम वसन्तजलस और राणी-साहीबा की कोम वनाम व उस के पिता काल क वनाम व ठिकाना तथा कुंवरी के नम्बर व नाम व खांपों हुई सो तथा बाई राज के नाम व किस ठिकाने किस से शादी हुई श्रीदेवराज का नम्बर वनाम नकशे में लिखे हैं ॥

११० महारावलजी श्रीसिद्धदेवराजजी सं० ९०९ गढ़देवर

रा राणी सा ह वां					कुं वरजी	बाई राज	सं	
क्र.सं.	कोम	नाम	पिता काल क व वनाम	ठिकाना	नाम व खांपों हुई सो	नाम व सगर्त	सं	
१	बाराह	हरकुंवर	राव शमराजी	गढ़ विठडे	१	हेनोजी के पुंवटों का छैना भाटो वस्त्रंग-कला सूजा-कक्खसी	१	सुगनकुं.
२	भाली	किसरकुं.	राव देहरायसी	गढ़ नानो	१	का छैना भाटो वस्त्रंग-कला सूजा-कक्खसी	१	सुगनकुं.
३	पुवार	चपाकुं.	राजा सस्यारा	गढ़ लूना	१	सूजा-कक्खसी	१	सुगनकुं.
४	ये.	सूजकुं.	ये.	ये.	१	खीम करन-सतरगद्वे	१	सुगनकुं.
५	ये.	गमकुं.	ये.	ये.	१	खीम करन-सतरगद्वे	१	सुगनकुं.
६	गिहलोत	सूजकुं.	राव मूजमल	गढ़ वीतोड	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
७	चट्टवान	राजकुं.	राजा मंडलीक	नीतल्लाह	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
८	गिहलोत		राव जगमाल	खिख	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
९	तुंवर		वरुपाल	सातलमे	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१०	दरिया राणी	पुनकुं.	राजा सागेश्वर	पाटरा	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
११	चावडी		राव भारा		२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१२	ये.		राव देसल		२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१३	सोदी		राणा भोज	रातेकोट	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१४	कहवाड़	सुजानकुं.	राव भीमदेव	दी सा	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१५	चाधेली	बिलेकुं.	राजा सांगाजी	रेवी	२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.
१६	सोनगरी		राव थूबड		२	खीम करन-सतरगद्वे	२	लालकुं.

मन्जुस्ते महल ४५ सिवाय पासवानों के ये जिसे १६ के नाम नकशे में लिखा है ॥

राजबिराजे दोहा सिद्धबचनबरापायके सिद्धभक्तदेवराज । रतन्नाथ हथ ति  
 लक किय कस्यो भूपति शिरताज ॥ १ ॥ जबसे आजतक राजराभिषेक में अवल  
 भेषजोगीका मुद्रावों चोला आसा खड़ाउ वगैरह धारे सो तो आयसजी आस के  
 मरको है फेर हान्पुन्म करके राजा परो की पोसाक पधराय श्री आदि नारायणाय  
 ने श्रीलक्ष्मी नाथजी व श्री स्वांगीयां जीका दर्शन करके आम दरबार में तरवत बिरा  
 जे जब खूंनका तिलक भाटी करे बाद कुंमकुंमका तिलक पाट पुरोहित करे और तोपों  
 की सलामी व भैर धाव व नजर नोछावर हुके है तथा इत्नी निशानी जोगी की मौजूद  
 है कि गढ में कोठा २ अन्त पूरों के नीचे रतन्नाथका थान और तंबू किनातंब घोडे  
 केटा पुर वहरकारे की छडी दूंगी का फूँदा भगवा और हो ठकारा १ आयस का  
 मठ श्री दरबार साहिब के गुरु २ दरीया नाथ की बावडी वाले राजवीरों के गुरु है पाट  
 उत्सव में वगमी के कार्य में नाथोंका सत्कार सबसे पहिले होता है । देवराजजी  
 बड़े ही प्रतापी हुन नवकोट पुवारों के लिये जबसे नवगढ नरेस कहीनते हैं फेरतो और  
 ही बहुत से गढ व प्र० लीये तथा जदीद किये सो नीचे लिखे हैं ॥ तरागढ के सेठ जस  
 कंराधार के राजा के गरूर पर जवाब दिया कि मेरे मालिक देवराज पास स्वेत हाथी व  
 रह बहुत ठाठ है राजाने सेठका घर जह किया और गले की हडी में वाली हाल के कहा  
 कि हाथी लायां छूटेगा सेठ ने आकर सब हाल कहा मुनते ही देवराजने प्रतज्ञा ली  
 कि धार लूटके पानी पीकंगा फोन फोज कर चढे १२५ कोस पहुँचे जब हम राहि  
 यों की अज्ज से आटे की धार बनाय उसमें सेली के बड़े १४० पुवारों की मार जलपिया  
 वहां धारवी नाम से गाँव आबाद किया सो मौजूद है फेर वहां जाकर लड़ाई जीत धर  
 लूटे पुवार भज भान को साथ लाये । लुट्टे के राजा जस भान का प्रधान पुरोहित  
 बिमला की सलाह से शादी के बहाने १२ सो जानी श्री दरबाने सक सो शहर लुट्ट  
 पुर पटरा में दारिखल हो लुट्टों को मार के राजधानी मुकरिकरी और बिमले की

किलेदारी व गंगाजल की नोकरी और प्रह्ला भीज में दक्षिणा कड़-दोरा बंध परदे  
 पैदों को भी देने का तांवा पत्र कर दिया सो आज तक है बिमले की औलाद कोम अन्ना  
 जी पुष्करराः अक्षरा है फेर महागवल सबल सिंहजी गांम मौकला तशांस्तोदया  
 ॥ गढजालोर सोनगिरीं को देरावर भानेज दरियों को मंडोर पडे हरों को दिया  
 नव कोटी मारवाड में आंरा केरी दूजा गढ लुद्धवा पूगल मातल मेर किरोहर भटने  
 र-बीझरागोद मुमरावाहरा मरोर किराडु पारकर राहूडी भवर वगैरे खाल  
 से रखे थे ॥ **कूप्या** ॥ देवराज थपेदुरंग लुद्धवा आप घर लास संमवाहरा-  
 त्रय सिंघजूनों पारकर जमास भडजालोर हु भंजे मारे नृपमंडोर गढ अन्न-  
 मेरहु गंजे पूगल गढ लोधी प्रधट कतल पिठंहे की जिये देवराज भूप चढते दिवस  
 रतनु अज्ञा धरली जिये ॥ १ ॥ ससे ही दातारी में सानी नहीं रकड़ा चुनाचे ताला-  
 ब प्र० रामगढ में दादा तराऊजी के नाम से तराऊसर व पिता किनै रावजी के नाम  
 से किनडासर व आपके नाम से देरासर तथा प्र० देवामें कोट से पश्चिम को सडेठ  
 राणीजी के नाम से लकीं सर व बेगाले से ४ कोस किराडु के नजदीक देगशर-  
 जहां अब देराशर गांव है सिवाय दूसके और ही परगनों में कहीं तालाब व गढ व  
 कुवां व गांम बनाये और प्रतिष्ठा याने बड़ा स्तिग कर के एक दिन में इतना दान कि  
 या ॥ दोहा ॥ क्रीड-दुजारे अर्ब दक पैस ठलाख पसाव । दीधा सिद्ध देवराज सी  
 रीधे भाटी राव ॥ १ ॥ (**कूप्या**) रीधे भाटी राव अर्ब दकर लु अये रीधे भाटी राव को  
 ड-देडगाथपे गंधे० क्रीड दोय भाटां दिधी सात क्रीड दक साथ तिका पिरा। विप्रां  
 लिधी कीट सक दूजा कवि कवि कवित दूम उच्चरे सता दान भाटी विना कौन भूप  
 दूजा करे ॥ २ ॥ कई गांम शांस्त व पटे दिये तथा मुतफर्क दान दिया सो कहांतक  
 लिखा जाव को कि झरझर कंथा वरस कूपा के बाद स द्रव्य चाहै जितना हो सक्ता  
 था ॥ १२१ वर्ष राज्य किया बाद शिकार गये थे कोम चन्ह के कटक से सापली में

मुकाबिला हुआ १४० भाटी वराव मालदे जी भाला साय सं १०३० मिघर सुदि स्वर्ग पधारि ॥ राजगारी मंधजी बैठे और खर्ब राज किया यहां ज्यादा वर्ष गुजरने का खयाल हुआ और तलाश करी तो सुना गया कि नोगी राज का वरदान था - तथा १ पोथी में संवत् जैशल नी तक पीढ़ीयों में कम बेश भी लिखा है सिवाय इसके यह भी करीन क्या स है कि देव राज के पाटवी कुवर छै नाजी था शयाद मंध छैने का पोता होगा कि हकदार वाजिब गारी बैठने से बेटा हुआ तथा इसी जमाने में नंद अनंद के सम्बत् का फर्क ९९ बाहु वर्ष का प्रथी राज रासे में लिखा है न्युं- होगा खैर क्यों ही हो यहां तो श्री दरवार की पोथी मुजब लिखा है ॥

१११ महारावल श्री मंधजी सं १०३० जुद्धवे

१ पुवार	हंसावती	राव गजराजी		१ बाळुजी	
२ सोनगारी		राव बिसलजी	गढ जालो		
३ चावडी	राजकुं०	राव भांगासी	पाटरा		
४ सोलखणी	शिशैकुं०	राजा साजन		१ राजपाल के वंश	
५ सोदी	बिलेकुं०	रागा म्हेरावरा		कालोहा बुध	
६ सीसोदराजी	रामकुं०	रागा अडसीजी	गढ चीतोड	पहोड	
७ चौहान	मालपाकुं०	राव मांरा			
८ पुवार	रंगकुं०		गढ जूना		
९ गेलोत		राव कल्याण	खेड		
१० पुवार	हैमकुं०	राव धारुजी			

१ मलपुर पोतमदास २ हमीर जीटावरी

अब लयनों पर चडे १८०० की मार कर वैर लिया कई भाटी खेत रहे बहुत सा वित- लाये पीछे राज बैठे । राव मालदे के बेटे हमीर को सब नरह से लायक राज काजा के

समझा परन्तु दूर अदेशी से मुन्हासिबजान कार दीवान मसल पुरुषोत्तम दास की वे  
टी परनाय म हाजन महेसरी याने टावरी मुंता किया और बचन दिया चलके त  
लाक करी कि भाटी के राज मे दीवान तेरी ही ओलाद का होगा जब से मुखतयार  
तो थार वगैरे औली हुये लेकिन दीवान तो टावरी ही रहा नाम हरी पीडी के नकरी  
में लिखे है बाकी हाल अलहदा लिखवाया मगर अब बहर हाल आयंदः को उमेद  
नहीं है तथा हमीरजी ने खुर्दयाले में लारव रुपये की हूल दी पैदा करी जिस से कोट  
वरखडीन का नाम लारवी रागा हुआ तथा मल की ओलाद के ४० पर मखव कोटारी  
हैं और अब से बाजे राज की नोकरी में तवेला बहूमतों पर रहे हैं ॥ सिंध में नाले  
पर मुंथ कोट बनाया कई शतों बाद अमोरो सिंध ने ले कर उछड का कोट किया  
सो हिनेज़ है ॥ यहां हाकम व्यास था कोट खोय आया जब देश पार किया सो मेड़ ते  
जार हा ॥ × ॥

११२ महारावल श्री बाकुजी सं० १११३ ख्रिस्ते

१	सेलखरी	राजकुंवर	राजा क्तभसेन	पारगा	१	दुसाज	१	सूरजकुंभाटचौखंड
२	पुंवार	कवलवती	राजा नौधरा		२	(सिंह राव का सिंह राव)	२	राजकुं०
३	चोहान	हंसकुं०	राजा भैरूजी	अस्तमेर	३	बैराव का पाहु		
४	पडेहार	जामकुं०	राणा बीरसलेही	महोर	४	इराध का राणा		
५	देवडी	पवेकुं०	रावनाडजी	सीरोही	५	सूलपसाकामू		
६	सोटी	विलैकुं०	राणा नरदेजी	अमर्कोट		लेपसा		

बाकुटी नामी कोट बनाया था जिस्का निशान प्राहागद से पश्चिम ४ कोस पर  
मौजूद है ॥ कई छोडे सौदागर से खरीदे उसके कहने से कुंवर दुसाज व इराध  
नगर थेटे जा कर गाजीखान बलोचको जीवहादुरी में इका था माके १४० छोड़ी  
और की लासे ॥ फेरगाम बहेडै के राजा जइ की नौ सौ खीचीयो समेत मार -

बिक्रमपुर के जैतुंगा का बैर लिया और शहर लूट बहुत सा वित्त लाया ॥  
 दुसाज इराधा सिंह राव तीनो भाई खेड के राजा प्रताप सिंह गोयल  
 के परने ॥ सिंह राव के नाम से कस्बा सिंह राव जो रोहोडी से ८ कोस है आ-  
 वाद कर मण परगने बकार याने गाम २४ सदर यहाँ को खैरात में दिया सो हिने  
 ज उन्हों के पास है । तथा सिंह राव के पुत्र सचेराव का वेटा भालेराव के वेटे  
 रत्ना बगज हथ ने मंडोर के पडेहार जगन्नाथ कोमार सांठा वंगौरा बहुत सा  
 माल ले आये ॥ कुवर वपैराव के पुत्र पाहू व मांडरा और पाहू के सोढल  
 का बीमसी तलपसी को महारावल कालरा ने देश पार कीये सो सीरीही  
 गरा वहां बीमसी पहाड में जोगी राज से पौर सापाय पीछा आय बिक्रम  
 पुर से फोज लेकर चढे सोरखोखरो से खार बारा मस १४० गाभी के बजोईयों  
 से मुल्क लिया तादिव्य जाल जो पूगल से ८ कोस है हद कायम कर रहवास  
 किया जव से वह देश पाहू बेश कहलाया ॥ तथा पबेराव ने प्र० रामगढ में ब-  
 पडासर नामी तालाब बहुत भारी बनाया सो मौजूद है ॥ पंडां बाबु जी ब्राह्मणों  
 की फरयाद पर चढे सो खाडाल में करीम खां को मस ५०० बलीचों के मारे दोसो  
 भाटी रखे रहे फतै पाई ॥

११३ महारावल श्री दुसाज जी सं० ११५५ लुद्रवे

१	सीसोदगी		खलकराजी	डुंगरपुर	१	जैसलजी	१	मानकुं०	अ म र ५
२	गोयल	लषमादे	रावजैतसी	खेड					
३	चौहान	राजकुं०	रावजैसिंह	सौंभर	२	बिजेरावजीपाट			
४	तुवर	मानकुं०	राजामुदपति	दिहली	३	पवोजीकापवा	२	सतूकुं०	
५	दईपांगी		कराजी	देरावर	४	पहोडजी			
६	चावडी		रावजैतसी						
७	सोढी								
८	रांगावत		रांगामोकलजी	मालवे					



सोदादेश लूरेया पिंडांजाकर गांमभुहडी पास ठा० दुमीरको ७०० सोदासहित  
स्वर्ग भेजे ॥ जोगी राज की कृपा वणह सोढलकी सत्ताह से छोटे कुं० विजेराव को राज  
दिया जब बड़ा कुंवर जैसलजी गजनी के साहू अलाउरीन गौरी के भाई शहाबुदी  
न पास नगर थटे जारहे ॥

११५ महारावल श्रीलांझो विजेरावजी सं० ११७५- लुद्रवे

१ पुवार	रामकु-राजा तिलोक	धारनगर	१ भोजदे पाट	१ लाकूरीनोरा
	वर-चन्द		२ रदाबमी कारहाउ के भूपतका	२ लांग
२ सोदादणी सिक्कु	गजलकर्णसम	गढचीतोह	३ राजा वैभेजलेहराजको २० वी	३ तकी शक्तिवों
	सीजी पोत		४ कानेर में छोटे कर्ण स्वयं २० सिंघ	४ के समान भेजा
३ चौहान	गंरागाजालगा	वीव	५ गांवरोसह की नो २० तरे पुरसे १॥	५ वेंथो मकरिन
	सीजी		६ कोमरदे जमीरा राहा मेहरद धरै	६ भोजदे जीवी
४ न्याबही	रावलुरानी		७ हटे जी का हटा	७ डे गये जब आ
५ सोलप	राजा सिंचजै	अनहलपुर	८ मंगलनी का मंगलीया कोयलकी	८ मरियो कि नि
णी	सिंहजी	पटगा	९ लमीन में कोट नाना १० पजरुं	९ पशहोखु बह
			१० सब सहा गढ है परवसा	१० मई आकाश में
			११ भोवरा भीया भीदी	

धार के राजा तिलोक सिंह की पुत्री परन्यां वहां सीसो दिया रागाजी व सोलंखी  
जै सिंह का कुं० जैपाल भी परनीजन आय वे रागौजी की झारि में कपूरिया जल  
पर नोरव चोरव होने से कई मन कपूर बाकडीयों में डचाया व अपार द्रव्य रत्न  
ने से जांभा कहाया ॥ और पाचवां बिवाह पाटगा सिद्धराज जै सिंह सोलंखी  
की पुत्री से हुआ जब सोलंखीयों पुवारों सीसो दीयों वगैरे ने बादशाह के खौफ  
से उत्तर भड किवाड कहा सो बिडन्द हनोज है ॥ मौजे शिरवे के पास बिजडा सर  
नामी तालाब व शिव का मंदिर सहस्रलिंग बनाय बड़ा जिग वदान किया ज  
ब दोहा कहा ज्योंही है दोहा यह सह दालै पांखती भूप अने डग भाल

आयो धरणी बंधायसी किजड़ा सररी पाल ॥१॥ कुंवर मंगल राव का मंग  
लीया मुसलमान हुआ दोहा तेसुं वैडो सुंमरा लांझो विजैराव । मागरा  
ऊपर हथड़ा वैरी ऊपर घाव ॥१॥

११५ महारावल श्री भोजदे जी सं० १२०४ लुद्रवे

१ सोलारवाणी	विलैकुं०	राजागहलदेव	गढपादरा	कुंवर नही हुआ				५
२ सोढी	श्रुमकुं०	राणा जाम						
३ चौहान		राजा विजैपाल	नीमराणा					

नगर थरे से शहाबुदीन की फौज मजूर खान व करीम खान साथ गुजरात में सो  
लखियों वगैरे पक्षाती से उत्तर भड किवाड के लिहाज से वनांनशों के बचाव के  
लिये लड़ाई करी जोगी के बचनां व बारू राज लाऊ वलांग के आप के बार स-  
७०० लोक साथ शाका करके भोजदे जुझार हुए सो हनीज पूजीजै है बहुत यव  
न व मजूर खां भी फोत हुए श्रीजैसलजी फौज साथ थे सो राज बैठे जब शहर की  
चूट फौज से पीछे ली सोरठा गौरी शहाबुदीन भिडीया रावल भोजदे ।  
जाम उमर रावलीन वगैरे सैन व लुद्रपुर ॥१॥

११६ महारावलजी श्रीजैसलजी सं० १२०५ लुद्रपुर पदरा

१ सोढी		राणा हंशराज	पारकर	१ कालराजी पाखीवा	१ सामकुं०			८
२ पडेहार	उदैकुं०	राव भंरा	गढनांगोद	पर पाहु बीर्मसी- तलपसीने छोड़े कुश				
३ चौहान	विलैकुं०	राव चनड	नीमराणा	२ शालिवाहरा की				
४ बाघेली	जामकुं०	राव नोधरा	गढपादा	पाटवैठाया				
५ पुवार		राव धारुजी						

सं० १२१२ आंवरा शुदि १२ लुद्रवे से ४ कोस पूर्व गोरहरे पहाड पर गढ की नींव  
दी जिससे गोरहरा और सं० १२१९ में राजधानी करी जैसलराजा का नाम मेरा

कहै है पहाड़ को सो जे सल मेर वतीन खूणो पहाड़ के वाइस तिरवूणा कीट व  
 नकुटाचल वनकुटगढ भी नाम है ॥ गढ लुट्टवा तीन दिन में दूरा था जिससे भा  
 रि गढ बनाता वानिय जानकर दुंगरी मोलासर पर कामजारी किया था जव ब्राह्मन  
 इसाने जो १२० वर्ष की उमर व विद्या में भी ब्रह्म था ॥  
 यह जगा बताई कि श्री कृष्णचंद्र व अर्जुन ब्रह्मा के जिग ब्रह्मकुंडों पर-  
 आस जव दस पहाड़ी पर आकर चक्र से जेसल नामी कूचा किया सो हिनोजे है ॥  
 तथा पत्थर पर दोहा लिखा कि ॥ जेसल नामा भूपती यखुबंशी दूक थाय । कोई  
 काले अंतरे सख रहेसी आय ॥ १॥ दिखाकर कहा कि श्री कृष्णचंद्र के बचन  
 हैं कि यहाराज अन्तर हैगा जेसलजी बहुत खुश हुए दूसा को गढ से पश्चिम आध  
 कोस पर जमीन दीवी थी सो ईसा कह ही है ॥ चानीया व बलोच भारी करकले  
 देखलूने को गाम खूहड़ी आये की खबर होता ही पिंडां पपारे कटक के मांझी-  
 पगौरे को मारे और दूसरी डोरी २ कहने व मुंह में घास लेने से चन्दा वचे ॥ जेसल  
 सर तालाब बनाया ॥

११० महारावलजी श्री शाखिवाहनजी संवत् १२२५ गजेसल मेर

१ सोढी	विलेकुं	राणा नागदर	अमरकोट	१ वीजलदेपाट			
२ चावडी	उदेकुं	रावनाझाणी	गुजरात	२ वांदरजीका वांदरणाव			
३ राठोड	भाराकुं	रावचूखड		३ दसराजवांवांगन			
४ सीसीदणी	राजकुं	सूरणाजिहि	गढचीतोड	४ सोरलजीका गोफल			
५ बाघेली	सर्जकुं	रावकुंवाजी	गढपीणोस	५ पासवांशिवांवांगन			
६ देवडी		रावगुरगामी	यदसोरी	६ मानजनीका महाजल			

श्री शाखिवाहनजी

१२५० ई. में हमने भा किलेक अन्दर देखा था ॥ वन्दु मरम्मत गुटदखडी सहीदरखी गुलनागानर अन्तर-  
 \* याने जेसल नामी सगराजना याद वन्नी खान्दान का होग कुट्ट धरसे के बाद पहा आकर रहे गा ॥ म. सु. अ. हो.  
 २ वही का पला जो पजाव में बांटे है ॥ म. सु. अ. हो.

१२५० ई. में हमने भा किलेक अन्दर देखा था ॥ वन्दु मरम्मत गुटदखडी सहीदरखी गुलनागानर अन्तर-  
 \* याने जेसल नामी सगराजना याद वन्नी खान्दान का होग कुट्ट धरसे के बाद पहा आकर रहे गा ॥ म. सु. अ. हो.  
 २ वही का पला जो पजाव में बांटे है ॥ म. सु. अ. हो.

छोटे कुं० चंद्र का कपूर थले राज कोम शिष्य है श्री दरबार साहिबों को कुजुर्ग  
 समझ कर ऐसा ही बरतावर करते हैं टीका नूता सोगात वकील वगैरे जाना  
 जाना बखूबी जारी है सं० १९१५ मन १०५० ईस्वी के ग़दर में सरकार दौलत  
 मदार अंगरेजी की खैर खादी व मदद दिलो जान से करी कि सरकार ने महरबानी  
 व कदरदानी से फ़रज़िंदरवास का ख़िताब व तग़मा और २० लाख नऊ में करील  
 ख का मुल्क इनायत किया चंद्र से आज पर्यन्त गादी धरों के नाम अलग लिखे हैं  
 पांच में कुं० हंसराज का बेटा मतरूप नायरा के राजा बहुराज की गोद गया सोमसे  
 में फ़ोत हुआ कुंवराणी हामला थी पलास के पेड़ नीचे पुत्र पैदा हुआ सोगादी  
 बैठा जिस से पलासिया भाटी पहाड़ी राजा वाने हैं बाकी नस्ब नामा बहां हो गा  
 जालोर के सोनगरे से जुद्ध जीते और चोखले के काठी जगभान को बफ़ात  
 दे बहुत सा वित्त लाये गाम डाभले से पश्चिम १ कोस पर तलाब व ऊपर टकाना  
 बनाय बहुत सा दान किया ७ गाम उदगदिस । और मुना है कि गाम को दंडे  
 काठा कुर बुध भाटी चंद्रा मुल्क लूटता था रेड में राठेड रायपाल ने कैद किया  
 याने रोहोडीया इसी अरसे में वरसडे मावल की बेटी श्रीमाने चारन से सादी की  
 तलाक़ रवाई जब रायपाल ने अपनी बेटी करके धोखे से चंदे को परनाथ रोहो  
 डीया चारन किया उसकी औलाद का राठोडों का पार बारट रोहोडीया मशहूर है  
 इसका बदला लिया कि तालाब की प्रतिष्ठा पर एक राठोड को बहुत सा द्रव्य देके  
 अपना रोली डगा के जो मथुरा जी से साथ है शामिल किया । बली चरिवदर खान  
 से खाडाल में जुद्ध हुआ रिवदर खान घायल व ५०० बली चरिवदर है व ३६०  
 लोक साथ पिंडां स्वर्ग पधारे । कुं० विभल दे पाट वैठ बाद दो माह के धभाने बूक  
 किया जब जेसलजी का बड़ा कुं० कालराजी राज बिराजे ॥

॥ याने सरमार नाहन जो जिते कांगरे में है और उन दिनों वहां के महाराजा श्री शम्भेर प्रकाश साहब जी० सी० एस० अर्ज  
 है ॥ सुहम्मर मुराद अली होधियार अफी अनरू ॥ याने मारकर ॥ म० मु० अ० हो ॥

## ११८ महारावलजी श्री कालराजी सम्बत १२४७

१ वाघेली	भाराकुं	राव हंराज	गदपराव	१ चाचगदेजी पाद	१ रिंगाकुं राम
२ चौहान	सोनकुं	राव धारुजी		२ पालगा केन सोडनी क	पुर
				मल पूजा से शिव प्रपाणे	
				बः पुत्र वसक पीडी गनु-	
३ सीसोदगी	सजवकुं	राव प्रभुस	गदची-	का वरदान दिया ॥ दुहे-	
		जी ॥	लोड-	पति वाकसी ॥ राजा मिया	
				॥ मोगिया ॥ योगिया ॥ प-	
४ सोदी	रत्नकुं	गंगासासल	भमाकोट	सकनी नपन दास ॥ इत-	२ गंगाकुं चंद्र
				न्याहो वयकाज सर मर	वत
५ गोयल		राव जैनमाल	खेड-	हरे-	कुं
				३ जैचन्द के एक सूरगाका	नाया
				जैचन्द हे दूरे कर्म तो के	
				लास का हा हरे के दो मात	
				कम तो - गम तो का सी हरे	
६ चावडी	सूरकुं	राव दूधानो	भाद्राचौ	४ राव राव का भया काम	
				पियम	
				५ चंद	

शालिवाहाराजी के बैर लेने की सलाह करी सो मुनकर माये लै से रिवदरवान ५००  
कटक से चढ सास खाडाल का बिल्ली या जब काल राजी बहुत फौज ले चढे - सो  
रिवदरवान को मस ५०५ बलोन्को को मारे और ९०० घायल किये २०० भारी काम  
आस परन्तु बित कुडाय पर बाडो जीत बहुत सा धोडा पडगल ले फतेकांड का क्ता  
ने पीछे पधारे

## ११९ महारावलजी श्री चाचगदेजी सं० १२६४

१ गोयल		राव हदफ	खेड	३ तेजजी कुवा पदे रहलत पर	१ राजकुं
२ सीसोदगी	हंशकुं	रावल पूजा	इगारपुर	मार्द दो पुत्र दुष्ट सक जेतो	
३ हाडी	सूरकुं	राव सतरंगे	सांढलगर	दूजे कपाग पाद -	
४ सोदी	जामकुं	रागाहमीर		कुवराणी भम कोट नारही पो	
५ राठोड		राव तीडाजी	खेड	सो कार्य राज वेदाज व आकर	
				बटे से कहा कि कुंभो से मेरे पु-	
				दारावनी गो। मालम के पला	
				को पती कतो दे मा ला कुं। कि-	
				गा दो वैन नहीं दिया चायुनावे	
				मसाही किया	

रावद यह दही भाद्राज नही जो अब दला की मारवाड में हे ॥ महम्मद मुहंमद अली हो प्रियार ॥

सोठा वचांनिया वबलोच मुल्क लूटेया चुनाचे नगर थरे केरास्ते में भादिया-  
बुलाकीदासकामाल रुपये ५ लाख कालूटा जब फौज कर पिंडां पधारे १६००  
चांनिया वबलोच को मारकर माल मुर्द वरवर्च दंड में माल मवेशी पीछा लिया  
फेर अमर कोट के सोठे (१३००) को वफातदी वाकी ताबेदारी में हाजर हुस अर्ज  
करी किराठोडों ने गोयलों से खेड की नली बराव छाडा हम से भी अदावत रावते  
हैं फौरन वहां पहुंचे तो छाडा जी ने बसलाह कुं० तीखा जी फौज खर्च दे बेटी पर  
नाय मुलह करली। कुं० तेज का बड़ा बेटा जेतसी तो बादशाह की नौकरी में अहमद  
बाद गया और कर्ग अमर कोट से आकर राज बैठा ॥

१२० महारावल जी श्री करन जी सं० १२९६

१	सोठी	हंश कुं०	महपाल	पारकर	१	लखगासैन जी पाट	१	भान कुं० नर वाके राजा	भारंगी
२	पडेहार	कंवलावती	गरगा दुजा						
३	गठोड		राव छाडा	खेड					
४	वाघेली	केसव कुं०	राजा हैगंवा- जी	गरवांधे				२	
५	भाली		भगवानदास		२	सतगंदे कालूरास		कछवाया	
६	चौहान		राव धारू जी						

नागोर वाटी के बाराह भगवती प्रसाद पर मुजाफर खान सूबेदार ने जुल्म किया  
कि जब रन उनकी बेटी पर न्या वदेश से निकाला सो यहां आया जब पनाह दी और  
पिंडां पधारकर मुजाफर खां को मारा ५०० पठान १३०० भाटी काम आये शहर  
नागोर लूटा और भगवती प्रसाद वगैरे वाराहों को पीछा आबाद कर उसकी  
छोटी बेटी पर नीज पीछे पधारे ॥

१२१ महारावलजी श्री लखारामसैनजी सं० १३२९									
१ सोदी	सुगणदे	राणादेसल	अमरकोट	१ पुनपालजी	पार				
२ चौहान	प्रेमकुं	राणादेसल	बाव	२ कल्याणराज					
३ सोनपरी		एवकांडदे	जालोर	३					
४ सोदी				४					
५ से				५					
६ से				६					
७ से				७					

काकलुद्र जानते थे गहजालोर के कांनडे कोराणी वकुं के नहर से (२) पहर के बायदे ओदी भेजके बचाया । श्री स्वांगीयो जी के आग्रह से सांनिये हेवराणी सोदी के बसी होने से सोदे ही सोदे पासर हते थे वेईमानों ने श्रीजी को चूक करके सोदीजी से कहा कि तांहे मारियों में चायै जेनां राजदे सोदीजी हिकमत अस्ली से बीसों सोदों को बुला के १ महल में बंधविये और भाटीयों को श्रीजी की लास देखा कर कहा कि एक सोदा सकर गधा बांधके कोटडी के कुवा में डालो खुनाचे ससाही किया ॥ २॥

१२२ महारावलजी श्री पुनपालजी सं० १३३१									
१ पडेहार	पैपकुं	राणादेराज	बेलवा	१ लखमसी के	राणादे				
२		जी		२ भोजदेजी का	पूगलीया				
३ देवडी	जामकुं		सीरोही	३ परदेजी का	चरडा				
४				४ सुगणदेजी का	लूगाराव				
५				५ राणाधीजी का	राणाधी				
६				६ राणादेजी के	कुंयार तेजजी का				
७				७	विये जेतसी जी राज देवा ॥				



राजनीत नही चल गे से सीहड़ बिकमसी ने जैत सी जी को अहमदाबाद से बुलाय राज दिया और पुन पाल जी किसी गांम में जारहे ॥ फेर कुं लखमसी का बेरा रांरा गढ़ आली हिम्मत दूरा जमीयत कर चढे सो गढ़ मरोट जोईयों से व पूगल भीलों से व मुंमरा बाहरालेकर रावबरा बैठे दूजे बुंवों की औलाद के दू० बीकानेर में हैं तथा राव रांरा गढ़ के कु० सादे जी-कड़ा ही बहादुर हुआ मुफ़्फ़िसल हाल अलहदा इतिहास में लिखा है ॥

१२३ महारावल जी जैत सी जी सं० ११३२

१	सोढी	राम कुं०	गुंराग सोभन	पाकर	१	मूलराज जी पाट			
२	रांरोड	फूल कुं०	रावती दीजी	खेड	२	रतन सी का कुं० चढ सी			
३	सोलषणी	सिगागा	राव देपाल	पोखंदर		जी तो पाट बैठे अरकानड			
४	चौहान		राव दूीवा	गढ़ पावा		देका कानड उनड			
५	सोढी					सत्ता की ता हमी सोगादे			
६	मे०					खां थं हर्द राव हाबूर वम			
७	मे०					ता वकाता वगी गदे व हमी			
८	बार्ड		राव शिव नारायण			रां में है ॥			

सामोराजी

राज याने हुकूमत कु० मूलराज व रतन सी करते थे नाम राखने के लिये मुल्कों में छाडा पडने लगे बादशाह की ५५० खचरों पर मोहरे नगर थरे से मुलतान व मा जी साहिबा मक्के जाती को लूटली जब सं० ३९ में फी-रोज़ शाह रिवल जी की फौजे १५ लाख नवाब महबूब खां दिल्ली से - और करीम खां अली खां मुलतान से छे आये १२ साल लडे मूलराज का कु० धनु राज फौज पर धावा मारता वरसद पाड चारहा सं० ४९ में जैत सी जी मरे



गरमें ही दाग हुआ दूसर मानने में प्रधान वसरदार जैचन्द गहलू जै  
 तुंग पाहु अणकमल सीहड़ तथा जसोड आसकन वगैरे बड़े ही अक  
 लमंद वसरवीर थे आसकन कारमुखतारया मं० वकारका रु २५०००  
 उडाने की भूदी जुगली पर तिलो कसी ने मारना चाहा तो वसलाह श्री मूलराज  
 जी की माजी साहिबा आसकन नाराज हो कर ईडिस्जारा था सो हां आकर या  
 कामें शालि हुआ ॥

### ११५ महाराज जी श्री मूलराज जी सं० १३४९

१	नाथेली	रामकुं०	रावपावलजी	चराह	१	देवराजजी के कुं० ह	३	राजकुं०
						मोर कानो पुर्जन नाव		सामकुं०
२	चौहान	राजकुं०	यकुर के हरजी			दुमीरोत गौर दुनके		वगैरे जो कंबारी की
३	सोटी	जसकुं०	राणसतपादी	अमकौर	२	धनराजजी		रागोड साय
४	पडेहार	मूर्जकुं०	राणपावलजी	मंडोर	३	चतराजजी		घोष जो तवेदारी
५	ककुवादी	राजनेदे	रावकुत्साणा					सेपे शाका की सला
६	सोटी							होने पर शादी
७	से०							करी उन के हाथों
								सेकतल हुई ॥

वरय १॥ जें सामान हो चुका तो कारमुखतार सीहड़ बिकमसी ने मोती  
 दलाय सूणीयो के दूध में मिलाय गढ़ से फेंके फोला वाले खीर समझ निरास हो  
 पी के रवाने हुए थे भारी भीमदे ने ९ लघै से सुनाई में कहाया कि तोत है फौरन  
 लौट आये रतन सीजी नवाब महबूब खां से पधड़ी नदल आई थे हमेशा रात को  
 सलाह करते थे कुं० चंड सी वकानद का बाजू सो पासो दिल्ली ले गये मूलराज  
 का कुं० देवराज के पुत्र के हरचहमीर नानेरे मौजे कायरा में पडेहार रांरो रूपडे

पास थे सो बचे बाकी सब शाका में काम आये हज़ारों और ते क़तल करके  
 दूजे दिन मूलराज रतनसी बकावर भांवर प्रधान वगैरे कई हज़ार लोक  
 को सरया कर गढ़ से निकले अद्भुत जुद्ध में स्वर्ग गामी हुए नवाब करीम खां  
 जली खां वफोज़ शाही के लोग बेतादाद मरे वधायल हुए गढ़ में बादशाह  
 का थारा बैठा सोरठा शाह फ़ीरोज़ जलाल मूलरत्न जेशान गढ़ । शाके  
 को धकराल तेरह से रूका देने ॥ १॥ जसोड का वेटा दूदा को तिलोकसी  
 इस मन्शा से ले निकले थे कि फेर शाका करेंगे पारकर में बैठ कर रोडने लगे  
 रसद वका गज़ गढ़ में न जाने दिया जब पांच में बर्ष थारो वाले गढ़ छोड़ ग  
 ये की खबर १ फ़कीर जो नवाब के साथ था पोहकारा से बिछड़ा उनसे सुनते  
 ही गठोड जगमाल खेड़ से ००० गाड़े सामान के रवाना कर के पिंडा गांम भूः  
 पार वपडे में जो शहर से ५ कोस है देपारा टालने को रहा था और रतन आस  
 राव के इत्तला देने से दूदा व तिलोकसी पारकर से रवाना हो रस्ते में पाहू तोले  
 के पास बहुत सवार थे आधारा जेना कर साथ ले गढ़ में दाखिल हुये और  
 गाड़ा भी पहुंचा सामान ले के जगमाल को कह लाया कि आप जैसे गनायत  
 हो सो ऐसी मदद दें - गाड़ों वालों को पेटीये कागे हूं एक २ घोवा सहज  
 नीसेर २॥ होगा दिया जब से भूः वगैरे गांमों में इस तोल का माप मांगा  
 नाम से जारी है और भूः का बेघारा भी कहावत रह गई ॥ फेर जगमाल  
 भी आकर मिले और पीछे जाते गांम सांगड व ज़ोले च्या चारा वीठु के देग  
 ये सो सही रखे पर लैत लाल थे कई पुस्तों बाद महारावल भीम दिल्ली से  
 पीछा आकर तावा पत्र कर दिया ॥ तिलोकसी ने तोला को वफा तदी ॥  
 और रत्नसी ने रत्नसर तालाब शहर से १॥ कोस वास गथी के रास्ते में बनाया

१२५ महारावलजी श्रीदूंदोजी सं० १३५६					
१	सोटी		राणाबहरी	अमकोर	रत्नसीजैतसी
२					होतकाकुं० धर
३	मांगसीपांणी				सीजी राजगारी
४	राठोड-		रुक्मराजसी	सेतरावे	विराजे ॥
५					
६					
७	कर्मसोत			रवीवसर	
८					
९					
१०					
११					

जसवंतसिंघजी

नगर पटे के पहाड में कुंगरा बलोच जो देवया भारकर लखी घोड़ियों और शहर जालोर व सीरे ही लूट के बहुत सामान व गुजरात से ५००० भैंसां व पारन से बर्ग तथा हांशी हंसार व भटनेर से सांढां वगैरे माल लाये, अलाहाजुलकया सदिल्लीके नज्जदीक मौजै रेवाडी से बंधा पकड़ी अजमेरके थारोसे जुद्धजीत नागोर का देस लूट। और मुकाबिले में तिलोकसी ने कहीं पीठ नहीं दिखाई जो जो माल लाया दूंदेजीने फौर्न दातारी में दे दिया मुहा कि दूंदे तिलोकसी ने वहादुरी व दातारी में नाम किया ॥ दूंदेजीका शाला मौजै सेतरावे का राठोड हापा राजोतसे तिलोकसी चौसर खेलते हाथ में चूडे की चोल करी हापा नाराज हुय कराहसे सांढां ले गया पीछे से तिलोकसी गाम ओटीनीये पहुंचकर १४० राठोडो साथ हापे को मारा दूंदेजी नाराज हुआ कि शाकाका

वैरा पूरा करो जब तिलोकसीने मुल्कों में यहाँ तक लूट मचाई कि मुकाम-  
 अजमेर में एक गुजरी दूधलेकर बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के जाती  
 को लूटी और खासा घोड़ा लाया जिसपर नवाब कामालद्दीन खान ऊव मलक  
 काफर मरहटा बहुत फौजले आये कः साल लडने के बाद अर्जुन दुई कि अब  
 कालवी जुवार रही है याने गढ में रसद न रही जब रागी कर्म सोत के सिवा-  
 मात्र और तो हर कौम की को अगाड़ीरवाने कराय पीछे से ५५०० लोक साथ  
 शाका कर स्वर्ग पहुँचे यवन वेतादाद खेत रहे जसो डः उ सैने बड़ी बहादुरी  
 करी कि शिर पड़े बाद कई यवन मारे फेर गुली तो खनै से धडः पडन सो-  
 देवली बिला माथे की दरजी पूजै हैं रागीजी ने चार्गा हूँफे जी शाद से जो बरदा  
 र कवी सरया कहा कि रबी वसर से आप साथ आते कांचली देने का वचन लि-  
 याथा सो अब दो याने श्री दरबार का शिर लावो हूँफे जी ने नवाब से दूदे जी-  
 का शिर मांगा नवाब बोला सागी पहचान लो हूँफे जी कहा शिर बोले गा चुना  
 चे कि उदावने से मुंड हंसा दोहा सांदू हूँफे शेबीयो साहब दुस्सन सल।  
 बिडः दां माथो बोलीयो गीतां दूहा गल ॥१॥ माथो लाया जब रागी साहि-  
 बा सत्ती दुई और गढ में बादशाही दरबल हुआ ॥ सोरठा ॥ खिलजी-  
 अलाउद्दीन दुर्जन शाल तिलोकसी । शाको भारी कीन तेरे से अठमंठ  
 में ॥१॥ ऐसे ही दूसरां मुल्कों में भी बहुत जगह शाका किया गढचीतो  
 डः सं० १३३९ में सीसो दीया रागा गदलखमरासी बकुं रत्न सी आदिले  
 १३ पीढी झडी गढ पावे मुल्क गुजरात में पत्ते जी चौहान गढ आवू में  
 अडसी पुवार गढ जालोर में वीरमदे सोनगरे गढ पाटणा में अर्जन सो-  
 लखी गढ गागरा में अचलेखीची वगैरे २ ॥ दिल्ली से घडसी जी  
 दू केला भाटीयो से मिलने को जैसलमेर आते थे मंडावर से ९ नाई के साथ

होने से मौजे खेड के बाग में जाकर कुंजगमाल से मिले बाद मली नाथ जी पास कई महीना रहे खेड पर बादशाह की फौजें आई और लड़ाई हुई फौजें तो हार कर पीकी गई इसका हाल मुफसल बीरमारा में लिखा है -  
 घडसी जी जख्मों से अचेत था मली नाथ जी की बेटी विमलादे जो श्रीरोही परनायोड़ी यहां ही थी हम बगल करी तो चेत हुआ तब विमलादे ने अरज करी कि मैं तबेदार हो चुकी हूं घडसी जी कहीं में कुंवारा हूं जब जगमाल की पुत्री कमलादे सेशादीकर के विमलादे की भी रखली फेर मली नाथ जी को सलाह से दोनो राणियों को खेड में छोड़ी और जैन चंद के बेटे जूराग को दूबीकानेर से बरहाड़ कंगरा के बेटे पनराज को जेशल मेर से बुला कर साथ ले दिल्ली गए दोनों ही बरदाई आज्ञान बाहु जो धार तो थे ही किसमत की रूबी से गजनी बुखारे के बादशाह के दूकानों जीता वमस्त हाथी को जेब किया व कर्वागा जो करामात की थी चढ़ाकर लौड़ी और बादशाह की पकड़ गया जिस पर दिल्ली के बादशाह महरबान होकर गजनी का जैतवार खिखत दिया और कहा मांग तो घडसी जी ने माफ मांग कर जैसल मेर मिलने की अर्ज करी बादशाह ने फरमाया कि गुजरात वगैरे दूसरा मुल्क ले भूखल मेर में क्या है मगर घडसी जी ने कहा कि कुज्रगों का ही वत्त मिले जवनव महोरा फरमान वखिलत व दोरास छोड़े और की वफील जंझीर वतलवार कयार वगैरे अता किया सोले कर जेशल मेर से पूर्व को स १ मगरे परखेरा कर फरमान नवाब को भेजा नवाब बोला तीन हुकम आने से गढ़ मिलेगा एक शकुनी बोला कि आदमी भरव दिये काम सिद्ध होगा इतने में दिल्ली से बबर हुकम लाया कि गढ़ मत देना घडसी जी ने कागज लेकर बबरो की कबरे यहां ही करी सो बबर मंगरा मशहूर हुआ फेर नवाब के बेटे को कुंभारी के घर में पकड़ा जवनवाब ने

गढ तो खाली कर दिया पर बचन लिया कि बाइशाह नाराज हुआ तो मैं यहाँ आरहूँगा चुनाने नवाब पीछा आया जब कज़ीर का रिवाज नहवर कोट वनकारा वगैरे कुर्ब दे कर उमराव किया सो श्री अरवै सिंह जी के अहद तक तो आठ मिसलों में रहा मगर शक होने से हाकम भीरवा गया था श्री मूलरानजी के जमाने सं० १२२० में हाकम व्यास सत्तराव व कज़ीरों ने किल्ला दाचद पोत्रों याने बहावलपुर के नवाब को देना चाहा तो फलोधी का थानवी जैतसी ने कहा कि खर्च मैं दूँगा किल्ला मत दो परन्तु देही दिया जब से कोम कज़ीर सायकन रही नहवर-किशनगढ-मूरागढ नाचरो वरसलपुर वगैरे में कोटवाल कहलाते हैं और जैतसी को बुलाकर तरागत में बसाया फेर शहर में सगपरा कराय नौकरी में रखा जब से थानवी आज तक जी दुज्जत अहोरीं पर मौजूद हैं ॥

१२६ महारावल जी श्री घडसी जी सं० १३७३

१	गठोड	विमलादे	रावमलीनाथजी	खेड-	कुवर कही हुआ श्री मूलरानजी के कुं: देव राजका कुं: केहरजी राजवैठा ॥	गंगाधर
२	रो०	कमलादे	कु० जगमालजी	रो०		
३	वाधेली		रावधरहारजी			

शाका के समय मुल्क वीरान कर बहुत से कुंवे वतालाब बुराये तोड़ाये थे सो पीछा आबाद करने की पूरी २ कोशिश की पर आ जैसा नहुआ ॥ जसोड के वेटे पोते वगैरे भाटी फरंट रहे जिससे मली नाथजी के कु० कूया व जगपाल को जो श्री दरवार के साले थे खेड से बुलाकर पास रावे और कोटडा बबहाऊ मेर व गिराब मस परगने देकर आठ मिसलों में नगर बंध उमराव किये

व शहर में हवेली बनवा दी श्री दरवार के अदीठ पञ्चथा चार  
 राणी प्रकृति देवल ने मिटाया और कहा कि कुंमर की धार देरवो जहां  
 पाज बांध जो तो अरवै पुन्य वज्र मर नाम रहेगा तुनाचे घड सी सरता  
 लाव वराया वहां ज सोड तिभै के वेदे आस करन चूक किया सो शिर  
 गिरने बाद घोड़ा भगाय गढ में आगिरा जव दाग में रांगी कमलादे  
 वदो खवास सची हुई और रांगी विमलादे ने बड़ी हिम्मत व होशि  
 यारो करे कि ज सोड जाति का नाम भादीओं के भाय की यही से निक  
 लाया व तिभै की औलाद का गढ में रात न रहे की तलाक कराई ! और  
 गांस छांय रासे के हर को लडक पुने में जंगल में सोते पर सांपने कुत्र  
 किया था प्रतापी जानकर सबी सब बुलाकर राज बैठाया तथा सब  
 तरह राज का बन्दो बस्त करके छः महीने बाद तालाव की प्रतिष्ठा करा  
 य सती हुई सं० १३९२ में ॥ मुल्क दक्षिण का तो सालों को दिया  
 पूर्व ज सोडो दवाया कि शिकार ही नहीं लेने देते उत्तर जैतुंग महेपै  
 को कि जिसने विरवै में तन मन बधन से हाजरी करी थी भेजा कि दबा  
 सके सो तेरा है पश्चिम का लूराग व पन राज को देना न्याहा तो अर्जुन  
 हुई कि कुकुराज को भी रवैंगे या बस जव महेपे को तो लिखा कि ९  
 का गज पूगों पीछे अगाडी दवावे सो तेरा तुनाचे मोजे चतुसे आगे राख  
 सीये की सांढ पर सवार होकर वीठ नोक तक पहुँचे थे लूराग व पन  
 राज को कहा कि एक दिन में घोड़ा फेर ले बीच की जमीन तुमारी सो लू  
 राग तो गांस पारे वर के चौ को सी में रहा और पन राज ने ४० कोस के घेरे  
 में जो रहाड की मशहूर है लेली जव पुरांना गाम वालों ना खाल से रखा



## १२७ महारावलजी श्री केहरजी सं० १३१

१ सोरी	सूजकुं	गंगा नौधरा	१ सोम के तेरे पुत्रों का सोम हुआ	१ राजकुं० महाराणा ला
२ चौहान		गंगा अलसी पावा	१ रूपसी २ देवरज ३ रतना-	स्वामी की परनायाग
३			४ जेतमाल ५ भोजदे हजीवो	ची तोड
४			६ पर्वत ७ राजो ८ खेतसी ९	२ विजेकुं देवदे रावको
५			जेसो ११ महाजल १२ हरखो	परनायाग सी रोही
६			१३ बीर्मदे ॥	३ कल्याणकुं रेडके
७			२ लखमराजी पार	रावल जग माल को
८				परनाया
९				
१०			३ केलसा के २५ पुत्र मघ १३ का	
११			बंश चला जिस का हाल अस्ता	
१२			खिरवा ॥	
१३			४ कलकरा कि नैसे का जेसा भायी	
१४			मारवाड में उमराव गाम लवेरे-	
१५			वावडी वगैरे तथा सांवतसी के	
१६			रणीया व सांवतसी हुआ	
१७				
१८			५ सातल	
१९			६ विजो	
२०			७ तरा के गोपाल दे का गो	
२१			पाल दे दूजे राज पाल के ल	
२२			खरा पाल की र्ति सिंह साधार	
२३			८ तेजसी का तेजसी	
२४				
२५				
२६				
२७				
२८				
२९				
३०				
३१				

छोड़ा भारी हमीर के कुंभ जैतसी बलूरा कर्ण को पास रखा था मेवाड़ में  
 कुंभलमेर के रांगो कुंभ की बेदी से जैतसी की सगाई हुई सो परनी जरा-  
 जाते शकुनी साले के भमारो से नारी को ओत का लिबास कराय लाल  
 मेवाड़ी की खबर मंगाकर १ मन्जल शौली तर्फ बड़वर साय पीछा जा  
 ते गांम सूरजदे राव रांग गदे के प्रधान सारखले म्हे राज की बेदी परनी जै  
 यह खबर होने से रांगो जी तो बेदी की शादी गागरु रा के खीची अचले से  
 करी और पहां से श्री दरबार ने कंवरो को कहलाया कि मुंह मत देखा वो-  
 ज बा दो नो साले १ तो श्री रोही दे कड़ रावरत नसी व दूसरे सारखले आलिया  
 जै को सापले पूगल जा पराव रांग गदे से कहा कि १ कोय देगे ज्युं ही लेंगे-  
 दस पर तकारा हुई जैतसी बलूरा कर्ण व दो नो साले वगैरे ४ सो मनुष्य  
 दुतर्फे मर्गि गस रावजी काला ओढ़ तीर्थ न्हाय यहां आस श्री दरबार श्री  
 देगराज की के दर्शन को पधारे थे रावजी को गामरासलो में बैठाय आप  
 मात्मी को पधारे काला उतराय फरमाया कि कुवर आप ही के थे बेवकूफी  
 से मरे अन्देशा मत करो फेरने शलमेर लाय शरो पाव दे सीख दी जब पू-  
 गल गस सोरखला म्हे राज अलणिये के मरने वरावजी के दोखलां हां रो  
 विलाई धरागी मरै है से नाराज हुय राठोड़ अर्द्ध कमल पास जारहा ॥  
 कुंभ के लराजी राठोड़ मली नाथ जी की पुत्री परनी जै वहां साले जगमाल  
 से आपके बैन की सगाई करी श्री दरबार नाराज हुय जब लुट्टे में आव  
 कार के वेलराजी यहां से रवाने हुस सो शहर से १२ कोस पूर्व आषाणी  
 कोट की नीव दी फेर सिंगराव सातल महपालोत की सलाह से ७ सो स-  
 वार साथ मुल्क का बन्दोबस्त करने को गस सो गढ मस परगना कई तो  
 हुकम अदलो से और कई अज सरे नो कबड़े किये चुनाये अबल तो

विक्रमपुरमें दरबलकर बड़े भाई सोम को कोट की एक जगह गाँव गाधी ही  
 तथा पत्नी वालों का गाँव साथ था सो भोजा व बाप व गौरे कई गाँव बसाए  
 फेर खवर लागी कि रावरां रागंदे की सोदी मुलतान के नवाब को बुलाती है  
 जब हिकमत अमली से गढ़ पूगल में का बिज हुय सोदी को भीत में चुनाई  
 और सोदी सादी करने की तह्ना करी सो १८ पीछे बाद जूझार सिंह राव  
 विक्रमपुर व धनराज राव बसलपुर का परनीजे - कोट मरीच व खारवा  
 रा में पका अमल करके कोट नांनरा व मुंमरा बाहरा में थारा बैठा य  
 किले देगवर में दारिबल हुय दरीया व तक हदूद जो आगे थी कायम  
 करी पीछे कोट किरोहर व माथेला व मुंमरा बाहरा भीतावे किया तथा  
 गढ़ भरने दरबल में लेकर किसी कदर प्र० हिन्सार में भी अमल किया -  
 अलाहाजुल कायस कारर बाई का मुफ़्फ़िसल हाल प्रलाहदा इतिहास में  
 लिखा है ॥ ९ केलराजी के बहादुरी व अकबाल की खूबी कहाँ तक लि  
 खी जावे बाद शाही फ़रमान में राव किलजी लिखा है बड़े ही प्रतापी व  
 स्वाम धर्मी हुय केलराजी के छोटे भाई तरामजी का कुं० राजपाल वा  
 उम्मर साथ रहा उसको १ गढ़ देगा कहा था परन्तु दोनों स्वर्ग बासी हुय  
 केलराजी का बड़ा कुवर चान्चाजी राव हुआ सो भी बड़ा बहादुर था चुना  
 चे वज़ीर कालू से भारी जुद्ध जीता फेर राजपाल के बेटे किरत सिंह ने षोष  
 रों का घोड़ा ४ चुराय जो दूये लूगे को सो पाखोखरो का कट कालूगे का  
 ५० घोड़ा व बित्त ले गया जब चान्चे ने खोखरो के राव कालूथिर पालोत को  
 वफ़ात दी उसकी पुत्री किरत सिंह को परनाय मुल्क ले दी या फेर किरत सिंह  
 के बेटे पोते मौजे बूर क पूरथल सलेमपुर अर्द्ध कपुर वगैरे में रहे बाद शा  
 ह अकबर ने इन्हीं को तुरक किया तदपि कई पीढ़ी तक भाटी पैकी रीत

बरते था चाने दीवाली होली आरवा तीज दसरे को जैसलमेर की तरफ सलाम कर गाड़ी पर बैठे था । चाचाजी जैसलमेर हाज़र हुस श्री जी से सलाम कर रावपिंगो का शर पावले गया बाद जंझ बाघे की नाल सपर सहता से कुमक ले कर गदसा तलमेर के राठोड ब्रजंग के तीनों कुं वरो को पकड़ा कई राठोड मारे गये तथा ३ सौ चर साहू कारो के लेजा कर पूगल देरावर सुमरा बाहरा में बसास और ब्रजंग के तीनों पुत्रों को परधानों के परनाय पीछे सातलमेर भेजे । केलराजी के २४ पुत्रों में १३ कावंश चला और बड़े प्रतापी हुस केलरा बरसिष रवीया- कि सनावत वगैर खापो मश दूर दुर्द तथा वसलपुर विकमपुर वगिर राज सर ग्रांधी बांगडसर सिरडां बावडी वगैर बहुत से गाम जो २० हाज़ा में हैं प्रज्जे व नकशे में लिखे अलावे इस के २० वीकानेर पमार पाड में बहुत हैं । कुं विक्रमायत भी विकमपुर के राव बड़े ही दातार सूर्य पर इच्छी ववर दाई थे १ दिन तालाव पर इके लेख देये १ चारन दुपम- नों के सिरवाने से आकर कई छोडे मांगे कि इसी वक्त दे जब सूर्य का आण धन ज़िया तो १४० छोडे आमौजूद हुस जब १ साल का खर्च भी देकर सब छो- डे चारन को दे दिये

१२२० महारावलजी श्री लखमराजी सं. १४५१

१	सोदी	भीमकु	राणा राजपार	आमखोड	१	वैसीजीपार	१	राजकुं
२	बाघेदी	नर्वदे	रावजसपाल	सांगपुर	२	रावतहसीकारुपसीदसकेकुं	२	चंपाकुं
३	भाली		राजानेसख	हलवद	३	राजपरकारायध	३	मोतीकुं
४					४	सादलका परवत		
५					५	कुंभेका कुंभा		
६					६	आमएजी		
७								
८								

मुनिमिह

श्रीलक्ष्मी नाथजी का स्वरूप मेड़ते में जमीन से प्रगटे और सेवग से रापाल  
के गाडे पर यहां पधारे तब गढ़ में मंदिर बनाय सेवा महाजन महेसरीयो परखा  
नित खर्च का राज से मुकरि के अलावा न्यात में शादी गमी व जमीन के बिकाव  
वगैरे परलाग व मनोरथ भेट वगैरे का पैदा खर्च का भंडार वहिसाब का संभाल  
१२ ही से ठहरवते हैं परन्तु चंद साल से हिसाब नही हुआ हजारों रुपये लागों  
में है सो अब ससीत दबीर होगी कि पैदा बधै वहिसाब हर वक्त साफ रहे सो  
ही टीकमजी रगाछोडजी आदि का भी होगा - और पूजारा सेवक मजकूर के  
वंश का १० ही छुडा हर महीने बारी से करता है सं० १४९४ में प्रतिष्ठा याने  
भारी जग व बहुत दान पुन्य किया जब से राज का मालिक श्रीलक्ष्मी नाथजी व  
उनका दीवान महारावलजी है जैसे उदैपुर में रावल बापाजी से आदिले मालि  
क श्री इकलिंगजी और दीवान महाराजी । व्यास रामरिष देवरिष दि  
ल्ली से आस श्रीजी के अदीठ पञ्च मिठायां जब पुणेहित पैलाज की बेटी लखुवी  
रे की वैन वगडी से देवरिष का विवाह कर पाट व्यास कीया उसके ४ बेटों का  
वारीब २२०० घर है १ पोपे का जोधपुर शहर व इलाके में १००० व दूजे  
जूडे का बीकानेर ३२५ व तीजे नउं का यहां व देशावरे २०० व गंदा  
धर का इलाके किशनगढ़ में है नउं के परपोते हरखे व्यासार्द छोडी  
और भतीजा मधुवन काशी जी से विद्या पढ आया जब महारावल श्री  
अमर सिंह जी ने पाट व्यास किया उसकी औलाद के हनोज हैं ॥

१२९ महारावलजी श्री वैरसी जी सं० १४९६

१	सोसोदणी	अगरकुं	रावपूजाजी	मुंगरपुर	१	चाचोजी पाट	१	भाराकुं	श्री
२	सोटा	साजनकुं	राणा नोहर		२	ऊगेजी काकेलायचा			
३	राठोड	पेपकुं	राणा भोजराज	गुडे	३	मेलेजी का भेसडेच			
४	चावडी		राव देसल		४	वराणजी			
५	झाणा	राजकुं	राव अलसी	वठवाणा					
६	चाहान	सूजकुं	राणा भानराज	वाव					

मंडोर के राठोड राव रिड मलजी तो गढ़ चौतोड में मारे गए कुं जो धाजी  
भाग कर यहां आ रहे मंडोर में सी सोदियों का दरबल हुआ था यहां से फौज  
साथ देकर मंडोर ले दी जब जो धे जी कहा दोहा सुपहन बांगठ वैर सी पि-  
डः अरि देव यरा प्रबोध । राव मंडोवर राखियो जे सरगा गत जो ध ॥ १॥  
तवै कमध लाख मरा सुतन नरपति माह नरेश । निज ऊपर कर जो धने-  
दीध मंडोवर देश ॥ २॥ राशिओं के नाम से मंदिर सूर्य जी वरत्न स्वर महा  
देव जी का व कूवा बूली सर पर फुल वारा रागी सर गढ़ में बनाया ॥

१३० महारावलजी श्री चाचो जी सं १५०६

१	राठोड	रामा मैकु	शेखा जी	गढ़ ईडर	१	देवी दास जी पाट	१	पेम कुं
२	चौहान	विले कुं	राव जैत सिंह	मांडुल गढ़				
३	राठोड	रूप कुं	राव जोध जी	मंडोवर				
४	देव डी	विले कुं	राव सारि दास	सीरोही				
५								
६								
७								
८								
९								
१०								
११	सोडी	जाम कुं	राणा प्रियाग	यमार कोट				

राक्षसी

यमार कोट परजी जरा प्रधारे सोडा चूक किया दोसो आदी साथ पिंडां स्वर्ग सिंघार  
कुं देवी दास जी फौज कर गए राणा मांडरा मण सोडा ५ सो को मार वैर लिया और  
गढ़ पाड ईडां लाय महल दे राशर में ल गार पीछे राज वैदे और सोडा तो वेदारी में रा

## १३१ महारावलजी श्रीदेवीदासजी सं० १५१३

१	सीसोदणी हलकु०	गंगाकुंभाजी गढचीवेड	१ जैतसिंहजी पाट	१ पहेपकु०
२	सोढी सदाकु०	गंगासुजाराजी	२ घडसी	
३	झाली	गजाजोगीदास झालावाड	३ शातलका शातलोत	
४	चौहान दाडमदे	राव कांनड	४ पातल	
५	गोडं	राजा मालदे अजमेर	५ मदेकामदा	२ रामकु०
६	चौहान भांराकु०	गराजसवंतजी	६ राकरसीका राकरसोत	
७			७ गमुंकादेवीदासोतगाम	
८			सगाधरीमें	
९			८ दुदेका दूदा गामडा	
१०			चरी याने सोसेरी	
११			पर खेडनवकु वाथा	
१२				
१३				
१४				
१५				

सिवनदास

चानियावबलोचमुल्कखूरेया पिंडापधार १३०० कोवफातदीभागी प्रवाडो जीते । बाहडमेरोवकोडडीथोकोचशमनुमाईकरके महेचोसेदंडवडोला-  
लियावहांहीखबरलगीकिराठोडरावबीकाजी - पूगलकीजमीनमेंगढ  
चनातेहैं फौरनवहांपधारेवीकाजीतो भागगरगढमिसमारकर किवाड  
तोवग्गलपुरके दरबाजेमेंलगाया तुलांटयहांलाकरसदरसायरमेंरखी-  
वादपूगलरावजी श्रीदरबारकोतोघोरवादेतारहा किगढनहींहोनेदूगा-



मगर शक्ति करनी जीकी मरजीसे वीके जीको मना न किया जिससे ग  
र वीकानेर बन गया ॥

१२२ महारावलजी श्रीजैतसिंहजी सं० १२५३

१	बाहडमेरी	लाहडमेरी	रावत रतीजी	बाहडमेरी	१	कर्मसीजीदिन १५५१	१	मानकुं० श्री-
२	सोरी	सिरागा	वैसी	-	२	जवैदा	२	रोही राव मा-
३	राठोड	सूरजकुं०	रावत वंशीदा	इडर	३	लूगाकराजीपाट	३	लंदकोपना
४	भाली	जसकुं०	राजा भारा	नीवडी	४	नरसिंहदास	४	या -
५	चावडी	रामकुं०	रावसांवत	जसपुर	५	मैरावरा	५	वीरकुं०
६	हाडी	-	रावकांन्डरे	मांडलगढ	६	मुंडलीककाजैतसी	६	गोदास
७	-	-	-	-	७	मैराजका स०	७	-
८	-	-	-	-	८	वैरी सालक स०	८	-
९	-	-	-	-	९	प्रतापसिंहजीका स०	९	-
१०	-	-	-	-	१०	भांनीदासका स०	१०	-
११	-	-	-	-				

भाटे, सोटे बाहडमेरी सुल्क तोलूटे ही थे रावास कर रवरीगैमें नजैत शरसेकु  
जी काधोडाहीले गये तो भी दरबार नेकु न किया कुंवरजी नाराज दुखनव  
बगलीरवां पास रवं, धार गस और पगडी बदल भाई दुस दुस अरसेमें वीकानेर  
की फौज आई शहरसे ३ कोस त० राजबार्द पर कई दिन रही फेर गम सोम  
ले आई लूट कर पीकी गई १ दिन श्रीदरबार शिकार पधारे थे १ वहाला जह  
जी रांगा है बाहडमेरी रावत केताने पर सं० ७० में तलावकी बुनी याद डाली  
तजैत बंधवंधेका नाम दिया काम शुरू ही था कि पिंडां स्वर्ग पधारे कर्मसी  
जी गादी वैठे बाद दिन १५ के लूगाकर्न जी रवं धार से सोपठान साथ लाए

कर्मसी जीको उठाय आपराज विराजे पठान यहाँ रहे सो सिपाही ख न धारी  
मशहूर है ॥

१३३ महारावल जी श्री लूगा करणी जी सं० १५८६

१	राठोड	हंशकुं	गुव जैतमाल	गढ़रंडर	१	मालदेजी पार	३	रामकुं	जोधपुर
२	मोदी	जामकुं	राणाकुंभव		२	हीगली रासका रावल जोत		मालदेजीको पर	नाया -
३	गुठोडबी	अमृतकुं	लूगा करणी	वीकानेर	३	रायपालका रा	२	उदैपुर	महाराणा
४	भाली	सूरजकुं	राजाचंद्रसेन	वीकानेर	४	सूरजमलका रा		रदैसिंहजीको पर	
५	सीमोद	शरसकुं	महाराणा सां	गढ़चीतोड	५	रायमलका रा		नाया	
६			गाजी		६	दुर्जनशालका रा	३	ऊंमांदे	जोधपुर
७					७	शिवदासका रा		महाराज मालदेजी	
८					८	दूरोजीका दूदा		को परनाया	महा
९					९	दरदासजी		राजकरीम तो भा	
१०								रमली के वास्ते	
११								आए थे जिस से	
१२								महाराज साथ न	
								ही गई नाना गो	
								गढ़चीतोड जाबेडी	
								सो महाराज फौत हुआ	
								जब शती हुई	

भाटी सरदार सायर के रुपये वांट लेते थे सो रुजगार कर के सायर में आना ही  
बंद किया । जैत बंधतार हुआ परन्तु केत बनारहा जब गढ़ में कोठार भव  
राडावडग खीरसर वीरसर विलावल अंन पूरणी मेडी बगैरे बड़े ही नामी  
बनास । गुरु पलीवाल हरजाल था इस वक्त पुरोहित खेतसी खेतपाल  
के दृष्ट से बेदी के नीचे गधे का मुंड बता नै से पुरोहित गुरु हुआ सो है ई  
प्रतिष्ठा का मुल्कों में द्रष्टित हार भेजा कि जो जो हिन्दु जमाने की गर्दस से  
मुसलमान हुआ है इस जिगपर आवेंगे हिन्दु कर लिये जावेंगे चुनाचे गोसाही

हुआ और बाहर मेरे से रावत जी हाथों में अग्नियों डाल कर हाज़िर हुआ श्री  
 दरबार ने फ़रमाया कि अदेशामत करो तुम्हारे ताने से यह भारी काम तुरत-  
 बन गया । बंध के दूसरी तरफ़ बाग़ लगाया सो बड़ा बाग़ बड़ा की हीजे है बंध  
 के नीचे रामाल नामी नाला में ज्योदे वारि शसे पानी भांवर खाय गिरने की अजब  
 कै फ़ियत होती है और ज्यादे वर्षा की सिफ़त है कि बाढ़ी भवरीये आई परन्तु  
 बाढ़ी क्वाहूत है कि बंध का पत्थर अन्न बड के कारा पानी निकल जाता है सो-  
 रो कने को अगाड़ी दूसरा बंध घडे पत्थरों का बंधा था परन्तु नरुका अब गौर कारे  
 से मालूम हुआ कि दोनो बंधों के बीच में पत्थर भरे हैं सो निकाल कर बीच में या  
 अगाड़ी मिट्टी भरा दी जावे जब रुकेगा तो जे बायश के सिवाय बाग़ बड़ा हीयों के  
 कूवों में पानी ज्योदे रहने से बड़ा फ़ायदा राजव मालीयों वगैरे का होगा इसकी  
 लागत भी कुछ ५ छः हजार रुपये तक है जिस्मे तालाब बहुत खुदेगा व बाग़  
 भी मिट्टी गिरने से बंध जावेगा सं० १९४१ में इसकी तजवीज भी करी थी परं  
 कहत साली यांने नही होने दी रामनाल की हवा सरद्व बाग़ की सब जी आबू  
 जी से भी बढ कर है मगर जगह बहुत तंग है इस बाग़ का आव जोधपुर महाराज  
 मालदे जी कार गये थे बदल लेने पूगल राव जे सिंह जी को भेजे सो मंडोर के बाग़  
 में ३ दिन रहे फेर हर पेड के नीचे तो १ कुल्हाड़ा और ऊपर १ कपड़ा रख कर  
 चले आये गात है कि बाढ़ी या नही ब्रह्म वैरावत ओढ़ा डे की धो रुपगार तथा  
 कोठार से से है कि जोधपुर महाराज श्री तरवत सिंह जी साहिबों भी देख कर  
 फ़रमाया कि ऐसो किल्ला व कोठार दूसरी रियास्तों में नही है सं० १६७७  
 में नवाब अली रवां जो श्री दरबार के पगड़ी बदल भाई थे खंधार कूटने से यहां आ-  
 य किशन घाट रहे और कहा कि नुरमो रानी साहिबां से मिलना चाहती हैं दरबार  
 ने कहा अच्छा जब महाराज गढ़ में आई तो दगाथा फौरन रागीयों क़तल की गई

और कई अधर्मीयों को मारकर श्री दरबार हो सो भायो हो सो खंधारो १ सो  
 दूसरे लोग चारों भाट पुरोहित कामदार वगैरे साथ स्वर्ग पधारो इस असे में  
 कुंमाल दे जी बाग से आये नवाब को मारे बांका लोग जो बचे थे किले से निकाल  
 दिये ॥ गीत ॥ अली बिना कुशा दुंग आंग में माल बिना किय म अली मरे ॥  
 यह शाका आधा हुआ कहते हैं कि इस गढ में साढा तीन शाका होगा जिसमें  
 १ मूल राज रत्न सीका दूजा दूजे तिलो कसीका और आधा यह हुआ १ फेर  
 जानी जाने कब होगा पुरानी सारवी है किः हल चल दुनी हे कंप ह्य हो सी-  
 दई का फेर वाधो रुधो जावसी जादवां जै सल मेर ११ ऐसे ही सारवी थी कि ॥  
 आथुगा उ उगुगो पांचे को से गांव । औ पालटे औ मंडे सो जे सान गढ नांव ॥  
 ३॥ सो तो मिली ज्यों ही सिंध की सारवी मिली ॥ के काश के कहरा उ भर दै दै  
 जहें लड़े सिंध डी तो खो भूग भेरींदा ॥ तथा शहर मुल्तान की सारवी है कि  
 ॥ हंसपुर जगपुर सोमपुर चौथा पुर मुल्तान । बल्लभ जते घडे सी आरापुर  
 मुल्तान ॥ अब कहते हैं कि ॥ आथुगा उ उगुगो पांचे को से गांव । पालटे  
 ओ मंडे जैरो औ लापत नांव ॥

१३४ महारावलजी श्री मालदेजी संवत १६०७

१	वाहडु मेरी		राव पनराज	वाहडु मेरी	१	श्रीहरराजजी पार	१	कनककु०	
२	वीकीजी	राजकु०	राव जैतसीजी	वीकानेर	२	भानी दासजी			
३	भासी		देवी दासजी		३	खेतसी जी का खेतसी होत			
४	जोधीजी	सूजकु०	राव मालदेजी	जोधपुर	४	नारादासजी कानारादास होत			
५	सी सोदरा	चैनकु०	रागा उदै सिंह जी	उदैपुर	५	सेस मलजी का सेस मलोतव-			
६	सोरी	नवलकु०	रागा सूज मलजी		६	मलदेयात			
७	देवडी	जैतकु०	राव हमीरजी	सीरोही	७	मलसी जी कानेतसी हिता गाम	२	सीनकु०	
८	चावडी	माराककु०	भीमदेजी		८	रत्नरीचसी			
९	मेड तणी	लामुकु०	राः जैतसीजी	मेडता	९	मुंगरसीजी का मुंगर सोत गाम			
१०	चोहान	पेमकु०	राव मांहराजी	कल्याणपुर	१०	पांचू २० वीकानेर			
११					११	पूरगामलजी			
१२									
१३									

मालदेजी

माराकराव कोठार परधोलेर महल से उत्तर घोड़ों का तवेला बनाया बीच में नाल के पत्थर में लिखा है कि हाथणी करावी मासे च्यारे नीपनी चलो क न्त्योर हरिज्यं पगार निचः राज ग्राही सर्व धना प्रधानः तथा खंधारी सिपायां को इतवारि समभ कर १ शरव को गुस खजाने की कुंजीयां सौ पीं कि शिवा वक्तुजरुत के भेद नखुले उसने भी से सा धर्म रवा कि मरते वक्तु १ वेदे को वाकफ करता था कई पुस्तों वाद मूल चन्द्र राज वांती ने वेदे को १ जगा जीते ही बता दी उसके कहने से म्हेते जीने भेम से नीक पूर नि काला जब दूसरी वाकफान करी अब कोई वाकफ नहीं है शायद यह सा खी मिलेगी ॥ याघा और पधार बिच सो नईया लख च्यार । कालय से बुरी वा करी कालय से कारदुकार ॥ १॥

१३५. महारावलजी श्री हरराजजी सं० १६१८

१. सोढी	चंपाकुं	गंगावराभीर	पारकर	१. भीमनीपाट	१. गंगाकुं. वीका
२. चीकी	गानकुं	गजाबलाण	वीकानर	२. वत्स्याणमलनी भीमके	२. नर राजा रय
३. जोधी	हरखमंद	रायमालदेवजी	जोधपुर	३. भारपर सिंहजी	३. सिंहजीकोव
४. मडनगणी	साहबकुं	ठा. विजराव	मंड. ते	४. सुलतान सिंहजी	४. चंपाकुं. राजा
५. सोहादणी	पेपकुं	महागंगा मधो	उदेपुर		५. के माद प्रथुग
६. झाली	लालकुं	गुजामान सिंह	गढग गढ़		६. ज को परभाया
७. बीहान	मयाकुं	रावनाडाजी	गढपावा		७. नाथवादे नाना
८. चाघेली	मोहकमकुं	रावजसणजी			८. रो गढ जोधपुर
९. कोटडणी	किसनकुं	रावपुहोमल			९. रही
१०. चोपावत	रुपभावत	विजें सिंह			
११. चावडगी	सोनकुं	गजासिंह			
१२.					
१३.					
१४.					
१५.					

कुं० सुलतानसिंह जी दिल्ली गए बादशाह अकबर शाह ने कसबा फलोधी मगध परगने इनायत किया नेरावत चन्द्रमैन जी १० हजार मोनईयाले कार ठिकारगा पड़ोकारगा मिरवीरखाया जिसपर जोधपुर की फौज आई सोहर के पीछे गई कोरडा रवाल से करके फेरबाधजी को रांगाया पीया । अमर-कोट का रांगा गंग को जेर हुकम करत बिदारी में रखा सो जै सलमेर में ही फोट हुआ । बाहड मेरों को नसीहत दी । धोलेर के अगाडी सलीयों के पगथां ऊपर मूल बनाया सोहर राज जी का मालीया मौजूद है । तथारवा-वडीयों को हवेली शहर में बना दी ॥

१३६ महारावलजी श्री भीमजी सं० १६३४

१	वीकीजी	फूलकुं०	राजारामसिंह जी की बैन	वीकानेर	१	नथुसिंह जी ७ वर्ष का था श्री दरबार देवलोक पधारे गनी
२	मेडतगी	लालकुं०	रा. पातलजी			वीकीजी कुं० कोलेकर फलो-
३	सोदी	हंजकुं०	रा. राजसिंह			धी जारही चंचक याज्ञहर से
४	महेची	राजकुं०	रावल कल्याण मल	जमेल		कुवरजी फोट हुआ वीकीजी
५	चौहान	विलेकुं०	राणा प्रथीराज			वीकानेर गई फलोधी में वीकी
६	वीकी	अजबकुं०	नाराहा रास			का दरवल राहा यहाँ से तो वीकी
७		सुजानकुं०	राजानाराहा रंडर			जी के नाराज होने का लिहाज र
८	कड़वार्ड	रतनकुं०	राजा भैरु रास आबेर			खा जोधपुर वालों ने फलोधी ले
९	राठोड	हीरकुं०	राजामानसिंह	किस्नागढ़		लो जव से मगध परगने उनके
						कबजे में है ॥

पुरको

पिंडो सं० ३६ में दिल्ली गए वीकानेर महाराज रायसिंह जी के भारी प्रथीराज जी कहा दोहा दूजाराजा शाहरे करमें लेदारी ॥ भादी भीम छोड़ा यही नवरोजे नारी ॥ चुनाचे से साही किया कि बादशाह अकबर शाह ने नवरोजा लेने की तलाक लिख दी और कसबा रोहोडी मय किले बांवर व परगना किनारे

सिंधतक बरवशिः करी सरहृद कानामरगवल दंग हनोजकहीजे है । तथा  
 रिषल अत भारी वहाथी व घोडा तलवार कटार अता फारमाया । जैसलमेर में  
 पका गढ़ बनाना शुरू किया था सो ३ दरवाजा सूर्जपोल व गरोशपोल उर्फ  
 भूतापोल वरंगपोल उर्फ हवापोल व वैरांशाल आदि ७ कुर्ज व कमरकोट  
 व म्हालात वगैरे में ५० लाख रुपये लगे फेर आप दिखीसे पीछे पधारे जबका  
 म बंद किया कि दूसरा कोई भी आवेतो मैं मैदान में बैठा नवाब देस का हूं यो  
 दिखी का चनी आवेतो कैसाही गढ़ होरह सकं नहीं फेर चंडीसर पर नील कंठ  
 महादेव का मंदिर बनाया बाद मनहरदासजी ने ९२ कुर्ज पका कचा बनाय  
 कुल ९९ कुर्ज से गढ़ सम्पूरा किया सो मौजूद है सानी नहीं हुवा का गीत है कि  
 गीत संसार कहें पतसाह साबलो शिरपा कड़े निको समसेर आज वने  
 दुनिया न ऊपर मानक वर नै जैसलमेर । १। कवरो गुर बड गात कलाव  
 त् जग सुड नयरा पतीरा जोय गोरहरे सारी खनि की गढ़ नृप मनहर  
 सारी खन कोय । २। बाह पलव जो पशुली वल मोजस मद जादम मन मोद  
 मान मरु रसि हर मंडली का कोटा सिरै तिसुरा कोट । ३। खाग त्याग  
 मीठता न वखंड जादम सारी खो जेसांरा मनहर तरांग भुजा डंड मो  
 टा मोटा बुरजों तरांग मडारा । ४। ॥ ९॥ नगर थडे बादशाही  
 फोज खान खाना साथ श्री दरवार वीकानेर महाराज कु० दलपत सिंह  
 ह जी रहे सिंधदेश का बन्दोवस्त अच्छारखा बादह हर पीडी में दरबार  
 के भादयो में से कोई साहब नोवारी में बनारहा आरिबर में श्रीजसवंत सिंह  
 ह जी के भाई हरि सिंह जी रोहड़ी से आर श्रीतेज सिंह जी को चूक करके  
 आप भीमारे गये की खबर पहुंचते ही नसदेशवालों ने २० थाने १६ म  
 उठा दिये ॥



महारावल कल्याणदासजी नामके राजा हुए कहवत है कि मनजोशी कल्याण  
 रो-अजांमंडाई अध- कु० मनहरदासजी राजकाज कीया

१३७ महारावलजी श्री कल्याणदासजी सं० १६८०

१		पाटमदे			१ मनहरदासजी		
२		अमृतदे					
३	कोरडेची	मरघकुं	करमसी	कोरडे			
४	मयेची	लाडकुं	रावल दुरो	जसोल			
५	सोढी	सिरैकुं	ठा: मानसिंह	अमरकोट			
६	वाहडमेरी		रामसिंह	वहाडमेर			
७							
८							
९							

महारासजी

१३८ महारावलजी श्री मनहरदासजी सं० १६९०

१	जोधी	उदैकुं	ठा: कैसरी सिंह	भाद्राजरा	१ कुंवरनहींहुआ-	१ उदैकुं जो	
२	मेडतराणी	सदाकुं	ठा: कैसवदास	रेयां	महारावलजी	धपुरराजा	
३	सोढी	अतरंगदे	गंगाभोजराज	अमरकोट	मालदेजीकेकुं	जी गजसिं-	
४	चोंपावत	सुजानकुं	ठा: गोपालदास		भोनीदासजीके	हजीकोपा	
५	कोरडेची	सींहादे	राणाजोगोदास	कोरडे	संगजीकाकुं	नाया	
६	पोकराणी		राव नीवाजी		रामचंदजीराज		
७	झाली	गुलाब	दगादसिंह		वैठा ॥		
८	बीकी	रतन	सुरजमल				
९							

जगदास

जब श्री भीमकी रानी कुवर कोले गई तो सीहूड रघुनाथ वहमीर-  
 दुर्गदास वगैरे सरदारों ने श्री कल्याण दास जी से गारी बैठने का कहा  
 सो नहीं माना और कुंवर जी रज्जू हुआ परन्तु जती खिलवत में आइय  
 के हुकम से बोला कि १४ वर्ष गढ़ से बाहर न रहें ॥ बलौच बंगुलखान  
 विक्रमपुर राव के भाई हुआ वे रवौ फ मुल्क लूटया । खेत सिंह जी के  
 बेटों ने राज लेने की सलाह बिचारी सो दयाल दास जी ने अर्ज भी कर दी  
 परन्तु रघुनाथ की सलाह से दयाल दास जी को बाड़ी में चूक कराय-  
 पग के अगूठे से खून का तिलक किया कि का के जी के राज तिलक  
 की मन में थी इससे राज का हक सबल सिंह जी का वाजिव हुआ कि  
 मनहर दास जी पगायता दिया ॥ वर्ष १४ के बाद मनहर दास जी  
 पिंडों नाच शो पथारे त० राज बांगी पर ५ सौ बलोचों सुधा बंगुलखान  
 को मार मांमे सादूल व भूपत खा बड़ीये का कि जो दिल्ली से आते  
 को बंगुलखान ने मारे थे वैर लिया प्रवाडे जीते दी सौ भाटी मेरे ॥ फेर-  
 तो हर ४ तर्फ पका बन्दो वस्तर खा उस जमाने में तरफ पूर्व को स४२  
 गाम मडले से अगाडी बाण्ट का गाम व म्हेरु वनाला वगैरे व ओटो नीया  
 उच्च पधरा सांस्त दिये और दहिणा को स४४ गाम हरसानी से आगे  
 तथा पश्चिम को स१२५ सिंध में रावल दंगतक व उत्तर को स१२५ कि-  
 ले देरावर व पूगल का इलाका और बीच में क मो वेशयाने बाहड़ मेर  
 जूना पार कर वगैरे २ तक दरवल इस राज का था सो आईन अक बरी  
 में लिखा है और हर परगने में बहुत से गाम बग से तथा गाम नी वारा  
 मकानात वगैरे जदी द बनाये बाद हर पीछी में घर की फूट के वा इस फा  
 लोधी प होकरा आदि बहुत सा मुल्क कब्जे से निकलता गया हां श्री

गजसिंहजी साहिबों के इकबाल से किष्ठागढ़ व शाहगढ़ मणबद्धिया-  
 छोड़ घड़सीया व धौदड़, पीछा आया जिसका हाल मौके पर लिखा है ॥  
 गढ़ में भेलात व घरसी सर में सर्वोत्तम भवन महल व बड़े वाग में रानी जी के-  
 नाम से कूवामानसर व महल बनाये जोधपुर वालों ने बादशाह का फरमान-  
 भेजा था कि पहो करणी पीछी दे दो मगर जवाब ही नहीं दिया सं० १७०४  
 में स्वर्ग जाने बाड़ी पधारे तो वह जती सूली कूंगर से सवारी देरवने लगा उसी  
 जगह रकड़ा २ मरसिया कहता २ टाई महीने में मरा सोठा कर २ भगवा-  
 का प देखा लोकि रा नुं देवां मन भगवों माबाप कर ग्यो राव कल्यान उत्  
 ॥ १ ॥ इस वक्त सबल सिंह जी तो नानेरे किशनगढ़ महाराजरूप सिंह जी  
 पास थे रामचंद्र जी राज बिराजे ॥ भूगरी निभ से खडी न बुज व मुहार दे  
 खकर कहा कि दोनों १ घर चाहिये जब छोटा भाई खेत सी जीने पया मु-  
 हार का नजर किया ॥ इस जमाने में ३ मंगरीया श्विरडीयाने ४ फकीर बि-  
 कोर्यों ने करानात दिखवाई चुनाचे १ ने तो जो उसकी सांढी भारी चोरले गये  
 राज से दाद रसी नहुई जब ६ महीने बाद त्रपोलीये के पास मालीया गिराने का  
 बोल निकलता ही दीवार फटी फोरन उसकी बहिन ने रो क दी सो चिराड  
 जूद है दूसरे ने सीयाव के वीचरेती का टिवा कर के साधियों को बन्चालिया  
 तीजेने मौसम सरमा में जालीयां पै पीलु लगाया ४ ने तनाजे पर कोम  
 रांको देस पार कीया बैत एक बिकीयो दूसवांगी जैजांधोरे रमे धकः हैः  
 महडगरी जैदरीयाव मै की दिका हैः पनुवांगी जैकुमधी कीमकः हैः  
 गारागी जै मूरलंघायालक इन्होंकी औलाद के १००० घर २४  
 बेको मशहूर है ॥

॥ नोट - यह चिराड (यादराड) दीवार संलेकर ऊपर तक साफ तौर पर नजर आती है से कड़ों बरी  
 दुसवावजूद फट जाने के दीवार को कुकु लुकासान नहीं हुआ हमने भी सन् १८८५ ई. में इसको देखा था ॥ मः

१३९ महारावलजी श्रीरामचंदजी सं. १७, ०४

१ सोढी	चंदकुं	ठा: भोजराज		१ सुंदरदासजी	रसच्यार्क	१ रामकुं	
२ पातावतलकुं		ठा: देवीदास		२ दलसाहूजी	की औताह	वीकानेर-	
३ सोढी	अस्जनकुं	गारासनसि	अमरको	३ चक्रभुजजी	कादेरवाथा	राजाको	
४ राहोड	पुरहोरे	पा: देवीदास		४ रायसिंहजी	सोमडीपाले	परनाथा	
५				हे और महाराज श्रीमालदेजी के कुं-यतसी नीके दयालदास जी का कुं-मवनसिंहजी राजदेवा			
६							

सबल सिंहजी दिल्ली जाकर बादशाह शाहजहां से राजका फरमान लिखा फौज ले आये परगने बापत सर पर लडाई कर फीके गये जब रघुनाथ वदुंगदास वगैरे सरदारों ने सबतरह लायक ववाजिव जानकार राजदे-  
ने का वचन लिखा कासिदकी भूलसे कागज नरावत सबल सिंह के हाथ-  
जोधपुर महाराज श्रीजसवंत सिंहजी को पूगा जब धोखा दिया कि फौज  
साथ देवां जैसलमेर आपको आयां पहीकरां म्हां की पाछी देदी जो फेर स-  
बल सिंहजी यहां आयर राज बैठे ॥ जोधपुर की फौज पहीकरां आई यहां  
दुराजे होने से मदद नहीं पूगी भाटी प्रताप सिंह खांप जैतसी होत जो कि  
लेदार था-११ मनुष्यां से काम आया दरवाजे के आगे चौतडा मौजूद है  
पहीकरां में मर ८४ गामों के जोधपुर का दरबल हुआ ॥ रामचंदजी को  
देरावर भेजे इनके माधो सिंहजी २ के किशन सिंहजी २ राय सिंहजी से  
देरावर सिकारपुर के कुरेसीयाने दावद पोत्रे खान फतै खान लेली जब  
मौजै गडीयाले इलाके वीकानेर में आ रहे रु २० रोजका राय सिंहजी  
के रघुनाथ सिंहजी के जालम सिंहजी तक तो नवाब खान बहावल खां दिया  
फेर भीम सिंहजी २ के बभूत सिंहजी २ के नथु सिंहजी २ के बूली दानजी

गडी आले रावल हीज है ॥

१४० महारावलजी श्रीसबलसिंहजी सं० १७०७

१	वीकीजी	सवरंगदे	ठा: सुंदरदासजी	भुंकारके	१	रत्नसिंहजी	काराक्लोत	१	रतनकुं	उदैपुर
२	मेडंतराणी	मुजानकुं	ठा: भोपतजी	बूड.सु	२	श्रीशमसिंहजी	पाट			
३	जैमलोत	लारुकुं	ठा: बनमालीदास-		३	राजसिंहजी	गढ जो धुपुर	२	महाकुं	से०
४	सोदी	मुजानकुं	ठा: जैसिंहजी		४	महासिंहजी	काराक्लोतमे	३	दीपकुं	से०
५	से:	मानकुं	ठा: किसनदास		५	माधोसिंहजी	ही गाम दू० मेवाड	४	कुमालकुं	धू
६	कछुवार्द	बिलैकुं	कानजी		६	भावीसिंहजी		५	चंद्रकुं	
	राजावत									
७	भालीमा	अनोपकुं	ठा: मानसिंहजी	भालावाड	७	वांकीदासजी	कारा-			
	सता						वलोतगामपीथले			
८	कर्मसोत	सतुकुं	ठा: भगवानदास	खीवसर						

काती बदि = खेत सिंहे तो के राज आया जब से याद गार के लिये हर साल दसमिती ओर आरुमको भेर वंजे वरवां डा स्वांगीयां जी के धान याने भूंजाई में पधारे जब पंचशब्दीया साथ पाट पुरोहित तिलक करे वताय फों की हाजरी होवे और भारी खेत सिंहे तो को बडी ताजीम और गाम वसी ना याने जागीर वपटे दे कर उमराव किया नाम जुदे लिखे हैं - पिंडा अमर कोर पधारे रांगा ईसर सिंह भोजराजोत को उत्थाप जै सिंह को थापी या ॥ × ॥

१५१ महारावलजी श्रीधमसिंहजी सं. १०१७

१	मिडतणी दीपकुं	ठा: भावसिंहजी	मेडता	१	थीजसवंतसिंहजीपा	१	विदेकुं पदेपुरकुं
२	झाली अनोपकुं	राज आगदसिं		२	दीपसिंहजी कावलोते	२	सजे सेजी कोपर
३	जोधीजी प्रतापकुं	गंगासतनसिंह	रतलाम	३	सिनेसिंहजी काये: गा: यो	३	नायास -
४	चांपावत दीपकुं	ठा: महेशदास	हरसोला	४	सायाड: माखाड:	४	उदेकुं जोधपुर
५	महेची चंपाकुं	ठा: महासिंहजी	जसोल	५	किर्तसिंहजी का ये:	५	मजवसिंहजी
६	सोदी रायकुं	ठा: जोगीदासजी		६	सामसिंहजी का ये: य: विवे	६	जायेपनासं १०१५
७	कोरडेची अमेरकुं	ठा: गोविन्दरास	कोरडे	७	रुटलाके बीकानेर	७	तालकुं: उदेपुरा
८	सोदी देवकुं	गंगागंगादास	अमरफो	८	जंतसिंहजी का ये:	८	गा: अमसिंहजी
९	मिडतणी अमर्तमा-	हरसिंह		९	कैसरी सिंहजी कायगा:	९	पेमकुं: बरोडेगा
१०	जोधीजी प्रतापकुं	रतनसिंहजी	सेवां	१०	मोखोली रत्नाके मेवाड	१०	सुरसिंहजी कोपर
११	सोदी दीपकुं	गंगादास		११	जुआसिंहजी का ये:	११	नायास १०५३
१२				१२	गजसिंहजी का ये: गाम		
१३				१३	गजसिंहजी का ये: गाम		
१४				१४	गजसिंहजी का ये: गाम		
१५				१५	गजसिंहजी का ये: गाम		
१६				१६	गजसिंहजी का ये: गाम		
१७				१७	गजसिंहजी का ये: गाम		
१८				१८	गजसिंहजी का ये: गाम		
१९				१९	गजसिंहजी का ये: गाम		
२०				२०	गजसिंहजी का ये: गाम		
२१				२१	गजसिंहजी का ये: गाम		
२२				२२	गजसिंहजी का ये: गाम		
२३				२३	गजसिंहजी का ये: गाम		
२४				२४	गजसिंहजी का ये: गाम		
२५				२५	गजसिंहजी का ये: गाम		
२६				२६	गजसिंहजी का ये: गाम		
२७				२७	गजसिंहजी का ये: गाम		
२८				२८	गजसिंहजी का ये: गाम		
२९				२९	गजसिंहजी का ये: गाम		
३०				३०	गजसिंहजी का ये: गाम		

महाराजसिंह

सिंधमें चानीया वलोच्यों से जुद्ध हुआ उन्होंने कोनेस्तनावूद कारके फतेमंदखे  
दुतरफा हज़ारों आदमी मरे भारीयों की कई औरतें सती हुईं रोहड़ी के प  
ससतीयों की पहाड़ी मशहूर है चैत्रसुद १५ को भारी भेला व पूजा होवे है  
मुल्क की सरसबजी व रिआया की आसूदगी का हृदय कमाल खयाल था जु  
नाचे रोहड़ी व सरवर के बीच दरीया व में सरवर का भारी किला बनाया सिंधमें  
दरीया व सेनाला अमरकस निकलाया - वरांगीपुर कसबा आबाद किया सो  
मौजूद है ॥ तथा अमर साही व जन कलदास रुपये ६५ भर का सेर जो भीम  
साही रका १८ और अखै साही रुपये ७२ भर का बाज़ार जैसलमेर व रोहड़ी

नें हनोज़ जारी है सरहद सिंध में दोहा सरवर भरवर रोहड़ी साकोरी  
सीया । ओली रावल अमरसी पैली भरसीया ॥१॥ भाई राजसिंह  
जी दिल्ली गया बादशाह आलमगीर याने औरंगजेब से फ़रमान लेने पहे  
करा व फलोधी का हासिल करके बादशाह की फौज साथ ले दिल्ली से  
चले रस्ते में नवाब से कहा था कि बड़ी जंग होगी परन्तु जोधपुर आया-  
तोराठोड़ दुर्गदाम किला छौड़ महाराज अजीत सिंधजी को लेके पहा  
डों में जा रहे और राजसिंधजी किले में जाकर फौज से लड़ मरे पीछे नवा  
ब किले में दरबल किया कोई बर्ष तक जोधपुर व मुल्क मारवाड़ बादशाह  
के खाल से रहा इस से पहेकरा व फलोधी में जे सब मेर का कब जानहीं  
हो सका कहवत सच है कि भायी भोला है सो से से बने दुगमत लब को रवो  
बैठते हैं और सिर्फ दूगारवीला पणो से बात रवरागी व बहादुरी कररागे-  
को ही भारी मतलब समझ रहे हैं ॥ रामानंदी साधु दूगातरामजी सिद्ध  
को गुरु मान करि कान राम कूंड व मंदिर श्री रघुनाथजी का बनाय सरगा  
किया सो हनोज़ है ठिकाने में महंत पालखी नशीन नंगर हैं तथा गऊवों  
का दूध दही व पराया जावे बिलोचगा न होवै वगैरे म्रजादा बांधदी तथा लां  
गसरत व रामरुडो व भगतालोती नोखड़ी न लुद्रवे के कुंवै खनु के नज़  
दीक है पटे किया और दला के जात के साधों पर हुकम वज्र माना महंतजी  
का है तथा पुरोहित जेठमल बय्यास पहेकरदाम व भायीया बस्तपाल व  
चारा देहा बगैरे इस मंडली में ये बस्तपाल ने एक कूवा व एक कुन्नी बनाया  
और देदे ने तलाव देदान सर नीव देकर म्हेता गोंविदां गिथों के सुपरद कि  
या सो भारी बन गया व बनता जाता है और दरवार ने सिद्ध जी से बीनती कुं  
वर होने की की तो सिद्ध ने कहा कि ६१ दिन मेरे पास मत आना परछा ठारवेही

\* इसी देदान सर तालाब पर जो जैसल मेरसे मगरवी गोशे में है महेता जी श्री नथमल जी साहब दीवान रियासत -  
व मुसलमान किताव हा जाने खुवता था व और उम्दा र दमाते बनवा रहे हैं जिन में से याह और साधु वगैरे आराम पाते हैं तालाब  
को भी महेता साहब मौसुफने ओड़ा कराया है चुनाचवाह महीने निहायत शक्काफ पानी इस में रता है रामः मुदा अली



दिन पधारे सिद्धजी कोटडी में मंत्र साधता था वतप में भी धूजता था सो तप  
तो ओटने की गूटडी को दिया कि राजा से बातें करके पीछा लेजूगा गूटडी  
धूजने लगी सो हनोज पूजी जै है और दरबार से कहा कि मो आदत क नहीं  
आते तो एक पुत्र प्रस्थी जीत होता अवहोगे तो १० परन्तु एक देसी राजार  
हेगा चुनाचे से साही हुआ ॥ रमता गुमाई हखस गिरुनो आर नाथों  
से ज्यादे सिद्धाई दिखाकर इकराकराया कि अव कि सी साधु अनीत वोगे  
कोय हारहने से मनान को टन के चेला लाल गिरजी महंत हुआ ११ पोंडी हुई  
नगर है है शहर से बाहर काजी कात कीया था जहां भूते स्वर महादेव -  
स्थिपकर मठ बनाया सो सहर ज्यादे आवार होने से अव म्हां तो के पास है  
है ॥ ता० अमर सागर का वंधव ऊपर अमरे स्वर महादेव का मंदिर व महे-  
लात व अमर वाव नानी वाकडी वरानी जी के नाम से अनोप वाव वगैरे ठकोना  
सं० १७५६ में बनाय बडा दान पुन्य किया ॥ बीकानेर पर फौज लेगस  
वरसलपुर विक्रमपुर राव साथ थे दोलडाई जीते मौजे जनुतक इद सुकर  
कारी थी और पूगल राव हाजिर न होने से सजा देकर आवंदे तावेदारी में हा-  
जिर रहने का पका बन्दो बस्त कराया फेर कोटडी याद बाहड मेरा हुकम-  
अदली से पेश आस जब वहां पधारे गोशमाली करके कदीम मूजवताये  
दारे करने की नविशत लिखवाली- ॥ अदियात के चाले से उच नाथ सी-  
हड को चुक हुआ घर लूटा सांढी दगाई जब पाली का गाम २४ ढानी वी-  
रान कार तलाकर वायह्वारी देस से निकले थे जब से आल के वंश मेरे चारण  
खांचाला चूहा नहीं पहरै है सं० १५ १४ में ठाकरो राज श्री के सरी सिंह जी-  
स्थाने वाघजी सीहड को भेज कर तलाक भंजाय रहवारीयों को पीछा-  
हुलाय गाम रावते मोढे बसाय वर्ग सोया फेर तो बहुत सा राई का देस में-

आरहा तथा पापसी हड दीवाली का तिवार नहीं मानते हैं कोमचाराणों की परवरण बरवातर यहाँ तक थी कि १ बार कहत साली में चारा कर कर काराह से सरकारी बर्ग लेगा तो पिंडां पधार की सांठ रुक्या वी सरवुरी-कादे पीछी लीं तथा १ चारा के बैर में गाम वे साले के बाहड मेरे साहेब को मरवाया - अलाहाजूल कथास आरिवर वसीयत में महाराज कुमार को चारा वरिआया की भलां वरा दी - ॥

१४२ महारावल जी श्री जसवंत सिंह जी सं० १७५९

१	महेची	रूपकुं०	रावलभारमल	जसोल	१	जगतसिंहजीकुं० पदरह-	१	बदनकुं० उदै
२	सोढी	सूरजकुं०	राणाजैसिंहजी	अमकोट	२	लतफरमाई १ आबुधसिंहजीपाट-	२	सुरगगासगराम
३	कोरडेची	जतनकुं०	राणाहरीसिंहजी	कोरडे	३	अर्धसिंहजीपाट ३ जोरावरसिंहजी-	३	सिंहजीकोपना
४	सोढी	राजकुं०	ठा: गंगदास		४	कागाममतोयगवलोत-	४	था
५	षावडीया	रंभाकुं०	ठा: सादुलसिंह	गेराव	५	सुरतसिंहजीकागामभरडीयेके	५	सुरतकुं०
६	चौहांन	लाडकुं०	राणागजसिंह	बाव	६	ईसासिंहजीकागाम लाठी-	६	इंद्रकुं०
					७	तेजसिंहजीवकुं० सवाईसिंहजी-		
					८	पुधोसिंहजीके पाटवेठायागामलुहारपी		
					९	सरदरसिंहजीकागामषारीयेवमार		
						वाड-मेरावलोतभगवानसिंहोत		

भाटी व सोढा मुल्क लूटने बहुकम अदूली करने व अनीत चलने में धुंधमचाई जब अवल तो भाटीयों से सोढा नारणों तो को मरवाया बाद भाटी बलू द्वाको त-व अचले महासिंह सूरजोत व पीथे पचांनोत व दुर्जनका नरासोत व कमल के सोत व मूलचंद्र राजसिंहोत व गैरे कोतो त० सरपर के लगणों व रसीगों से और तेजमाल रामसिंहोत को गाम हाबूर में वफात दिराई और उदै सिंह गाम सिंहोत सरसे भाग निकला भीलमाल व गैरे के भीलां को साथ लेकर मुल्क लूटता रहा फेररामकुंडा के महंत दूगातरामजीरी मारफत कर मेलगा ॥ रैवड के राठोडों को शिकस्त दे फौज खर्च लिया - बडा कुवर जगतसिंहजी के ३ कुं० हुण पीछे सातवीं शादी उदैपुर महाराणा जैसिंहजी की पुत्री सूरजकुं० से हुई

वहारावासमें कुंवरजी के तसवीर की तारीफ़ हुई कि मानो कामदेव को अवतार है जब महाराजाजी बोले कि और तो सब बातें ठीक हैं ठिकाना करी मी है ई पर रिजक याने खजाना नहीं है जिसपर कुंवरजी ने गामकुल धरों के पत्नीवाल पर १ कोठे रोला-ख रुप्ये की हुंडवी लिखी रागेजी साहिबों डाकवैठा के औठी भेजा तो पत्नीवाल कही-मेरी भेवाड में हुं काना है वहां ही रुप्ये लेले ते इतने के लिये यहां क्यों भेजा मगर खैर जिससिके का हुकाम होले जा वो कोण्ट डी खोलकर रुप्ये दिखाये औठीयों पीछे जाकर अर्जकारी तो महारानेजी फ़रमाया कि ऐसी रईयत है सच्चा खजाना उनका है पीछा पधारकर कुंवर पदों में महल बनाये चौडे ही दिनों में स्वर्ग पधारे ३ कुंवरा नी दो खवास-सक्ती हुई ॥ महता अर्जन सिंह को जो पपुर की मदद भेजा था पर रिश के बीच में डेर कर अबल महाराजाजी वालो उदैपुर से मिला फेर महाराजाजी से मिलकर हिकमत अमली से दोनो रईसों की सुलहे कराय आया पीछे से भेद खुला तो दोनो राजावों ने अहसान मानने का खरीता भेजा जब अर्जन सिंह को दीवान किया ॥ श्री दरबार का देहांत हुआ जब तेन सिंह जी ने ईसर सिंह जी से कहा कि बुध सिंह दाव र है नाजरो डावडियों का हुकाम उठाई जे नहीं आपराज वैठे इन्होंने इनकार किया तो आप मुंह धोया लेकिन सवारी साथ वाडी गया पीछे से बुध सिंह जी राज वैठे जब तेज सिंह जी वागी हो बावडी से वाला २ सिंध में जा रहे और देस लूटते थे ॥

१४३ महारावलजी श्री बुध सिंह जी सं० १७६४

१ सोटी	रुपमाव	नहारणा	कुंवरनहीं हुआ	फतेसिंहजी
--------	--------	--------	---------------	-----------

वाद १२ साल के तेज सिंह जी गामकुल धरों से अस्त्री लिखी कि कसूर माफ़ करावे व महेंताजी आकर वचन दें तो रुदमे हाज़र होष जब अर्जन सिंह जी को भेजा सो ज़िंदा मारकर पीछे सिंध चले गये फेर दो वर्ष बाद भीतर से बुध सिंह जी को ज़हर हुआ और तेज सिंह जी आपराज वैठे सो नावा जिव जान के रोहड़ी भस्वर से काका हरी सिंह जी आये

श्री अरवै सिंह जी को राज बैठाने की सलाह विचार सं० १० आषाढ बदि १३ घडसीस  
पर तेज सिंह जी को चूक किया जब से तालाब की लास में श्री दरबार नहीं पधारे हैं ही  
सिंह जी भागे पीछे से नायक लया पहुंचा श्री तेज सिंह जी के चेत हो ने से कहा काका जी  
मरे नहीं पर जा मंडे जाकर फरीदगढ़ से पहिले ही गाम मूलाने में मारे गये और तेज  
सिंह भी फोत हुए बाद कुं० सुवार्द सिंह जी राज बैठे जब अरवै सिंह जी भागे गाम छोड़ के  
पास घोड़ा थक गया सो छोड़ के बंड के पेड़ पर चढ़ बैठे और दरबारी कुसला वगैरे जा पहुंचे  
चामगर पिंडा की तपस्या व कुसले की खैर ख्वाही से यह तो पीछे चले आये पिंडां पै-  
दल गाम खूड के मूंगर में जाकर पोकरी शिव दान को बुलाय लारवरा के खंघे स-  
पार हो साकडे पधारे जब से पोकरी कहते हैं कि ऊंठ हां साकडे से मौजे ऊजलां हो  
कर चाटे में जा रहे फेर १ वर्ष में सरदारों के लिखते से पीछे आ राज विराजे भेर धाव सु-  
नते ही सुवार्द सिंह जी हाथ बांध कर हाजिर हुए तो १ महल में रह बास दिया थोड़े ही असे  
में सरदारों की बेवकूफी के कलाम पर देवी कोट से यहां पधार सुवार्द सिंह जी को सुधाम  
भेज सवासब पीछे गए सरदारों से कहा कि चाहो सो कर सकी हो सरदार समझ कर -  
डरे और आज्ञा करने लगे फेर तो मुल्क का वन्दी वस्तु बरि आया की परवर्ष खातर  
खुदा कहते रहे शब कोरी की चोरी पर ही पिंडां पोशिश कर के मुद्दई की हक रसीव चोर को  
सजा फरमाते थे जिस से मुल्क की सरसंज जी वरि आया आसूद ह हुर्द और चोरी धाडे  
का नाम ही नहीं रहा परन्तु पहिल बखेडे रहने से सिंध का मुल्क बहुत सा मियां क-  
लौडे ने दबा लिया ॥ तथा रावलोत दौलत सिंह के वर में चेला सर पर सुंदर दास  
वगैरे सोढों को मार कर कहा कि उन के भाई में हूं फेर राज सिंह की बेटी पर नीजे  
और शादिया ने बजवाये ॥

१५४ महाराजजी श्री अवेसिंहजी संवत् १७७९

१ सोदी	वनेकुं	ठा: राजसिंहजी		१ श्रीनृगामजी	१ अमरकुं	नागौरमहा
२ से:	भीमकुं	रागाहमीरजी	अमरकोर	२ पदमसिंहजी	२ अजयपतसिंहजी	कोप
३ तोरदेची	सरपकुं	ठा: भैरदासजी	कोटडे	३ गामराद	३ नायासं	१२०१ जानमे
४ सोदी	यपतकुं	से.	खुहडी	४ खुसानसिंहजी	४ गनर	हजारकोक्याफ
५ महेचा	वदनकुं	अवतरनयसिंह	जसोत	५ रतनसिंहजी	५ मर	संगे परप्रमिदा
६ जोधी	सरपकुं	ठा: सुर्ज मल	पादोधी	६ गानलाठी	६ चानंदकुं	वीकानेरमहा
७ चौहान	सोनकुं	गारापचारणी	पाय	७ गामानसिंहजी	७ राजराजसिंहजी	को-
८ से.	लालकुं	ठा: मानसिंह	होथोगां	८ किमोदविराज	८ परनाया	-॥
९ जोधी	पूलकुं	महाराजराजत	नोपपुर		९ श्रीवनेकुं	महाराज
१० कामसोनवपतकुं	ठा: जसकरनजी	तांतवास			१० राजसिंहजी	प्येसं
११ सोदी	रांगकुं	ठा: -	लारपीर		११ १२ में	परनायासं
१२ सोदी	हरकुं	दसरदासजी	माले		१२ में	आराया
१३ बाडमेरे	वनेकुं	अवतलालसिंह	बाडमेर		१३ किनैकुं	नोपपुरमहा
१४ सोदी	वराकुं	मनवरदास			१४ राजकुं	फतेसिंहजी
१५					१५ कोसं	१२ में परना
					१५ यासं	१० में आरा
						बुलाया ॥

पटपट्टेहवाई बालजी कोरीजवसेबालजीकेपोते पाट पुरोहितहैं वीकानेरसेबाइरा-  
जचानंदकुं वभागेज अजवांसिंहजी सं. मेंयहांआरहे जोधपुरमहाराजश्री  
वरवतसिंहजीका जनातावकुं किनैसिंहजीतोयहां आरहे औरश्रीदरबारवहांपधारे  
सोपिंडांतोगढकानन्दोवस्तरखा औरमहेताफतैसिंहकोश्रीवरवतसिंहजीकेंसाथ  
भेजा सोदक्षिणियोंसेलडाईमेंमुठवेपरकामआया कनीमौजूदहैतुंडकदईमें  
जोधपुरसेगामहसीयाडा रूप्येपांचहजारकामिलाया ॥ बाडमेरकेठा: साहिवको

बिक्रमपुरराव हरनाथ सिंह जी के वचनों से बुलाकर मरवाया था जब से कहवत है कि वचन  
 जिके रावजी का इस वाबत महाराज बरवत सिंह जी राठोड़ों से रावजी की नि सबत दशा  
 किया कि यह वह है रावजी अर्ज करी कि धागी के हुकम से बापको भी मारने में दोष नहीं म-  
 हाराज साहब सुनकर चुप हो गये पत्नी वालों साहूकारों वगैरे रईयत से सालियां ने के रूप ये ले-  
 ने की तादाद बांधी मनमते कालेना छोड़ा सिक्का महम्मद शाही था सो अरबै शाही संवत  
 १०१२ में मशहूर हुआ इसका हाल तक साल के जिक्र में लिखा है मोजे गिराव में कोर व-  
 वे साले तथा सेतराउ में गड़ी बनाई और सं० १०१४ में धनराजो तो को खास किया सो महे  
 वे गया अव आरंग में है और कोर डग खाल से कर के सं० १०१५ में स्वर्ग पधार्ता जे सागब  
 सिंह वीरम को पीछा बरवशा और आधी पैदाराज में लेगी कर शिव में कचेडी कराय हा  
 कम रखा फेर गरीब नाथ का ध्यान बनाया तथाना गुडरां के नाथ को नवरात्री काल गमान  
 आसबा बडी के नाथां मूजब करा दिया सो हनोज जारी है तथा डाहाली में सोटे जी वराज को  
 गठी बनादी ॥ और चौहो रियायां ने खोरवरो का विगाड किया जब पिंडां पधार कर सजा  
 दी फेर तावे दार जान कर मे लगाया और श्री कां कल का ध्यान बनाय दूधवी नाडी खुदाई  
 के लामे चराज के बिरवे में चाकरी पूगाया सो केले हे मराज की बदली में सेठ किये वकं जाने  
 में घरे पधार कुरब दिया ॥ बिक्रमपुरराव हरनाथ सिंह फोत हुए बाद कुंभ काराज बरन  
 राव होवी कानेर से साजिश रखने लगा सं० १०१६ में कुंभा को वफात दे कोर खाल से कि  
 या सं० १०१८ में सरूप सिंह लाडखानोत को दिया ॥ खुदा आबाद सिंध का कलोडा मियां  
 नूर महम्मद बेरायार महम्मद का सं० ११६७ हिजरी तारीख १२ सफर मुताबिक विक्रम  
 सं० १०१० में बहुत से फौज ले आया कि जैसलमेर व जोधपुर लंही गा शहर से ७ कोस गाम-  
 ने हडीये आते ही सवारी का घोडा मरा फेर मिये के पेट में दर्द हुआ श्री तेमंडे राय के भोपो  
 से कहने लगा कि बीवडीयां झूलो और चबो सोलो में पीछा जाऊंगा परन्तु मरही गया जना  
 जाने फौज पीछी गई की खबर आई जब महाराज कुमार श्री मूलराज नीरस्ते से लौ उआये

हवापोल आगेनपोलवाक पर आरवैबिलासमहल वराड-विलाव आरवैपोल वगैरे मका  
नात शहर में वमंडप बाडी में औरगदी मौजै देवैवरवाभै में बनाया ॥ वाहडमे सेजो  
सीसाचोरो कोबुलाके गामदे हीये वलुद्रये में वसाये किदेसावरी मालकी कोताही का-  
हुःख रईयत कोनहो ॥ राजविगजेजवगदवमुल्कके सिवा रक्जाना वसामान कुकु भीन-  
या क्योकिमुहूत तकराजमें गडवडरही जब ईसरी सिंहजी वगैरेनेखूवहाथमाराधा सिरफ  
हिम्मतवहोशियासे लारवोरुथ्ये वालारखवर्चहीनेपर भीआगलाकस्जाउतारा औरखवतगह  
कादाव वसामानके सिवारक्जानेमें २५ लारवथ्ये नक दकोडकर वैकुंठ पधार ॥

१४५ महारावलजी श्रीमूलराजजी

सं० १२१५

१ च्यापावत	रगादकुं	ठा:सिरसिह		३ १	श्रीरायसिंहजी सं० ४० मे	१ रामकुं	महासिंहजी
२ कोरडेची	पूलकुं	ठा:वीरमदे	कोरडे		दाई मदीना राजकिया- महल कुवर		
३ चौहान		गगाजैसिंह	बाव		१ वाहडमेरी १ धर्मसिंहजी		
४ च्यापावत	फतेकुं	ठा:मानसिंह	पडोकराणा	५ २	२ जालम- सिंहजी	२ मुहाकुं रतला	
५ जाधी	लाडकुं	ठा:नथराज	पादोधी		३ जालसिंहजी नानेरपोडे	३ महाकुं रतला	
६ महेची	साहबकुं	ठा:ईसरीस	जसोल-		सेगिरमरा	४ महाकुं रतला	
७ जोधीजी	रसकुं	गजावहादुरसिंह	मिसनगद		जैतसिंहजीके परिवार-	५ महाकुं रतला	
८ सोठी	मयाकुं	ठा:मुलतानसिंह			कानकशानोचे तिरवाहै	६ महाकुं रतला	
९ चावही	गुमानकुं	ठा:रुचनाथसिंह				७ महाकुं रतला	
१० कोरडेची	सिरिकुं	ठा:दुस्सनगाल	कोरडे			८ महाकुं रतला	

पासेवानां जाठ पावां महु जीउ जेठा ज्यभु मूलां हस्तु शहनू  
ख्यातोके देखने ववातोके सुनने से साफ २ जाहिर है कि हरपीडीमें राजके धरियांतो भारी  
यो कीपर वगशवमुल्ककी तरकी मे हदसे परेकोशिशकी है और भारी मुल्क बरवाद करने  
याने राजको स्वागत देनेके लिये जमीन दूसरे राजकी करते रहे है खासकर रसवत्त में तो राजही



गमाने तक नौवत पहुंचाई थी कि सरदार तो मुल्क लूट रो में यहां तक रहे कि छोटा भाई खुद  
 पद्मसिंह जी भी बगावत का डंका बजाते थे सेसामौ का पाकर पड़ोसियों ने मुल्क दबाना शुरू  
 किया चुनाचेदेरावर का जागीरदार जो न्यायोराज समझता था यह देस लूटने व आपका वंदो  
 वस्तर रखने को हावद पोत्रे नौकर रखे थे उन्होने किलेदेरावर व मुमगावाहन वीं झरगोव  
 व मरोट वगैरे लेकर सं० २० में नहर तक आपहुंचे और केहरांगी हावद पोत्रे बुरे बहादुर रां  
 ने दीनगढ़ नामी किला इलाके राजा में बनाकर कसबा आबाद किया था और समीरानसिं  
 धने पश्चिम ४० कोस पर चानराव की जगह सं० २२ में किला सहागढ़ व परगने में घडसी  
 या बढीया छोड़ तथा म्होरावरी में तले घोडड पुर कोट छोड़ दु. सं० ४७ में बनाकर बहुत सा मु  
 ल्क दबालिया था और इधर जोधपुर वालों ने भारीयों के चले व कोट डीगियों की वद माशी  
 से सं० १८२६ में परगने शिवकोट डग व सं० ३७ में बावडीया रावत धनराज की बेईमानी  
 से कोट गिरा व गैरे में यहां के हाकम म्हांता भानी सिंह को निकाल कर कबजा किया यहां  
 से फौजगर्द तो महाराज श्री विजै सिंह जी ने आधे राणा किया मगर कई वर्षों के बाद महारा  
 ज कुंवर व भारियों के फितूर होने से उन्हों का दरबल जम गया हर चार तरफ से मामला और  
 तलब हुआ जिससे फौज करनी वक्त फुरसत पर मुनह सर रखी और अदल भारियों को रस्ते पर  
 लाना विचार कर सं० ३८ में विकमपुर राव सेर सिंह को जो बीकानेर की हिमायत से हुकम अदु  
 ली करते थे पिंडा पधार कर स्वर्ग भेजा और नहार सिंह के बेटे जूझार सिंह को राव किया इ सी  
 तरह दूसरों के लिये भी मनशा थी पर बाजों ने और ही बढ कर हरा मखोरी की कि सं० ४० में मकर  
 शंक्रांतिके रोज भारियों के बहे काने से महाराज कुंवर राय सिंह जी महेता मरूप सिंह को  
 मार कर राज बैठा श्री दरबार को महल रुवा निवास में कौद कीया बाद महीने ढाई के सरदार  
 आपस में फूटे गाम बाहुडा कुर अभै सिंह जी के कुं० मेघजी साथ जंझून आली वगैरे कई सर  
 दार वतगोर के उन्ड व धारांगी के वंभरे वगैरे ने श्री दरबार को राज बैठाया और कुंवर जी व  
 कई सरदार वागी हो कर मुल्क लूटने में धुंध मचा दी सं० ४१ में पूगल पर बीकानेर ने कबजा

किया अगरे चैराकजी ने तलवार नहीं बांधी बल्कि फौज आई जब वज्रकर काम आये पीछे गढ़-  
 खाल से रहा सो सं० ४१ में सरदार कदमे जगा ताद सं० ५३ में कुंवरजी को जोधपुर से बुलाया पर  
 दुतरफा मनवां मिचने नहीं दिया कोट देवे में जारहे तथा भंवर अमै सिंह जी बजाल में सिंहीने  
 को बाहुड़ मेर पिंडां पधार वदसाओं को सजा देकर साथ साथ कोट रामगढ़ में रखे तीनों ही ने  
 रहत फरमाई तो श्री दरबार के दिल में कुंवर व भंवरों के दुःख व भादियों के फैल से ये सीना उभरे  
 गालिबहुई कि मात्र कारखाने राज के अहर हो गये खुला साहाय्य दाह नाम में हैं सं० ४ में व्या-  
 स मनजी दास जो वेराउ वेरा के श्री पुज्य के सिस जो वसका अचल दास को अहमदाबाद श्री  
 पुज्य पास ५६ विद्या सीख रोगो भेजा श्री पुज्य ने दृष्ट के परताप व्यासजी को देखते ही-  
 नाम से पतलाया फेर कुंड जी देख कर नृप व कुंवर व दीवान की थी ज्यों ही कहा कि दीवान-  
 को तो मार डाला नृप को कैद कर के कुंवर राज वैदा है परन्तु राज तो नृप ही करेगा कुंवर की  
 उमर कम है पीछे व्यासजी को विद्या सिरवार सोवन रही है ॥ महाराज श्री विजै सिंह  
 जी के डर से भंवर भीम सिंह जी बचा पावत सुवाई सिंह जी डाः पड़ो करण जोधपुर से भाग  
 कर सं० १०५ में यहां आये श्री दरबार ने बहुत खातरदारी से रखे और कहा कि आप तुर्क-  
 राजा होंगे तुनाचेदः महीने में महाराज के फौत होने की खबर आई जब भीम सिंह जी को श्री  
 राय सिंह जी की बाई सरागार कुं० परनाय साथ जाव लेके जोधपुर पहुंचा राज वन विस्तलि-  
 ख दी और धा भाई से सिंह को रख गये थे कि शिव कोट छ। गिराव आपका पीछा ले लें-  
 जिस पर यहां से म्हेता भानी सिंह को भेजा सो गिराव की गडी पाडी फेर रावत जी वरुन को  
 पीछा कायम कर सक तुरज व सक कूवा करा दिया और शिव में भी हुकम मुजब कब्जा होवा  
 ही परं० जोधपुर से श्री मान सिंह जी तो गढ़ जालोर में जारहे और राठोड सरदार सबागी-  
 होयहां अरजियां धर्म दृष्ट बहुत सी सिरके भेजीं कि आप की मदद से बचाव होगा और आ-  
 पका परगना बगांव पीछे देवाया हम महाराज का सलाम करैगे जब श्री दरबार ने बीकानेर  
 महाराज श्री सुरत सिंह जी को भी सलाह में शामिल कर के खातरी का जवाब भेजा था-

और कहलाया कि श्रीमान सिंह जी राजा होंगे तथा श्रीमान सिंह जी को भी दस हजार रुपये  
 खर्ची बारद मयाराम साथ भेजकर यही कहलाया था इस सबबसे उबाररवाली गया कि  
 चोरवे में आके शिवसे फौज पीछी बुलाली पीछे संबत ५१ । ५२ में चोडावत बहादुर सिंह जी  
 धपुर का थाराग लाया और भीम सिंह जी साहब अहसान व अपना वचन भूल के यह बदला  
 देना चाहा ॥ कि फौज भेजके जैसलमेर ही लेलेना मगर नियत का फल मिला कि सं० ६०  
 में फौत हुस श्रीमान सिंह जी सा. राज बिगजे ॥ जो धपुर की फौज अमर कोट खोय पीछी आती  
 गाम बीझोराई लूटी जब यहां से फौज गई सो गाम सावरी झलूटकर महे चांव गैरे से फौज ख  
 चले वाहंड मेरो को भी गोशमाली करी ॥ पुष्पिमारग श्रीवल्लभ कुल के सेवक हुस जब सेश  
 हर में ब्राह्मण पुष्करौ वसाचोरे और महे श्री भाटीये वगैरे श्रीहराय जी की आष्टी हुई और  
 श्री गिरधारी जी आदि शेवाप धरायने ग वगैरे म्रजादवां धी ज्यूं ही होवे है ॥ तथा जीव दया -  
 रोसीर खाई कि नवरात्रि में देवी की पूजा में भै सेवक रोवे ता राद होते थे सो सिर्फ ७ महिष  
 वकई बकरे के सिवा मारने की तलाक बतांवा पत्र लिख कर रईयत को सोंपी ॥ श्री नाथ जी का  
 दर्शन सं० १०५० में श्री गंगा जी परसन् सं० ६१ में पधारै : जो धपुर महाराज श्रीमान सिंह जी  
 से मिलना हुआ और आपस में बहुत ही मोद रहा भंवर जी श्रीमहासिंह जी के तीसरे कुंवर  
 श्री गज सिंह जी को बलंद अकवाल जानके सं० ६१ में युवराज कर कुंवर परदे वैठाये वाद राज  
 पर तबीयत रज्जु हुई और सं० ७२ में पेगीन गोरी करी कि ७ ही कुंवरो की मज्जन्स कुंडली देख कर  
 फरमाया कि नम्बर १ । २ वैष्णव होंगे ४ । ५ का आयु कम है व ६ । ७ राजकाज करे गे ज्यूं  
 ही हुस व्यास लखमी धर को दिल्ली भेजा सो मारु मुशतवाले आया सं० ६६ में फौज रवाना  
 करी तो फज्जर अली खां वल्द वहादर खां यहां आय रुपये ५० हजार किला दीन गढ व २४ हजार में  
 सामान दीया जब किसन गढ नाम रखा श्रीलक्ष्मी नाथ जी का मंदर बनाय कोट में थारागा का  
 यम करके फौज नहर गई ५ महीना लडी किला छूने पर था इस अरसे में खबर लगी कि  
 दिल्ली आगेरे वगैरे मुल्क में सरकार अंगरेजी का पक्का अमल हो गया है यह सलाह दान कर फौज

पीछी बुलाती कि अहद नामा करके जितना मुल्क गया है सरकार दौलतमददारी-  
 मदद से सब पीछाले लैये ॥ भाटी दौलत सिंह जी वधानवी मोतीरामजी की दिल्ली  
 भेजे सं० ७४ मुताबिकसन १०१० दिसम्बर ताः १२ सरकार दौलतमददारी अंग्रेज-  
 कामिनी बहादुर से अहद नामा जनाव नवाब मोसल्ला अलकाव मार कुदूस आफ़िदेस  
 किस्त गवरनर जनरल बहादुर के हुकम से चार्लस बहादुर स मटकलफ़ साहब बहादुर  
 रिगज़ ॥ रियाया परखरी का हद से परे खयाल था ब्रह्मनों आदि शहर के मात्र कौमो में  
 लेन देन व्यवहार कजगे जमीन के झगडे वशादी गामी में खर्च वगैरे रीतर स्मरूपक के साथ  
 पड-पाव के लिये मृजाद बांधी सो हनोज़ नारी है और दाना वगरी वलोग दुवा से खैर से याद कर  
 रहे हैं हां बहुत मुद्रत पाने जमाने की हवान दलने व कई रीतों और तो के अखति पार में रह  
 ने से बिगड़ी हुई है सो शब उमद कवी है कि श्री जीसा हवों की उम्मार दरज़ हो सब तरह से ख  
 याल फ़रमा कर रईयत के सुधारे व खर्च के निभाव वगैरे स्वीकृत वीर्ज का रवै हींगे चरना-  
 पूरी खराबी है तथा लावारस कामाल राज में लेना अलीन किया कि उस के गोद लेना या पुन  
 लगाना सो अव मुक्त खोरे खाते हैं उसके कर जेतक भी नहीं देते सो मुनासिब है कि राज में तो  
 लेना अलीन ही रहे पान्तु मुक्त खोरे नरवास के जहां तक हो सके चरच से तो खूब ॥ वरन ए  
 कृत ये से लगें कि सब का भला हो ॥ मकाना तजदीद की बड़ी सो कथी नकासी की भांत नवी  
 व जै हाथों से बना देते थे तफ़्सील जैल कमठा रुग्णा ॥ गढ़ में रां का दोय पांनो का ब्र  
 म्दल सभानिवास मण पाटी बाग़ जहां अमर म्दल व अमर बाग़ था ऊपर मोती महल व मूल  
 विलास व सर्वोत्तम विलास वगैरे व कुंवर पदों में तबेला व महलात व कुंवर जैत सिंह जी का  
 छिरा और तलेटी में भंवर म्हा सिंह जी का छिरा व शहर पनाह मण कई तुर्ज व श्री देव चंदे सर  
 महोदय का मंदर और छड सी सर में गढी सं० ३५ में ॥ तथा श्री गिरधारी जी व बांके वेंहारी  
 जी आदि ११ स्वर्णों का मंदर वल्लभ कुल के व म्दलात बहुत उम्दा व मंदर देवी अंबका व  
 गोखनाथ वगैरे का सं० ५४ में तथा खवास आठ ही की हवे लीयों ॥ तथा शहर से बाहर

पश्चिम दरवाजे से १० कदम पर श्री हनुमानजी का मंदर और पौन कोस तंगंगासागर मरु  
महलात सरकारी वकई बिकाने और लोगों के व श्री गणेशजी का मंदर सं० ५५ में और दो को  
सपर तालाब व कुवां झालरा वगैरे व नीज मूलराजसागर मरु महलात व बंगला मंदर वगैरे-  
सं० ३६ में जहां पुरोहित जगांनी व माली व साथे तथा जीरांन पर वहे महाराज का मंडप व  
मल्के के दरवाजे पास राधाकुंड उर्फ मूल तलाव व पौन कोस दिस ईसान सं० १२२५ में कि  
स्नघर जहां बंधा बंधने से कई बेरे व मालियों का गम हुआ ॥ तथा माजी श्री सोढी जी साहि  
बा की तरफ से सं० १२२५ में कुंवा रामसर मरु चौकी कोठा वंगला व श्री सीतारामजी का मंदर  
जैपुर के उस्तों से बनाये और मीरामाजी श्री चुहानजी के नाम से कुंवा चुहानसर व महेता  
सामनमसिंहजी की हवेली तथा दूला के जात में कोट मूहनगढ़ व मंदर श्री लक्ष्मी नाथजी  
का कोट देवी कोट व गाः वीभोरार में कोट फतैगढ़ व कोट लखा व मंदर देवी जी गडी ही गलाजगढ़  
गाम महाजलार में कोट खुर्दयाला कोट रामगढ़ व मंदर श्री बलदाऊजी का समके तांडे  
व सोभ व मंडाई व खाभे में गढा और तीर्थों पर श्री गोकुलजी श्री मथुराजी श्री द्वारकाजी  
श्री पुष्करजी श्री गिरराजजी की तलेरी श्री सोरभजी श्री ब्रंदावनजी में जगावो सं० ६२ वै-  
साख वद २ ॥ महेता सामसिंह ने अर्ज करी किरुप्ये २० लाख सालमसिंहजी व १२ लाख  
धीरतसिंह व दो लाख मेरे पास हैं सो ले रावे वरना मेरा जीव सालमसिंह लेवेगा या रावने जादों  
का घर बिगाडेगा श्री हजूर ने फरमाया किय ह धन तो तलेरी के कोठार में है सं० ७३ में सामसिंह  
कोट किस्नगढ़ में जा बैठा और हुकम नही मान गोलगा महेते जी अर्ज करी कि कोट ही गमावेगा  
जब राजा श्री तेजसिंह नी सहा पौज ले गये सामसिंह को जीवदान का बचन दे कर निकाला सो  
मौजे रामदेहे में जा रहा फेर महेते जी ने श्री महाराज कुमार श्री गजसिंहजी साहिबों की रवात से  
बुलाया सो कुंवर पदों में मारा गया श्री जी साहब सब शास्त्र ग्याता नीति निपुण बड़े ही दातार थे  
पंडितों व कबीयों ने मूल बिलास आदि कई ग्रंथ बनाये जिसमें से मुश्ते नमूना अजर वर वारे याने  
कीरत लिह्मी का संवाद दूसरे में लिखा है ॥ यह महाराज वल साहब इन्साफ पारवी में मशहूर थे

सुनाये दो मुकद्दमों के इन्ताफ का अहवाल जो आपने फैसल किये थे नज़ीर के तौर पर हम नि-  
हायत दरुलसार के साथ जेल में लिखते हैं ॥ १- सिंघ के दोलपी सेठ थे १ ने १० हज़ार रुपये  
रोकड़-बही में दूसरे के लेखे मंडे हैं दूसरे की वही में जमानही सी झगड़ते २ दोनो सेठ पी-  
कानेर दिहरी जैपुर पाली वगैरे होकर यहां आया और कहा कि हम सिर्फ़ सही इन्ताफ़ देख-  
ने को ही झगड़ा चलाया है सो चिट्ठी लिखना या आये आये करने वगैरे ऐसे न्याय मंजूर नहीं  
जब ओसबाध † की सलाह से दोनों की वही के पाने कांटे में तुलवार तो मुद्रा पलैह-  
की वही का १ पाना जो उसी तारीख के मेल का था १॥ रची भारी हुआ बहुरूप भी १ ही कुलम-  
से नये लिखे मालूम होने से कहा गया कि वैश्वकर कम मतार्थ सो उजाने के लिये नया पाना मा-  
ल है ॥ मुद्रा पलैह न सचे इन्ताफ़ को हद से परे तारीफ़ करी और दोनो सेठ शुरु बनाते २ आपने  
घर गये ॥ श्रीजीसाहिबों † की फ़ाज़ी कालवाव व न्याय सम्पत्ती तहरीर काज़ी  
के हाथ से लिखी जाने का कुर्व श्रुता फ़रमाया सो ता हनोज़ जारी है ॥ २- गाम का ठोड़ी का  
१ पन्नी वाली से खेत में १ साहूकारने रुपये चूबताले कार खेत पर कोयले से लकीरे खींची थीं -  
सोक पड़े से साफ़ कर दी फेर पन्नी वाली का बेदा पर देस से आया जब खेत देखा कार रुपये मांगे उस-  
ने कहा मेरी मूहने दे दोस है अदायत में दोनो की बाँवें सुन कार खेत का पाना पानी में भिगवाया  
तो लकीरें दारव पड़ी साहूकार की बहीर खान की गई ॥

नकशा महाराजलजी श्री मूलराजजी साहिबों के कुंवर जैत सिंह जी के परिवार का

ठाकुर				महल				बांदराज		
नम्बर नाम पिता	काम नाम	सन पदा	सन पदा	नम्बर नाम पिता	लफाव नाम पिता	दिक्काना	सन गारी	नाम गारी	सम गारी	किससे किस दिक्काने
जैतसिंहजी	चांभा पत्			रामा रामा	रामा रामा	रामा रामा				
महाराजसिंहजी	शेरा			रामा रामा	रामा रामा	रामा रामा				
जैतसिंहजी				रामा रामा	रामा रामा	रामा रामा				

तेज सिंहजी महासिंहोत	नरा वत्	१८३३ १८३३	१ सोढी राणाव त	जीवाकुं साराणा कुं:	वीरदास महाराज दानसिंहजी	सुरताना उ काचार	१८०६	१ किन्न कुं: हुकम कुं:	१९१० से०	वीकानेरमहाराज श्रीसरदारसिंहजी
देवी सिंहजी से०	से:	१८२५ ७	१ वाह उमेरी	से०	रा: पदमसिंह	बाहड मेर		१ जतन कुं: १ मदन कुं:	१८९६ १८९६	जैपुरचंद्रावतवलवं तसिंहअननरिंहोत वूदीरज्जेनेसिंहजी
श्रीगजसिंहजी साहबराजविरा जे-		१८२० १८२०								
फतेसिंहजी से०	नरा वत		१ सोढी	पनुकु:	सरूपसिंह	सुरतान		०	०	
जोधासिंहजी से०	से:	१८०९	१ से:	राजकुं:	मेरसिंह	डाहली		१ अजव कुं:	१९०९	झालरा पाटणा राज रांणाामदन सिंहजी
केशरीसिंह जी से:	सोढा	१८६९ १८६९	१ मेहवी अभैकुं:	मालसिंह जी	जसोल	१८८५	१ जदेकुं:	१९१८ भाद्रसुर	१९१८	जोधपुरमहारा जश्रीतरवतासिंह जी
छत्रसिंहजी से० मेरसिंहजी केगोद	से०	१८०९ १८०९	१ मेहवी पनैकुं:	मालमसिंह	जसोल	१८८५	१ फूलकुं:	१९१८	१९१८	जोधपुरमहाराज कुमारप्रतापसिंहजी
भीमसिंहजी तेजसिंहोत	से:	१८०९ १८०९	१ सोढी	वादल कुं:	गजसिंह	राणाग देर	१९०९	१ रायकुं: के सु:	१९३२	से भंवरफतेसिंह जी
मानसिंहजी से:	राणा वत	१८०९ १८०९	१ सोढी	०	आनउसिंह	पुहडी		१ मानकुं:		बाचोरमहाराज समर्थसिंहजी
			१ से:	मोनुकुं:	०	से:				
			१ वीकी	गोपा लकुं:	भागवानसिंह	मही	१९१५ १९१५	१ जडाव कुं:	१९४४	कुडलेझालाराव सवाईसिंहजी
			१ राजा वत	सिरीकुं:	किसीरसिंह	जगरूप देसर	१९१६	३ हरकुं:		



				३ मेहरी गायकुं	अलीराज	नसीब	१५२०				
				४ मेहरी गायकुं	विजयसिंह	मुंगल	१५२०				
११ उमद सिंह जी	बाहउ	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	उरसिंह	१५२०				
देवीसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	अनवरत	धानजी	१५२०				
१२ मनाद सिंह जी	से	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	हरिदासजी	१५२०	२	मामकुं		
जोपसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	से	१५२०				
१३ मारदासिंह जी	नीवा	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	यमानजी	१५२०				
उमदसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	विस्नसिंह	१५२०				
१४ सातमसिंह जी	से	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	हरिदास	१५२०	१	दयाकुं		
खुशालसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
१५ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	मेमजी	१५२०				
१६ सिपदासिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
अनवरसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
१७ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
१८ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
१९ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२० रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२१ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२२ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२३ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२४ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२५ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२६ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२७ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२८ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
२९ रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				
३० रजसिंह जी	मेर	१५२०	१५२०	१५२०	१५२०	अमरसिंह	१५२०				

होने से अपमान हुआ था सो खार भी अब निकालेंगे चुनाचे देस का बिगाड करती हुई फौज १० हजार वीकानेर मराज मीयत ठा: पड़ोकारा जैसलमेर से ५ कोस गाम वासरापी आई और कई आंचड कर गाम भोजक बड्डा गाम वंदेवी कोट व हठावगैरे लूटा जब सुकाबले को फौज भेजाई सोलडार में श्री स्वांगीयां जी के अदीठ चक्रों से ५ सो आदमी व सूरंगरा नम्बर दो मारे गये कुत्री मौजूद है तथा कई घायल हुए जब फौज तोपें छोड के भागी दूसतरफ का सिर्फ रामचंद सोढा व बोलसिंह राई मरा और खोसों के जमींदार साहबवां का वेटा मिठुरवां घायल हुआ जमादार बोला से से हंगामे में कई मिठु फटेगा सुहा कि वेरे का कुछ खयाल न कर के खूब लडा जिस पर नकारा व पालखी बगसा गया वाकी फौज पीछे गई कि पोहकारा लूट हीलीनी पां० ठा: बाघजी खेत सिंहीत ने बंबाई सरिस्ते दारी के बचारी गाम थार पर लडाई कर फतेका डंका बजाती हुई पीछी आई ॥ दोहा जातं जुगां न जावसी आमी के दिन याद । भडक मघां नही भूलसी वासरापी को बार ॥ १ ॥ जबसे बीकानेर में कहवत होगई है कि कौई किसी पर किसी तरह से जोर जुल्म करे तो उसको कहे कि साला वासरापी की लडाई में किठे हो ॥ सं० ९९ में सरकार दौलत महार की तरफ से कर्नेल नवलीयम साहब बहादुर ने श्रीजीसाहिबां व बीकानेर महाराज के मुलाकात का कांड के गाम गिराजसर वगडियाले के बीच में कराई जब रुप्ये दार लाख देस के बिगाड किये के ठहराये थे सो तो श्रीजीसाहिबा नहीं लिये और महाराज से पूगल का ठिकाना राव राम सिंह जी को पीछा दे राया ॥ साहवांन युष्पियन अवल जनाब कलां कारनेल लाकर साहब बहादुर सं० ७७ में यहां से निकल अफरोज हुए जबसे यहां का वकील कलां साहब की खिदमत में रहता है बाद आज तक जो श्रीसाहिब बहादुर जैसलमेर शहर वरुला के में तशरीफ लाये सो अलग लिखे हैं ॥ साहिब कला को सलाह से सं० ७९ में डाकुवों को सजा देने के लिये ५ सो सवार साथ पुरोहित सरदार मलजी को भेजे सो मौजे सराधरी में रहे बाद डीहै व भुजीयै से फौजां व जमीयत राज मारवाड आतिही हल्ला किया- रावत भूपसिंह वगैरे बाहुड मेरो को पकड ले गए और किले भुजीयै में कैद किये थे

बकीयानेर - अभैसिंह व चौकलसिंह को जहर देकर मार डाला-तेजसिंह देवीसिंह फतहसिंह को तिलावत न किया और हस्वमस्त्री व गुरुगजसिंह जी को तरफ पवित्र पावने ता सालमासिंह जी ने सातरवन्द का एक अजीव और कंचामकान ग्राम

जैसलमेर का उमराव जानकार कछु भुजमहारा औ श्रीदेशलजी ने जामनी कर के-  
 छुड़ाये और भारी सरदार जो जो बाग्ये यहां दोटी हस्त होने से बचास गग मगस्रंज से-  
 कदवं धाड़े का नाम ही नही रहा इस बावत खीता खुश नूदी मरा खिल अल वफील-  
 जंजीर सफा श्री सरकार दौलत मदार की तरफ से आया और मुल्क मालानी का सरकार  
 के खाल से होकर रुजंद साहिब बहादुर के मातहत बहादुर में हाक मरहता है और बहादुर  
 मेर वेशाला ज्जोदन जो कदीम से जैसलमेर के तावे है सब तरह से बरताव विक्रमपुर वर  
 सलपुर राव याने उमरावां मुजब चला आया फेर नमालूम क्यों कर अलम समभा गया है  
 सं० १८५४ में मोजै वाप ३० हाजा वफलोधी ३० मारवाड की सरहद जनाब लडलु साह  
 व बहादुर निकाली और पत्थर सींव पर रंवास फेर जो धपुर वालों दूसरा पत्थर औली  
 तरफ ररव कर द्वागडा डाल दिया है सो हनोज सफाई नही हुई तथा गां सरा बड़ी ३० हा  
 जा व हडवा ३० मारवाड की सीव मालोयद साह व बहादुर निकाली पत्थर मौजूद है ॥  
 काबुल का बादशाह मुजाबल शाह सं० में यहां आयै किसन घाट डेरा किया श्रीजी  
 साहब डेरे पधार पहुंच ही सतकार किया था फेर सं० ९१ में आयै जब हींगलाज में याने घड  
 सीसर पर मुकाम करवाना हुमा सरकारी फौजों का तुल परगई जब यहां से ऊढ साथे रने  
 वगैरे हर तरह से मदद दी गई और अमीरान सिंध ने ये मददी करी फौज पीछी आई जब लडाई  
 हुई है दरवाद व सीरपुर के अमीरों को पकड़ ले गए मुल्क सरकार के खाल से किया रवैरपुर  
 का अमीर अली मुराद खां खैर खादी करने से बने रहे व दंगल खान जाकर कदम बोसी हा  
 सलकार आस बाद कई वर्षों के सं० २० में सरकार दौलत मदार ने सनदरी वीकि जो मुल्क  
 अब सीर साहब के कब्जे है न सलन वादन सलन रहेगा ॥ सं० ९९ में सरकार दौलत मदार के  
 हुकम से ठाः राज श्री कृत्र सिंह जी फौज ले गये किला घोरखु मस सीव आषाढ में कायम कि  
 या बाद सीर अली मुराद खां का खास रेवली मुमार यहां आकर कूचियों को र स्हागट घड सी  
 या व कीया छोड़ मस परगने सं० १९०० के मिघर में दे गया जब से खाल से है स्हागट का

† बकीया नोट - जैसलमेर में बनाया जिसके तीन दिस्ते एजने बाद इतकाल म्हे वा साहब खतर कर जमीन पर राखिये  
 जवे सन १८८९ ई० में हम जैसलमेर को गोये थे तो वही नो हि से म्हे वा नो की होवली के गोवरू पंडे से थे वाक नूदी नर वन्द वतर नो ने †

नाम बलदेवगढ़ बघोरडु का नाम देवगढ़ रावा दोनों जगह हाकिम रहते है व कोर की कि  
लेदारी व म्हासूल में कनोती का परवाना पुरोहित सिरदार मलजी को किवो बडे साहब के  
बकील थे करा दिया तथा कोर वारे में खान साहब व मीर साहब का आदमी रहता था सो उठाया  
गया ॥ सं० १८९६ तथा सं० १९०० में श्री नाथ जी के दर्शन व श्री गंगा जी परमन्न को पधा  
रे-सरकार दौलत मदार की तरफ से यु रूपीन साहिब किलजर साहिब सं० ९६ में और बरवट  
साहिब सं० १९०० में साथ थे श्री राणा बतजी साहिब श्री जी दुवारे से उदैपुर वास्ते मुकां  
गा अपने भाई महाराणा श्री जवान सिंह जी की गरुथे ॥

मवाना तजरीद किले में गज बिलास महल मय आराध श दूरो चीनी के वस बेति म बिलास  
मोती म्हेल में आराध श व मुसाहब आचारज ईसरलाल जी की हवेली व तलेटी में पास वान  
की धर थार व दी वान म्हेता उत्तम सिंह जी का मकान तथा मांरा क चौक में वावडी और सं०  
८४ अमर सागर में म्हेलात व गजरूप सागर बाग जिसको नीचला बाग कहते है व बावडी ग  
ज बाब बनाई थी सो तलाव का पानी जाने से बुराई गई और बाग के रस्ते में ईसरलाल जी का  
तलाव तथा वाडी में मंडप वगैरे बनाए ॥ सं० १८९२ में सेठ गुरोसदास बहादुर मलने राज  
की कुल पैरा काठे का फी साल रु० ११६००० में अलावा नजराने व रु० ५०० से ऊपर नुर  
मांनाराज का वेहासल म्हासूल में विधा वंधान कनोतीया व करावार पल्ला वगैरे २ लाग जो  
हकदारों का करीमी है ज्युही रखकर ३ साल कालीया था फेर घास चारे लकड़ी पर प्रोली की  
लाग वगैरे कई बाबा बढती लगाने पर ही १ साल में छोड़ दिया ॥

१४७ महाराजाधिराज महारावलजी श्री राजाजीत सिंह जी साहब सं० १९०२

१	बींकी जी	गुलाब कुं०	ठा: अमरसिं हजी	महाजनदः बीकानेर	१	हरीसिंहजी सं० १७ भाद्रपद वर्ष १॥ रहलत फरमाई ॥	मि: साहब नयमलजी
२	सोढीजी	सदा कुं:	ठा: साहिब दानजी	खूहडी	२	लालसिंहजी सं० १८ में ई माह के रहलत करी	
					१	छोटा भाई श्री वैरी साल्ती राज बिराजे	

नकीयानोट - अब भी यह मकान शहर के कुल मकानों में से ऊंचा है म्हेता साल मसिंह के पोते म्हेतार नजीत सिंह जी से जो एक लापक  
आदमी है हम मिले और उन्होंने हमको इस मकान की सैर कराई तो एक दरवाजे थाने कवाड के आउ मेता कननर आया इसताक पर

बड़ा हज़ूर की वसीयत बशीरां गावत जी साहब के गोद लेने से नान्ने से आकर राज विधान  
 जब ३॥ वर्ष के थे डा: राजश्री के सौ सिद्ध जी साहब कुल सुखतार रहे म्हेता सालमचंद  
 जी को दीवान किया ॥ बशीरां गावत जी साहब का चा भाई ववाभी जी को तो उदैपुर-  
 वई सर साल जी को कैद में पहुँचाया ॥ और म्हेता लक्ष्मन सिंह जी साथ फौज भेजकर-  
 भादी तेजमाखोत वगैरे जो चोरी में सरगमी थे पकड़ाय पाव जोत्तां कैद किये बाँद चोरी  
 का नाम ही चढ़ गया था ॥ फेर बमूज बराजनीत के पिछली छ: छड़ी रात से पिंडीं अणोदी  
 होकर उदै पहर रात गयां सुख फरमाने तक हर एक काम नित वनिमंत के वक्त पर कारते थे  
 पाने मात्र काम का इन्तज़ाम से सा किचा कि सिंह वकरी साथ रहने लगा दोहा धन्य  
 उवल के हर सधर दुझल श्री घड दाट । वेहु सनाहर वाकरी पाया सकरा घाट ॥ १ ॥  
 खास कर आवादी व आमदनी की तरफ़ी होने में हद से कमाल को शिश की कि कीदे से कि  
 रसानुलाकर अफ़ाम वसिंध से सारी पांमंगवार चावल पैदा कराया से से ही सैकड़ों किस्म  
 के बीज व पौदे संगाय बागों में लगाय और साजीत पुरा बहाला बूयली वगैरे बहुत से फुटे  
 त्पार कराये कि कई तो पुराना गांमों में आवादी बढ़ गई कई गाम नये आबाद हुय - सो  
 नक़शे में लिखे हैं तथा काकनय कल्यांन घाट रांम घाट किस्त घाट वंगवादी बिजउर  
 सर वगैरे बंधा बंधवाने में लखुं कप्ये लगाय मगर कुछ भी हासल नहुआ सब वयह कि ज्योरे  
 बारिशा होने से कुल बंधे टूट गय तथारदियत को दूला के गैर से बुलाने में हद से ज्यादा उपा  
 य किये कि पलीवाला वगैरे को बहुत सी लागें माफ़ करई और ब्राह्मन लक्ष्मन दास - व  
 जैसंग दास साथ बवाला २ इज्जत के परवाने भेजे से से ही महसरीयों के लिये चोवा बिबल  
 जी को भेजाया और दूसरे आदमी भेजकर सैकड़ों जायों विस्तोयों वगैरे को बुलाकर रा  
 रोपाव पेटीया देने के सिवा जिस तरह उन्होंने न चाहा स्वातरी के परवाने करा दीये जुना  
 चे बहुत से लोग आश भी मगर कहत सालीयोने रहने नहीं दिये जोधपुर से अग्नि हो-  
 त्री सिरी माली जग्ने स्वरजी को बुलाकर कई वर्ष दृष्टीं कराई कि कहत न पड़े - परन्तु

१ वक्ती यी नोट - पढ़ा पड़ा हुआ था हमने उठाकर देख तो खुद म्हेता सालमसिंह जी के हाथ से पढ़ा पढ़ा हिन्दी में लिखा  
 है नजर आर कि "मेवहफ़ गैरहूँ जिस को गक माने वीं रसत लगाकर यहा के लोगो ने हलाक किया था अब मैंने सपने दूर मनो वे +

उपाय ग्रहणा गया सिर्फ दो षष्ठमंवर आर १ तो कुंवा बनाया सो गाम पक्का हुआ दूसरा चौ-  
पाये का काम दीक हुआ ॥ से से ही हुकम का खयाल था कि अबल तो वेजा हुकम नहीं देते  
थे और जो हुकम दिया तो सब ने माना ही पां० जिस किसी ने नहीं माना आंम नाकर के शहर  
वेद से बाहर गया तो किसी काम नांगा नहीं हुआ उन्हो ने ही लाचार होकर हुकम मंजूर की  
अरजी भेजी तो फरमाया कि भला ई आबो जब पीछे आगस चुनाचे भाटी उदै सिंही त तेज  
मन्त्रोत व के लरागा जसो डा कजो सो सान्योरो का तो हाल खुलासा लिखा गया है और राज श्री  
उमद सिंह जो व उनहों का जांम आम दरवां वसि पाही खंधारी व मुवा व चुहडा म्हीर व रूपसी  
व गोदी पल पन्तु व मुहार का सिपल आदिले शहर के पींजारे चमार व भंगी व देवी कोट वी-  
झो गार्द के देठ भी निकले थे हां शहर के साहूकारों ने हर ताल डाली जब पिंडा पधारे खानरी-  
फरमाय उनके कोर मूजव २२ कलमां का परवांना उसी जगह लिखा दिया था सेठ वी सानी-  
सदराम जी को दिल में होल हो गया तो परवाना ही पीछा नज़र किया फेर श्री गिरधारी जी  
का मंदर जो दयाया बनाने के लिये व का कनय लाने को चीरा भी शहर पर कर दिया व हरतारों  
खैर खवाई हाजगी देवार्द कि किसी तरह फितूर किये की माफो हो अगर चैठाः साहिब  
भीत सच्ची देते थे परं होल नहीं मिया जब परदेश गया और ब्राह्मन पुष्करो आंमने से ता-  
लाव पर नारद तो हजुरी गंगा दास को भेज कर पीछे बुलाये थे ॥ सं० १९०४ पोहो सुदि  
में जनाव कलां साहब कारनेल सदर लेन साहब बहादुर यहां तशी फत्ताश श्री दरवार की सर-  
कार दौलत मदर की तरफ से खिन्न सत यहां हो से ले कर दिया दिन २० मुकाम बहुत ही खुश  
मदर खान रह ॥ सं० १९०२ में जाधपुर जैमल मेर के मुकदमा चोरी धाड़े के फौसल दुसपुरो  
हित सदर मल जो गये थे दुनर फा नुंना मुकदमा रद कर के रुपये २ हजार दिये ॥  
नर सिंह गिक्ती सिंह के व सदो का शक पक्का हुआ जब ठाः राज श्री छत्र सिंह जी सहा फौज  
ले गये सो गडो गाड-गांम कनूर खान से का चांगिकनी सिंह दुर्वा कानेर में नार हाथा वाद करे  
खान के गाम वनू का आथराः जैद मल जो गिरा न सखानों को वरवशा सो भारी गाम है ॥

इति मन्मथपद अन्ती शेषाया ॥

बनू का नाम ॥ १९०४ में २२ कलमां का परवाना उसी जगह लिखा दिया था सेठ वी सानी-  
सदराम जी को दिल में होल हो गया तो परवाना ही पीछा नज़र किया फेर श्री गिरधारी जी  
का मंदर जो दयाया बनाने के लिये व का कनय लाने को चीरा भी शहर पर कर दिया व हरतारों  
खैर खवाई हाजगी देवार्द कि किसी तरह फितूर किये की माफो हो अगर चैठाः साहिब  
भीत सच्ची देते थे परं होल नहीं मिया जब परदेश गया और ब्राह्मन पुष्करो आंमने से ता-  
लाव पर नारद तो हजुरी गंगा दास को भेज कर पीछे बुलाये थे ॥ सं० १९०४ पोहो सुदि  
में जनाव कलां साहब कारनेल सदर लेन साहब बहादुर यहां तशी फत्ताश श्री दरवार की सर-  
कार दौलत मदर की तरफ से खिन्न सत यहां हो से ले कर दिया दिन २० मुकाम बहुत ही खुश  
मदर खान रह ॥ सं० १९०२ में जाधपुर जैमल मेर के मुकदमा चोरी धाड़े के फौसल दुसपुरो  
हित सदर मल जो गये थे दुनर फा नुंना मुकदमा रद कर के रुपये २ हजार दिये ॥  
नर सिंह गिक्ती सिंह के व सदो का शक पक्का हुआ जब ठाः राज श्री छत्र सिंह जी सहा फौज  
ले गये सो गडो गाड-गांम कनूर खान से का चांगिकनी सिंह दुर्वा कानेर में नार हाथा वाद करे  
खान के गाम वनू का आथराः जैद मल जो गिरा न सखानों को वरवशा सो भारी गाम है ॥

सं० १५०५ में काठभुज मिरजा महाराज श्री देसलती से दोस्ती हुई वाहुड मेरकोरा : कभूतसिंह  
 की मारफतरी का शया सं० ८ में टीकागया बादता पूरी चरवंट पाने वलील सो गानदी का नुवा  
 आनाजाना बनरहै फेर प्रागमल तो विगप प्राती बटाई चुनाचे वारं रज्ज का विनाइ वसलाह  
 श्रीजो साहिबां सं० ३३ में वीकानेर महाएज श्री मंगार सिंह जी साहिबां से प्रो० गिरधारी बालनी  
 की माः दुशा और श्री खैचाहनी भोभां नीहारणको अपना तुत्तरा समझा रहे हैं ॥ वीसारी  
 सं० ६ के आपाद में हैजा व सं० ५ के संगाले में तपकी से सदहा आदमी फोत दुग- ॥ सं० १५ में  
 किल्ला बरी के केलराग विसाला वरौ परारी खोखां हलोया लिखदीया किल्लरारान वारु व  
 बदे सिंहोत तेजमालोत जो पदोसी है जबरन जमीन की नते हैं सीव निकासी जावे जय बाहु की  
 तरफरा : पंत श्री ब्रज सिंह जी साहा व वसीयां की तरफ दीपान सालम चंद जी गय तो बदे सि-  
 होत तेजमालोत हुकम अदली से पेशा आण और बागी हो जो धूप व आवनी नालसी गय-  
 जनाब कायां सहाब ने दुशम दिया कि श्री दरवार का हुकम उठा लो अब पीछा आय अरजी लिखी  
 कि सीवां निवाल गारी व मुकदमों का रुपा भाना मंजूर है और आयन्दा चोरी व हुकम अदली  
 नहो करेगे जब कदमे लगाये मगर उस साल सीवां नहो निकली वाव सं० १५ में श्रीजी साहिबां  
 देवी कोट लाठी नाचने को देशा वाराया देवी कोट में दोवान सालम चंद की फोत दुश और नाचने से  
 श्री ब्रज सिंह जी साः बाहु पधार सावा निकासी सी के लणाना मंजूर कर विरय निकले वीकानेर  
 में रह कर देशा लूटा काना विस्तोर को माता ॥ सं० १० में सीवां व नजारां ना मंजूर कर पीछे आय  
 तथा सं० १५ में दारवागी व सीवां की तरफ स्हेतान थमच जी जाकर खोखरादी की सीवां निका-  
 सी और कोठां समूल ७ गा० की जमीन बापनीकां द्यारथी सो स्वातसे करगाम गेहुं लिख दिया  
 सं० १२ में मौनै वाप के खडी नपी गांराव कांधीयां के गेहुं बाप जो धूपर की फीज आरे तो भी  
 जमीनत कार के स्हेता विस्त सिंह जी ने गेहुं लेही लीया फेर रुजंदी से चफडासी आया लडाई त  
 होने दी और जो धूपरी श्री का न्यादती की रिपोर्ट करी ॥ जेपुर से वैद्यराज भट्टनी गोकुल नाथ जी  
 को बुलाय ग्रंथ रगानो नस्त माला तवार कराय व्यष्ट भीम जी व देवी दास को पढ़ाया ॥

सं० १२ में मौजे बलुवाले के रावद पोते खान साहब के मां में आकिल महम्मद सरदारवां ह-  
 सरवां वगैरे नाराज हो कर आये उनसे कहा कि रहना ही तो रु० २५) अखै शाही कि जिनको रु०  
 ४५) हुण रोज़ व १ गांव लेवे व २५ घोड़े अलग नौकर कराले और खान साहब से भी राजी पाकर देगे  
 परं० १ मौ रुप्ये राज से कम मंजूरन कार के दो महीने ही न रहे वीकानेर होकर पीछे गये ॥ सं० १४ में  
 डाः अमर सिंह जी जागीरदार महाराजन २० वीकानेर कुंवरां का विवाह डाः मान जी जगमालो  
 त की बेटीयां से करने को गांसडांगी आये थे सो वहां आकर दोनो बेटीयां बड़ी तो श्री हजूर से छोटी  
 श्री बेरी साल जी से सादी करने की अर्ज करार सो मंजूर हुई उन की बार्दियों के नानेरे गाम को डा २०  
 हाजा में फागन बंद ७ को विवाह होना ठहरा जब शादी नज़दीक आया सब तरह से तयारी हो  
 गई तो जोधपुर महाराज श्री तरवत सिंह जी साहबां डाक वैठा कर लिखा कि अबल जोधपुर प-  
 धारवाई के सरकुंसे सादी करावे जवाब लिखा कि अबल तो यहो होगी क्यों कि तेल चढ़ा-  
 या फेर वहां आने में ढील नहीं होगी परं० मंजूर नहीं हुई इसी अरसे में वीकानेर महाराज श्री  
 सरदार सिंह जी का वकील जैतुंग भारी खीव करन आया कि म्हारे अधराजीये की बेरी डोले मत-  
 परने वीकानेर के गढ़ में विवाह करौंगे डाः अमर सिंह जी की अरजी आई कि महाराज के फारे बसे  
 धोखे न रहे शादी कर ही ले जब वकील से कहा कि डोला नहीं है नानांशा दादारां में फारक  
 क्या और इतने अरसे में वीकानेर पहुंची जे भी नहीं फेर आवूजी से जरने ललानस साहब बहादुर  
 का खरीता आया कि वीकानेर महाराज लिखते है कि जवरन डोले पर जीजते है सो डीक नहीं सा-  
 दी मुलतवी रहे जवाब में लिखा कि डोला क्यों कर लिखते है नानांशा दादारां डूकसां है और ज-  
 वरन के जवाब में डाः मौ सूफ की अरजी बजिन्सही भेज के शादी करली फेर करने लखडन साहब  
 बहादुर जीने गेमसलद फतर दाखिल कराकर वीकानेर वकील को हुकम दीया कि आर्थ दे से सो धो-  
 खे की तहरीर नहीं कीया करे बाद सं० १५ के आश्विन में डाः अमर सिंह जी वीकानेर से भाग कर  
 वहां आठ फेर कुवर व कबीला भी बुला लीया जब गांस लांशो लारहने को दीया और श्री दुकान  
 पराबर्च की सदर दुवाती दी कि चाहै जितना उठावे सं० १७ में पीछे गये और जैतुंग वीकानेर



भीमहारजन के निकालने से चहा आया जब गांम चंतु चिरवा दिया था ॥ सं० १९० का जैष्ठ्य मे  
 रत्न का काम ब्यास धनुजी को सौंप कर श्री ठा: साहब अपने डेरे तलोरी पधारे आपाद बदर को  
 काम में तान थमलजी को सौंपा व आवागम सुदं० दीवानी का सरोपाव दिखीं दूमेरे दिन नथ-  
 मलजी के घरे पधारे रुप्या की चौकी पजेवर पारखे की किस्ती नजर हुई बाद आरोग्य कर पीछे पधारे  
 सं० १९० का फागुन में बड़ा ठा: साहब तो देवे ही कर राम गढ पचार वहां नवा कोट बनाने की नीव-  
 दीवी पिछाड़ी श्री जी साहवां ने रूहड़ी काठा: साहब दानजी सोटा की बेटो से सादा मंदरो में  
 बसाई ॥ सं० १९० भाद्रपद सुदं० ठा: राजा के सरी सिंह जी सहा की वारराज उदै कुं० का वि-  
 वाह जोधपुर महारज श्री तख्त सिंह जी साहवां से व श्री खत्र सिंह जी सहा की वार फूल कुं० का  
 विवाह महारज कुंवार श्री प्रताप सिंह जी सहा से हुआ ॥

पडोसी रियास्तों से सरहदात निकलीं तफसील जैल २५

सं० १९०६ में कप्तान बीचर साहब बहादुर आकर सावदेख गये सं० ०० में चौहदे वधी बावली  
 मैजे महाजलार से ० कोस नैकुत से सरू करके सिंधू खैरपुर वर सरकार दौलत मदार-  
 वई० वहावलपुर से तिहदे रत्न बीकानेर जी वरसलपुर से ० कोस है बाइके तक लंबी कोस  
 निकाली साहब मौसूफ मुनसिफ थे किसी तरह किसी से तकार न हुआ ॥

सं० १९०० कप्तान शिवल साहब ने पड़ो करार रूमारवाड से सीव निवाली सो सरासर जुल्म किया  
 कि गाम और टां नीया वासरतनु बांका वचन डाकाजूना खेडामर सीव और सीव हुत सी जमीन-  
 कई गाम की गमाई जिस पर पुरोहित सरदार मलजी कामरना हुआ और बरडगरी के भाटी सग-  
 त सिंहोती को भाटी की बही से नाम निकलाय जात से गवर्ज किया ॥ सं० १९०१ में हिम-  
 लयीन साहब ने रत्न बीकानेर से सरहद तिहदे बांड के से तिहदे ऊदर तक सीव कोस निकाली  
 वरसलपुर काराव जो हमेशा से साम धर्म रहे है किराव मान सिंह जी फोत हुस जंब साहब दान ल-  
 उका था साहब दानजी की माजी यहां आकर बरतौफ बीकानेर के श्री दरबार में अर्ज कराई जब  
 वास्ते हिफाजत के स्नेहा साम सिंह को वहां भेजाया था और उस वक्त रावराजी त सिंह जी-

कच्ची सलाह से बदल गया कि ठिकाना ही बीकानेर का है परसे से कहने से क्या होना था ॥ साहब  
 मौसूफ ने वरसलपुर जैसलमेर का रखकर सरहद निकाली सो मककूजा जमीन तो दूसतर फरवी  
 और बंजर जमीन बहुत सी गई चुनाचे मामवी ठगों की वाड-बल कि कूवे में भी आधका रावा  
 था सो बहुत औली तरफ निकाली और गिराजसर की सीव में त० धनीरी पर बीकानेर की फौ  
 ज सं० १७ के साहा में आकर घोखे से कई आदमी दूसतरफ के मोरे चघायल किये सो तलार दूसतर  
 फरही बीकानेर पर कसूर साबित हुआ जब जनाब कला साहब बहादुर ने कई हजार रुपये खू  
 बहाके तजवीज किये थे सो नहीं लिये कि जबही उबार आवेगा बदला लिया जावेगा-सं० १४ में गाम  
 रसाधा पर फौज गई राः प्रथी राज जी बागी हो प्र० शिव गाम को टुडे जारहे गढी में राजका थाना बैठा  
 सं० मेंठाः कर मेहाजर हुआ जब थांता उठाया ॥ सं० १४ सन् १८५७ में सरकारी फौजों के का  
 लालोगों ने कारतूस में अधर्म के गुमान से बलवा किया और गदर हुआ तो राजपूताने के मानरई-  
 सोने सरकार की खैर खाही व मदद दिलो ज्ञान से करी यहां से भी जो जो साहब लोग यहां आस-  
 उन्हों के कहने व साहब कला बहादुर व साहब मजुंद बहादुर के लिखने व मूजब हर तरह से मदद ही  
 गई सरकार का इकबाल बलंद था ही थोड़े असे में बखेडामिया जब रईसों की खातर व कहर द  
 ई और महर बानीयां की सन्दां व रिवाज मूजब गोर लेने का अखतार व खिल अत भेजा ॥  
 सं० १५ में जसोडाड़ी आदिले मान भोसायां के गामों पर नजराने व नैतरे के रुके किये जसोड देश  
 छोड गये सं० १७ में रुपये मणमूर भरने कबूल कर पीछे आबसे ॥ मकाना तजरीद - गढ में  
 सर्वोत्तम बिलास नीचे नयामहल मण आगश चन्नपोलीये का चौक रुवाय ऊपर महल और गजबि  
 लास ऊपर बोर दरी बज्जनाना महल में नयामहल तथा टांके में गौशाला ऊपर सोवडा वगैरे ठि-  
 काना और चौहरे में दशरे के दरवार की जगह व घंटीयाल का थान व अगाडी गुंजार ऊपर परसाल  
 वज्जना नी जगावा बनावन सांरू हवापोल पास परसाल मण कोठार तथा पौख अगाडी परसाल -  
 और नकारवाने की जगह व श्री छन्नसिंह जी का डेरा वगैरे वगैरे और अखैपोल पास कारवाना  
 व दुकान में भांवर कोठार तथा राः राज जी के सरी सिंह जी का डेरा बहुत भारी कि हनोज का मजारी है

बनाया तलाव घउसीसर पागनरूपेस्वरमहदेवकामंदर और गमरूपसागर तालाव  
निसकी नहर पहाउ के छंदर ही छंदर निवाली मंद सो रजब कै फियत हुई है सुगरी पर  
श्री स्वांगीयो जी वन्द्य मशौलेस्वरकामंदर और तलाव के बंधमें रामनाल वपीछाड़ी बाग व-  
कूवा और वार्दर मशौ गुलाबकुं० के नाम से किस्न घाट में कूवा गुलाब सागर व बाग वतलाव-  
गुलाब सागर व मंदर रामदेव जी का बनाया तथा किस्न घाट वराम घाट व कल्याण घाट का वंधा  
बऊपर बंगला व गाम व सायकुवां के पिछाड़ी बाग लगाया था ॥ बाड़ी में मंडप श्री बदाइनु  
का बहुत भारी व श्री राणा पतंजी साहूवा का मंडप व बाग अमर सागर में बंगला वरस्ते में घाटी व  
घाट और वाकनय घडोसर में ज्ञाने को पैसठ हजार रुपये लगाए देवे में कोट पक्का पत्थर  
वायनाचने में कोट चुने के खंगों का बहुत बमदा और कूवा चोमावा बऊपर कोठा बंगला नैस  
ले मेरे पत्थरों का और समू में कोट ॥ तथा श्री डाः साहवां के पास खान शासं ज्ञाने तलाव व  
ऊपर परसात व गन धरमरूप मूसे की तलाव व ऊपर ठिकाना व सहर से दक्षरा ३ कोस दूरो गा  
गरो सदा सवी तलाव को रामसर भी कहते है बऊपर वस्ती तथा वैशापी में फतेपुरी जी निसि  
पुरी ज्ञाने काठि जाना हुकुता व कुंठ पानी का व बंगला व गैरे बगाए नया संवत विक्रमी ती चैत्र-  
सुद १ से देसादंग का हर जगो जुदा जुदा है चुनाचे यहां ॥ महीना श्री कृमि धर १ से लगाता है  
और वहा में हितावरी वाली वका है प्र० विक्रमपुर में मात्वा उबी कानेर मूज व आ पादादि  
था सो सं० १५०४ से मिथर काया मगर वाजिव यासा है कि नवी वर्ष व फासले भी १ साल में हो  
जावे ॥ परा व गैरे सनद का तांका पत्र या परवाना लिखने का दस्तूर है कि सिध श्री महाराजा  
धिराज महारावल जी श्री जी लिखावत या बचनात् पेर नाम व हकीकत के  
बाद दुः श्री गुरु व हुकम या सुख त्वार वार आदि जनकी हो लिखकर संवत निती पोके दस्त  
एत महेवा धन राज या भोगों में ज्ञो हो नीचे सही सहायरीवान की दोती थी- जव से साल म-  
चंद्र जी गोयदा नी दीवान हुस वो साल मसिंह जी दीवान साबक के पोता अनीत सिंह जी कही  
कि सहा के नीचे सही मेरी चही जे सो अब यूं होती है ॥ सही सहा मिठा लाल या जो सगरी सहा है

सही महेता नथमलजी ॥

सही महेता अजीतसिंह ॥

सनदके ऊपर श्रीजी साहबां की सहीया म्होरया दोनों और गोशे पर ३ का आंक जो इसराज की निशानी होती है ॥ तथा जेवर शस्त्र वगैरे का भंडार खुलै जब श्रीजी साहब तो पधारेंया नहीं परन्तु महेता वसहा वथईयात वह जूरी जो दोगा हो यह चार ही होते हैं सो चीज निकाली या रवी बड़ी में जमा खर्च करके बाहर निकले जब झाडा खिचा जाता है भंडार में बधावके लिये म्होर थान नजर हुआ सो बस दर सावर एक साल से करुष्ये समूर्त के लेते थे सं० २० से कोरा से भी समूर्त लिया गया फेर सं० ४१ से मात्र आमदनी में फीस दी रु: ३) लेगा किया परं मन्शा श्री कि कोई १ आमदनी जो ५ हजार से ऊपर हो दराताल्के की जावेगी जैसे कि श्रीजी साहबा का हाथ खर्च ताल्के नजर के रुष्ये व कोरा नोचने की आमदनी वगैरे है ॥ बडी ही दूर अदेशी है कि दीवान जी ने नीचे सही और भंडार में दखल नही रखा ॥ तथा जमा खर्च का दफतर भी सहा म्हता पास है सरवा में लाग वंधी जो पुस्तो में है मगर अब यह भी चलने की सूरत नहीं ॥

१४८ महाराजाधिराज महारावलजी श्री वैरीशाहजी साहबांकी उम्मादराजर हो सं० १५२० जेद सुद

१	वीकीजी	दरादकुं:	डा: अमरसिंहजी	महाजन					११
२	सोदीजी	तरवतकुं:	डा: बिसनसिंहजी	गंगागदेर					११
३	सीसोदगुजी	मगागारकुं:	रावलजी उदैसिंहजी	मुगापुर					११

बवसीयत श्री बडा हजूर वमन्जुरी श्री वीकीजी साहबा वसलाह सलाहकारान राज बिराज ॥ सं० २१ चैत में श्री डा: साहब आंख के आराम हीने से पांव प्यादे रामदेहे आस जब श्रीजी साहब ही पधारेंये ॥ राजका काम वमन्शा डा: राज श्री केसरी सिंहजी साहब के डा: राज श्री कुब सिंहजी व महेता अजीतसिंहजी करने लगे और म्हता नथमल को बडे साहब बहादुरजी पास भेजा श्रीला ए साहब की मंजूरी का खरीता भी आगया पर श्रीजी साहब राज से इनकार कर किले से डेरे पधारें तो जोधपुर से रुजन्त करने ल निकस्त साहब बहादुरजी सं० २१ मिघर में आकर बहुतसा कहा-

पर नही मानता बलारि सफ चिह्न। हाफुज जी को दीयां किपेराकारे भगर साहिब मौसुफु तो उदैपु  
 गर और दूनी साहब बहादुर यहां आश उन्ही ने नही ली फेर जनार्क कतां साहब करने ल दून्डन सा-  
 हब बहादुर जी सं० २१ काती बद आदू जी से तशरीफ लाए कोट फतेगढ़ में टा: साहब से मुला-  
 कात हुई फेर यहां आते दीभी जो साहिबों का तख्त नशीन किचे साकार दौलतमदार की जानव  
 से खिल घत दखे सकिरती जेवर पारचे वस्तु जंजीर फाल बदोयरास घोडे सोन्ही साप न शरय  
 किर्च देकर इस्तपीन मुनापा तथा श्री बदायकां साहब को बदस्तूर मदार उल मुहामकर के  
 पाद दास्त लिख दो और म्हेतान चमल जी को काम न्यावत का सौंपो वगैरे शिफारशी गरीता वख-  
 त जित में सनद वगुनूदी साहब मन्दू चखैर दखी हीरान की व खानत दारी वगैरे हाज लिख दीया  
 और वखालत के काम पर म्हेता मजात सिंह जी को ले गये ॥ श्री जी साहिबों के दूक बाज वीसूरी  
 व श्री ठा: साहिबों के बड आर्द की तारीफ कहांत कालिवा जावे कि मुफसदी यने चरवे छे करने वनां  
 को कुर्क भी पेरा नथसी पा सब को बदस्तूर बना रखा किसी का किसी तरह से इतक बहूज नही लि-  
 या सं० २२ में सायपुरे राजा जी गन सिंह जी की वार्द लखमन सिंह जी की बहिन के सगार्य को  
 जन्म वर से कामदार वपुरे इत वगैरे सो गात ले आर पर मंजूर नही हुआ तथा सं० २३ में नरा सिंह गढ़  
 से परांया राव दुमल जी वं का पेरा कीया और सग परा वीवात चीत करी सो भीन बनी तथा इतनी  
 तियास्तो से धिकाशाया जैपुर उदैपुर जोधपुर कोटा बांवा नेर कछु भुज परीयाला  
 कपूर थला ल्हावलपुर खैरपुर नरा सिंह गढ़ (और नगालूम कोली से क्यो बंद है) सं० २३  
 चैयाप सुद १३ राज्या भिपे कहुआ जोगां का भेय वगैरे मामूली रस्मों के बाद राजगिर में शाम दर-  
 बार कराय तखत बिाजे जब भेर चाव चलोयां का फेर होने पीछे नजर जोछावर हुई आंका साह-  
 बो घोडा नजर किया ॥ बाकी उमरावों सरदारों से बोडाव भोमियों से घोडे की कीमत कारुप्या  
 वगैरे रियाज का मुफास्ति लहात अलग लिखा है ॥ सं० २४ में बहुत भारी कूह पडा मारवाड  
 वगैरे कोरियाया मुल्क सिंधव हुत रात वमालवे गई भील दूमी वर की क्रपा से यहां तलाव घड सी  
 सर भर गया और रूयत भीवनी रही श्री ठांकार साहबों ने महुवाडों के सिंध पहुंचने व कतारों की-

आमदरक्त के लिये रस्तों पर ना बजा था गोवन नथे कुवे वकीरा में सदावर्तवगैरे कराये और खास  
शहर में १४ सदावर्तवगीरों के लिये पीचड़े के कडावे चढ़ते थे तथा विधी पूर्वक दान पुन्य इस  
से पुरे कराया लुनाचे हजारों सांमीव कई साधु मन विद्वत पागण और नगां की जमात के सहेत-  
देव भारथी की जो रिधी वाला था कई वर्ष रहकर तलाव गज रूप सागर पर ही मरा स्या इस साल-  
रस्ता गुसाई पेमानाथ को घडसी सर पर रख कर हजार हा रुप्ये उगाये ॥ सरकार दौलत मर  
की तरफ से रसालदार अबास अली कतारा की निगरानी को आया था सब हाल देखा सो लिखा  
जिस पर साहिब कलां व साहिब रजी डन्ट बहादुर ने सर में तो रिपोर्ट करा और नेकनामी के ख-  
रीते यहां भेजे तथा हासिल बाबत जनाब कलां साहिब ने मोतमदों की कमेरी से मान रिखा स्ते  
में यह डहराया कि इस साल व आये ही १० से निर्व होने पर बिलकुल स्वाफ और हमेशा फीमन  
टाई आने लेवे और जैसलमेर में अब भी लेवे और आये भी निर्व ७ से से कम हो तो छूट करे-  
तथा हमेशा भी फीमन सादे न्याय आने लेवे तदपि वनजर रईयत परवरी व गुरबानवाजी बहुतों-  
को तो छूट और वाकी से भी आधा लिया ॥ सं० २६ पोष बदे जीठाकर साहब मौसूफ स्वर्ग  
पधारे तो शिवावासे की सवारी के मान कार्य बडे हजूर श्री गज सिंह जी साहिबां मूजब बलकि-  
पुन्य ज्यो दे कराया इस साल तपकी बीमारी से शहर में हजारों आदमी मरे ॥ सं० २७ में श्री  
जी साहिबां मुल्क का दौरा कराया सो कोट समूहा गढ घोड्डू खारा खुरियाला तराोट किस  
गढ बूयली नावगा मूहन गढ देवा देखा के म्हासुद शहर दारिबल हुर इसी साल चैत्र सुद  
१२ म्हेतानथ मल जी की तरफ से न्यात में थाली मिश्री की लांवगा कराई और ज्येष्ठ चद नथमल  
जी के घरे पधारे भाद्र सुद नथमल जी कामका इस्तेफा दिया काती बदे जो थपुर से जनाब -  
इन पी साहब बहादुर यहां तशरीफ लाए ॥

मूंगरपुर बिवाह का हाल सं० २० में ठाकरा गोपाल जी सगार्थ का पैगाम लाया फेरगांधी  
शिवलाल जी आके सेठ हिमतराम जी की मारफत रस्ता खर्च वगैरे की पक्की कर गवा सं० २० म्हा-  
में म्हेता पुनमचंद प्रो - दीकालाया चैत्र बदे नालेर झोलीया सं० २१ भाद्रव में पंडित भगवती प्रशार

\* यहां लों यह पुस्तक अपने पाई की कि श्री महाराज वल वैरी शाल जी साहब के परलोक वास होने के समान्यार  
हमको मिले १९ मार्च को १०३ बजे दिन के श्री जी हजूर स्वर्ग लोक पधारे - शोक ! महाशोक ! - म. गुणदत्त जी होय

आया सं० ३० पोपवद १ जान चखो ४ देन में आहु जी पहुँचे पोप सुद १ गाम बैठा बाडे ५ कोर  
 रावल जी जे दे सिंह जी सोमि आये दूजे देन गादी हुई बाद १ लाख रुपये त्याग के जिसमें ८० हजार  
 तो वहाँ के कामदार नेहाल चन्द जो को सोपे और २० हजार मुतफ की चहों गरास्ते में नकद वपाये  
 वगैरे दिये **दोहा** चवदे हाथी चारणा नूग एर देधा । परनीजे नेसान पातं कवि अमरी की-  
 धा ॥ १॥ १० मुकाम दे बाद सीख बोली बेकी बाडे तकरावल जी साः पहुँचागये ॥ गाम बडेली  
 में ईद महराज के सो सिंह जी आये कुरसियों की मुलाकात हुई और अपनी वहिन की शादी-  
 करनी चाही थी परं महराज के मारद जाँजो भुज महराज ओजी श्री देसल जी के बाद राज हैं उनके  
 मना करने से मंजूर न हुई फेर आहु जी पधारे सिकतर बेजी साहब बहादुर से मुलाकात हुई और  
 बंगला १ आशीशान मग बाग वकुवा खीद कराया तथा बम्बई देरवने की मन्ग्राथी परं सकु-  
 नारास्ता नहीं दीया ॥ श्री रांणी जी साहबा अपने नानेरे सीरो ही राख जी उमेर सिंह जी से मिल-  
 आर ॥ महासुद १२ बाग मूला राज सागर दाखिल हुए पेर अमर सागर ७ महीने बिना रसो सा-  
 ल रान साहब कैलात से खीता वसौ गान आने नाने का रावता हुआ ॥ डाः राज श्री कृत्र सिंह जी  
 सहा की सलाह वम्वेता अनीत सिंह जी की कोशिश से तजाव घडसी सर के साह की पाकी में बंधुत  
 से बरे वरु परम कानाव बबागात होने से जे बायश के सिवा आराम हुआ कि पानी की तकलीफ न-  
 रही और बाबा वपर बागीची बस्ती होने वक्तुने वगैरे रहने से पानी खराब होता है ॥ सं० ३१ में  
 जो पपुर महराज श्री वरुनत सिंह जी साहिब के, भंवा श्री जोरावर सिंह जी के कु० श्री फते सिंह जी  
 यहां आकर ५ महीने बाग राम सागर देखलावे दूसरे खर्च के रु० १ हजार हर महीने नकद राख खर्च  
 को दिये गये और वैराग सुद १२ डाः राज श्री कृत्र सिंह जी सहा की बाद राज श्री राय कुं० तेरादी  
 करी टीका राख जा वगैरे दूत्तर मूज बदीय जैष्ठ वद ८ म्हेता नथ मल जी के घरे पांवरा कीया फेर राव-  
 लोत मान जी की सला से सीख ले जोधपुर पधारे ॥ सं० ३२ में श्री जी साहिबा की तवीयत अलील  
 हुई जव जनावर जी लुट वालर साहिब बहादुर महराज साहिब तशरीफ ला ॥ सं० ३३ में  
 माघ वद सन १८७७ ई० ताः १ जनवरी को मलकाम ओजमा कुचरुन विकटोरिया के सरहिन्द

कागिताबलेने को दरबार दिल्ली में मान्तर रईस इकडे हुए श्रीजी साहिब नही पधारे तो स्त्री डेन्ट साहब  
 की एकज फौज का अफसर कान्हे साहिब और नपुर से यहां आके आम दरबार कराय सरकार दोल-  
 त मरार की जानिब से इसी च में इस खान्दान की बडाई व बहादुरी की तारीफ करी जवाब में सर-  
 कार की म्हेरबानियों का शुक्र अदा करके काम पडे हाजरी करने का कहा तथा आतशबाजी रोशन  
 वगैरे खुशी के सिवा यादगार केलिये कैसर हिन्द का मेला हर साल तलाब गंगासागर पर होता है  
 और प्राय साहिब बहादुर वरान साहिब बहादुर जो ये मायश के काम पर आये थे दरबार में ये इसी सा-  
 ल भाद्राबद में नमक के काम वास्ते म्हेतानथ मलजी जोधपुर गये थे कैसर हिन्द की म्हेरबानी व-  
 यादगार में वावरा थाने निशान जनाब स्त्री डेन्ट साहिब मौसूफ पास आया हुआ था इनायत फर-  
 माया सोलाया जब बड़ी ताजीम से वधाय केलिया ॥ सं० ३४ में भारी कृत पडा ॥ सं० ३५ के फा-  
 गुलामें अजंत करने लवार साहिब बहादुर फलोधी से तशरीफ लाय उस वक्त सरकार की चढाई का  
 बुल पर थी बारबारारी केलिये यहां ऊंडर वरीद किये इसी साल कातीबद कला साहिब करने ल-  
 ब्राड फोर्ड साहिब बहादुर जी तशरीफ लाय सो श्रीजी साहिब से बहुत ही खुश वस्जामंद रहे ॥  
 श्रीबीकानेर महाराज श्री रतन सिंह जी सहाने बडा हजूर श्री रणजीत सिंह जी साहबारी के कीरस्में  
 बंद करी थी सो श्री सरदार सिंह जी सहा सिदक दिल से जारी करनी चाहिये चुनाने सो गाल खरीता  
 के बाद सं० २२ में रीका आया गया वकील पीछे भी नही पहुंचे थे कि महाराज श्री मंगर सिंह जी सहा  
 राजा बिराजे जब यहां से फेररी कानेज के सो गही भंगाया पर बडा महाराज के दिल में प्रीती थी सो ल-  
 रही ॥ सं० ४३ के भाद्राबद ३० को स्वर्ग पधारे जब कोरा भाई गंगा सहाजी राज बिराजे ॥  
 सं० ३९ के जेष्ठ सुद १३ इतने ठिकानों की प्रतिष्ठा हुई बडे बाग में मंडप श्री बडा हजूर साहि-  
 बां वडा राज श्री केशरी सिंह जी मर हो जनाना व राज श्री कुत्र सिंह जी व दोठ करणियों व बाई चांद  
 कु० - और तलाव गजरूप सागर तथा कोट देवा नाचगा लाठी हरजगह ब्राह्मण भोजन  
 मर दहगा फी आदमी १ रुपया व पाट प्रोहितों को पहरे व रियायों और कामदार राज धरों दोगो-  
 म है न तियों वगैरे को सरोपाव दीस ॥ सं० ४० के पोहो में रोहोडी का पीर हिज बुला सहा जो सं० ३९ में



भीशायेये शायेई सालमें श्रीजीसाहबखेरेपधारे हृदसेपरे कंदरवरञ्जुतबहाई १२ मुकामकि  
 ये हजारे सुरीदो केजिये खाना शामिल होता था और सुरीदों की तरफ से दावत की नागा होती  
 जब श्रीदावार से खाना दिया जाता था जब से पीर सार् सिद्धक दिलसे हुआ गो है ॥ सं० ४० में-  
 सुकाम साकडे रजोडंट करनैल पावजट साहिब बहादुर से श्रीजी साहिवां मुलाकात करी रजन्दी  
 का सौर मुन्गी महानरान जी आस महमूल सावर वदीवानी फौजदारी वगैरे काम कायदे से करने  
 की सरदारों मोमीयो व सब रईयत के मुखियों वगैरे से मंजूरी काराई और नेठ सुद १२ न्हेंता नयमल  
 जी की दीवानी का सरोपाव हुदा जब साहबमदहू की तरफ से मुन्गी जी ने खास वयाम लोगों को  
 रस्पांच सुनाया फेर मुन्गी जी व नयमल नो साहब मौतूफ पासगर काम की वादत सलाह करके  
 पीछे शाते मौजे महजन २० बांका नर कादाः रामसिंदू जी जो खावणी और नपुर सरकारी कैद में थे  
 बड़ा साहब को श्रीदयार साहिवां की तरफ से नामनी देकर साथ लाये और मौजे गंदे लाः मेघसिं  
 ह जी को भी साथ लाते की साहबमदहू से अर्ज कपी तो फरमाया कि महारावल साहब के लिखने  
 से सर में रिपोर्ट वारी थी सो मंजूरी भी आ गई है लेकिन जैसलमेर जाने से इनकारी है फेर बहादुर  
 सिंह जी को अजमेर व मेघसिंह जी रुजैपुर और रामसिंह जी जैसलमेर में रहे खर्च के लिखे रु० १५५  
 माहवारी माः रजोडन्दी टिकाने से मिलता था परं कुलवारच ४॥ चर्च में राजकोसगे वाद  
 मी आद के बीकानेर गर ॥

श्रीजी साहिवां की चम्मार दराज हो दावारी में हृदसेपरे नामवरी हासिल की वी है कि भाटी वगैरे को  
 लाख पसाव वगैरे जी हर पीढी में देने का हस्तूर के सिवा हजारा ऊंड व सैकड़ों घोड़े व कई हाथी और  
 गाम जमीन वन कंदरूप्ये व जेवा पाचे वगैरे २ नेशुमार चारों भायों व दू मो वगैरे को दीये जिसकी  
 साखामें बहुत से गीत कवित रोहा वगैरे कंदकंह है सोखा कीतलता कम चारा सोचकर  
 री आवतां । तेंसांची तुडतांरा सुद्रव झाडी देबरसल ॥ १॥ रतनु शिवजी दानजी को क-  
 विराज का खिताब वतन्नीम और गाम भूः हुआ पीया व हवेली गढ़ में न्हेंता प्रतापजी वासो  
 तथा लाख पसाव पैरमें सोनातक मान जेवर खास पोशाकी व हाथी घोडा ऊंड वतन वारकदार

बंदूक वगैरे अनाफरमाय सरदारों मूजब तनखाह करदी अलाहाजुलकयास एसेही सर  
 दारान पर नवाजिशा फरमाई चुनाचेठा राजाजी तेज सिंह जी स्थाको पैतालीसवें बर्ष वीकाने  
 सेबुलाय गाम सरावसी वखडीन लांगोला परे दिथ तथा वरसिंह खेतसिंह जी शिवजी सिंहीन  
 जो तीन पुस्त से नाउमेद २० वीकानेर मेंथा सं० २५ में बुलाके कोट बिकमपुर मरा आठ गाम थल  
 कोरके वखिलअत पैर मे सोना वघोडा वनकारा वखुडी वगैरे तथा दोबडी ताजीमदे के राखकीया  
 और लिखत कालिया कि कोर वगामों की मौकूफी बहाली अवतेयार श्री दरबार के है रु० दो सो  
 दूकमठ हरसालेरव का भरे वदीवानी फौजदारी श्री दरबार की राखके कोर से हाकम को उठा  
 य मौजे नोखमें कचेडी रावाई और बासलपुर राव का ठिकाना वराव पिगा ही रहना दुशवार  
 था सो कसूर माफ कराय सरोपाव पैर में सोना वखुडी वगैरे रूनायत किया बाद उन्होने श्रीली  
 तरफ जमीन में कई गाम बसाए हैं तथा दूसरे सरदारों वगैरे को गाम व जमीन बखशा सो गामों  
 के नकशे में लिखा है सिवा इसके बहुत से मुलाजमान राजा को शादी वगमी पर हद से परे बख  
 शिशे फरमाई बहायी पालकी वगैरे कुर्ब दिथा तथारिआया के भी अच्छे करियावर होने पर  
 खुश नूदी व मेहरबानियां जाहर फरमाते है जिसमे हर को म में लायक शरवस है सिधत से बढ के  
 तां मूज के शुभ काम चुनाचे ब्राह्मणों पुष्कर नोव ओमवालो व महेसरियों में पंच परबीयो वरघो  
 डा वमंदर वमंडप ववेग बगेया तालाब वमेली मिथी की लां वराण वगैरे २ कर रहे है एसेही पली  
 वाला में उजागा वसिलावरी में राजधर मूला व सरूप के सथूत होने से स्हां मदी खारा ७। २  
 हुआ और मौसरो में खांड गलनी तो चमारों तक हो गई मुफास्सल हालक हांतक लिखा जावे खाना  
 पहिना व शादी वगैरे में खर्च बढने से अन्देशार ईयत के टूटने काथा परंतु श्रीजी साहिबां की नेक  
 नीयती की बरकत से लोग बहुत आसुरा होगए और होते जाते हैं कि जमाने साबिक याने  
 सं० १९०२ से पहिले लोगो पास जितनी बकरीं थीं अब सरकार दीलत मदार अंगरेजी के तुफैल  
 के बाद स अस्त होने से उतनी सांढां व गायां भैंसां हैं सं० २५ व ३४ में भारी कदत पडाया इससे स  
 में मवेशी ज्यादा बढी थी सं० ४४ में बेशुमार मवेशी मर गई तो भी जमाने साबिक से कई दरजे

बढ़ती हैं तथा खेती पर भी पूरी रत वज्र है जिससे सैंकड़ों वंधे वक्रु वे हुम्बं होते जाते हैं ॥ कि  
केलशावादी में जहां पास भी नही होती थीगे हुं होता है और ८०० पुर्य कुवा खोदने से राख निकली  
सी बहां ५० पुरसे मैजेरा गरी वगैरः में भी वापानी की हजारे वैरीयां हो गई हैं अलाहा जुल क़य  
सदेश में कई जगह वैरीयों का पार वक्रु वागांव बना हुआ वगामों में गहुं होने लगा सो गामों के  
नकशे में मालूम हो सकेगा ॥

श्रीजी साहवां की उमर दराज़ हो - दीवाली साल ग्रह वसन्त अखातीज दसहरा वगैरः को  
शाम दर्वाखा वाठ शानंद और दीवाली होली के बाद कई दिन शिकर को पधारने व शुद्ध ५  
हरम हाने बड़े वागव कई मेला में सवारों मये लवाग्ने होने व गोठा खेल होला चौथ वगैरः को  
शहर व वाग में खुशी का समाज होता था सो ८००३ के बाद तवां अतना साज़रहने से बरायनाम  
के छे हैं तथा देखो सुनी बातों की याद हृदान हव है किन वारीखी हालात भादो जान व देश में मा  
न कोम के संग पणों सुधां तो ठीक परं राजपूताना के रईस व बापां के ठाकरों के नाम गाम मर  
त्वा वगैरः की वाकफियत अज्र हद है और खाश व आम लोगों परने क नज़र से हार एक चीक  
दर व इज्जत कालिहाज़ हद से परे खते हैं अलाहा जुल क़य सहर तरह दूर अंदेशी व होशिया  
री वगैरः की सिफ़तें कहां तक लिखी जावें मगर धारि की लाचारों से राज का सुखन होने के  
अलावा दिल में नाउम्मेदी ने तरक्की सुधारों को ताक में रखकर आवकार खाने अन्तर कर दिये  
हैं हं - दई व मधान थाने इकवाल की खूबी से चल रहे हैं ॥ ३ ॥

## ३ जमीमात वारिख हाजानम्बर (१)

चूंकि महानथ मलजी साहब दीवान राजमोसूफ की लयाकत व सामर्थ्य में व दूखने से  
व वाकफियत वगैरह वगैरह दानाई से कारवाइयाने कनीयती के वरताव का हाल जो  
सुफ सल्लिखा जावे तो अजिल्द में भी पूएन हो सके वास्ते मुस्त नमूना जो इसमें लिखा गया  
है उसकी तशदीक के लिये वंज़न सी दलीलों व सन्दों में से दो सन्द का खुलासालिखना वा  
जब हुआ सो यह है कि महताजी मोसूफ को सब तरह से लायक समझ कर ४० वर्ष तक बड़े -

हज़ूर श्री रज्जीतसिंह जी साहब वठा • राज श्री ब्रवसिंह जी साहब और खास कर महा  
रावल जी श्री बैरीसाल जी साहबों से कदर अफजाई से जो जो महर्वा नियों व निवाजों  
फरमाई सो तो मशहूर आम हैं • फेर वसियत नामा में भी राजकाज चलाने का पूरा  
भरोसा इन पर हीज करके अपने श्री हस्त की सही से लिखा दिया • अलावा इसके हुक्म  
काम बक्त भी खुसब महर्वा न रहे चुनाचै • जनाव कर्नेल ईडन साहब बहादुर जी ने  
सन् १८२९ के मुताबिक सन् १८६५ ईसवी में खरीता व खत लिखा दिया उसकी  
पुस्त पर महारावल जी साहब ममदूह ने अपनी खामन्दी की सनद लिखवा कर  
खरीता व खत महता जी साहब के हवाले किया जिसकी नकल लिखता हूँ ॥

खरीते में मामूली अलकाव आदाव के बाद लिखा है कि महता नथमल जी  
वकील आपका जबसे मैं अजन्ती राजपूताना में आया मेरे पास हाज़र रहा और उसकी  
खैर खाही जो वास्ते काम अपने राज के अमल में लाया मैं खुस हुआ अब जो मैं जैस  
लमेर में आया और बहुत शिकायत अजीतसिंह की सुनी मुनासब मालूम हुआ कि  
महता नथमल जी वजाय महता अजीतसिंह कामदार ठाकुर केशरीसिंह जी का  
रहे और अजीतसिंह हमारे साथ कारवकालत पर हाज़र होवै और जब यह शिका  
यतों की गरमी उठो हो जावै तो जैसा मुनासब हो कीया जावै इस वास्ते महता  
नथमल जी को खिदमत में आपके रुखसद दी और यह खरीता बतोर सनद खामन्दी  
अपनी के हवाले उनके कीया कि आपकी खिदमत में पेश करे और उम्मेद है कि  
आपमें उनकी नेक चलनी से खुस और खामन्द रहेंगे और उन पर महर्वा नी रखें  
गे फलतः यादह मसरत बाद अलमरकुम २२ अक्टूबर सन् १८६५ ईसवी व मुकाम  
लाठी दसखत अंग्रेजी में ॥

**इसकी पुस्त पर वमूजब इक्म श्री मुख**

जो किये सनद वास्ते सनद हमारी खामन्दी के कि इस मूजब बन्दगी बजाने याने

हमारी मस्जिद मूजब हीज बरताब रखने से महर्वांन होकर नथमलजी को रोबरू  
इतायत कराये हैं और आयन्दा को ही पूरा भरोसा कीया गया सम्बत १८४४ का  
मृगसिरखदी ३ गुरु द० सु० इन्द्रराज.

## खत

स्वस्ति श्री सर्वोपमा दाकुरो राज श्री केशरी सिंहजी जो ग्य कर्नेल बलियम् फरीद  
फर्डिंडन साहब बहादुर अजन्दगवर्नर जनरल राजपूताना लिखावत सलाम बांच  
जो शबा का समाचार भला छै राजका तदा भला चाहिजे अपरंच महता नथमलजी  
जबसे मैं अजन्दी राजपूताना में आया वकालत पर जानिव राज जैसलमेर से मेरे पास  
हानिर रहा और अपना काम मेरे रोबरू राज की खैर खाही के साथ अच्छा अंजाम दीया  
कि मैं उनसे खुस रहा और उनकी वजाय और तोर से मालूम होता है कि उसकी चालच  
लन अच्छी और व सबव मुनने शिकायतों के कि जो नि सवत् महता अजीत सिंह काम  
दार के बहुत कसरत से थी ऐसा मालूम हुआ कि महता नथमलजी उसकी जगह  
कामदारी पर मुकरर हो और महता अजीत सिंह को वजाय महता मोस्फ के वकाल  
त पर मोइयन कीया जावै और उम्मेद है कि महता मस्तर अच्छा काम देयानत से अं  
जाम देगा और आपको खुस रखेंगे अब जो हमने महता नथमलजी को रुखसद  
कीया है खतवतोर राजामन्दी अपनी के उसकी चालचलन से आपको लिखा गया  
और उम्मेद है कि राजभी उसके हाल पर महर्वांनी रखेंगे तारीख २२ अक्टूबर सन १८५५  
इस्वी ॥ दसखत अङ्गरेजी

## पुस्तपरबमूजिबहुक्मश्रीमुख

यह खतवखरीता वास्ते सनद राजामन्दी के नथमलजी को सोंपा गया सम्बत १८५५  
का मृगसिरखदी ३ गुरु ॥ द० सु० इन्द्रराज

इसके सिवाय दीवान नयनलजी की ल्याकत इसी बात से जाहिर है कि उन्होंने अपने अहद दीवानों में रईस और रैयत दोनों को खुसखबरी और इस थोड़ी सी शामदनी पर (कि उसमें भी ५ साल बराबर अकाल पड़ने से कभी आगड़े) राज के सारे कारबार को चलाया और दूसरी रियासतों के दूसरे राजा को भी जिनसे इस राज्य का संबंध अथवा रिश्तेदारियों हैं निभाया महनत और जफाकशी जाहिर ही है कि पूरे डेढ़ वर्ष तक आखों की शरत् बीमारी पर भी राज्य का काम बराबर चलाते रहे कभी हर्ज न हो होने दिया इन्हीं के अहद दीवानों में जैसलमेर में सर्कारी डाकखाना कायम हुआ और दीवान साहब मौसूफ एक बड़ा स्कूल भी सर्कारी तौर पर जैसलमेर में कायम करना चाहते थे परन्तु शोका कि आंखों की बीमारी ने इनको राज्य के काम छोड़ने पर मजबूर कर दिया तो भी यह एक जिन्दा दिल और तजरेकार कीमत अफसर राज्य जैसलमेर के हैं इन की सलाह और मसवरे ही से राज्य और रैयत का बहुत फायदा हो सकता है सबसे बड़ा सदम महला साहब मौसूफ के दिल पर श्रीद्वार महारावल श्री बैरीशालजी साहब के स्वर्गवास होने से पहुंचा जिसने सच पूछो तो इनकी कमर तोड़ डाली (हम उक्त द्वार के वैकुंठ बास होने और सर्कारी बन्दोवस्त का हाल इसी ग्रन्थ के अन्त में एक खास जगह पर के अन्दर लिखेंगे) महताजी साहब ने श्रीद्वार स्वर्गवासी के रोबरू बहुत से नये कायदे भी बनाकर पेश कीये वहाँ चले गये तो राज्य और रैयत दोनों को लाभ होता परन्तु बराबर अकाल पड़ने और परजा के बोदिल होने से वह नियम प्रचलित न हो सके जो कि आज दिन राज्य का इन्तजाम हमारी सरकार के हाथ में है और श्रीमान कर्नेल पोडवली पोपोलट साहब बहादुर दिल व जान रां इस रियासत को भलाई चाहते हैं इसलिये हमको आशा है कि सबकुछ अच्छा हो होगा उक्त साहब की दानाई और महर्वानों इस रियासत के लिये अच्छा फल लायेगी हमको महताजी श्रीनयनलजी की जात बाबरकात और अकाल मंरी से भी उम्मेद है कि वह भी ऐसे समय में अपने आचीन मालिक को भलाई के लिये राज्य और सरकार को निकालना हदने में कोई दकीकावाकी न रखेंगे परमेश्वर ऐसा ही करें॥

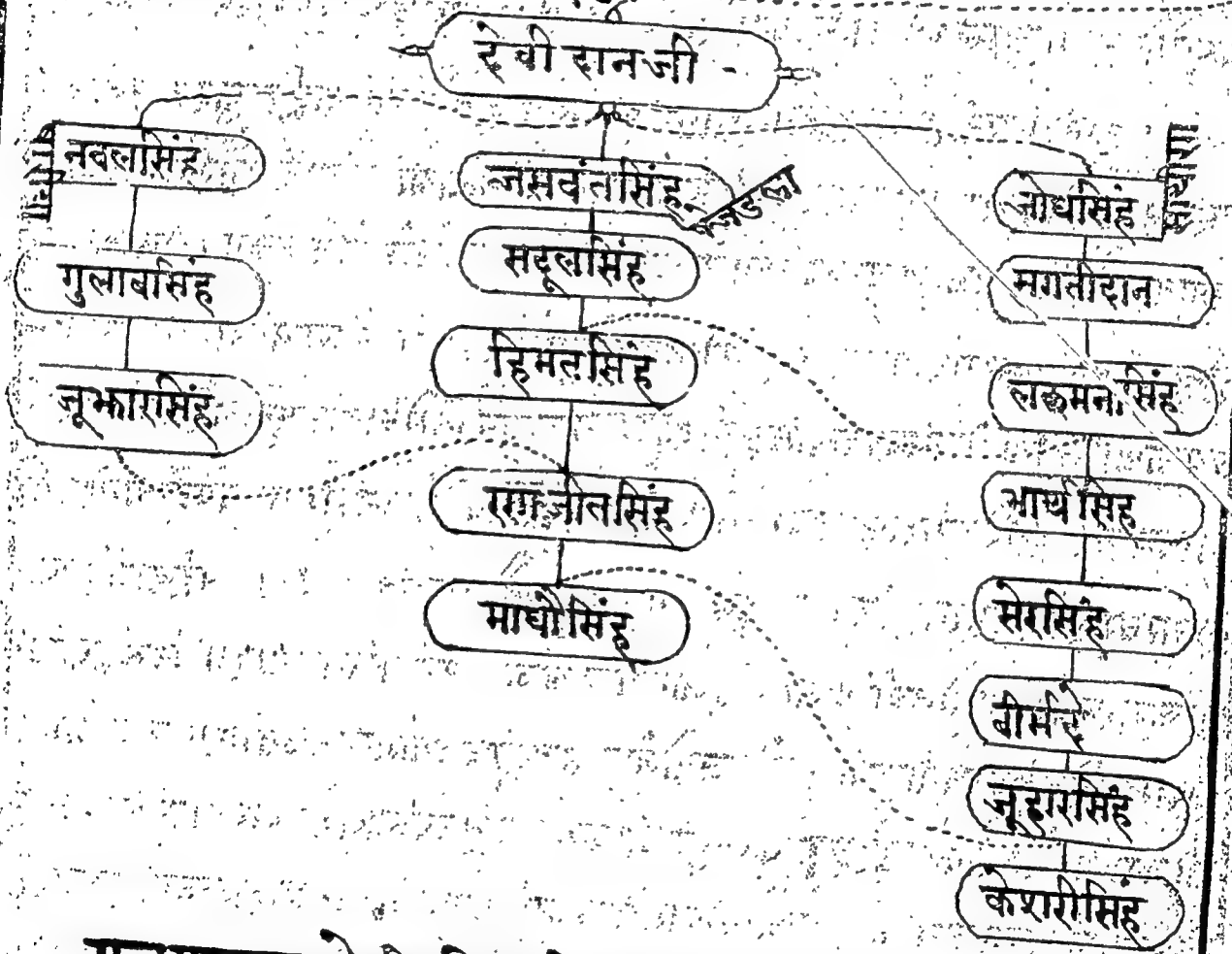
रैसराह जैसलमेर मुहम्मद भुगदाली

# दफ़े ४

## मारवाड में भाटी सरदार

महारावलश्रीमूनछजजी जैतासिंहोतकेकुं० देवरत्नकाखांपहमीरोतअजनेोतऔर  
महारावलकेहरकेकुं० कचकाराकेवेरेजैसेकाखांपजैसावमहारावलअमरीसिंहजीके  
कोरेकुंवरांकाखांपगंवजोतऔरदूसरेबहुतसेभारीदूषाकेराजमारवाडमेंरहतेहैचुनाचे-  
सं० १२९ ई मेंजोधपुरमहाराजश्रीमानसिंहजीसाहबकेकुलसरदारोंसेजनाचस्वीडेन्ट  
करनेउसदरलैनसाहबबहादुरनेसफाईकावार्डजबभाटीसरदारोंकेगामरेखके१२४॥  
वधारेके३५॥ जुम्मे१६॥ जिसकापैदा० १९२५० अथवा २०५०० वधारेजुम्मे २०  
२०३२०० कीलिरहीहैऔरबहुतसेगामबिलारेखकेजुदेहैंऔरवार्डडाकुरजीरुजत-  
सबलनम्बरकेउमरावहैंअगरमुफसिलहाफानजोभाटीयोंकादिखीवगैरेसेमारवाड-  
मेंजानाऔररियासतदअवन्धबांधनावगदकीनवेदेनाचौथेहिस्सेकेहकदारहोनाऔरगद  
मुल्ककाबन्देबत्तरावनाबादशाहोंकोजवाबदेनाबलडाइयोंमेंमरनामारनाचुनाचे-  
ठपनाथसिंहदिघ्रीमेंनमसयन्तसिंहजीकीलामियोंवचानेमेंबादशाहकेकईअमीरोको-  
माकरमरावगैरवगैरलिरवाजावेतोरोसीही१ किताबमेंपूरानहोसके-बेहेहीनामिगएवी  
दातारवसूवीरवसरनायांसाधारहुय गामवालरवैराकरांकासौरठा परडागडेपया-  
लनसरथकोदूजुतोनी॥ जगसहजीवरांयाजदमंडावेजैतसी॥१॥ दिसेहकरा-  
हरदास दिसदूजीसारीदुनी। तोदूजतोलीतासफ्युंहिकभारीकानउठ॥२॥ वथागामप-  
स्त्रीकोठाकरभैरुजीका दोहा कलजुगवहेकरर सुमनदीजलसोखीयो। पथरत्नागापू-  
गरजेभाटीज्ञानउत॥१॥ औरवेकउचेठाकरांजोधसिंहजीतोमहाराजश्रीमानसिंह  
जीकोजालोरभेजकरखांपश्रीभीमसिंहजीकीफौजसेलउमरेफेरसगतीदानजीपीची-  
बिहारीदासकोपताहरीजबबहादुरीवरूजेकईकामोमेंखैरखाहीवअकलमंदीवगैरे  
कीखूबियोंकोमहाराजश्रीमानसिंहजीसाहिबानेश्रीमुखसेजसवमरसीयेबहुतफरमाये

सो दोहा रजपूतीरुखसतहुई पडुभाग प्रसकूल । पाके आंगी ग्रह पलो सगतै नै  
सादूल ॥१॥ अलाहाजुलकयास -  
तथा रावलोत सरदारोने राजमेवाड जैपुर भालावाड नरसिंह गढ़ वगैरे में पदापाय है  
सहा रावलजी श्रीमूलराजजी जैतासिंहोत के १ देवराज २ हमीर ३ लूगाकर्न ४ रुत्रमाल  
ई उज्ज ७ सांवतसी ८ सीहा ९ रावपाल १० आसकर्न ११ गोपालदात १२ कुः दयाल  
दास दिल्ली से मारवाड में आए १३ केसरीसिंह १४ सूरसिंह १५ हठीसिंह १६ किस्तसिंह



राजमारवाड से सीवनिकाली ववा की रही की बिगत  
संवत १९४१ में तिरवूरै प होकरा से खेलांगो तक सौबकोस जनावकरनेल पावल  
साहिबबहादुर ने निकालाई फेर राजगढ़ की तल्लाई परतकारकरने से अटकी बाद बहुत दु  
मेसरहा जोधपुर की फौज आकर राजगढ़ का भारी बिडरसिंह को ज़िन्दा मारा फेर सं० ४४



मिंजोपपुरसे महाराजजी प्रतापसिंहजी सहा वयहांसे कुं: श्री शिवदानसिंहजी सहाने-  
सरकरके गाम गौरी वडांगरी रं हाड़ा व धारवी रं मारवाह के तिरबूटे पर छोड़ी ॥  
सांवपटे य होकरां से गाम कायरादे कोतक किजहां से वलसाहवने छोड़ी थी मोतमिदान  
मोहंता थरवेराजजी जैसजमेर व मोतोचानजी मारवाडने सं० ४२ में सरकार के गामसी हडांग  
चैरागरी व पड़ो करी के तिरहदे तक निफाली ॥ अब गाम चैरागरी से ऊदर गौर गौले से बधा  
तावजा तक करीब कोस २० करही है सो भी उमेद है कि रानी डंड साहव मौसफ जलद फै सला-  
करवैगे ॥ ५॥ **दफे ५** कजपवास मरामतनी दि सुज्जनोति

दफ़ा ५ कावपट्टममहारावजी  
श्रीजसवंतसिंहजी के वंशका ॥



**दफे ६** भाटी व सोहा सरदारों के नाम व गाम व ताजीम व ठिकाने की-  
पैदा तरख मोन न जोर जो डन्त साहब को सं० १९४२ में लिख दी है सो तथा  
सहर में रहे जब तनखाह श्री दरबार से मिलने वगैरे का हाल॥

१०१ महारावलजी श्री केहरजी २ केहराजी ३ चाचा ४ वरमल ५ मेखा ई हरी ७ वर-  
सिंग मेखा पवरसिंग हुई ८ दुर्जनशास्त्र ९ कुंगसिंह १० उदैसिंह ११ मूरसिंह १२ वेहा-  
रीदास १३ जैतसिंह १४ सुंदरदास १५ अचलदास १६ वाकीदास १७ गुमानसिंग १८ न-  
हारसिंग १९ जुझारसिंह २० शिवजीसिंह २१ खेतसिंह २२ कुं:अमरसिंह विक्रम  
पुराव रोवडी ताजीम नगारो रुडी डावी मिसल अवलनम्बर तनखाहरु० १५० पैदारु०

२। ५ ४ वरमल ५ मेखा ६ खीमाल मेखा पखीचा हुई ७ जैतसिंह ८ मालदेव ९ मंडलीक -  
१० नेतसी ११ ग्रथीराज १२ दयालदास १३ कर्नसिंह १४ भानीदास १५ केशरीसिंह  
१६ खरवडीर १७ अमरसिंह १८ मानसिंह १९ साहबदान २० राजजीतसिंह २१ धन-  
राज २२ कुं:मोतीसिंह वरमल पुरावजी वगैरे मिसल वाकी विक्रम पुरमुख पैदारु: ५००

३। ७ बरसिंग ८ जैसिंह ९ कान १० आसकन ११ जगदेव १२ सुदर्शन १३ गुरोसदास १४  
विजैसिंह १५ दलकर्न १६ अमरसिंह १७ रामसिंह १८ कर्नसिंह १९ रुधनाथसिंह  
पुगलराव कुर्वी वरमल पुरमुख

४। १४ सुंदरदास १५ लाडखान १६ मरूपसिंह १७ मेरसिंह १८ रतनसिंह १९ साहबदान  
२० वलीदान ठा० विकासर पैदारु० १५०

५। १५ अचलदार १६ किरतसिंह १७ दानसिंह १८ भोससिंह १९ जोरावरसिंह २० जेठमल  
२१ अमरसिंह ठा० गिराजसा ताजीमवडी तनखाहरु० ३० घरवेठा पैदारु० ७००

६। १६ वाकीदास २० मूलसिंह १८ मदनसिंह १९ जैसिंह २० बीझराज २१ हठेसिंह ठा० वांग  
ड सर पैदारु० १५०

७। ८ दुर्जनशास्त्र ९ भानीदास १० मानसिंह ११ भगवानदास १२ राजसिंह १३ अजवसिंह

१४ पेमजी १५ अनोपसिंह १६ लखधर १७ सूरजमल १८ जालमसिंह १९ होरजी  
 २० मूलजी २१ कुंकाजी डा: सिर्डी ता: बडी वनखाहरु: ३५ पैदाह: ३००  
 तया १५ अनोपसिंहके १६ नथराज १७ भोजी १८ रावतसिंह १९ भोजराज २० कुं  
 कल्याण डा: नथराजकी सिर्डी ३५ ३०० ३०० ३०० ३००

१८ दुर्जनशाल १९ भानीदास २० गोपालदास २१ सांवलदास २२ जैसिंह २३ जोगीदास २४  
 सियदानसिंह २५ सगरामसिंह २६ चैनसिंह २७ दुर्जनसिंह २८ उमेशसिंह २९ प्रताप-  
 सिंह ३० नवलसिंह ३१ कुंकाजामसिंह डा: जोगीदासको सिर्डी ता: ननखाहरु: ३५  
 पैदाह: १५०

११११ सूरसिंह १२ प्रागदास १३ वीरभान १४ अभैराम १५ सुखजी १६ सरदारसिंह १७ दंड  
 सिंह १८ रुचजी १९ होरजी डा: ग्रांधी

१०१११ सूरसिंह १२ मूरासिंह १३ जैसिंह १४ रामसिंह १५ अनोपसिंह १६ सरदारसिंह १७ लास  
 सिंह १८ जमजी १९ गोंयंददास २० उदैसिंह डा: भोजांफी ताप

११११११ सूर १२ दलपत १३ साहबबां १४ विजैसिंह १५ नरसिंह १६ पेमजी १७ सालमसिंह  
 १८ दंडसिंह १९ डा: वावडी

१२१११ उदैसिंह ११ सरदास १२ हाथीसिंह १३ तुगतसिंह १४ नथराज १५ सरदारसिंह १६ सगे  
 जसिंह २० वनजी २१ मचजी २२ कानजी डा: बडी सिर्डी

महारावलजी श्रीमालदेजी सेमालदेयोतवकुं: २२ खेतसिंहजी सेपतसिंहोत  
 दनके ३ पचानको पचानोत ४ रामसिंहको रामतिहोत ५ उदैसिंहको उदैसिंहोत सेसेहाखेवसिं  
 होतोसे जो जोखापांहुं सोलिखी गई

११११ उदैसिंह १६ कल्याणदास १७ मूलचन्द १८ अनोपसिंह १९ जोरावसिंह २० जालमसिंह २१ जे  
 याराज २२ शिवजीसिंह २३ बूली दान २४ कुंकाजामसिंह डा: चंजनभाती ताजीमवडी  
 तनखाहरु: ३५ हमारगाम कूडा वनीवली पैदाह: ३५०

२। २ अनोपसिंह ९ खेतसिंह १० वाघजी ११ भोजराज १२ विजैसिंह १३ कुं. अचलसिंह १४ भं.  
गलसिंह ऊपर मुजब डा. गाम गोहू पैदा रु० ३५०

३। २ अनोपसिंह ९ सरूपसिंह १० जोधसिंह ११ प्रथीसिंह १२ तेजमाल १३ कुं. प्रतापसिंह -  
डा. गाम सीहडगर तनखाह रु० २० पैदा रु०

ई कल्याणदासजी ७ अर्जनसिंह ८ मानसिंह ९ अमेरसिंह १० घनजी ११ जसवंतसिंह १२  
लालजी १३ चमनजी १४ भ० किस्नसिंह डा. माडलीताजीमरुकेवडी तनखाह रु० १५ पैदा रु० ३५०

४। ई कल्याणदासजी ७ भीमसिंह ८ सारारसिंह ९ नैराज १० भाजी ११ संभूदान १२ वूलीदान १३  
कुं. समर्थसिंह डा. देवडा ता. तनखाह रु० ३० पैदा रु० ३५०

ऊपर लिखेपांचो ठिकाने उदै मिहोनहे

१। २ खेतसिंह ३ पचांगा ४ रामसिंह ५ तेजमाल का तेजमालोत ई सुलतानसिंह ७ दोलतसिंह  
८ सवाईसिंह ९ सरूपसिंह १० जानसिंह ११ प्रथीराज १२ रावतावासिंह १३ कुं. सुमाली  
ह १४ भ० नगजी डा. रराधाताजीमबडी तनखाह रु० १५ पैदा रु० १७५

२। ७ दोलतसिंह ८ मानसिंह ९ मूर्जमल १० संभूदान ११ न्हाजी १२ राजजीतसिंह १३ कुं.  
डा. मोटा तनखाह रु० ३० पैदा रु० ३५०

३। ई सुलतानसिंह ७ पदमसिंह ८ जोरावासिंह ९ रामसिंह १० गुलराज ११ कुं. वूलीदान  
डा. तेजमालोत तनखाह रु०

१। ३ खेतसिंह ३ ईसादास ४ हारकादास का हारकादासोत ५ भागचंद ई लाडखान ७ अमै  
सिंह ८ मेघजी ९ सालमसिंह १० भोजराज ११ जेठमल १२ खोबतसिंह १३ पनजी डा. गाम  
बाहू ताजीमबडी तनखाह रु० २० पैदा रु० ३५०

२। ५ भागचंद ई चंद्रसेन ७ राजसिंह ८ हलपत ९ रुजानसिंह १० रतनसिंह ११ भगवानसिंह  
१२ हीरजी १३ कुं. रावतावासिंह १४ भ० बाहू ता. वडी तनखाह रु० ३० पैदा रु० ३५०

३। ५ भागचंद ई मूलचंद ७ लालचंद ८ फतैसिंह ९ बांकीदास १० सेतसिंह ११ चमजी १२ काठब

- सिंह १३ कुं० अचसीराने ग्रामदेकां  
 १ २ खेतसिंह ३ सगतसिंह का सगतसिंहोत ४ हरीसिंह ५ फतैसिंह ६ किसोरसिंह ७ जो  
 गवरसिंह ८ बांकोदास ९ प्रधीराज १० भगवानसिंह ११ भोजराज १२ फतैसिंह -  
 दा० सतेआयो ताजीमपडी तनखाह रु ४० पैदा रु १०५)
- २ ४ हरीसिंह ५ न्हासिंह ६ कल्याणसिंह ७ म्हाकमसिंह ८ घीलसिंह ९ जोगराज १० अभ  
 जी ११ बीरदान ग्राम घांदियाली
- ३ ३ सगतसिंह ४ केरासिंह ५ रतनसिंह ६ जुगतसिंह ७ सरवधीर ८ संगराम ९ जालघासि  
 द १० एजसी ११ दीरजी १२ कुं० पखतावासिंह दा० अनासरतनखाह रु १५ पैदा रु १००)
- ४ ५ रतनसिंह ६ रायसिंह ७ अनोपसिंह ८ हिन्दुसिंह ९ नथुसिंह १० कर्नसिंह ११ न्हा  
 जी १२ अजीतसिंह १३ कुं० बैरीसाल गां० वात्ताणो पैदा रु १००)
- ५ १० अनोपसिंह ८ सगरामसिंह ९ जेठमल १० न्हासिंह ११ न्हेराज १२ चलवंतसिंह  
 दा० आसकनै तनखाह रु ३० पैदा रु ३०)
- १ ३ पचांदाजी ४ प्रधीराज का प्रधीरजोत ५ भोजराज ६ केसवदास ७ रतनसिंह ८ खीम  
 जी ९ भावसिंह १० सवार्दसिंह ११ बूलीदान १२ प्रतापसिंह १३ कुं० म्हावतसिंह  
 दा० नवैतले ताजीमहे तनखाह रु २५ पैदा रु ३५०)
- २ ४ प्रधीराज ५ जोगीदास ६ लालचंद ७ पदमसिंह ८ बाघजी ९ तेरीसिंह १० बावी -  
 दास - दा० ग्राम जोगीदासरो -
- १ २ खेतसिंह ३ बाघजी ४ गोर्धनजी ५ गिरधरदास का गिरधरासोत ६ हरनाथ ७ रूपसि  
 ह ८ मूलसिंह ९ सवार्दसिंह १० वभूतसिंह ११ साहिबदाज १२ भोजराज दा० ग्राम खोड
- १ ३ खेतसिंह ३ दपालदास ४ वेहारीदास का वेहारीदासोत ५ जसकरन ६ जैतवाल ७ मूलसिंह  
 ८ अनोपसिंह ९ जानसिंह १० रुघजी ११ बूलीदान १२ कुं० भाषसिंह  
 ग्राम वडेग्राम तनखाह रु ३० पैदा रु १५०)

- ४ वेहारीदास ५ कुम्हलसिंह ६ हरीराम ७ रामचंद्र - परमसिंह ८ जूझारसिंह ९ साहिब  
दान ११ सतीदान गांव डांगरी ता० है तनखाहरु २० पैदारु ३५०
- ३ ई हरीराम ७ सहसमल - हंदूसिंह ८ भगवानसिंह ९ समेलसिंह ११ पीरवान १२ हेमजी  
१३ लखमनसिंह गांव डांगरी ता० है तनखाहरु ३०
- ४ ५ कुम्हलसिंह ६ शिवदास ७ बिनैसिंह - जोगीदास ८ राजसी ९ खेतसिंह ११ जोध-  
सिंह १२ हीरजी १३ कुं गांव राजगढ़ तनखाहरु ३० पैदारु १००
- ५ ४ वेहारीदास जी ५ जसकर्न ६ जैतमाल ७ मूलचंद्र - अनोपसिंह ८ सुरतानसिंह ९  
लखजी ११ मोडजी १२ कुंखलवंतसिंह गांव लषासर तनखाहरु १५

- १ ३ पचांराजी ४ रामसिंह ५ दुर्जनमाल का सुजावत ६ गजसिंह ७ अजबसिंह - उदैभां  
गा ८ सुवाई सिंह गामवसायो १० बभूतसिंह के खोले परमसिंह कोबेटी ११ प्रथीराज १२ हेम  
राज गांव चैलक ता० है प्रधानगी तनखाहरु १५
- १ ४ रामसिंहजी ५ अखैराजजी का अखैराजोत ६ भावसिंह महाराजजी श्री अखैसिंह  
जी गाम टावरकी दीयो विश्वेकी चाकरीसे ७ जोरावरसिंह - धानसिंह ८ आसकरा  
१० हड-वंतसिंह ११ मोड- गांव टावरकी
- २ ५ दुर्जनमाल ६ गजसिंह गामवसाया ७ दलकरन - खीकजी ८ सोभजी ९ जान  
सिंह ११ बूलीदान गांव गजसिंहका

पुवारंउर्फ सोढा अमरकोट का खांप सुरतान तो पारती है और नारनोतयाने नारांज का वेदा-  
वैरसी गंगा दास राम हमेसांसे तावेदारीमें रहे श्रीमूलराजजी साहबोने गंगा दास-  
दौलतसिंह गाम होल वाले को जागीर गामंरूहडी सं० १०५२ में दीया और राम मदनसिंहोते  
सुलतानाउ वालो को गाम बूणापर रहवास दोसं० १६ में और वसीसं० २७ में लिखदिपा ॥

तथा काडे नूपला जोड सूजे रंगै में सोटा रहते हैं परंतु वसीगाम नहीं तनखाह रु २५ है अवध  
भीकरा दीया है ॥ १ गंग दास २ हींगलीदास ३ भोबरदास ४ नोतो ५ दोस्तसिंह ६ हाथी  
सिंह ७ साहबदान ८ राजा नोतसिंह ९ कुं रायसिंह १० भं पना गामा खुडो नजीम  
पडा तनखाह रु ५० पैदा रु ५००

१ गंग दास २ हींगलीदास ३ नेदा ४ भीम ५ रतसी ६ गजसिंह ७ विशानसिंह ८ राजाजी  
वसिंह ९ कुं धनजी मदानलारकी सीवमें जमीन वखशार्द परकुबन होने से गाम नहुआ  
नजीम तनखाह रु ५०

१ राम २ उदैकान ३ अमरसिंह ४ सुंवरदास ५ सुरतानसिंह ६ तोपसिंह ७ भोजराज ८  
मदनसिंह ९ मोडसिंह १० न्हेरज ११ कुं नजीम तनखाह रु ५०

नागौरदारों व भोमीयों के गामों की पैदा वाचत रेख या तियाला वगैरे कोई लागत की नहीं  
है बल्कि हमेशा की नोकरी भी नहीं नोजाती जो कोई सरदार या भोमी या खास शहर व हकूम  
तो में नोकरी करवे है सो वनखाह पावे है सब बयह या दिगामों में पैदा ही नहीं थी क्यों कि गेहूं  
पैदा करने व किराया खाने की तो मनारज थी और नवाकुवा भी राज की दुवाली से बनाया तो भी ला  
सीला व धाया गया और एकताज भाउजी दा ० धनजी गेहूं काया सो जवत हुआ जब ठाकुर  
सूफने थोड़ी १ नजरकर के भाफी कपड़ें जेकिन आयवे गेहूं नहीं करने का लिखत कार दिया  
तथा सारव सोचा धू भी बर्पी की कमी व कष्टक धाडा वगैरे के खौफ से खेती कम ही करते थे जिस  
में भी रजपूतो सिपाहियों वगैरे से हासल मुकाता नहीं लेते थे हांयह लोग सरदार की शरी में तो  
ता और मोसर में खांड वारस व ग्री दरवार में घोडा नजर कर जिसकी कीमत के रुपये है सियत  
मुजब देते थे और काम पडे घर व होतो सुधा नोकरी करते है और साहूकार वगैरे रईयत से झूपी  
साडी हासल वगैरे की पैदा भी सपारी शिवां व पवारी गेहों के सब भार बांटा कर लेते है यह रस्म आ  
यंदा बंद करने के लिये श्री दरबार स्थितों यह तक धरणी या पफरमार कि कर्द गाम नये सर पाटवी

गामवासी की सरत पर दुनायत कराये बांरा को तो गामवाल से कीया जावे परन्तु बिलफेल तो बांरा  
कर लीया है पाटवी पिणां सिर्फ राज से तनर खाह वताजी म मिलने का है मुदा कि न तो गाम से पैदा  
यी और न हमेशे की लाग मुकरर की गई जो सरदार फौत होते है तो भी कुंवर से कमर बंधाई की ला  
ग नही लेकर सरोपाव दीया जाता है जिसकी मोताज एक ऊठ व पांच रुप्ये धरियात व जामडे को  
देते है फार मात्मी को पधारे जबरकजी तो एक छोडा एक ऊठ व मोहरथान एक नजर व रुप्ये पांच  
नोकावर को और दूजा सरदार नजर नोकावर अनवर रुप्ये हीज करते है तथा उस जमाने मे खेड  
मुहीम वगैरे की नोकरी बहुत ली जाती थी याने हर एक गाम के कई आदमी मम अस्त्र व पुर्न हाजर  
रहते थे उनको दरजे मुजब बल पेदिया व अमल राज से दीया जाता था सो सरकार दौलत मदार की तर  
फ से राज पूलाने में अजंदरियो होने बाद से सो नोकरी का काम ही नही रहा मगर वख पैदियों के खर्च से  
विकाल तो वगैरे का खर्च राज को तो ज्यादा ही लगता है इन्हो से तो सिर्फ छोडाया कीमत का रुपया  
नीचे खिखे मौकों पर लेने का रिवाज बन रहा है ॥

एक श्री दरबार साहबों के राज्याभिषेक हो जवरी लाडे का दूजे श्री दरबार साहब या मझा राजकु  
मार का बिवाह हो जव त्याग का तीजे श्री चार राजकी सारी हो जव दायजे का चौथे श्री दरबार साहब  
गामे पधारे जवन नजर लेने का ॥

ऊपर लिखी लाग भोमीयो से तो रुप्ये वसूल होगए और सरदारों से सं. १९१५ पीके छोडे रास ९ चाहि  
ये जिस से किसी ने एक दो किसी ने तीन चार नजर किये बाकी बाकी है तथा सं. १९१५ से पीके कई  
गाम जागीर बरकडीन परे बरवशे जिसका भी छोडा किसी ने नजर नही कीया सिवाय इसके चोरी-  
धाडे के मुकदमात का हजार हा रुपया अजंदरी जोधपुर मे राज से दीये गए सो सूर से लखुं होते है तथा  
पडोसी रिआस्तों से सरहदात निकली जिसके सर्फे के रुप्ये जो उन्हो के गामों पर वाजिब है लेने बाकी  
है बाजे गाम भोमीयो पर छोडे के ठारा काफी गाम सादे पांच रुप्ये सालियाना वसूल होते है ॥

श्री जी साहिबा की उम्मीद राज हो मान्न सद्गो व भोमीयो व सांसन् वालों को आवादी आमदनी में  
तरकी करने की साफ २ दुवाती देकर ताकी दफा मार जव से बहुत से गाम नया कूवा बंधा त्यार हुआ



और कि तेही गांम गोहूँ व तिल कपास होने लग्य है तथा खांपवां सींगों के गामों में जाद विसनोई वं  
 रे बहुत से किसे आवाह हुसज हांपैदा भी बहुत बड़गर् और बहुत जाती है मगर भारी वेदे के गाम है  
 जहां तरकी नही होसती इस सीचे दूर अदेश सरदार भी अब दिखसे चाहते है और हकीकत में बहु  
 त ही मुना सब ववाजिब है कि गाम का एक सरदार पाटवी मालक बज्जिले वार है जैसे कि और रिया  
 स्तो में है ताकि आवादी आमदनी में खातर खाह तरकी वचोरी घाडे काबन्दोबस्त वीर हर एक  
 काम आसानी से हो सकें लेकिन यह तजवीज श्री दरबार साहिब वजन वस्ती डन्ड साहब बहादुर  
 मनाह करके कौरे गेज व होगी और दोनों साहिबों की सलाह के कोर्ट तजवीज पेश नही चरने की  
 क्यो कि सं० ४१ में न्हेसूल में सरदारों का हक इस मत शा सेरकवा था कि दारा चोरी भी न होगी और  
 पाटवी को हिस्सा श्री दरबार से मिलेगा तो सब तरह से उनका फायदा होगा लेकिन अलावा  
 वरसंगों के दूसरे सरदार इस बात को कुछ भी न समझे जिससे राजका दारा भी मारा जाता है  
 और साकुर को भी सिवाय पशेमानी के हासिल नही होता है ॥

## अथ इतिहास

### दफे ७ रावरांगदे वकुंवरसादे वकेलराजीव इतिहास

पूगल राव रांगदे के कुंसादे का घोड़ा सूर केशिकार में मगरावनी ने कहा पाया पादी या है  
 जिस पर कुंवरसादे ने जैलुंग से दै रांदलोत राकसी ये सोम लूणावत् जंझवी के त पाहू  
 लबम सी दे दावत साथ ३५० मनुष्यों से आये वले के गगड निर्वाण की १४० घोड़ी जीवी गाड  
 वहार चडा सो = कोस से पीछा गया सादे गाम के तलाव पर आया मोहल राजा मांराज राव  
 की पुत्री को डमदे बहुत सहेली साथ तीन मराकों आई जब सादे ने घोडे को रांनों में उठाया हा  
 थो से चड की सारव प्रकड होडा लीया कोड मदे मोहित हुई पीछा जाकर मा की जवान से वाप  
 को कहा कि इसको ही जपाना वो हर चंद समझार कि रडोड अर्धकमल चूंडावत से सगाई की

हुई है दोनो घर बिगड़ेंगे पानही मानी लाचार कुं० सादे को नारील दे कर कहा कि विवाह कारलो -  
 सादा वोला जान कर आऊंगा चोरी नही परनो फेर पूगल जा कर रावजी से कही सो नही तुली मुदत -  
 तक मोह लोके कागज छिपाये आरवर को कोडमदे का पैगाम राक ब्राह्मन ने सादे को दिया जब हठ क -  
 र के च्याहं जो धार नाम ऊपर लिखा है जिन की खुशक भी असम भवयी साथ लिया और चार सो लोग से  
 चढे राकुन अतिव विप्रीत भय पर कुदर खयाल नही किया बडे ही उतसाह और दुतरफा मोह से विवाह  
 कर के डेढ महीना वहां रहे रूपीया सक्लारव त्याग दिया और रुपया चालीस हजार का दायज ले कर  
 पीछे आते जान का डेरा कुवेति दुगा देस पर हुवां की खबर वसे के कारा मर जासूसां से सुनते ही -  
 भूँड भूँडे से अर्ड कमल ४ हजार फौज मार खेत सी आदि पांच भाई व महराज सांखला व भोजराज  
 भगवती दास चौहान व जेठी मुंगीत व गैरे जो धारां के चढ आये ४ को सकेटे दिन उगां से के सत्ता -  
 देव मारना चाहा पर महराज के कहने से दो खवास भेज दी काडी दे जमाया से दे ने कहा मेशर खडी चा -  
 रस्ते में गिर गया है किसी के हाथ आया होगा ला दो दूसरा अमल नही लूंगा अर्ड कमल ले ल जा सक  
 रा खडी चा भेजा जब अमल ले कर बेध डक पीछा सो रहा पीछे उठ कर घेडे का तंग से साखें चा कि चारुं  
 पांच जमीन से ऊंचे हुये फौज वालों को हैरत हुई फेर मोर पर सवार हो बोला कि आगे चलूं या पीछे -  
 अर्ड कमल के कहने से महराज बोला कि घेडे का पगतो दिरवा वो जब घोडन उडन या सो भोजराज भग  
 वती दास को मर ५० आदमी के यदम पुर भेज कर कुंवर सादे पास गया कि फौज आगई है कुंवर बोला  
 कि रावजी ने वचन लिये थे सो आप तो पूगल जा वो मोर घोडा मुझे दे दो सो दो जी तो अलग जा बै -  
 ठा और फौज आप हुंची अबल जुद्ध सो मने किया ३० मनषों को स्वर्ग भेज कर मूछे ताव दे रहा  
 है बीका बोला मोर घोडा व उमाही के सवार को जोखा नही ज कुंवर कर घोडी के चारुं पैर एक तल  
 चार से उडाय पैर ल लडने लगा और घायल हुआ ॥ कुंवर सादा कोडी के अंदर वहेली में कोडमदे से  
 स्वर्ग या सती पुरे में खूब करने की वाते कर रहा है जेठी मुंगीत आया कोडी गडै को चोर कर पीछा -  
 जौरा सादा बोला जीतान जावै बीके कही उमाही नही रही जब सादा मोर पर चढ कर जेठी को मार  
 आया और खरव मसी से कही एक बार तो मैं आपके देवते जुद्ध का हूं खरव मसी कही जै से मरजी -

चुनने १५० भंड सुरलोक भेज पीकावहली में आवेडा और वीके ने अद्भुत जुड़ किया  
 ५१३ अदमीयों को मारकर आप भी अपहरण साथ स्वर्ग पहुंचा फेर लावमसी सैन्य पति हो रू  
 वलडा ५५० एठोठ कर्ई भारी काम आवे अर्द्धकमल के दो भारी वगैरे पायल हुये लखमसी मारा  
 गया बाद हुंवर सादेने कोठ मरे से सीखले मोर पर सवार हो अर्द्धकमल के भारी खेत सी वगैरे -  
 ५०० कोव फात दी महाराज वगैरे पायल हुए जब एक मंगत जो आगे पूगल गया था मोर की  
 चाल जानता था अर्द्धकमल को कहवार सक दोली से मर की का दोन वजवार ता मोर नाचने लख  
 लान्धार सादेने घोडे को पूरा कर के पैदल लडने को रकडा हुआ तब अर्द्धकमल भी पैदल मुकाव  
 ले को आया दोनो के पहले हथवा की मनवारी हुई आखर अर्द्धकमल ने तलवार मारी शिर  
 अलग पडा बाद सादे की हथवा से अर्द्धकमल घायल हुआ और दोनो तरफ के लोग बहुत से आ  
 पस में लड मरे घ घायल हुये लहार् खत्म हुई राठोड २२०० मोर जिप को दाह निया औरण  
 यलों को डोलोये घात राठोड पीछे गये बाद सेठ ने भी २०० भारीयो को दाग दीया और राठोड की  
 लास घ घायलों को उठाय डेर लाया जब कोठ मरे ने राग हाथ की चूड़ मंगत ननो के चाले धौद  
 एक हाथ बाट कर सुतरे वसासू के पांव लागने के लिये गेटे को देकर कहा न्याय करो देश पडती  
 है मुझे कि चिता में दैट कर सादे का सिर गोद में ले सती हुई सेठ ने पूगल जाकर सब हाल एकजी  
 से कहा हा हाकार मच गया फेर एक जो ने एक चूड़ तो जैसल मेर मंगतो को भेजी और एक -  
 चूड़ व बहुत से रुप्ये लगाकर कोठ मरे सर तालाय जीवी वानेर से कोस भ्रमि स है बनाया ॥  
 तथा राकसी या सीम के आराम हुआ सो ही अर्द्धकमल पास जा रहा ॥ वहां हांर वलाम महाराज दो  
 बचा और अर्द्धकमल फौत हुआ इस के तैयारी के दिन सादे की हं मासी थी ॥ तथा सिखा देता  
 व सुना है कि राव रांग गदे ने कुं सादे के बैर में राठोडो का मुल्क बूटवार बहुत सा वित्त लीया और  
 बांज जगह लहार् भी जीत का सिरुडां की तजार् पर आवे कटक तो बिरगवा घोडे आदमीयों  
 से एकजी दैठे पीके से एठोठ चंडाजी फौज ले आया लडाई मे सदा आदमी दुतर का और  
 एकजी मोर गये परन्तु युद्धानत करीन कयास नहीं द्यो कि सादे के बैर हा ही नहीं था एठोडो ने

अपनी मांग के दावे में सारा वगैरे को मारे तो भी सासने खेतसी वगैरे बहुत से राखों को मारा और कई कमल भी जीता न रहा ॥

दूसरे वीर मांरा में लिखा है कि राठोड वीरम के बैर में कुंवर गोगादे ने दलाखा वगैरे जोईयों को मार कर तलार पर आउतरे और बोडे ढील दिये ये पीछे से दलाखा के बैरे ने आकर अवल्ल तो बोडे लोये जइसे कहावत है कि ढलीया हाथन आवसी गोगादे घोड्ड ) बादल डारि ने गोगादे जी को पूरे घाय किया २ उस वक्त रागागदे जी भी शिकार खेलते उस तलार पर आये थे गोगादे जी ने रत्न तला तलवार जो दुर्गोधन के हाथ की गोर खनाथ जी ने दी थी रावजी को देने के बहाने नजदीक बुलाकर मार डाला और हंसकर कहा साठु जीता डीरो अब दोनो बहनां लांबीयां पहने रहैंगी- रावजी का बैरले ने को कुंवर तारक व प्रधान महेरो हमीरोत मुलतान के नवाब पास गए कि फौज ला कर राठोडों को मारवेंगे इसी अरसे में बिकमपुर से केलराजी ने महेरे का मुख पूछने आदमी ने जा उसने लिखा है तिरारु साथ जाता हूं आप चोहां न बिकुपाल को अपनाय पूगल लेली जो जब ओठी पांच से रावजी की मोंकांरा को गया बिकुपाल को मिलाया ही था रावजी की मोठी को घर में रखने का धोर था दे कर राठु में मालिक हुआ पीछे से कुंवर रागा मलतीन सो मनूज्यो से आया जब राठु में रखकर आप बिकुपाल को साथ ले कोर मरोर का कब्जे किया फिर बिकुपाल की सलाह से पाहुओं को बुलाया कि रावजी का बैरले वैंगे पाहुओं ने बखुशी मालिक मांना मुदा कि खारबारा मराहापा- सर मोरा पर वगैरे १४० गांवों के भी ताबे हुआ यह वगैरे तिरारु को लगीं जब महेरे का ही रावजी का बैरले १० गांव को १ कोट में दिला दूंगा अदेशा मत करो फेर केलराजी ने कुंवर चाचे को सिखा कि इत्तलारि अरजी जै सलमेर भेजो और जमीयत ले आवो चुनाचे राक हजार लोग से चान्चो मरोर आया बाद चूडे जी को डोला देने के बहाने जा कर गाम में डेरा किया चूडे जी बीद बनकर आया सो दगादे स्व पीछा भागा केलराजी घोड़ा पीठ लगाय चूडे जी के वगल बीच में बरकी निकाल कर कहा कि पीठ में जो निकल सकती है मगर सामना करो तो धर्म रहे पर चूडे जी तो भागा ही गया आर वर नागोर के दरवाजे जातां केलराजी घोड़े की वाग से चो सो ऊपर आया जब बरकी मारी चूडे जी की गर्दन

से सारा बदन व पोछ को लेकर नर्मन से गंडा चूड़े जो ने शिर लटकाया केलराजी सामने आकर  
 कहा सया जी लटका नुहार उस वक्त एक जगह श्रवणी योना कि गांड में लकड़न रवोगे परहो  
 गे तो सन्नामी सों रोसे ही है याने राव पूगल महाराज वीकानेर के तावै है दुतरफा बहुत आदमी  
 काम आवे केलरा जी बैर लेकर फतहमंद हो नागोर लूट पीछ आते थे कि मुलतान से पोज आर  
 जब केलरा जी ने राठोडो के कहने से मुल्लू करके पौन शाही को शिकस्त दी और रक्जाना नूटा-व  
 तो पांव घोडा लेकर पोरतिरान वमैं हों को भी साथ ले पूगल साथे यह दोनों मुलतान में नवाब के क  
 हने से मुस्तमान हुं से ये यहां नहों रहस के भटनेर जाकर अमोरीया भाटीयां सामिल हुं तिरान के  
 बेटे मुंमछा के मुमाराजी वमैं हों के हमें रोत करीजे केलरा जी के इफ्नाच की खूबी से देराव में मा  
 जक दर्दया अजा न प्रधान पाहु भादा के दरम्यान नारुच फा की हुई और दर्दया बिकामपुर दर  
 वित्त ले गया केलरा जी ने आदमी भेजा तो दर्दया बोला कि दूसरा धार जो जब भादने मौका पाकर  
 केलरा जी को लिखांग महासुद १५ दर्दया तो हेडा उ की जान जावेंगे आप आवें तो में गदरे हंगा  
 चुनाचे पांच तो ओटो ओ से नाकरगर में राखि न हुं स्वेया आया कि गद से निकल जावो ॥  
 जवाब दिया कि आप ही दूसरा धार जो पोरतुं वर रा मल को गद सों प कर आप मरोर आस पीछे मात्र  
 फडोसो भोमीये तावै दार हुं और गदनान राव बिझरा रो में भी अमल दखल किया पोर केलरा  
 जी शिकार के बहाने सिंध में उतरा नदी के पार जार है वहां खुवाब में एक देव के कहने से ही नदी  
 के बीच गद विनोहर तो मुलतान से ३३ कोस पर वडे केहर का बनाया हुआ मिसमाया सं १५५१ मे  
 बनाना शुरू किया फडोस में एक तरफ की मसमा का राज था कोर कराने से मना करने लगा जब  
 केलरा जी नदी का जाम इस माचल खां पास गया उन की बेटी से आप की सगाई करी टीका घोउ से  
 कारपी के आश तब दूसरे फडोसी लांगा हां ने मना किया तो खयाल ही नही किया लांगा हां ने मुलतान  
 के शाह फतह अली शाह का आदमी भेजा कि गद मत करो केलरा जी जवाब दीया कि यहुं रई  
 गा तो वंदगी का हंगा यह जमीन भोमीयो ने मुजबो दी है चुनाचे गद माथे ला व मुंमंरा वाहरा भी  
 अपने वाक्ते में लेकर नदी विहाय संविकाय मकरी याने दूसरी नदी का पैला पार दूसरी का खकर-

मुल्क आवाद कीया ॥ बाद पड़ोसी कौमज द्वाबर खोखर वलांगा ह कौर शंका मानते रहे फेर इसमा  
 यलखां की वेदी पर न्या आपसमें बड़ा हेत बांधा इसी अरसे में कुराई अमीर खान बलोचने नज़दीक  
 में गढ़ बनाना चाहा केलराजीने हरचंद मना कीया परंतु कुराई योने गाल मारा कि जमीन तलवारों  
 में है जब केलराजी समासे मर दले कर पांच हजार फौज से चढ़ गए कुराई भी तीन हजार फौज  
 से मुकाबले को आस बहुत भारी जुद्ध हुआ २३५ बलाचों साथ अमीर खानों बहिश्त भेजा १०० ता  
 रीव समा काज आवे पर बाड़ो जीत बहुत सा बित्त लीया और गढ़ बिसभार कर कुराई यों को ताबे  
 किया फतह मंह हो पीछे किरोहर आवे ॥ जाम इसमारे लखां फोत हुआ हो नो बंदे राज की  
 तकार से लड़ मरे केलराजी मात्मी को गए सासू के कहने से मुल्क के दंदो बस्त को एक हजार फौ  
 जरख कर पोता मुजाहद खानों जो १० बरस का था साथ लाख सो बड़ा हुआ जब राज सौंपा परंतु दंदो  
 बस्त अपना बना रखा फेर यह भी मर गया तो सभाकाराज भी खाने देरे इसमारे लखां मर मुल्क का ब  
 जे में हा मुलवान केशाह से हो स्तीर ही और मुल्क सिंध में अच्छी हुकूमत जमाई फेर गढ़ भटनेर  
 लेकर किसी कहर फरगने हंशार में भीड़ का बजाया और दूराहा आगे को थाले किन महारावस के ह  
 नी के वैकुंठवास होने और छोटा भाई लखमल राज बैठने की खबर लगता ही जैसलमेर आरा  
 लखमरा के मोती यों का तिलक कर के कदम बोसी हा सिलकारी और जो जो गढ़ व मुल्क फतह कि  
 या था नज़र किया लखमराजीने मेहरबानी व कहर दानी से मुनासिब जान कर एक गढ़ देरावर  
 नोखाल से रवा बाकी सब वस्त्र शरीया और राव का रिवताब व नगारा छुड़ी वगैरे लवाजमा अता  
 फरमाया कई महीना यहां रहे फेर पीछा जाकर आपतो गढ़ सुमरा बाहरा में रहे और कुंवा थिरे-व  
 रवुमारा जो पठानी से पैदा हुए थे गढ़ भटनेर दीया सो भाई मुसलमान हैं कई पुस्तों तक तो तावेरा  
 री में रहे फेर ही अरजी नज़राना भेजता था बाद वीकानेर का दरबल होगया ॥  
 तथा कुंवर रामल को मरोट में गादी बैठा कर सब मुल्क सौंपा चाचा वगैरे को दूसरे कोरा में रखे  
 केलराजीने फेर ही थोड़ा सा मुल्क दवाया और ६२ बरस की उमर पाकर स्वर्ग धाम पधारे थोड़े  
 ही अरसे में रामल को बीमारी सीतांग की हुई सो विक्रमपुर आकर फोत हुआ जब सबने सलाह

करके चाचे को गादी का मालिक किया इस असे में बादशाह महम्मदशाह का वजीर कालु-  
 मुलतान का बादशाह हुषा जब चागाहाने अर्ज की कि भाईयो ने बहुत सा मुल्क हमारा वसर  
 करी दबा लीया है मुनते ही तुकम दीया किनु में चढ जावो और मुल्क छीन लो तुनाचे लांगाह  
 अमीर खां चढ आया सो चाचे जी से हार कर पीछा गया जब खुद वजीर कालु मसलांगाह अमीर  
 खां २५ हजार फौज मुगल पठाया बंगाल वगैरे लेकर आये चाचा जी ने भी जोरियां पाहु जैतुंग  
 वगैरे ३० हजार फौज से दुनीयापुर में मुकाबला किया अद्भुत जुद्ध में हजारा आदमी दुतरफा  
 व अमीर खां काम शाये और कालु भाग गया चाचे जी परवा डो जीत दुनीयापुर में कुंवर वसरल  
 को बैठाय आप पीछा आकर उत्तार अरुजी नैसल मेरे भेजी जब महाराजलखन मराने घोड़ा व  
 तखवार कदार कनेवर पारने शिरो पाव भेजा ॥ फेर स्तना सुमार खां की देवी सोनल परत्या  
 तथा कुंवर ७ १ कुंभा रोहेना को हरीयो का ॥ २ वरसल ॥ ३ महेरावरा ॥ ४ भीमदे  
 नवासे ॥ सोहां के ॥ ५ रता ॥ ६ ररा धीर ॥ भागोज चौहानों के ॥ ७ राजरिंह ॥ रोहती से  
 हुषा ॥ केवराजी के राठोडे से ॥ सुलह हुर्द जिससे अक्रे को नथुने मारा दोहा  
 फैल चवंडा मारीया सो आहु आखाया ॥ नथु अकामारीया सो सिकाव गांरा ॥ १॥  
 अब अके का बैर को रू लेन हीं सका क्यों कि सुलह में सब शामिल रवे गये थे ॥  
 केल अरुजी के कुंवर देपे का घोड़ा चरार् पर जोइयां पास था सो मैने कवले के भरिया सके दुही  
 थिरपाल मैहपालीत च्यार फंडों को मार कर ले गया जब चाचे जी ने थिरपाल को बहिस्त पहुँ  
 चाय बहुत बिचले कामांनों को दे दीया ॥ फेर लांगाह के वीहा रेने से ब्राह्म वेग पी हड़ोत्ता  
 हजारा फौज लाकर दुनीयापुर का पिच लीया चाचा जी को पहिसे ही खबर लगी थी सो चढास चार  
 कोस पर जग अजी मुहुर्द दुतरफा आदमी बहुत कटे आरवर ब्राह्म वेग को चाचा जी ने यमपुर भेज का  
 अपना बिच छुड़ाया और दुषामनों का घोडन शस्त्र लेकर सांघी पों को बवशा प्रवाडो जीत पीछा  
 पधारे ॥ बाद चाचे जी के वीमारी लां दलाज हुर्द जब कुंवरों व प्रधानों को वसीयत नही हत कर के  
 जुद्ध में मरने की नीयत से मुलतान से कालु को मसलौ जबुला कर जरीदा मुकाबले को गया ७००

स्नपूतदेही का संकल्प करके साथ ये दुनीयापुरसे ही को सपरजुद्ध में स्वर्ग दाही हुरा ॥ ४ ॥ गद  
मेथेला मुमरावाहण किराहर भदनेर हुरा ॥

श्री गणेशाय नमः

## दफ्तेर अथ कीर्तिलिहमीरो सम्बार् लिख्यते

रोहा श्रीलंबोदर हुय सुप्रसन्न हीजे उक्त दयाल । कीर्तलिहमीरो कहा वरणासंबार् वि  
साला ॥ १ ॥ सकादिवस हुय सकही कीर्तलिहकुवर । अंगबडाई आपरी आपो आप उचार ॥ २ ॥

॥ कीरतना लिहमी कह्यो जबर बचन कस्योर । मुझसरीखी जगत में आही वसतन और ॥ ३ ॥

उचरी कीरतलहसां बधता बोल सबेल । बड-पड-महरो वखता ताहरो कामों तोल ॥ ४ ॥

लहकह्यो इरा लोक में हुई ज बडी हमार । बडोन कोरत हुचडी आदि अनादि उचार ॥ ५ ॥

लहकह्यो कीरतमलड जो तुन्या वसा जाय । आछा जहारा अंग सुसपारि से सोय ॥ ६ ॥

महारां अंगां मुं मुदै सो भरह्यो संसार । जिके गिराणं जु जुवा मुंगा कीरत सुविचारा ॥ ७ ॥

छप्पः सपतधात सोबन आद इरा लोक अपपर । चुनी करणी चुणीर हीर मारा वजवाह  
लाल रत्न लसरीया महामुगता हल माला । पोरोजापर चंड पना पुषराज शवाला ॥ ८ ॥

कत फरक वेदुय मिरा सीमंत ककोत भस्त्रव । महारा अंग माया कहै जिका हुत सो भै जगत ॥

॥ ९ ॥ रोहा उजल सहल भड हस्त अस दलबल अमल हिसंत । जलहल मूप्रसो भै जिका

वयमो सकल वसंत ॥ १० ॥ तैकही लीधाता हरा अंग लिहमी इतराय । महारां अंगां बिरामुदै

थिर सो भान्हाय ॥ ११ ॥ ज्यां मुं सो भा जगती जुग जुग नाम न जाय । बैमाहरा अंग आपने

अया कहु समझाय ॥ १२ ॥ छप्पा अनवाउक्त अनूप जुगत कवितार सजारागा अमल

अथ उजला पिंगल रुदां प्रमांरागा काय बगीत कवितर दूहा गाहानी सारणी कहेवातां

कइक कडा कवि मुखां बरांणी लोकी कवाह भसद्धलरव कहै सम कीरत कंवर आहरा-

अंग मृत लोक में अंगनरां राखे अम्मर ॥ १३ ॥ वोकिरा बिधई अम्मर - करणा कासज स्मरण



किं मायाहीरासनम सकलजीवितमृत्कस्मै वमनैर्नगरविशेषं ग्रहमुनागात्यां  
 आवैकारकारं शास ज्ञापनिरासजिकारां सज्जनही गिरां न्याने सज्जन दुरज्जगान्ही  
 मानं दस्त मसारनाहं निरासुंसदा मायाहीजमोटीदस्त ॥ १३ ॥ मोरासंतमृत मोरी  
 न्याकारणी कथावानं हजकेईक केईक पिंडतं व्याकाराणो जंत्री मं नी जतीका वगाय  
 वो केईकां रुक्मबंधस्तपूत औरहुनरी अनेकां दोलतवंतरे द्वार गुमरजिनरपै गौला ईत  
 रांरी आवैजई पांत दिन उगां प्लेला रावअरुंरं भलीकरा पलंकरत दीहां यस्त सार  
 रमायनिरासुंसदा मायाहीजमोरीदस्त ॥ १४ ॥ दोहा मायातूंगोवांही निषदबुरी  
 नवनिधं कीरत कहै सुगाकानदे बरानजेरीचिध १५ छप्प कीरतहीराणांकनें जि-  
 कामायासुंजारां साकारदूधसवाद स्वांतदीकारीसमांछौ अजलजरआचारजन्मचंडा-  
 जोकरमे स्वांतबूंदअतिसरस पडीचिखधरागुपमें अंतसदा भलोपा अरतजमें -  
 आवैकिराकारजअनें जाराजैराममायाजिका कीरतहीरापुरवांकते ॥ १६ ॥  
 मोरोहीज ईकमनषधरासुगपीव्रतपाए आहुकुलअस्तं विभक्त्युहीकुविभयारी ॥  
 गगांजको कलसमांयमदगोरुवको मुख फूटरामजारसुककुष्टरोकवको पबाक  
 असुधभोजनीभलो दुंचितहुवैमतदेखने अंगलोभलिलिखमीदसी कीरतहीरा  
 पुरवांकने ॥ १७ ॥ मोविणानोसुंमिता नेहपचैकेईकुन तोया कीरतवराग कहै  
 जैमोराकंजर न्हलैज्यायेनां मातदरसगान्हेपै सोकदेहसहसा लोकारासस  
 लियै जीवताकहै द्रगद्रगजगत मुवांमिषेपद्वीमझां कालंरुसर्पहुंदरकेई बागसहु  
 यलटेकडं ॥ १८ ॥ दोहा लिखमीकडाकुलाभदोय तोसुंहेतहुवांहाअपजमभेलां-  
 जोवतां मेलेनरकमुवांहा ॥ १९ ॥ कीरतसुगणीयाकतरा धीदवन्नमसुधेष मायातोप  
 गुमरमें बोलीबोलविषेष ॥ २० ॥ मायाहीरामानवी देसीकासुंदतानागोचोदतिचो  
 वसी कासुं कहकीरत ॥ २१ ॥ मायासुंचायामिलै आदरआचअपार मायाहीरणोम  
 नयने करै नहीं करतार ॥ २२ ॥ ऊंचाकुलगेपुरष अरुअलंभां प्रडीयोहीय वपनूदे

मायाबिना कुसलनपुछेकोय ॥२३॥ तुलुकुलमायावतरे कांरोचुभसीकोय । नरसाग  
 मिसनगरा मुखपुछसीरुहकोय ॥२४॥ विधविधहुं मोरीबले मोराआहरमं मोराक  
 राकायदा पषमोयपरचंड ॥२५॥ पावांबडाईपांमजे पषाबधैरुं पत मायाकहै  
 पषमाहरा कांतांमुगाकीरत ॥२६॥ **कृप्यः** पीहरपरमंद जिकीसारेजगजांरौ ।  
 जलजलोकाजीवन पितामोसकलपिछारौ अमलकांतऊजलो भांगरुचंद जिसडाभा  
 ई दूराप्रथवीऊपरा अवेदमृतसदाई मुखसातदेगाहु आपसुज सरबविधसारांसिरे  
 मुक्तसंगममायाकहै कीरततुंस्मबडकरै ॥२७॥ **दोहा** कीरतकहेकहसोकिमुं पष  
 मोरासांप्रत । लिखमीतेलीधीभली परवांतराीपरकत ॥२८॥ जलरीबेरीजिकरासुं-  
 अंगधारंगतगह ऊंचमनानरकोडअत नीचमनामुनेह ॥२९॥ बंधवतोबहुहूपियो-  
 रूपनिरुकरहाय तुपराचूगरीवहनतम जगमीधधरवधजाय ॥३०॥ उजलगुगाज्यारां-  
 अतंत परगदकहेपुगागा भायासांभलेमाहा परवांगरमेरप्रमांरा ॥३१॥ **कृप्यः** ताने  
 मोरोनात मातसुक्तकमाई कीरतराजकुवार जिवाहुतहुंजाई साचसीलतपसतआत  
 मोपांचमोदांनभगा दयाबहनदूतरी सर्वपुन्यरीसिमरा मुगाभेटपषमाहरांसदां बेरब  
 डाईविसतरें तुलछजिकुंरामोक्तसुं किसीरतस्मबडकरै ॥३२॥ **दोहा** माहरांभायां  
 सुंकीयो जाइहेतजरांह केजगमेरहीयाअमर मुगालिखमीअवरांह ॥३३॥ **कृप्यः**  
 साचहुतयुधिष्ठिर नामनवरकंडरहायो गेहरसीलगंगेव कथनधनरकहायो भागीर-  
 थतपकरे ईलामंडगंगाआराी राषेसतहरचंद धरासुंकीरजधाराी बलत्रिलोकदीया  
 दान हरीतिरातलहथमंडे दीयोनुपतमोरधज खागआधोत्तबंडे पचासक्रोड-जो  
 जनप्रथी धरैऊदकफरसीधरगा अमांमदांन दीयकराअति कृतअमरनांमाकरा ॥  
 ३४॥ **दोहा** कीरततोरीनांकरै देकीमोविगादांन बिसालकूमीकीरतबधे जासोस  
 कलजहान ॥३५॥ दयाबहनदुतीयांनमें ररवोचिरंजीरांम मनेबधावैवासुदे का  
 लुराआरोकांम ॥३६॥ जिकरादयारोजोयतुं अवेकहुंइतहास । सोपालीराजासबर

जगदीशोत्तमसवास ॥ ३७ ॥ रत्नग्रीवा सवत्यागाकर रत्नडिगम्बरीत नपवुत्तव  
 नदेओहुतो सराणोत्तपसवरीं उडेचनकंपतझायो उगोसुखसुं आपीयो म्हांजोबनमें  
 मंतो अप्रमूत शसती चारकाडी विलपंती निरदोषचुं गाकजनी कल्यो उराकीरूपसद  
 पली रापीयांमने रहसी अमर रत्नापन्नवटगवली ॥ ३९ ॥ जदनुपरो भवजारा क  
 ह्योसोचाराजोडकर जीया मुझप्रसवती धामसूतीद्वैदधर त्रयदिनहुवावितीत  
 भयलाघोन्ह भामयां उगारापथवास्ते आजमोचडीयोहयां पलवार अमहां कीधा  
 प्रभु मुपभयसवरनिनंमंडहां सबजीवआपउचारहो तन्मारजीवननकुंडहां ॥ ४० ॥  
 दोहा सरागागतीसुध्यायी जभैरथा जरआरा निजतनकादेसवरनूप संतोपे  
 सोचारा ॥ ४१ ॥ कीधोविराकपोतनां जीवदानदेजास इणविधकीरतजनली  
 प्रथमीकरीप्रकास ॥ ४२ ॥ सवरतरो उरादिनश्रीयां सीकोडी नूसंग करारा  
 सोकीरतकोरं जराहीनैर अमंग ॥ ४३ ॥ कीरतपुराणांकथकही श्रीधानही विस-  
 वास पडणापूछणानांविहु धीनीब्रह्मापास ॥ ४४ ॥ कीरवलख दोनोकह्यो अजना  
 करताआप न्हांमेंधटवपकुरामुदैं निश्चैकरोनिसाप ॥ ४५ ॥ वातसुरो ब्रह्मा कह्यो  
 इगडाहुआजाझाह न्यावकारानरलोकमध रचेपामेंतजाह ॥ ४६ ॥ इंद्रपुरीसुं  
 अतिआधिक निराजैसांरातरत राजावारोरूपहै मूलराजमूपत ॥ ४७ ॥ माया  
 कीरवमोहुकम जैसांरोसतजोय न्यावकोरीनीरदर रहजोराजी होय ॥ ४८ ॥ की  
 रतहंदोसाथकार मायाजैसलमेर ब्रह्मजीरेवचनसुं हितकारआदिहेर ॥ ४९ ॥ कीरत  
 लख दोनुंकहो रावलजादमराव सगलोजगरीजैरसो नररंदकीजैन्याव ५० जदपत  
 केह्योजदो श्रीयाकीरतसरार वेहुवेजगतवराव विहुवांकडीवडाई, विहुवे भारीवस्त  
 अष्टसारीसिधसोहै नागअसुरसुरनां सागवेहुवेमनमोहै कीरतहुतीभगतनवधाकही  
 व्यासादिकसंतावचन संप्रदाउचारी चारसतकीरतप्यारी श्रीकृष्ण ५१ कह्यो नृपव-  
 लखकीत प्रगटमतावेदपुराणां बलभहरीनेवस्त जिकोसगलांसिरजारां भयव

बलभभगवंत सतभाषतसदार् भारवैजाभगतिमें नामलक्ष्मीरोनार् कीर्तहुतीभ  
 कनवधाकही वामीजयसंतांवन संप्रदान्याऊचारी सुसत कीरतप्यारी श्रीकृष्ण५३  
 मोसुप्यारीमहिपती कीरतकहीकिरासाख कीरतपवनि कहै किसन लिखनीपतकहै  
 लारव ॥५३॥ सारखं श्रीमदभगवत श्रीहरिवचनसुजांरा करीसगलजगऊमरा -  
 वेद व्यासरीवारा ॥५४॥ किसनपौदीयाथांकनें ग्राहग्रहोगजरज लिखमीसुतोमे  
 लगया कीरतहंदेकाज ॥५५॥ राजहुवाथेरुषमरा सोक्योंवीसरीयाह कीरतै कहिये  
 किसन बालाहुचवरीयाह ॥५६॥ इराकीरतरोआपसिर श्रीमोरोआसांरा करीवीनती  
 क्रीतसुं मनमतधरो गुमान ॥५७॥ श्रीयाभगवत सारव सुंरा मनरोछाड निजाज -  
 कीर्तै पगलगकह्यो वीमोसुंसिरवतज ॥५८॥ कीरतहुताहेतकर ऊधरीयाइरा -  
 पार येहलोकपरलोकवां सुधरीयासंसार ॥५९॥ दोनुंलोकनुबोयदे लिखमीहेत  
 हुवांह अपजसभेलेजीवतां मेलेनरकमुवाह ॥६०॥ ब्रह्मकह्यो श्रीहरिवचन वेदपुरा  
 नविचार सान्चामानवसोकै कीरतरोइधकार ॥६१॥ वेकूडान्यारेहीथे लिखमी  
 एकलरावाथ लनकानिसोभातिकरारी मनषनमनरवांमाय ॥६२॥ तीनलोकनानाथे  
 बलभधरीविसेष सोकीरतसारासिरै सदाकहतमुरसेस ॥६३॥ रिझावशाखपती  
 वां तरकराखविधतांय कीरतलइसंबादकह सादुकबिसगरांम ॥६४॥ कीरतनेसा  
 चौकरी सोराजीसुं बिसेष राजीहुई लिखमीरही सान्चोन्यावसंपेख ॥६५॥ रावल  
 राजामूरज जाहवगरुजैलांरा श्रीवारां उपदेससुं मैगुणकीथो प्रमांरा ॥६६॥

इति श्रीलिखमीकीरतरो संवाद संपूर्ण



## ततस्मानम्बर १ (रावलोत सरदार)

राजपूतान सबजो दूसतवारीरवमें कृपा है उसमें महारावल जसवंतसिंह जीतक के रा-  
न्दान की जित्रा है मगर राजपूत मजकूर के रूपजाने के पीछे मुसलिफ किताबने सकदूसरा  
राजपूत हमारे पास नेजा है जिससे महारावल सबलसिंहजी पाने जसवंतसिंहजीसे  
दोसुदनक परतक का सिलसिलेखान्दानी अजलखसूस रावलोत सरदारान पादवी-  
काकिङ्ग देहात का हालंमालूम होसक्ता है हम वखौफतवालत तमाम शजेरको दुवारा नहीं  
बापसक्ते लेकिन महारावल सबलसिंहजी वजमरासिंहजी वजसवंतसिंहजी व अरैसिंह  
जी की औलादमें देहात इलाके जैसलमेर पर जो पादवी सरदार रावलोत काकिङ्ग हैं उनके  
नाममसतफसील देहात जागौर सिलसिलेवार जैज में जिरवते हैं नाज्मीन तवारीखरस  
सिलसिले को भी राजपूतान सबके साथ मिलाकर पढ़ें ॥

१ महारावल श्री सबलसिंहजी २ बांकीरास ३ चंद्रसेन ४ कजानमल ५ कीर्तीसिंह  
खेतासिंह ६ जीवराज ७ कुं० मोतीसिंह , गाम पिथल

१ श्री सबलसिंहजी २ रतनसिंह ३ किस्तसिंह ४ प्रतापसिंह ५ रामसिंह ६ अर्जुन  
सिंह ७ सरूपसिंह ८ बभूवसिंह ९ नैरतन के गोदजीवराज का कुं० माधेसिंह या सो-  
फोत दुआजव १० लालसिंह है गाम कानोध -

१ श्री अमरसिंहजी साहबके २ दीपजी ३ पदमसिंह ४ प्रथीराज ५ सवाईसिंह ई वहादुर  
सिंह ७ चैनसिंह ८ सांनसिंह ९ बरवतावरसिंह १० मोडीसिंह , गाम जवाय  
थ्या श्रीजीके दूजेकुं० . का भी इसी गांवमें है

१ श्री अमरसिंहजी के २ जैसिंह ३ संगरामसिंह ४ सांवतसिंह ५ जालबसिंह ६ विसन-  
सिंह ७ सबलसिंह ८ धीकलसिंह , गाम जोला

1. याजीजी के कुं० म्होकमसिंह जीका भी इसी गाँव में है  
 2. महारावलजी श्री जसवंतसिंह जी के 2 कुं० जगतसिंह जी 3. जोरावर सिंह 4. किस्नसिंह  
 5. रुधनाथसिंह 6. रामसिंह 7. जमरसिंह 8. चमजी 9. धनजी गाम सतोथ  
 10. श्रीजी 11. सरदारसिंह 12. भगवानसिंह के भगवानसिंहोत 13. साजमसिंह 14. वाघजी  
 15. श्रीमजी 16. जजीतसिंह 17. मोडजी गा. पारीया  
 18. श्रीजी 19. सुरतानसिंह 20. जोरावरसिंह 21. दुरजनसिंह 22. अबधूतसिंह 23. मुकनसिंह  
 24. करनसिंह 25. कुं० जुहारसिंह गाम भदडीये  
 26. श्रीअरवैसिंहजी साहब 27. पदमसिंह 28. चवतावरसिंह 29. तिलोकसिंह 30. रावत सिंह  
 31. कुं० मोतीसिंह गाम रोरा

**नोट:-** बड़ी होखुशीकी बाव है कि हिस्सा अबलतवारीख अर्थात् इतिहास या रौबन्श चालियान जैसलमेर -  
 परमेस्वरकी कृपासे यहाँ समाप्त होगया पूरा 2. हाल और कुल इतिहास और हर एक महारावल साहबके  
 जीवनचरित्रका कुल अहवाल लिखा जाता तो यह हिस्सा तीन गुना बढ जाता परन्तु हमको मालूम है कि ग्रंथ करता  
 नितोसरीनेर भारीयो के इतिहासका मूल निकालकर वास 2. चाते सिलसिलेवार इस इतिहासमे लिखी है तो भी यह -  
 हिस्सा अपनी खुबीकी आपही साक्षी देता है कि ग्रंथ करताने मूलनिकालने पर भी मतलब हाथसे नही जाने  
 दिना. अबरियासत जैसलमेर (या मुल्क माड) का जुगराफिया शुरू होता है वह भी देखने योग्य है ॥

महम्मद मुहम्मद अली होशियारसम्पादक राजपूताना गज़र अजमेर

نوٹ - الحمد للہ کہ محدث تاریخ خاندان قوم یادون والیان جیسلمیر خدا کے فضل سے بخیر و عافیت تمام ہوا جو سورج  
 کتاب ہند کے پہلے پہل تیار کیا تھا اگر تمام و مکالم شایع کیا جاتا۔ تو تین گنی فحاشی اس کتاب کی بڑھ جاتی۔ لہذا احسن تدبیر  
 و تقریری سے تین مرتبہ اسکو مختصر کیا۔ اور باوجود احتیاط کسی مطلب کو قوت نہیں ہونے دیا جس کو انکی یا قتلہ طوالت کا پورہ  
 پورہ ثبوت ملتا ہے البتہ دوسرا حصہ اس تاریخ کا شروع کیا جاتا ہے جہنم ریاست جیسلمیر (یا ملک ماڈ) کا جغرافیہ ہے۔ یہ  
 بھی قابل دید ہے۔ - بندہ محمد مراد علی ہوشیار ایڈیٹر راجپوتانہ گزٹ اجمیر۔

## जुगराफिया मुल्क माड

(रियासत जैसलमेर)

इफै ८

शास्त्र पुगणादिकमें प्रथी ५० कोट योजन तिरवी है सो या तो १४

हो भवन जो ब्रह्मंड सर्व सूर्य के नीचे को होगी और जो मृत्यु लोक में ७ द्वीप ७ हीस मुद्र के २२  
 में २५ बलोका लोक पयंत ५० होगा तो कि सी कलप में थी सो श्री मद बल्लभाचार्य जी ने  
 भी आज्ञा करी है खुदी अनुमान होता है कि अब ५ यमो में अमीका जो नवी दुनिया थी  
 डि हीव पो से ज़ाहर हुवा है तो दूसरे भी दोय खंड याने द्वीप होंगे ॥ तथा हर खंड में जमीन  
 न काम दीखे है सो जमीन का सुकडना व जल मग्न होना भी सम्भव है कि जो मुल्क व गाम इ  
 ने दूर थे जित्ने अब न हो और बहुत जगह शहर वगैरे जमीन पर जल फिर गया ऐसी कई  
 दलीलें हैं ॥ खैर क्यो ही हो यहां तो पांच खंडों में जमीन व राजधानी व धर्म व आदमी जो सन  
 १८७७ ईस्वी में मौजूद थे सो लिखे गये ॥

नगर	नामांक	मौलसुखा व धर्म				नाम राजधानी व तादाद मौलसुखा जमीन
		ईसाई	यवन	सीध	कुल	
१	चोरपमे १६ राज	३७१००००	१८००००	५	३८९००००	१ दूगलस्तान २ फ्रांस ३ रूस ४ हालैंड ५ बिल्लिम ६ नेम ७ आष्टीया ८ ईटैली ९ मोर्स लेनड १० इस्तपीन ११ पोरचुगल १२ डैनमार्क १३ सु रुडन १४ लोरमी १५ प्रानान १६ तुर्की रूस मुसलमान पास्तजमीन दो लारव मध्ये ३ सूख्हास्ते ७७ रूस में मिचने से १० हजार कम हुई बाकी सब रईमार्द
२	एथीयामे	७२५००००	२८००००	७३५००००	८०१०००००	(बौधि) १ हिन्दोस्तान १६ लारवमे २ अंगरेजी ईदूजे रईम १ स्वाधीन राजा २ चीन ५५ लारव ३ जापान दो लारव ७ हजार ४ दूसरे राज कुलारव तथा लोस हजार में लंका ब्रह्मा को चीन मन्दा

						तातार वगैरह (यवन) १ तुर्की रूस - २ ईरान - ३ बलोचस्तान - ४ अफगानस्तान १४५००००० ५००००० १५०००० २००००० - ५ पेवाकोकन बुरवारा चानवगैरे - ५००००० (ईसाई) १ रूस ५६ लाख - २ दूसरे राष्ट्र - लाख ५० हजार
३	अफ्रीका	१००००००	११०००००००	x	१२०००००००	१ अबासीनीया २ गैनी - ३ सीनगीमीया - ४ कैप का लुनी ई नदाल - अलगेरीया ईसाई बाकी सद यवन -
४	अमेरिका	१२००००००	१२००००००	x	१२०००००००	
५	अमेरिका	१५०००००००	x	x	१५०००००००	
कुल जोड़:						ईसाई यवन वीधि कुल २२२०००००० १५०००००० २२००००० ५२४००००००

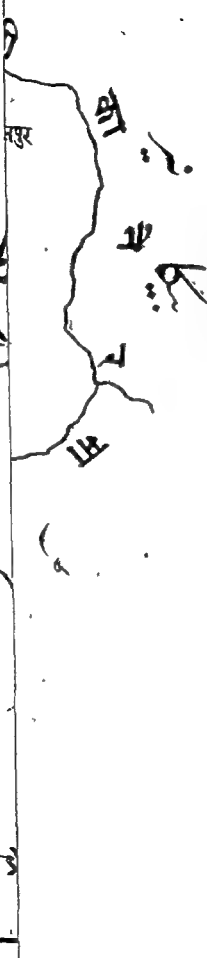
तथा कुल मनुष्य ० सन ७७ में १ अडब ३२ कोट जो ७ वर्ष में ११ कोट बढ़ने से ये फेरवधे है सो  
५। ६ वर्ष पहिले १ अडब ६२ कोट अखबारों में लिखे थे अब मर्दुम शुमारी होने से स्त्री  
मालूम होगी ॥

और इस जन्म दुहीप भर्त खंड के पश्चिम मुल्क माड रियासत जैशाल मे स्त्री बहुराणी राजपूत की म-  
भारी का राज है जिसका हाल जुग्राफिया में खुलासा लिखा जाता है ॥



# पूरव

मुत्तश्लिषिं संप्रकाशे १२७ नकशां दत्तं के जातं विद्यामतं जैसलमेर याने २२ ही परगनों का -  
 अक्षरान बनाया गया है - तथा नाम परगाने का १ जैसलमेर से २२ लाठी तक -  
 नम्बर १ है कि के अक्षर से रक्खो है क्यों कि ज्योदेहरा सिखने की गुंजा देखा -  
 नहीं ज्योए पंथोसी दलखों के नाम नकशे के बाहर जहां जादां जो है सि -  
 रवां गया



पच्छिम



## दफ़े १० देबाचा याने सम्भोता

111

रसवत्तयह मुक्तकुल २२ परगने में बड़ा हुआ है तफ़सील नक़्शे में अबल नाम परगने का जो जैसलमेर शहर से दूर कीस वदिस फेरगाम का नम्बर जो उस परगने में बसा है सींगे की अलामत अरानी की ० विंदी सूने गाम की ५ चौक डी जो गाम नहीं हो सका था होकर वीरान हो गया की है फेरगाम का नाम तथारवाल से चाजगीर या भीमीया या पटेचा सासरा सासरा है तथा संबत लिखा सोनवासवत १९०२ से पिकुला है और नही सोनूना फेरगाम को दूरी वदिस परगने याने कोट से और रानी की दूरी वदिस उस गाम से कि जिस की सीवने दानी है फेरफ़सल १ या दो जिस में भी नवी हुई सो आक नाने लिखे है ॥ फेरतादाद नीवारा कूवा पका कचा बचेरीयों पकी कच्ची बतलायां पकी जिस में पाना छाम होने से ऊपर रह और कच्ची में कम और नचे कूवों का आंक भा नाचे लिखा है फेरमर्दम शुगरी - ऊपर घरी की तादाद नीचे मनुष्यों की सं० १९३७ मुजबं ह सागामों वाली नैक मती लिखा था - पाँचे आधे सोनूना है ॥ उस वाय दूसके के फ़ियत में हाल था आशा लिखा गया है तदा गा नो ते मदर विष्णु व शिव बज्जन व देवी का है खाने में तादाद लिखी है ॥ और जब से बाहुड मेर टंडा और कटक धाडा नरहने व शमन होने से हकूमती में जमीन व बहुत ही काम है ज्यादा काम के लिये यहां से सवार व किसी वक्त गामों के खेडु भी बुलाये जाते हैं ॥ तथारवाप्त शहर के अंदर व बाहर बड़े मंदिर विष्णु शिव जैन देवी मत्त के जो है देखने लायक मकानात में लिखे हैं और छोटे ५ हैं सो कहां तक लिखे जावे बियो कि गढ़ व शहर के मोहल्ला बगली में १ से १० तक मंदिर बधान हैं और सही ग्रहों बाहर चीत फे भैख जोगती पितर प्रेत पीर व गैर के बहुत हैं ॥

दफ़े ११ गढ़ व शहर में पका कुंवा जोगे हर फूर दोटाई सो है

पानी पाराथा सं० १९१९ से कई मीठा हुआ बतफ़सील जैल

गढ़ में १ जैसल मीठा २ रागीसर ३ हरजालु निकमा है धतुला पानी मीठा पर भारी है

गड विले में १ रामदेसर २ लावमासर उर्फ खुशीवाला  
 बाहर में १ वावडी तीन चार थी अब हो है पानी मीठा मांसाक चौक में २ रामसर चो तीरा  
 मंदी में ३ खुवानसर पु० २५ मीठा सीपाया में होतीरा ४ चैनपुरी में डा० राजाजी के  
 सरी सिंह जीने सं १९२५ में बंगाया होलावा

शहर से बाहर १ महाजनसर चोलावा पच्छिम दरवाजे पास २ सती कदे सर चो लावा दर  
 वाजे से दपरा निकम्मा ३ स्वाईरी वेरी ई सान प्रील से पां १०० १४ सुजानपुरी का बेरा  
 पु १० मीठा पर पानी कम यहां वेरीयां थी सो सुकगई

इतना कुवां अबन ही रहा गड में १ गुसाई सर २ कोरुडी वाला गड विले में -  
 १ पारीया जहां जेल खाना सं० ६३ में हुग्रा १ कार्वाने में १ गुलासतला म्हेते जी बुराया  
 १ बंधारीया में म्हेते जी की पगवान ही हुई ॥

दफ्तरी १२ नकशा खास शहर जैसलमेर व कुल परगनात व देहात व  
 बेगान मरपकोटानियों जो बारी ही पुनम बसै है वगैरे हालात का-

नक्शा गाम व परगनात का	नाम गाम व खाल से या जागीर या भो सी या पट्टे या सां- सन टांसन तथा संवत नवे का	क्षेत्र को सं वर्ग मी	कुवां	वेरा वावडी	तलाई	तादाद नजीवानप की	तादाद म दुमधुमा	तादाद मंद रिवधुमा	कैफियत
						रीसं १६२७	सुजब धर मनुष्य	शिवयजैन या हिंदी या न जिसुमत का	
१	स्वास शहर जै सलमेर		१२१ २१	२०	१५१२ ५१९	३४०४ १२०५५			
२	अमार सागर रवालसे	१ पदि	वासा						गांव में पुस्कानी ब्राह्मण कला व ब्राह्मणी गृह से है के इका सेत कला तुं वगैरे उके

३	बाडी उवास से	२ क	२						वासः लोलाः वीकाः बद्धोनः धर्मः- वक्ताः सादाः भदाः मानु लुद्रवा सेमर में याहि ये ज्जारातीपाइहे पोर कोवाव मा लीयां कोय हा वसाये बहदिन को घहर में श का रात कोय हार हने ॥
४	किसनघार से	१ ई	२						मात्ता बाडी राव पो कनीया रहे है-
५	कल्यांरा घाट स १९००	५ ई	१ १			१९			फूट कर लोग वस्ते है
६	सडीया परै	३ पूर्व	१	०	०	१९			सिपाई खंधारी
७	दरवारी रायाम से	३ पूर्व	१	०	०	१९			हज्जरी गोले र हते है
८	जोगा ३६ स	५ सा	२	-	-	१९			रांगां जो मो सी सी दणो जो स हारे- ताल के कुं
९	रामसर सं १३ से	३ द	१			१९			हज्जरी गुरो स हां राम जी सां राणी नु हां मंदुडी की मै बेत दीना
१०	धडवा स	३ द	१			१९			श्री बुध सिंह जोरे घा भाई उ फ धडवा- राम चंद बसाया
११	जी राई से	२ नै	१	११	०	२४			हज्जरी नैरा सो भारा नु श्री अपे सिंह जी रवास दिया
१२	मूलराज साग रवा	२ क	बाग						गाव में प्रो जगां राणी वमाली रहते है कु इक जमीन जगां राणी यानुं बग साड
१३	राम कुं कां रिका ना	४ दा	२	कुडववा हला					महता बस पुरी है पग वाव बूरी योडी

# (क) परगने जैसलमेर

यह परगना सं. १९४१ मिंगसरवरी १ सेनया किया अभी को ई जगह कचहरी की नहों है जैसलमेर से दो हाकम मुं निशानसि व भसुड ररा खोड हास मान गावों में दौरा करके कारि बार्ड करते हैं ॥ सरकारी घोड़े व फुरकर सवार हैं सो भी इन के तअल्लुक रहे सो बहुत से काम आसानी से होंगे ॥

१	रूपसी भोमीया	५ वाप	२	०	३	३	९५ ३५१	१ वि १ दे	भोमीया रूपसी है आद्रे की जमीन में- पहमाज वस अररवे की जमीन पालसे पलीवालां को दी ॥
२	तेजू से	८ से	२	०	७	१	११ ३८	०	भो. तेजू ॥
३	आदासर खा.	८ वा.	१	०	१०	३	४५ १८१	०	जमीदार सवार घरटीयों छोड़े है भा दासर तलाव है ॥
४	मोकल भो.	९ से	१	०	८	४	२० २४५	०	भोली बांटावरी की जमीन में मोकल वसे फेर देवडे की जमीन श्री अरवे सिंह जी दी बात ७ मघे दे है १९४४ में कुंवा की या जव सातु से सीवान कली
५	लांगोला नीन वास खा.	७ से	२	०	५	५	४८ २१८	१ वि १ म	ज. पली वाच की ला पीया कुंभा तथा- वोर्मने तलाई व वीरमाणी गाम जुरा की या लांगोला पडोन रा श्री तेज सिधजी को सं २४ से पड़े है
६	सेलत भो.	१० वा. ३	१	०	५	३	२३ १००	०	भो. पुंवार उर्फ सेलत
७	वामसर से	४ उव	३	०	१४	३	८८ २९१	१ जै १ दे	भो. सीहड.
८	हरीया पडोड खा.	६ से	२			१	४१ १४८	०	पानी के दूह से हरीया वर जपूत पडोड जिसमे हरीया पडोड सं. १८२४ गाम पालसे किया कि यहां रहे सो बार सात झूं पी भरे ॥
९	बेलदार से						५० २६३	०	खाना बरोश है लाला व चेलासर पास से नी करे है

०	ढंढ स	६ ३	१						भो. टंढ जमीन सारा हस भू टंढ पूर डंढ जा रहा थागा टंढा को सुंदर से का की है वाद स हो का पादा सावरो की नो करी को हो है ॥
०	धूगा रा रा	७ उ. ई.	१						मेथ बा लुं गा व नाव सो लूगा रा गा म हि मे घ बा न गां म प्र हो डे जा रहा
५	हवा खा.	७ ७	२	१	२	३	१४		जां पली बा न म्हे ता गुणो श द स उ दे पु र वा सो दो दो ड ग वा पी ह र वा स हो ह्वा सं. १८०४
१०	घडी पा सै.	७ सं.	२		०		१२		रो. सं. १९०४
०	रां रा सं.	७ ७					११	०	पली बा न था सं. ४२ से व ल पो वा भो दे को र वा हैं सा ज मी चां से प्रा वा द नि वी न सी ॥
०	देई पा व डी जोली परे	६ ७							० र व डी न ' देई पा प लो सी सा चो रा था सी सं. १८१८ में जु द ने जा रहा
११	कां रा पो थ जागीर	१० उ. ई.	२	०	१२	१	४२		भो. दे व वा पा रा ज आं रा न सिं ह जी के र द ने से व सी या नि बा गी र हु आ न म क का स र बा ल से है
१२	का रा पो थ नी र भा वां सं. १९१३ भो.	११ स.	२	०	३	१	३३	०	दे व डी कुं. र व जी वी री स त न जी की प म बां थ न्या रो वा स कि या
१३	जे सु रां रा हो वा खा.	६ ई.	१	२	०	६	२०		ज नीं प ली बा न था कु वा १२ म पे ९ र्ण यो डो है सां न रे न से ठा करी के प रे था प ली बा ल व सु मा रो ने व सा था ॥
१	भोजा सर सं. २० भो.	३ अ	१			३		०	जे सु रां रा के प ले वा पो का द ला व व थो डी सी व - रं ड घा र चैन जी री को व स सी व १ कु वा चान जी रां की व र व सा -
१४	चा ह वू सं.	७ उ. ई.	२	१	०	१	२१	०	भो. ह मी र

१३	हमीर बख्खाली स	६ ई	१	१	२१	२	११६ ४८३	१ वि १ म	बख्खाली पार है भोमीया हमीर
१	गजीया से	७ ई० ज	१	०	२		हमीर	०	भारी गजीया कटने से वीरान खाल से थारड थ गथान जी को दीया दानी सं ३२ में हुई ॥
१६	रिहु प	६ ई० पू	१	१	०	१	१२ ४१	०	पलीवालां का गाम था सेठ सवाई राम जी को प दे संबत में हुआ मुसलमान रहे है ॥
१७	थईयात से	५ पू	१	१		२	२० २६	०	चौहान है थईयाने बीसारवाने की नोकरी से थईयात कहा ॥
१८	मोकलात सांसन	५ से	२		०	१	११ ३६	०	ब्राह्मन पुस्करों आचारजी को श्री सबल सिंह जी दीया ॥
१९	वासरापी लोहारी की प	६ इ० पू	२	४	७	८	२७ ११६		दोनों गाम पलीवालों का लाटी ठा: राजा श्री ईसर सिंह जी को पेट ॥
२०	फे फरसे की से		२	१	१	१	१		से
१	भैसडेच खा	६ ई	१	०	१	११	०	०	भो० भैसडेच सं २० में करने से खाल से हुआ सं ४१ से थलीवाल रहे है ॥
२१	भापुरी गाम भो	७ पू	१	०	५	१	२७ ११३	०	चांधन के जसोहों की जमीन में मुसलमान नाथकों की बस्ती ॥
२२	भोजक सांस्न	१० से	१	१	०	३	४० १४८	१ दे	से ठान की सबज का सीरी का रुधुवा ली लाग पुन सांस्न तो श्री दरबार से उदगरीया जहां तपर नहीं होवे और आसांमी जबरन नहीं पकाडी का के और सांस्न गाम जो जागीरदार का दिया या रेल पोल चारा बिस्ते है वहां तलब का जाना व आसांमी को खाना हो सकता है ॥



२३	जांवध पू०	१० अ	१	१	०	१०	७०	१ वि	पञ्चवालों का गाम भट्टीर्ये के रावले तो को पटे -
२४	जांवध जा०	१० पू०	१	१	०	११	१३२	१ वि	भी साहुकार महेष्ठी सहर में आ रहा तो दुतीरो सार में
२५	वडो गाम रेप जा०	१० पू०	१	२	०	३१	१३२	१ वि	रंगीया भारीया फेर वेहारी दा से तो का वर वशा -
२६	आसायच नो०	७ से०	१	१	०	२१२	३२	०	आसायच सी सो दिया महाराचल श्री भीम सी धोयत सो धाय सरवपावूजी की थान बनाया
२७	जैरात् से०	५ से०	१	०	०	११२	३१	०	भायी जैत सिंहीत
२८	डामलो से०	४ पू०	१	२	४	३१२	१६	१ वि	भाटी धानर तथा झाला उर्फ रवो ह
२९	आवाल से०	६ से०	१	०	०	२१३	४२	०	चौहीवान
३०	जोधा से०	६ से०	१	१	०	१११	२५	१ म	से०
३१	सांगो रानी खा०	२ पू०	१	१	०	११	०	०	भी अडगातूडा आकल में वस्या तं मिखास्ते दुआ फेर सेत चान काहे
३२	घनवी से०	५ अ	२	२	५	६११	३४	२ वि	पलीवाल आगे रा० भगवान सिंहीतो के पटेया
३३	कीता खा०	७ से०	१	१	३४	११३	३७	१ म	भी कीतो में कई पलदा दुआ रा० भगवान सिंहीत रां रागवत गैनजी ११ सं० मे सोटे ऊमली को सं० ५१ में खास्ते दुआ -

०	सेखा	से०						०	०	कीतीकाभार्दू इ० मारवाड-थलमें जा रहे-
३३	बूः सां०	५ हः	२		१३	३१	३५	१११	०	वि० म० गामपलीवालोंका सं० ३३ में भाटी वेरी सात तपुवालोंको बरवसाथा छोड़ गया सो कीवि राजजीको दिया सं० ४४ में आगे वारुठाका रो के पड़े था -
३३	पौथोडाई सां०	६ से०	१	१	१३	२१	३१	११७	१	वि० पलीवाल
३४	जगव भो०	८ सां०	१	१	१	१	४२	१७२	१	म० गोगली
०	से० से०	से०		१	१	१	०	०	०	मुदलसेवीरानवपीलमें गोगलीयों के कड़े हैं भौमीया भड़गंथा सुधार सीरवी -
३५	सोभ से०	१२ से०	१	४	०	२	२०	१३२	०	गोगली
३६	आसलोई से०	१० से०	१		१३	१३	२१	८२	०	से०
३७	दंसाउफेकोरवा भो०	११ से०	१	०	५१७	१	१०	४३	०	से० कोरवावेरीयोंका पार है सं० ४४ में दूजा पार हुआ पु० १२ पानी सीठा व बहुत भी पैरीजी खाल है ॥
३८	जानरे सां०	१२ हः मे	१	०	१५	२	२७	१०८	१	मा लगा मालगाका भोपा तुवर उर्फ जागा मौस्म मिचीवे आंवे कीरववाली कीरे ॥
३९	सोडे भो०	९ हः	१	०	६	१२	२७	१०८	०	गोगली
४०	कीरडी से०	८ हः मे	२	२		१२	५५	३६९	१	वि० म० सांवतसी

०	महा से.	१	१	०	०	१३	०	०	गोगलीकोण्डोमें रहे है
५१	पिथल जा.	०	१	१	०	११	२६	०	रावलोत सवन सिंहोत
५२	सेराग मो.	१	१	०	१	२	२७	०	मूलपसा
५३	स्तानांवरण से.	७	१	०	१	११	११	०	सतासं. ई में सेरदिम्मवरणमजोगिरवीरखा थासं. १७ में कुडगया -
५४	गोरगे दीवास रवा.	से.	१	०	१	२६	२०	०	पलीवालन हीरहा १ में रंज पूल कोरे वरु है.
०	पीपरला से.	से.	१	१	०	१	०	०	पलीवालनथासं. २३ में गुरडे सदारामकोर वास लिरवा दिया था पर खोड गया -
५५	भोपा सां.	से.	१	१	०	१	३५	१ वेम उराय	थीनेमडराय ता भोपा गोगली
०	नेहडिया सं. १९१५ रवा.	से.	१	१	०	२१	०	०	पलीवालनथा २६ घर पीयाडाई में जा रहा -
०	लाड भो.	से.	०	०	०	११	०	०	गोगली भोपा में रहे है
०	वाधरा से.	से.	०	०	०	११	०	०	सेजन
५६	भीवा से.	४	१	०	०	१२	०	०	भीं

०	डोहरी पोलजीरी सं० १९ उदगा	मे०	०	०	०	०	०	व्यास पोलजी को डोहरी पुन्या र्थ दीवी पा- बुराचान ॥
४८	जांयरा मे०	मे०	१	०	१	१	०	व्यासों को सांसरा क्षिपाई रहे है
४९	हांसु मे०	मे०	१	०	१०	१	०	भो० हांसुतूर सं० १६ में व्यास धनुजी- को सांसरा दिया
०	कारीयाप भो	मे०	०	०	११	०	०	भो० राइलराडोड व्यासों को दिया
०	वालेहार	मे०	०	०	११	०	०	भो० वालेहार हांसुवे रहे है
५१	कुलधर रवा०	पः नेः	५	२	३	३१२	३७ ११७	१ वि० पलीवाल ऊधरा वसाया वतला व ऊधरा सर बुहाया पहिले दूसरी जगा गाम था सो वीरान हुआ
०	महाजल भाठरा सं० १९१६ भो०	मे०	१	०	०	१	०	भो० महाजल कट्या महाजलार टीलाडा भर दिया ठारा वाकी है मूथार सीरवी भूत के डर से गांव कुलधरा में आ रहे है सो पीछे जावसेगे
०	मुगांपिया रवा०	पः	४	२	०	१	०	पलीवाल था
५२	काहला सां०	पः ने	५	१	०	१४	२ १५४	० पुवार वारे में गुर आचार लोकी दिया था उन्हों ने गजे को संकल्प दिया ॥
०	ठावरी	मे०	१	०	०	१	०	ठावरी गाम क हाले वगैरे में जा रहा
०	खडेन भो०	मे०	१	०	०	१	०	खडेन गाम मलखा वगैरे में है टीलाडा- वगैरे भरे है ॥
५३	खत्रेल रवा०	प	७	१	०	३	११३ ५०७	० भो० राडोड-सूनाहुआ थडेवाल रहे है मुमल की मेडी का निशान है जहां अमकोट से म्हा हरा नित्य आता था ॥

१९	बुद्धवा प०	५ रै०	२				१०	१	जै २०५	भादोजैतसिंहोतोंकी तमीनपुरोहित बुधसासनीसी क्युंहुकसीवजोसा साचोह कहै बक्री ससुमानपरे केपरे है ॥
२०	बाली खा०	४ रै०	२	०	०	१	०	०		बालीकरगया
२१	विस्तोईस्तरिं गिरा रै०	७ रै०	२	०	०	११	०	०		विस्तोई गामकानासरज्जारदे सं० १२५३में
२२	सिंहको गाम	७ उ					०	०	०	पयोनीकोसंदका सरोराया सन्दी नि खावर वह सिंहकोपेउंकचोरकोद्वनवगैरकरनेमेकरीकांभीतोकरगया

## (रव) परगने देवी कोट

१	कोटदेवीकोट	१२	१	५१	५१०	१२२	२	वि- १२३ १२३	न ० पलीवाल । गांवसेपश्चिम थापके । सभू शिपर आसरागियाने आसापुरादेवीकोट । रैहैज
<p>हो आसरागकोट था पीछे गांवके बीच गडोवनार्द सीही निशान रहै है फेर गांवसे उत्तर कुवापर कोट ४ वृज्व १ दरवाजा बसालां पत्थर काव सफीला मिट्टी कीवनाया सं० १९१४ में कई ठिकाना पत्थर रोकेहुए तलाव फूलासरपर १ साल १ महीन पूरव पत्थर मघारव चौतरात तथा उत्तर की तरफ पक्कम थरो का घाटव चौकी ऊपर बंगला हीवान साजमचन्द जीका सं० २० में नथमलजीनेवनाया । । गांवसेपश्चिम वेरीयाका पारहै मालीयोसे बडीयां कराई थीं ॥ हाकम प्रो० उदै भारा प्र० में थाने वसायर कीचोकीयां कभी कठ २ रहै है ॥</p>									

१	मारीजैतसिं होनरी सं० २३	१॥ द० नै	१	-	-	-	-	०	हेमराज हठेसिंहोत बिकुपुरमेंक । म आ या जिससे कई खेव भोस सं० १५ रीया
---	-------------------------------	----------------	---	---	---	---	---	---	--

२	पुनासर प०	३ अ०	१	११	१२	११	१०	०	भो. जसोडों तो चासा को उजपुरोहितो को दिया- इनसे म्हेता अजीत सिंहजी ने सं० २८ में मील लिया
३	लक्ष्मरा जा०	४ अ०	१	०	०	१११	२१	०	भो. जसोड- वृत्ता ने राजा श्री अनाड- सिंहजी- सहा को जागीर सं० में दी था
४	छोडीया भो	५ अ०	१	११	०	२१३	३०	०	भो. जसोड सं० १९३९ में बीजीपांती म्हेरा जोतों को दी ॥
५	काराडा स	५ पू	१	११	०	११	२४	०	भो. जसोड वास ३ करगा बांजा वीका
६	लाला से०	७ पू	१	११	०	२११	२३	०	से० ठांगा टीलाडो काराडे- समूल है
	मोगा जोत सं० १६०६ से०	६ से०	१	११	०	११	३२	०	जसोड- यलसे आचरासलो अचलो की जमीन में बसे-
	डांगरी जा०	८ अ०	१	११	०	११३	२२७	१ वि० १ मः	डांगरी कुंभारा की वस्ती डांगरी में पलीवाल पनुध फी धांमर वसे पीके वडेगामसे भारी बेहारी दासो तहरीश- मजी म्हेरा जाकर मरे वेरा नहारों सहसमल यहाँ रहे धोडा नज़र करवसी लिरवाया मास्वा डलूने से जोधपुर की फौज आई पेडा लाषने घर से पचई कर गढी वगां वचालिया-
१	महेरी स्वा०	१० पू अ०	१	१२	०	११	१४३	१ वि०	चारा म्हेरी तुलार्द पैः गां भो. पीधा जसोड- करने से रवाल्से हे जमीन की पैदापोल में भैसडे- वल्लेले तेहें चारा वडांगरी के रज पूत वगीर रहते है कुवा नही सं० ४४ में श्री हस्वार से नया मुरु कराया सो हीने वारक मवधेगी-
१०	ओलो जा०	१९ अ० पू	१	३१	०	११२	१२४	१ वि०	रावलोट अमरसिंहोत कुवा नरी के नजदी क कई है तथा हो सके है पुर्से ७८ बहुत जरा अतमा लीकी है पर किरसा हो तो हजारों की पैदा होय-

११	वांरागाडो भो.	१५ से.	१ १	०	२१५ २५०	०	भो. जसोड-अगवा गाम मूनाहुआ नवावसा - तला कः वृषीयोडा सकलांगालो पु १२ मीठा किरा जगदत की गुनाहुई सं. ५४ में कुवा मालीया ने कीया ॥
१२	रजगढ जा.	१२ पू.	१ १	०	१८ २५५	०	भो. जसोड कच्छा जमीन भाटी वेहारी दासोत रा- जसिंह को वदारे गाम वसा पानी पारा - सावू रूपा व दसूरा टानीये रहते हैं ॥
१३	भैसड़ो भो.	१० से.	१ २	०	३८ ६६८	१ मं.	वीसलपुर से जसोड पाँडे आये भो. भैसड़ो की म- रकर का दिवा दुप धन के लास चत ग करने से मही के खांमी मले आ पसे गे वृंगुल वाढ नहो का येही मुकगल
१४	वैतीरागो सं. १५५ से.	१३ ६०५	१ १	०	११२ १२२	०	जसोड-काजें के है समै जैसा सीरवी हो गाम वसा- यो कुवा वैतीरागा पुर्त १६ पानी मीठा ॥
१५	आवा के.		१	०		०	जसोड-आवा भैसड़ो मे रहै है ॥
१६	जोगायत भो.		१	०		०	जसोड जोगायत भैसड़ो मे रहै है जमीन से भाटी सा- गंम सिहोनों को सीरवी कीया सं. ४० में पार कम मरी नहै है
१७	लखामरवाफी मो ड कीरोलतो सं. ५५ जा.	६ १०६	१ १	०		०	रासलवां की जमीन वेहारी दासोत लखवी के वेरे मोड मोल ले श्री दावा से वसी सिखायत सावया कर गाम वसा या-
१८	मदासर भो.	८ ६०	१ १	०	११२ १५५	१ मं.	कंभागे व गामंथा पो करारा के वु. रव से जसोड को म- के लिये ले गये सो क जिये मे सरा जसोडों का गाम हुआ ॥
१९	नैडानं से.	१० ६०३	१ २	०	४३ २३१	१ मं.	भो. जसोड-
२०	हुवाडो से.	८ ७६६	१ १	०	११२ १७६	१ मं.	से. जसोड-उत्ता
२१	मूलांगो से.	५ ७	१ २	०	१११ ३१२	०	से.

१०	रासल से०	४	१	०	११	५८	०	तला १२ मरोहराबारेहा गाम के ये जिसमें ४
		५०				२५१		ज. रास्ता भोपा सांवता सुलाने का
२१	अचल से०	५	१	१	०	१३	११	०
		५०					५५	
२२	भोपा सां०	३	१				१०	०
		३०					४०	
								ज सोड मेलने गांरीज पडेहार हाजे को जमीन दे
								सांवत समूल - ॥
२३	सांवत भो०	१	१	०	१	४१	०	०
						१३१		०
								०
२४	मांडगा से०	४	१	०	०	१		०
		५०						०
								मांडगा सं० १६०० में न्यारा गाम मा अया था फेर
								सांवता में जा रहे नलो बूरी यो डो है ॥
२५	ऊडो खा०	४	१	१		१	४२	०
		४०					१६९	०
								वि० जं पलीवाल एक तरफ सीव भाटी
								की है ॥
२६	जिसू पू०	३॥	१	१	०	१३		०
		३०						०
								पलीवाली को गाम तेज मालो तो के पटेया वीरान
								मे से प्रताप चंद जी हिम्मत राम जी को पेट दिया
								जब वस्था ॥
२७	वाखराणी सां०	५	१	१	१२	११	५५	१
		५०					२४२	१
								सिरवे की भायप
२८	सोमलभार्द से०	७	१				७२	१
		७०					३१६	१
								वि० से०
२९	काठोडो खा०	१	१	१	५	१	३९	१
		१०					१६९	१
								म. र गोयल वीरान हुआ ॥
३०	सीतोडगई मे०	७	२	२	१	३३	३१	०
		७०					१३६	०
								वि० जं पलीवाल श्री रांगावत जी साहिब के पटेया



१	जाराकी तीन दानों से	१					०	सीनोड्डाई की सीवमें दानियों हुई
३०	सिरवो सं०	३॥ से०	१	१	२०	१	३२ १२०	सांतगाहै इसमें सात गाम न्यारा बस्या रततुं पाट बारह
०	चीचा से	से					०	सिरवै की भायप
१	देसलार्द से	से					०	० से
३१	रावनामोटा सं० १५१३ वा०	३ नै	१	१	०	३	३१ १००	वि० ज० पत्नीवालया और पदे भारी जित सिद्धो को केया वीरान होने से रवाल से राई का को बसाया ॥
०	बीला से	१ फ		१	०	१२	०	पत्नीवाला का गाव जैता सिद्धो को के पदेया वीरान होने से रवाल से हुआ ॥
३२	खोख जा०	२ से	१	१	१०	३०	४६ २१०	भो० देवदाया भारी गिर घर दा सोनो को वसी हुआ ॥

## (बू) परगना कोट फतह गढ़

गाव बीझोराई में कोट वननां सिरायां के कटक से फतह पाने से फतह गढ़ कहा ५ बुर्ज व सफी  
ले कच्ची ईंटा का बंदरवाजा ऊपर महल है कोट के अंश कुवा १ पठ साल पत्नीवालां का है ॥  
हा० कोठारी जूझारमल प्र० में थारो व सायर की चौकी मौजै घोला मलाई कोठा  
वेसक में है ॥

१	बीझोराई खा०	१५ अ	१	७	८१	८५	१९६ ७४२	२ कि २ मू०	जौयकंदर उफी बीझाया सोनो कुवा बूका गारवाल में जारह सं० १४२२ में जसरातो के ज्ञा० देस राम सी मोयभा पत्नी को सीरवी करहुवा से कीया जबसे ज० फत्तवाल के भारी वीरान दा सोनो के पदेया सं० १५२२ में खाख से कोया ॥
---	----------------	---------	---	---	----	----	------------	---------------	--

२	कोडीयासर से	१॥ मु	१	२	२	२१४	५८	१ वि. १ म.	भारी नारान दासो तो के पटेया वो गाम सातल बड़ा लोडे गर सं० १३१३ में जं० पलीवाल है पहिले कुंभार थे कोडीया खाफरीया नामी चोर के तलाव पर गाव कोडीयासर और सोच के मगरे में कोडीये का गुफा बरवा फरा सर तलाव है ॥
३	साढा सा.	२॥ से	१	२	३	३२	४८	१ वि. १ म.	जं० पलीवाल बारह कासी रास को सं० में भी मूल सज जी दीया ॥
४	साधु सां०	१॥ आ	१	१	२१	११४	४४	१ वि. १ म.	से० वीभी राई से न्यारा गाव सं० सं० १६४-में- सांघ मगरे पास ब्रा० सांघु बसावा ॥
५	भीयासर से०	२ दे	१	१	०	११८	५१	१ वि. १ म.	से० जमींदार पलीवाल ३३१
६	रीवडी से०	३ ने	१	२३	११६	४१४	८७	१ वि. १ म.	से० कांगो धावली तो के पटेया सं० १३ में खाल से हु- आ पलीवाल गाम भूह का मौकल दे दावो बसाया पीके पास रापे का छिरक सीरवी हुआ ॥
७	मडाई से०	५ द	१	२३	२४	६३१	१३६	२ वि. २ म.	से० माटी पचो नोता के पटेया सं० १५९-में खाल से कि- साली तिरौजी नमं माल पार माना जाटया सं० १३३२ गा० का गेडा के बागीचे को साली ते सादूल वसाए जब से पलीवाल है ॥
८	रावडी से०	६॥ से०	१	२	२	११३	०	० वि.	से० चेल कडा करों के पटेया तलोरा वडी तलाई रावडी पागा है ॥
९	बोघे राई सां०	५ से०	१	१	५	११४	५३	०	चासा भीसरा
१०	नीवा भो०	७ रुने	१	०	७	१५	३६	०	भो० जसोड उफ साजीता - साजीता वेरीयो के पार रहने से कही जे और सातो गावो के नाम बसाने वालो के नाम से है
११	हरभा से०	५॥ ने	१	१९	७	१११	३६	०	से०

१०	नोगा से:	१	१	०	११२	२६	०	से:	
१३	नांदा से:	४॥	१	०	१२	३	०	से:	
१४	केठानोपर खा.	९	१	२३	०	१४	३७	०	वि
		से:					१५०		
०	कोठागोपद से								जं. पत्नी बालचा ॥
०	कोठा नवी से								से:
०	नालगे गाम से								से:
०	आवा से:								भो. साजीता कर गया कर खेतपोरमे हर भाद बाया बाकी कोठां समूल है ॥
०	मालरामड से								भो. पुवार थका जव खास से हुआ पञ्जमीनपी लमे देवडने दवाई है ॥
१५	पाचा भो.	१५	१	०	३	१२	३	०	भो. साजीता थका जव खास से कर शानस के भाड़ी यो कोवसी दिया था वह नही रहा फेर साजीतो के सीर वीही गोल जेकर मास्ती कोस ०१९३५ मे किया
१६	कपूरीवा से:	६	१	१	२०	२३	१५	२२	भो. साजीता
		ने	१				३०६		

१०	चेलक जा०	१५ प० नै	१	१	१६	११३	१५५ ३०६	१ म०	भारी दुजावत
११	नगराज से०	११ से०	१	१	१४	१३	३६ १४७	०	भो० भराकमलकव्या सं० ७४ में खेती को रद्दवा मशौ सं० ५५ में जं साहेब खान मिदुवां को जागीर दीया
११	जोधा भो०	१२ प	१	१२	१३	१८	१५ ८४		भो० भराकमल
१०	साला तथा भो०	१२ से०	१	१			४८ २०५	०	से० सालां का भराकमल दसरे के भैसे पर लेकर ता है जिसमें गंरादी लाडन आरु और भरां का ठंरादी लाडन दूजा गांवां मुजब भरते हैं ॥
११	झाला से०	११ प	१	११	१३	१७	२८ १३२	०	से०
१२	वासडी सां०	१२ प० नै	१	१	०	०	४	०	भो० भराकमलकव्या सूना गाम की गज सिंह जी साहिवा सरर जो गराज को दीया ॥
१३	वभारा भो०	१४	१	१२	०	०	१५२ ४०२	०	भराकमल १२ ही गाम का तला है बस्ती मुसलमान म- होर साहा वगैरे है तथा भराकमल के गामों का नाम वसा बेवाले के नाम से है कुवा १२ स्थे कर जगि है पु० ४० मी०
१४	मूलीया सां०	१५ प	१	११	१०२	१११	३६ १४७	०	भो० भराकमलकव्या की मूलरज जो साहिवां ने दे के कर भारां द को सं० में तथा पार फली सड में वेरीयां- १२ ही गावा की हैं ॥
१५	गोराज भो०	से०	१	१	१२	१३	३३ १२६	०	भो० भराकमल ॥
१६	हापरा से०	से०	१	११	१३	१७	१३ ६७	०	से० खेत चिडी बात में कुवा पुर्स १८ मी० सं० ४४ में हुआ
१७	झाडवाव से०	१२ से०	१	१२	१०२	११०	३८ १७६	०	से०

०	चोथ से							०	से
०	जेसीग रवा०							०	भो पाहु सं २८ सेयेतां को मुफाता टीलडि के व्याजमेलेगा कि यावठां का ३०। भरता है ॥
०	बाहु से							०	से
०	माडा भो							०	भो पाहु है परं टीलाडे नैती बांरांगो कोरे केरवे गहुतवा की है सो ऊपर नूतव हुसी
०	बंगोयारुवो से							०	से
२८	आसा से							०	भो । भराकमल
२९	पुपा से							०	भो भराकमया सीनरहा जब सीहडो जमीनसी
३०	वीझो तोपर से	१५	१	०	०			०	ऊपर के ४ ही गामो पाखे रहै है ॥
३१	मेघा से	१२	१	१	१२	११३	४३	०	भो पाहु वेरीयो का पार सं ४५ में नपा दुआ पाहुवो के गामो का नाम वसाने वस्त्र के नाम से है ॥
३२	रामा सां	११	१	१	७	१३	५२	१ सं	वारर सिरवे की भायप
०	सीडा भो	१०	१	२१	७	१५		०	भो सीडा गाम रामा मे रहै है
१	रव्यालो से				१			०	से वस्ती मुसलमान रावली गापि जैरा वगैरे
३३	कोडा सां	४॥	१	१	१४	२	४८	०	वारर सिरवे की भायप

५३	सांगड- से०	२	१	३	३	२४६	१११	१ वि: ५४४	१ का: १	चारगावीतु
३५	भोसराणी : भो०	२	१	१२	०	१११	४८	०	०	भोजसोड-गाम कोडीयो से न्यारा वास किया कु वारंमसर पुर्सा ८० पानी मीठा

## (घ) परगने लखा

१	कोरलवा खा०	२८	१	१२	०	१	१४	१५५	१ वि: ६३३	१ दे: १८५४	१ म: १८५४	जमीनदार की म खोखर गाँव है याने कोरहने को सं १ दे: १८५४ मे कोखनाया था सो गिरा हुआ है अंदर से वीखरा । म: कीराय कामें दरे है सर मुकाम हाक मोहत मोली लल ॥
०	गोलीया से०	२	१	०	०	०	०	०	०	०	०	जं खोखर खरां में रहे है ॥
२	भाडली जा०	३	१	२२	०	८१५	२७६	१ वि: १२३१	१ म: १२३१	१ म: १२३१	१ म: १२३१	भो खोखर पड़ोसियो के दु:ख से डा० अर्जन सिंह की जमीन देकर गाम में न्यारी वस्तिकरी उन्होंने निमण यार पार भाटी कानरो की भाईय प्रधान जान सं २१ में व साया सो फरंद हुआ है ॥
१	त्रिभराणीयार ने	११	१	११	१	१	०	०	०	०	०	
१	अर्जणीवासी आ	३	१						०	०	०	डा० अर्जन सिंह जी की खुदाई नलाई का नाम अर्ज न आली ऊपर यानी भाडली के प्रधानों की है ॥
५	तसोपोसपो द.	४	१	११					०	०	०	पहिले वस्ती थी

३	भाउलोखेवर दिना खा	३	१						ऊपर भाउलोखेवर जमीनदार खोपर
०	कोरपात्र रो		१						३ खोपर भाउलोखेवर
४	कूंडो जा.	३	१	१	०	१	४८	०	यह दोनो गाम भी पोपरा सरखेत से दूरी ११ स व २० में गाम जो गजनी पउदे सिद्धांत को बसी दी वाकि पार वी भोगवसी तथा परे का गाम खापा खा पसे करवा नीया था ॥
५	नीवली से	४	१	१	०	१	३०	०	
६	जंझनखोली जा.	७	१	१	०	३	१३९	१	जंझोकोत गार् नझन खोली परा कल्याणदास जो कांसाउसे आरवसी माड़ी
७	गूड़डा ठांमण	८	१	१	०	१	९६	०	जंझनखोली ठांमण गूड़डा को बसाया
८	गेहूं जा.	१०	१	१	०	१	१००	०	गेहूं पेदा होने से कुवांगे हूपागांव हुआ पन्डित पौन को सपर सो सपासे वेरी पां है ॥
९	डाचरी सं० २१ से	१०	१	०	०	१	१९	०	भोपाहुया सोरो की सदन डावाकरी रो दो बसो रो सं० १६ में तपार्ड डाचरी पर बस्ती मांदी ॥
१०	सोदात सं० ११ खा.	८	१	०	१	१	२९	०	सलार् सोदात परा गलीया कुरहो को देकड़ो से गार कर के म्हेता सालमचंद जीने बसाया
११	सीजीदास कोय जा.	६	१	१	०	१	३८	०	खांप्रपथी राजोत भाटी जीगीदास ने गाम बसाया
१२	गजसिंह गाम से	७	१	१	०	१	४७	०	भाटी दुजावत गजसिंह बसायो

१३	तेजमालोत से०	६	१	११	२१३	१३६	०	मं०	गांमकांयगासेभायीपचारगौततलेकांसाऊपरआरेथे फेरउदेसिंहोतजंझनआलीऔरतेजमालोतयहांवसे-
१४	बीरमांसी रु० वा	५	१	१		३३	०		तेजमालो तोकाप्रधानराहड-वभराकमलरहेहै
१५	मोटा से०	१	२		३१२	१५७	१	वि०	जं पलीवालथे फेरवांपतेजमालोतगा०दौलतसिंह जोकोवसी श्रीमूलराजजीसाहवासीबा ॥ भारवाडफैला ६२३ १ मः टकारनेसेचौडावतवहादुरसिंहखोडापौजसायागाडीदिसे
१६	रगाचा से०	३	१	२	३१५	१३४	१	वि०	भो० पोषररगाचोकड्यो वादसं० १८४१ में तेजमानो- ६२७ १ मः तडा० सुवाई सिंह जीकोवसीदियो-
१७	कोहरी खा०	२	१	२	०	३३	०		जं खीखर तलावूरीयोडादूजाभीहै
१८	देकडा जा०	८	१	२	११३	२३३	१	वि०	भो० देकडोकोगामथोरा० कल्याणदासजीकोवसी १ मः १५१० १ वि० दियोफेरभीमजीरहापरजमीनतीनोंइंसेजैची

## (ड) परगनेमहाजलार

१	महाजलार खा०	३०	१	१	११८	११३	१३२	१	म	जमीदारमहाजलभारीहै सं० १८६२ में हीगलानगदगडी नाथकोरवाभेकेमातदेतथानरसाथा सं० १९१९ सेहाक मरहतेहै ॥ आवादीवदानेवकईकुवेऔरही गांववसीवमे करानेवसहजनाथकामउमदाकानेवीरकी हिराचतव तजवीजकोगारुहै ॥
५	तलोपिथान सं० १६									सं० १८८६ ई में सोटा सुजानसिंहसेरसिंहोनकूवोकर वस्तीजोदूचातीलीथी परनदुई तलोहीदयो
	भानैरीतलार्ड सं० १६	४	१	०						महाजलवकाख्या है मुंगरैकीरानीहै ॥



१	गडली नला	४	१	०					महाजल देसल रों की दानी जूनी है ॥
१	कौला नला सं० १०	६॥	१	०					नहोड़ी महासिंह समे जे वसाय सोढो की मारकत दु वाती लो कुवा वस्ती करी फेर सं० ४४ मसमे जे मर भीट जा दुवा दुवाती से किय ॥
१	अरी सोरो सं० १६	७	१	०		१५			आली सर नशार कंवीर व गैरे वस्ती करो
१	हरी सो पार	४५	१	०	पाहे ११				महाजल व भीख गूनीये बाडे पराई है
३	कूपना जोड रवा	३०	१	०					जं चौहान है सं० २० में सोढा सादल वसहु कारा गा दास कुवा वस्ती किया था सोन होहु आ
३	पेकी नो सं० २५	७	१	०	१५५	१४	१०		जं चौहान की जमीन में सोढे खेत सी कुवा गाँव किया फेर सोढे जै सिंह रों सं० ४२ में दुवा रों से दूजो कुवा कियो
४	करडी सं०	४	१	१०	०	१५	२५		जसता वस्ती सोढो की सजं नूरी को घर खेना जो हासल माफ ॥
५	दहो भो	७	१	१	०	१३	४७		भो राधधर है और चौहान आधीया कर गया जूना कुवा मधे सं० १६ में गाज वसमा श्री दरबार को पाधवर ना मयां च १ कुवा व वस्ती कीया सं० ४० में धाँपि सी के राख सो रक कुवा विवा ॥
६	दरार सं०	१०	१	१	०	११	२०		भो दुरा सं० ४१ में सक कुवा व मगरा मुंवां गिां सक किया ॥
७	कुचीयो सं०	५	१	११	१५	१६	२४		भो भीया सांवत सी कोरडी वाला सं० ४२ में दूजो कु कियो ॥
८	नेजरो सं०	४	१	११	३	३३	७०		भो नेजरा

सुताररी									
से:									
५ ग्रामो चौ	१०	१	१	०			२		से: नेजररै समूल है
से:							३३		
१ तलाई सोईरी		१						०	गंजू कालेरै बस्ती है ॥
१ विकांसी		१						०	मंगलाया व चांती पार है है
१० सीहड़ार	१०	१	१	११	११२	३६		०	मो० सीहड़-कर गया सूनागाम भाली प्रथी राज सख
सं३० जा०						१७०			पसिहोत को व सी दीया तब बसा
११ सतोय	३	१	२२	११५	६१११	१८०	१ गि		मो० सत्ताया राज श्री किस्त सिंह जी जोरावर सिहोत
से:	पूई	१	१११			८४४	१ म		को जोगीर दिया = ॥ जोधपुर जैसलमेर की सरहद पाव
									लट साहब साहब वहादुर ने सं० ६६ में मौजे झोला कांगरी
									धारवी के तिहड़े से बधीवा बली नौहू हेत क निकलाई-
									जरां अजावा जमीन बहुत सी हर गांव की जाने के दू सतरह
									दानियां मारवाड नीचे रहीं १ वकांसी २ भोपीरा पा
									३ गदागदरो ४ आसलीया वय ५ दाधोरो भो-
									र सतरह महाजलार की बहुत सी सीवत्तो गई कैरला कुवा
									ने भी मारवाड की सीर रखी और गाव भाडली की सीव व-
									कुवा रां नीयां मारवाड की इखनी चाही सो मंगूर न र खने
									से लेत जाल में है ॥ कूवा नो होटी आता यत्ता पायां पा
									मोरे बहुत सी जमीन दू सवर्गों में मारवाड या नो देवा
५ किलाना सिंहरो	५							०	
तली	५								
५ भोपीरा पार								०	समा याता सर जोगीता बगैरो दा बंधने का है



## (च) परगनेखाभा

पूर्वार्ध से जमींदार पल है जो मालसर पर रहते थे यह जमीन गोयल की थी उसकी बेटी ब्रा० नहडू पर शांति कर जमीन लेली खाभा नाम खड्डे न से गांव हुआ नेहडू की औलाद के हरजाल पलीवाल है - महारावल करण ने पलां को मार कर मालसर नाम ही मिटा दिया जब जमीन में पैदा नहीं होने लगी जब पलां के दो लड़कों को जो नां नाराओ अमर को रसे लाकर वसाये गांव बहुत आवाद होने से भाग नगर कहा था

१	खाभा खा०	१० फनै	२	१	१२	१५१९	३६ १२०	० वि० ० मः	डुंगरी पर सं० १८६२ में कोर बनाया था अब निशान है होकि मके रहने का सहर सुकामथा सं० ४२ से सम के समूह किया यह मोहर रहता है महेता चैन सुख
०	निभीया से०	१ अ		०	३	३	०	०	जं पलीवाल था डुंगरी निभ के निभीया कहा
२	सलखा भो०	४ वा	१	१	५	३१	५२ २१६	०	भो० जंझ सलखा हिन्दु है भारासी के बेरे सलखे वसाया
३	मुजासर से०	४ उ	१	१	१	११	११ ४५	०	भो० भारा कमल
४	हामोहर खा०	३ उ	२	१	७	१०७	३८ १३५	१ वि०	जं पलीवाल हामोहर ने खुलीये से जमीन लेकर गांव वसा य फेर खाभे दलो बेरी पर नाव बेरी यों का पाखाय जे दीया -
५	देढा से०	२ पू०	२	१	०	२१३	२४ ७९	१ वि०	से: तलाई नसीये की बडिंग नामी है नीभीये के भाई देढे गांव वसाया ॥
०	जाजीया से:	३ से:	०	०	०	१५८	०	०	से: ऐ सालावक था कि पलीवाल सानी नही था कबीनेस कहा सो यि सरहु आकि (बुज कंदेरी के ड० जो यो न धा भै ना जीयो) चुनोये पर देस मेही घर गया जाजीया खाभा स से आकर वसाया
६	घुलीया से:	२॥ र	२	३	०	२११	२८ ८८	० वि०	जं पलीवाल चुन्ये के पोता वसाया सिपुल से जमी नलीची

७	मुहार सापली से:	२१	२	३	०	२११	२८	०	ज सिपुलवास्तमलियों की काडी में प्याज वगैरों के हास्तनरजमें २ पुर्तजमीन समचोसका ५१
८	जाडेली प	२	१	०	१०	११२	३१	०	ज जोइयाउफ़ी जांमहा श्रीडीपिरेवीनां का वाहोरो को की मतुच हर साल ५१ दे
९	कुंभार कोठा सा	४	२	०	४१४	११५	४०	०	जं सिपुल बस्ती कुंभारों की
१०	सिपुल से:	५	२	०	४	४११	४७	०	ज तुवररुफ़ी सिपुल सिवकानामहापली
११	बांवा जा	८	१	४	१०	४११	१२२	१ वि	भो मूलगता खांपछोषा
१२	सूहड़ीजांदा से:	२	१	३	१०	३१३	१५०	१ वि	खुहूसंधी में येरै को कहै सो पारमे बेरोबा परगांवपू हडी मूलगसानी देकाजीरा धोबे का धोवा है ॥ भो मूलपसा नीदा गाम के लने से प्रे हो लनी सहरां प गंगदास को सं १५० में व सो दी पापर धोबा खाल से न या सं १५२ में रानीत सिंह को जमीन लिखा है सो ५ कोस की गिरह में क व जे है
१३	खारीया सं ३२			१				०	यहां सोटा मोड जीवा रहै है
१४	मोरीय रापा र							०	यहां सोटा भारमलया सो जेठवी प्र रहै
१५	जेठावो सं ३२							०	आजीसर मांगीया वगैरै है पहिने यह पारसना था उच कोस १ कुजमलरा सरगुरीयोडा है अबनो पार करै है
१६	कंभरा खा							०	जं फीवाख कांवरै बसाया था

०	धामर से:							०	जं पलीवाल धामर छत्रे लीया वसा सो वीरान हु असार सं० २८ में गनी स्था बस्ती करी थी किरग में चावल पैदा कर गा परन्तु सं० ३२ में मरग चार खड़ी न चाम पी बधाय च होता है ॥
०	बरेहा से							०	भी बरेहा पुचार कल्या अब जमीन खाल से की रोल पोल में है ॥
०	पल प:							०	पल भारी है आम डग ज्युं ओठी पशो की नो करी है गाम वीरान कर गाम पिथलो वगैरे में जार है ॥
१३	खारीया जफी वरन भो०						१३ ३०	०	भो वरन पुंवार
१४	देवी सराउ फी तेज सी से:						२८ १२५	०	कुवा देवी सर भो० तेज सी खारीये की जमीन में सं० १८०० में रसा
१५	सूजा खा०			२१२	१	२१ ७५		०	भो० परबत आय सोलंकी काया सो सं० १८ में खाल से कीया फेर सं० ४१ में परबत ने भी हक जमीन दारी का फीर हो आना लेना कर जमीन खाल से करार कर जे के रुपये कुर वैर सी छोटा हई सं० ४३ में गांव से १ कोस कुवा किया
१६	धांगोली भो०			२	०	२१२ ५० २३१		०	भो रावधर

## परगने सम

१	कोर सम स्वफ०	१५	३	३	३	१८	१५०	५६३		पुवार चार में कोम समा के रहने से समक ही मूल राज- रत्न सी के साके में मुक्त वीरान किया और कुवा व तलाब बूराये तोड़ गये थे फेर चड सी जी ने पीछा बसाया जवतु वर
---	-----------------	----	---	---	---	----	-----	-----	--	--

भरिया सिंध से आकर जमीनदार हुए सोव भरी की कही जे ॥ - सं० १८ ई० में गढ़ी वनाय चारार स्वा सं० १८० ई०  
में हाकिम महेता मूल चंद को भेजा सो है ० कोर ४ तुर्ज १ हस्वा जे वगैरे मकान पक्षे पुरो का वनाय सर मुकाम की का-  
मंजड़े पीर का मुकाम वस्तकारी है - कोर के नजदीक साहू कारो की दुकानें - वचमारों के घर हैं ॥

1	लूगा	1							
1	लखरागा	1							
1	मनूवलाखा	1							
1	सगर	1							
2	झाडेखी खा	2 1	1 1	0 1	112 112	112 284	112 284	112 284	जं जंझपाडो गांगा वनीवा मुसलमान नलाई खाभे के पलीवालों की है
3	हडेल मे	4 मे	1 1	2 1	100 100	18 111	22 111	22 111	जं जंझ पाडे वीदा ववोहा हिन्दू
4	फलेझी मे	4 रुम	1 1	1 1	वीन जुया दि	1 1	43 100	43 100	ज मे: वस्ती फकीरधी गनारागो समधारागी वंबंभरा गंमुवांरागी ॥ गामधुलीयो के पलीवालो कुवा घुदाया (क्षेमुर्य सादपो असो पुरम हडेला महां पुराण फलेझी न हारागया निकेड ॥
5	लोलेझाई खा	4 आ	1 1	1 1	रुम पुल मुम	112 112	24 100	24 100	लोलेझाई नलाई जं पन्नु वस्ती वंभारां मुवांणी
6	दबडी मे	7 मे	1 1	0 1	2 1	0 1	12 20	12 20	दबडी पाहै जं जंझ वीदा वस्ती गजु मुसल- मानों की ॥
7	भद्रांकोर मे	4 नैद	1 1	0 1	0 1	112 112	112 112	112 112	जं मे: भद्रांकोर पार है वस्ती फकीर भीमा- गाव वस्ती साद ॥
8	लूगाखडी हं १५ मे	12 मे	1 1	0 1	2 1	0 1	34 142	34 142	जं मे: बुवा वरोडा १२ मध्ये सकतो फकीर वस्ती साद वडो नदूजा राजद काडो डो किय हो नो गाम वसा
9	लूगा जा	मे	1	0	0	11	24	110	१ कुवा, सोटा मदन सिंह रां किय पीछे गाम वस्ती सिखाय सावकटाय वस्ती करी-

१०	धाराराणा खा०	१२	१	१	०	०	५१	३८०	जं० मैरात बुवा १२ बूरोडों मध्ये ४ फकीरो किये १ मोरात सं० १८५४ में ३ हस्त सं० १५१७ में ३ माह सं० १९ में ४ झांगी शायी सं० १९२३ में वस्ती पोपापहा रतरी
११	सईयदरो तलो सं० १७ रो:	१५	१	०	०	०	५	१३	रो: सईयद महम्मद अली नोपाट कुचो वगाम कि या -
१२	मुहार मेरात की रो:	१५॥	१	०	०	०	४८	१५४	रो: भांगली चामरवी या नोपाट कुचो वगाम कियो फेर रो कुवा जून त्यार किया जमाने साविक में सताडे में कुवा वेश या
१३	भूहांगो रो:	१२	१	०	०	०	१०३	३८०	रो: कुवा १२ बूरोडों मध्ये कुवा त्यार कर वस्ती करी १ वं भरा नसीर सं० में ३ वं भरा मीस्ता सं० में फकीरो खा जकां गी सं० में मुरु कियो सो अंधूरो है - वं हमीरो
१४	मालीगडो सं० १७ खा०	१२	१	०		१२	४१	१८८	ज दोहा राहड या सो वीथर गया फकीर के आपसे कृतो दयोयो सो सं० में सेठ हिम्मत राम जी को वरवरा यो परन दुजो फेर राजड मिठे वगैरे वाजी दो फकीर हल की दुवा से नोपाट कुवा वगाम किया वार सं० १५ में राजड ठारांगी वस्ती करी कुवा सं० ४४ में कियो
१५	खास्डीया रो:	४	१	०	१५४	५१७	१०२	४१३	ज मेरात खास्डी यों का पाहै वस्ती फकीर चारांगी खाजकां गी हमीर वगैरे को है पास्को के मेये हुहुवे है
१६	तलाईगले री रो:	६	१	०	०	११३	४३	१७७	ज भईया जन्नी मंगली चामरवी या वारवरो
१७	धामीया रो	२	१	३	३	२१४	४८	२३०	ज से० कुवा दो जूना व कुवा ३ नवा पानी पुर्ब २४ तक मीरो परेजे को है नै नीचे खारो निकलै १ अस्ता यने सं० २० में २ को सवां सं० ३६ तथा ४० में
१८	किनोई भो.	३	१	०	१७	११५	९३	४२५	भो० जंझ मे पाहिनु है ॥



नसिये ॥ दोहा साडोवा डोरीह डोरीना है नाजमे ॥ सोता साहच चीह मुके सज्जीविचमे  
॥ १ ॥ जबसे राजह जमींदार - हज़ार हाथर इलाके हाज्जावसिंधमे है ॥ फेरसिंधके मीयेककोरेके  
कामदार स्थावारने स्थागढ़ नामी गढ़ बनाय कस्बाआवादकीया - पीछे टालपुरा के मीर हुस्तमने त-  
रकीदी - सं० १८९८ में जैसलमेर का कब्जा हुआ जब बलदेव घटनाम वहाकि मरहूवेका सदा मुजाम  
कोपाइसपरगने मेरेव केरीव बहुत भारी है - एक जगह से ऊडकर दूसरो जगह हो जाते हैं - कोरेतेमें टव  
नेसे मूषोमें हाकिम रहता है - खेतीनशुथी सं० २७ से निस्फ हासिलबानेत. १॥ सक हलकालेनाकर  
खेत्तेकरादे है ॥ कोरेसे दक़्का सफेदरेती काबसीको प्रांह कइते है - जिसपर ५ फीट से १२ तक खोदने  
होपानीमोठा औरनीचेपाधरी जमीनमें खारानिकछता है - ऐसी २ अजायब करीबतै है ॥ १ रिशी  
नेदेवचमे म्पर महादेवका मंदिर जो अब इलाके सिंधमें इसकांकड से १२ कोस है स्थाप कर दंत कोबा  
रायाजिसकी कबास्किंदपुरागामें है .

हाकिम प्रोहित ही राखत -

[illegible]

[illegible]



के तो जुपे भी नही ॥ किसी रूप के नीचे स्त्री हकी मेल कर गोठ सदा ते है ॥

## (ऊ) परगने देवगढ़ उर्फ चोटरडु

१ कोटर देवगढ़ उर्फ चोटरडु स्वा०	४०	१	५०	१६	१०६	जमीन महीरावरी में चोटरडु नामी कुवे पर एक गाँ गाँ मोरगारा बहितावकर नागाँ वगैरे रहते है महोर सलेम बह पुवाने खैरपुर के टालपुरा मीर
२ तलोसी झलो सं० ४३	८	१	०	११	०	रुस्तम से किछा चोटरडु पक्की ईंटों का कुर्ज १६ व हरवाजे होय वतजरा वगैरे बहुत मजबूत वरावाय

और मनशा थी कि वक्त मुस्लिम के यहां आरहेगे - परन्तु सं० १८९९ में फेरजे सलेम के का कबजा हुआ -  
जब से देवगढ़ नाम रक्खा कारदार्याने हाकम रहता है तथा कुवा कोट में व ३ सफी लां फस उडा पुर  
५० पानी बहुत वमीठा मवेशी ज्यादा के बायस खेती नहीं थी अब कुछ रहे ॥ परगना चसाने के  
सोजरा से पश्चिम को सपर कुवा बनाया पू० ३० मीठा पानी होने से चसाने की पक्की उमेद हुई जब लि  
खालिया किरिआया ई० गैर की आवे चोटरडु वीरान न हो ॥ हांरा का जमीदार मुषीया

हाकिम बिहाजेठ मल -

## (अ) परगने खारा

० कोटर खारा स्वा	४०	१	३	०	१२२	कुवे का पानी रक्खा से खारा कहा कोट कुर्ज व हरवाजा तजरा मिट्टी का था सो गैर गया सिपाई
---------------------	----	---	---	---	-----	---

ही गोलों के तले जारहे हाकिम या मोहर तले कौल पर रहते है - जमीदार को ममहोर सीवमहोरावरी में  
दूसरी कौम को रहने नहीं दे और मौसम गरमा में लोग सिंध जाते थे अब कुवा ज्यादा होने से नहीं जाते है -  
कार के पास झलो पार का मुका म है - और कुवा का पानी भी अब लो पेडु हुआ है परन्तु महोरा का माल  
पीवेनो विराई जै जिस से वहां बस्ती नहीं हो सकती ॥ कई घर सो से प्र० कोट खुयाले के समू  
बकिया गया दोनो कोटों में एक हाकिम है

१	लंगावालोप मिठडाव सं०४३	३ उ	१ १	०				पाडे-व्यागवाले के कूवा के नामा पानी से मिठडाव कहा ॥
२	सांवालो सं०४२	६ उवा	१ १	०				कूवा पाडे साहां नुंजा किचा ॥
३	काशीभर सं०३२	४ ६	१ १	०		४८ १५२		पाडे-मंगरांरा वगुमनो ने कूवा वगुमनिया
४	हीमोलावाला सं०३३	१ पू	१ १	०		४६ २२०		पाडे-हीमोला कूवा वस्ती किचा
५	हंसवालो सं०३४	४ से	१ १	०		३८ १००		जून कूवा तयार कर मुवा साहुलरा व पण्डे साहुलरा है ॥
६	हकली सं०३५	५ से	१ १	०		४८ २०५		पाडे कुवा सांवाला नांगरा दस्ते है ॥
७	कोलू सं०३६	८ २०६	१ १	१ १	१३५ २०६	२५ २०६		भारि धानरा व साहुलरा वगुमन गोर है है त लार सनारी ॥
८	भाटीवा सं०३७	११ अ	१ १	०				वांधे वस्ती निस्वीजी पाडे-चूड़डा वगुमन सांवाला राजी जून तला तयार कर वस्ती करी ॥
९	सकभरोपार सं०३८	१६ पू	१ १	०	११ २२३	६० २२३		मुवा अमराणी
१०	झरना सं०३९	१७ अ	१ १	०	१८ ६१	१२ ६१		से पार नवाहुआ वस्ती कुवा मंधुवाणी
११	वांधा सं०४०	१८ पूजा	१ १	०	४१० २८६	१८ २८६		जागीरा कुवा जीहा चूड़डा वगुमन है वांधा पार है रकडीन वगुमन सं० १९०५ में वांधा वांधा साहुलरा सं० ३५ में वरीवा निस्वी पे हुयाने वहुत है ॥

१२	नूकीयां	१६	१	०	५४५	३११०	८५	नूकी खुदाई तलायां में झरना है ॥
		अ					३५०	
१३	मीरवाल	१८	१	०			२७	रुकड़गरी फंडे बरीयां मर रहे हैं मीरने कूवा
	सं० १६	अ		११			१३२	कराया
१४	असू	१२	१	११			९४	जागीरां व नाथां गीया कूवा १ बेतीरा सं० १५०० में
		रुअ		११			४०९	कीया फेर कुवा सं० में हुआ
X	मंडे कडै वाला	८		०				श्रीहरवार से कूवा स्क सं० १५१५ में पकाकराया पर महोरां
		प		११				बदमासी से बस्ती न करी हजार रुपये नाहक गये ॥

**इतहास कौम म्होर** - बादशाह सुलैमान के तुष्म भदीयारी के पेट से ई० सिंध में हो लड़े हुए सो जिनकी औलाद की जाती है १ तो म्होर २ मालूम नहीं - कौम म्होर तीनों दुलाकों सिंध - व जैसलमेर - बीकानेर - भारवाड़ - मलानी वगैरे में लूकवाड़ी मशहूर हैं और पुशतों बाद सांयराक रामाती हुआ चुनाचे पाबुजी ने बेटी को १०० सांदां देने के लिये सांयरा का वर्ग ले आया पीछे से सांयरा पहुँचा जब सड़गई में ठोब से तरवार चली देखकर पाबू ने सुलह करी याने सीरां का सक्ज म्हा गुचारी को दीया जो साउके गाँव में है और महोरां को मांगते हैं - म्होरां का पारवी सरदार स्पीजा हाजीरां मौजे खां नगढ़ दुलाके सिंध में है और बीभा नाम म्होर दुलाके हाजा में आ रहा उसकी औलाद के कई प्रादे याने हजारां घर हैं अब वसा भरिखां नरा में मुगरखां व चूहू डामें दुलाही बरख और मुस्वारतां में स्मर्थ - व जंगरां में रेस्स जासोत है ॥

## (२) पराने खुईयाला

१	कोर खुईया	२०	२			४१११	१३०	कोर रोडन पथरी का बुर्ज ४ व दरवाजा तजराऊ पर मे
	लो						६१२	यां हैं इमीदार को हरी मुसलमान हैं ॥ सिचो लोग पैदल च
	खा०	प						ने में कमान करते हैं चुनाचे गोहरास को हरी अधमन वीक
								लेकर ३ पहर में ४५ कोस तो सहज सुभाव चलता था -
								ओतरी सफील पास बाजला पीरां का मुकाम जाजली कह
								तथा कोर के पास साकू का दुका घर था सो अब हफसा म्हा
								पर हुआ - हाकम म्हेता चैन पुरव दास हैं ॥

१	राजा	१					यह पांच पाडा कोहरी जेजमोदा है ॥ जामोत हिन्दू को हरी था सो कर गया अब पाडे पंजा में बांलू नाम है ॥
१	रामा मल	से०					
१	दावद	१॥					
१	हेमा	१॥		पार	१६		
१	सर	३					
३	सीयम्बर	४	१	०	पार १३	६३	सी हां बर नमाब पदीवाला का कोहरी की जमीन में पत्नी मंगती वा गागन ॥ सं० १२ में कुवाकारने को हुवा नीली थी सं० ४२ में काम गुरु किया परतयार न हुआ ॥ घुडी ने प धरीया बंधा पगे हुंकारने का सिर बत सं० ४२ में बरा पा पर जमाने अच्छे भाने से होगा ॥
१	खकुवारी दत्त	से:	१	०	पार	०	१
३	कुखडी	४	१	०	१०	२३१	६०
	से:	४	१				२०५
							वा बहुत गुरुष १२ पानी मीठा पर थोड़ा है
४	हाबूर	४	१	०	७	६१५	११५
	भो०	६	१				६०५
							भो० उनड खडी न हाबूर से गाम काना म हुआ सीखडी न खाल से है ॥

# (२) परगने रामगढ़

१	कोटरामगढ़	२०	२			१९१		ज० खालत है - कोर बिरवार हुआ है सिर्फ दरवा खा० प० व २५५ जा कउत्तकी सफा लवमं दिर रहा है ॥ इस परगने
में उमालु साष के बहुत खडी न हैं - षडी व सरजत गैरे का बंधा अब बंध गया है समेद कवी है कि का शिशनी रहा का जमाना अच्छा जाने पर पीद से बढ कर आमदनी होगी ॥ - हाकिम म्हेतार गढोड सिंह हैं								
२	खेरड. घाने	४	१			४६		
	भोजराज	वा	१			२११		
१	तलोतरागड	१३						तरागोट वीच में २० कोस उजाड था सो ४ कोस खेरड में व स्ती अगाडी ५ कोस कुचारा मउ यहां से ५ कोस कूनी घंटी - याल होने में न रहा पर कुवा दोनो मरम्मत तल बर है ॥
३	राघव							खालत राघवो की वस्ती है ॥
१	राघवोरोक्ली	११	१					
		उ० ई						
४	सेऊ	४	१			३६		खा० सेऊ रहते हैं ॥
		क्र०				१६५		
५	सांयत	३	१			३०		क्र० सांयत है -
		क्र०				१०१		
१	सांयतारोत	११	१					
	ली	उ० ई						
१	चभूतरो	से:						
	तली							
६	हेमा	४	१	०	१५	३	४०	तलाब परासर पर खा० हेमा बनेत सी वसे है
		५	१				१९०	



७	नेमी	३	१	०	६०	३१७	३७	१४३	२.
८	जोगा	४	१	०	५०	३१२	४७	१८७	खा० जोगा रहते हैं
९	हाडो	६	२		११		४०		तत्तावयानेरवडीनेका नाम हाडा है और मुस-
	खा०	२					१३१		मोननका स्वातंत्र रहते हैं जमीनमें तो मच्छावदूध
१०	सुगह	७	१			१	२१	०६	खालतसामिल है मोलका विराड जुदा
	अ	४	१						न सुगह भारी है पात्नी ये घानकी नोकरी सं-
११	काकाव	७	१	०	११				२५ से माफकी वरसात फा गुवाडी रुख बंधा
	संगर से	४५	१						न हुलचकी मचावडा पारन कुरने से भाद्रा जगामे
१२	संनु	६	१	१	०	५	०४		रदे पोरपी चाचगई जी कामापा होला यदां आवा-
	गो	५					३५३		जवगा आकबाई याथा फेरपी गढ सी जी नेर
१३	तखी भोचरो				११				जगी वसाया लेआ से हो सच रह
	खा०								भो० भयाकम चहै पत्नी वारा की जमीन में गांन-
									रुजासर से आवसे -
									खा० भोजा कुवा ५ बूरोडामध्ये सं० ३४ में राम
									देवती की पिंडै रूप नाथ वजा दो से कुवा त्याग व-
									याथा किगाम व मदिरे मेसा होगा पर न्होरे जया-
									सता की नाराजी दो पीछा गया कुवा व एव पडा है ॥

## (ड) परगने तरांग

१	कां तामेट	४०	१	१	०	४६	३००		सं० २ में मारी रावत रांजीका साका हुआ आव
	खा	वा०					१९२१		सहर व गदवी रात हो कर लोहा पुचारी ने सोलंकी
१	कां यामरसा								जागी रदार की या फेर भारी योका दपस हुआ तो भी
२	वरीयाज								जमीदार वही रहो बाद कई पाजरा हुआ

सौनंकी मौजे रामगढ़ में आवसे। यहां ऊंनडों को बसाय कस्बा आवाद किया हाकिम के रहने का सहर मुकाम है कोर वनावाया सो गिर गया सिफे दरवाजा व १ महल इधे का है ॥

कुवा चोलावा पु० २१ पानी बहुत वषार है कुवा पर पान पडने से मू० रो पुर्स ऊंची नैरा नर है

॥ सीव में गांव - बसाने को कइ जगह कुवा करवाया पर पारा पानी के वायस उपाय एली गया

॥ हाकिम ने तागोर धन रास था अच ग्यान चंद है ॥

## (ह) परगने किसनगढ़

१	कोर किसनगढ़	४०	१	३	०	२१२२११	१ कि. १॥ राव हपोते बूरे वाद खाने पक्की ईरो का २४
	खा	वाउ				२००	१ दे: कुर्ज २ दरवाजा वरंग महल वत जरा वगैरे गढ़

२० हाजा में खास के सिये वन वाय कस्बा आवाद किया था फेर नै सन मेर का कजा हु अजवसे किसनगढ़ नाम रखवा हाकिम रहता है ॥

२ ॥ जमीदार को ई नही कोस कोट वाल अखल में आवसे ॥ ३ कुवा कावल सर चोलावा - अजहद है पु० २१ पानी बहुत वमीडा १ दूसरा भी जमी है ॥ सं० ३४ में १ जाट से तयार क

राया पर सीव में ज्यादे खेती व कुवा वगा० नही सके रेत के रवे बहुत हैं ॥ इसी ना कोर में निकाधवे

को पु० ७ खोदने से हाड निकला जव पी का पुरा मगर नीचे वेसक है ।

कामदार मोवल सिंह बकिलेदार ह: हरपाल है ॥

## (गा) परगने बाराहा

१	बाराहा	३२	१	०		१	भी० रहाड है० जूना कुवा व गहाव गोधरा ला तयार क
	वाउ					३०	खस्ती करी सं० २७ में २ हाकिम्यास जोगी रास है नव

परगना किया - पार गावूला सातिहतया सं० ४१ से जुड़ा दिया ॥ कामदार मोहित दुधलाल -

॥ जमीन राहड़की में पेती का हासिल वगैरे साग नही लेते हैं सो चेकर स्थाजोग में रहे और तत्ता  
वपन रासर परसर वनरे का ठाठ वदूसरा कुवा भी चरावे वगैरे ॥ सब का रूपक आराम वलाय  
की पना ही रेवेज्युं तन रावाह करेने की हिदायत करी है ॥

२	साध्वरा					१५	
	से०					७४	
३	राचमल					३८	
	से०					११३	
४	नगा					३६	से० पंचमाम दुख के ताम्र से है
	से०					१५३	
५	तेजपाप					४३	
	से०					१५५	
६	वडा					३३	
	से०					११४	
७	धीवावा सराह					२२	कुपशों की वस्ती गाम धीवा के दूजे वा सराहा जंकी -
	से०					५४	जमीन में है ॥
८	तनी गोपगाल	१					तलैऊ पर सीयाले उनालेऊ पर खिरवा से हिज सो कर है
	से०	१५					है ॥
९	भुटा						भो राहड़ भुटा मुसलमान है आदवे हिस्से के ३२७
	से०						ही लाडे के ठहर कर वहां वसाये ॥
१०	नारसी गोपगाल	५	१९	०	०	३७	देवत की जमीन डोहड़ी वूयली में ठा राज श्री के सरीसिं
	वूयली	५	३१			३४५	हजी कुवा जैसल मेरे के पत्थरो का पक्का वगाम कराय
	से०						फो दू सराफां भोरां चहूँ वनू जां किया

४	डोहरीगोहाली						मंगलीयाककडुदे गामवेसालेसे आकरकुवाकीयाअ- वगामहोगापत्तानामुन्हीअमीहरीनकेनामकासिरवाया
	सं० ४५			१			

## (त) परगनेदेवा

१	कोट देवो	१०	२	११०	१११	४७	हवारवडीनकानामहै जमीदारकोइन्ही षडेन बा रवासरहतेहै षडीनमें पके कुवे षाडालीपलीवाली
	रवा० उत्तर					२२२	

के जेहोमकेइजारीहै पु० १२ पानीबहुत वाकम परा मोठाहै बाडीकेमाली आज़बोरेसाल  
करतेहैसं० ४३ में ५ कुवेऔरहीतयारकीये ॥

गुसाईरामगिरजीनेमडी औरमी अषेसिंहजीनेगढीबनायथानारकरवा ॥ सं० २२ मेंरामगिर  
जीकेपोतेगुलाबगिरजीनेपक्कामठबनाया कू० श्रीरायसिंहजीकी छतरी हरमहीनेवही  
चौथ की पुजाहोवैहै ॥ आनवी रामोदरदासकी हाकमीमेंनवाकोरसं० १९१९ पकेप

न्यारीका ४ कुर्वबरवाजा बचौतरफ हरसलां ऊपरम्हेसात तयारहुआ सं० ४२ मेंआनवी  
लालचंद षडीनमुटेलेकाबधाबंधवाया ॥

२	धामर	१	१	०	०	३१४	०	विज- पलीवालधामरथा तिरगोर केदोनो- जामोंकेपरेहै ॥
	प०	५						मो० भडकमल
३	बोहा	३	१	१	०	११	६३	
	मो०	७					२७२	
४	सांवी	५	१	०	गहो	१९	२३	मो० सांखलाहै हरभंजीकाभोपहै श्रीदरवारकीसवारी मेहरभांजीकोगामालेअगाडीवहैफेरअपसकुन- जेजाने लागदीलादा माफ है ॥
	दे०	७०	३		खा	१११		
५	सिधराव	७	१	३	०	२	१६	कुवासिधरावपलीवालजमीयेकापुस ४० सार होकुववरीषाडाहैवस्तीपहोडोमुसज्जानोंकीहै ॥
	रवा०	मे०					६३	



१	कासदे	०	२	०	२१२	०	०	नः प्रतीवाल
		३०						३०
२	मूलदे	४	०	१	०	११२	०	०
		३०						
३	दीनन	४	०	०	०	११३	०	०
		३०						
४	जाबस	१	०	१	०	२१२	०	०
		३०						
५	रजा	५	०	३	०	२१२	०	०
		३०						
६	रजा	५	०	३	०	२१२	०	०
		३०						
७	ममीया	५	०	०	०	११	०	०
		३०						
८	माधव	१	०	२	०	२११	०	०
		३०						
९	विम	५	०	०	०	१	०	०
		३०						
१०	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						
११	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						
१२	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						
१३	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						
१४	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						
१५	गोपादे	३१	०	०	०	३१	०	०
		३०						

नः प्रतीवालः पईन दूषितछादी डाकगोपे  
पदेदे ॥

नः प्रतीवालः पदे पाठ्यगनजी कदे ॥

नः प्रतीवाल

नो गोपादे वध्य किमामेकंदे ॥

नो गोपादे वध्य किमामेकंदे ॥

नो गोपादे वध्य किमामेकंदे ॥

१९	जोधरी से०	३	२	१	०	२०	१३	५	ज: पलीवाले अचकट कासो गारहवे है
२०	लाखाखदे से०	१	३	०	०	११	३१	०	खाता इ दो शये अब तले देरी सरपासाहवे है
२१	मंडाउ से०	४	१	२	०	०	२५	०	कूवा होय पलीवाले पांच तफला गेका वनाया पुस ३२ पानी चाहे मवरी पीने हो तस्से होर गुमाई सीवस्ती हुई ॥
२२	सफीयतरी तलो नपा	१५	०	०					नायागी होर मोती की चौरत सफीयत धामाउत गदमवाचा पर पाने गदरा के वाच तवस्ती नहुई ज: पलीवाल
२३	सेडकी								ज सेड- गास मंधो में रहता है
२४	पनोधा से०	१५	१	१					पलीवाला पनुधन्त वूवा पनोधा से सीव पनोधा पली मीरा पर है कम-जोगरी थोका थानक ज्ञा कोठा है
२५	हलधोर दोवा निगाह खा०	०५							ये तीनों गा मो की जमीन बरेतरा ठा० योजुई है ज: पलीवाल

### (थ) परगने मोहनगढ़

१	कोट मुहनाह खा०	१०	१	१२	०	२	३०४	१	वि० सं० १९५० में नदी आने बाद कस्बा आबादी की या १३३३ १ म० कच्ची ई दो व मिट्टी का पुरुन वहरवा ज्ञा वसा ज्ञा
---	-------------------	----	---	----	---	---	-----	---	--

बनावा था सो बोरखर हुआ है - सदर मुकाम हाकिम ने ता हंस राज - कोट से उत्तर पाली याने कर  
को सो का उजाड़ था सो बाहला वू फली वगैरे कुवा वगाम होने से निरहा फेर सं० ५४ के कदत में पाली  
में करीब १२० कच्चा कुवा बनाने से मुल्क की मवेशी बचाई अब संभरे पकी होगई कि पाली में बहुत से

शां बसैगे साधरका हिसाब आः मोबत राय पासर करवा व १ चोकी गाव ब्हाला में र पाई वरीओ  
ही दूसरे गावे फिरते हैं तथा उनालु साष पैदा होने की बड़ी गुंजाइश है सो हो ही गी

X	तला रोडूरा	८	१	११		०	०	वसालू चां वराला डो वमै रे का है वूवा पुर्स १६
		७						तकमीठा पानी कम से वस्ती न हो सकी
I	मंगलधारा तला	१४	१			०	०	पानी खारा है
	सं० ४४	७		११				
X	जामडा रा तला	७	१					कूवा ग्रधूरा है तयार हुए वस्ती होगी
		७		११				
I	हमीर रोडे	२	१	०	०	१	०	पहोड़ी की वस्ती है
	होअ							
२	खारडी या	३	१	०	१२	५	१५	मंगलीया सांवरा जोलाठी ठा० का बलाक
	खा०	५०	१			६३		दार है रहते हैं ॥
३	आर्यता होव	५	१	११	१२	७४	१५	भो जैचंद- दूसरे वास को देवग कहते हैं
	वास भो	५०५				२५५		
४	बालारा	५	१	३	०	४	११६	भो० राहडू या जबान राज को खाल नल में नमी नही
	जा०	५				४४५		धुगा मारवाज से की दासी भारी सगता सिंह खेत सिंह
	कैर	०	१	११	०	१३	४७	तको वसी दुआ ॥
	भो	५०५				१०२		भो चौहान राजसी गाम बसायो
६	ताडारा	५०५	१	११	१	३	२५	भो० केवरा
	मे	५०५				२५५		
७	बहाला	१६	१	०	०	०	३७	मंगलीया काल दे सिध से आरहे कूवा पका
	सं० १० खा०	४०		१४		११	१४२	सरकारी दयासी म० ४४ में दूजा करा था वतीन

कुवे कचे मंगलीयां की ये पानी खारा परमवे सी की अच्छा है उत्तर १॥ को स म्हीर धी गारो मुंजरी  
कूवा सं० ४४ में कीया पुर्स २४ मोठा पानी रेख में आया है ॥







५.	ज्जासर	११	१	०	०	११	६६	०	गामरोदेकीभायपभोभणकमलकटणसेसून
	से०१६०८१०						३८१		गमभरीएजसीजालमसिहोतकोवसांद्याजब
६.	रोटा	११	१	१	०	१	५६	०	भोभणकमलहै१।श्रीवखनसिंहपदममिहो
	रो०						२५४		तकोवसाहुआ॥
७.	आसकनी	५	१	१	०	११	६६	०	कलयाजीदेइकनसेपाहुआसकरननैवसाथाथजे
	रो०	५					४५०		भपुरकीफोजरहीनववर्गनथाफरपाहुसेफेरक
८.	भदडीया	२	१	१	०	१३	४०	०	लसेफेरपाहुसेफासे२०मेंभारीनहाजीनेतमलेन
	रो०	२					१६३		संनागामभाराकोदयाथाउन्होंनेकीमतलकर
९.	उवाय	३	१	२	०	१३	६४	०	बोड़ोफेरसंनागामरा०सुरतसिंहोतकोवसादिण
	रो०	३					२६८		रा०अमरसिंहोतकोवसाह॥
१०.	खारीयो	८	१	१	०	११	१२	०	खारेपानीसेखारीया०मवानसिंहोतकेयासो
	रो०	वा					५७		बोड़ाथामेहसिंहअनोतसिंहोतकोसे०४३मेंसेव

कादिया

## (ध) परगनेनौख

१	नोख			पार	१७	२३१	१२	कदीमभोभणकमलथा जतेडडेलेकेबडे
	खा०			है		६८६		वैटेवापरीषटीमेंपानीपीनेकीसोगनकरडेल

सरसेआयआधीयहआकोटविकमपुरखालसेकियाऔरभूमियोंहलोयालीयाजबसेखालसेहै  
ताडेमेंकुवे८४मध्येकईजारीहैपानीनजदीकववहनऔरसीराहैमालीवाडियोमेंतमाकूप्याजमिरकोव  
गेरकरतेहै१कुवावथोडीसीजमीनराखसीयेरीवारटमेंपजोनुदीयोडीहै॥ तथादेवअनजीजेजोगी  
राजथामडोनामीहै सं०२५सेहाकमकेरहनेकासदरमुकामकीयाअबमुनासवहैलिहाकिगाम  
कजूऔरयहाँमोहररहैहाकममुदलपतसिंहपूनमचंदऔरमातहाथाणावसायस्कोचो  
कीयागामविकमपुरकजूनोघडाहै॥ रूराजीतपुर

1	रावरी	२	१	०	१	१	०	०	जैतुंगरावजीकेहाजेतथासोदासाकहासं०१-ई
	सं०१५०६	ने	१				३०		मंदालोंकीवस्तीहुईसं०७०मेंसूनाहुआसोवसाया-
X	चापरीदीया	२५	१	०	०	१२		०	इन्दीकानेरसेघर४०आवसे ४ कइतपड-बेसे
	सं०३०	वा							पीछेगये जमानेआयां आसी
२	वीठरागाम	०	१	०	०	११	२१	०	ज भराकमल
	सां०	रुने					७१		वीठवसायाथा मोकाता भैरै
३	मांडली	३	१	०	३५	२३	३५	०	मांडली तल्लई कलराओंकी परबिसनोई वसे
	सं०१४	वा	१				२५		
४	मदासर	७	१	०	०	२	१४	०	केलराजीकेहुक मसेपाहुमदेवसायाथासोसूनाय
	सं०३३	वे	५०	२१			४१		सोविसनोई लछमणकूवावगामकीया ॥
५	वन		१	१	०	१४	५०	०	जै गामजैतुंगोंकासूनीचाकईपलराहुआवसीवम
	वे	सं०					३१३		मभी लिखदियाथापरखालसेहीरहा फकीरवाँरे
६	लिवराओं	१	१	१	०	१५	२०	०	सिपाईरहे हैं ॥
	सं०१६	वे					११७		पडे-हणोंकीजमीनमेंलिकराणलिवसी भडलोभ
७	मडली	३	१	१	०	१५		०	डलीकूवायालिकरीपरकलरखेतकोरष भडलेफ
	सं०१०	वे							हाथीयाऐलमेंवमा वरनाइलाकेगीरकाजह विस
८	नुरावुर्जा	७	१	०	०	११२	१२५	०	जोई वस्ते यहतोनोकेवुर्छीमेंवस्तेही हैं ॥
	वे	३	१				५३४		पडे-हाकीजमीनखालसेमेंकलरनूरैसं०१-६४
९	वधावडा	१	१	०	०	२५	३६	३	मिगामवसाया ॥
	सां०	रुने	१				३२५		ज पलीवालई महरावलभीमवीक्रानेर
१०	गाडगा	६	१	०	०	५०	१५५	१	नजबचासा जोवधाईमेदिया सोदधानडा
	वे	अ	१	१			५०३		नामईसेसीपोसा विकमपुरराव अंगरसिंहने
									गाडगावारागकीदिया जवगाडगाकहा ॥



२०	गुडो	८	१	०	०	११	१७	०	भिलोंसेमूलवालीयाथाफेरगवदुरजनमालजीके
	जा०	ऐ०					७२		कु०भानीदामलियासेवरसंगनवलसिंहमताप
									सिंहोतकेतावैहै॥
२१	जोगीदासरीसि	८॥	१	१	०	१२	१२५	१म	भिलोंकीसिडसनीथीसे०१८३०मेंवरसंगजोगी
	ऐ०	ऐ०		२			४७१		दासजैसिंहोतवसाई॥
२२	नथराजरीसिड		१	०	०		७०	१म	सिडजालमसिंहकीसीवमेंनथराजवस्तीकरीपर
	ऐ०	ऐ०		१			२७७		हनाजगामउनकेसमूलहीहैराजसेपरवानानही॥
२३	जालमसिंहरी	८	१	८१	८	१०१४	१४४	१म	
	सिड ऐ०	पू०					६४८		
१४	मोडियो	१३	१	०	७	११२	३७	१म	
	ऐ०	पू०					१७०		
२५	निरखडोदोवास	१२॥	१	१	३०	५११	१४१	१वि	मो०केलगाइचारणोंनेवैरमेंजमीनदीनोखकता
	मो०	अ०					५२५		लावपरकेलएकेपोतेनेगा०कियाचारणकलेजाहै
२६	गिराजसर	१२	१	२१	१२२	३१८	४०५	१वि	तरारगवकेकु०जैतुंगकेबेटेगिराजवसायाफेर
	जा०	ई०पू०					१८२५	१म	वसुंदरदासकाकु०अचलदासजीआरहेजवसेदा०

इन दरखों में से व मे व ह न दानियां हई और साहूकार घर दू गडीयां जा रहे जिसे कस्वे की रौनक कम हो गई

राघोदेरे	४	१	०	०	१।	०	०	गाः जेठमलजी का चाकर चैन रात राघोदेरे पर रहा ॥
ऐ० द० ने								
सगत सिंहारी	२।	१	०	०	०	०	०	सं० ४५ में मीठे पानी का कुवा हुआ है उमेद है कि गाम पका हो जावेगा ॥
सं० ५ ऐ०	३०	१।						
देवडारी	३	१	०	०	०	०	०	गाव पक्का हो जावेगा ॥ रजपूत देवड़ा का दोयादानी हैं ॥
ऐ० वाउ								



३०	वजु सं० २१ ऐ०					७७	१५	पाहुवांगड-सांगड कीवैन वजु चौहान को परनायय हंगाम वजु वबेटे कूपे कूपासर कर
तैरत्तासर वसाया था सो सुनाइ आ सं० १८६७ में राव शिवजी सिंह को दीया जब गडी बनाई थी सो सं० ४ में पाड के गाम खाल से कीया सं० १५ में आधो गाम ठा० जेठ मलजी को दियो फेर दो गाम विस नोयां जारा वसाया है								
३१	वजुजी सं० २१ जा० सं० १५							
३२	वांगड-सर ऐ०					६३		पाहु सांगड बांगड वसाया था सो सुनाइ आ बाव सं० १८६७ में राव नारसिंह के भाई मूल सिंह व साया सो बूरा था फेर वसा सीव वहन सी खाल से की है मांणका सर की सीव में ई० वीकानेर के पुंवार कां नै भोवतै तलो व गाम कीया मोका तो भरे हैं॥
३३	पुवार बालो सं० ३४ ख०					४३		मांणका सर की सीव में ई० वीकानेर के पुंवार कां नै भोवतै तलो व गाम कीया मोका तो भरे हैं॥
३४	पूरनवालो सं० ३३ ऐ०					८		मांणका सर की सीव में विसनोई पूरण डुडु मान दृष्टांत से कूवा ववस्ती कीया सो हड्ड मान गढ भी कहे हैं॥
३५	मांणका सर सं० २१ ऐ०					३०		कलणजी के अहद में मांणक पली बाल वसाया सो सुना था श्री दरबार से कूवा कराय जा विस नोई वगैरः आवसा॥
३६	मोदायत सं० ३० ऐ०					१६		नोडे मोदायत में विसनोई नीबे वेरियों पर वस्ती करी सं० ४ में पका कूवा किया॥
३७	देदैरोतलो सं० ३५ ऐ०					८७		गाम वजु मिठडीये की सीव में जाट देदै वैरा सर नाम कूवा वगाम किया॥



३८	फूलासर					१०	तांडेफूलासरमे विसनोई मूलेखीचडरंकच्चा
	सं०२३ ऐ०					१३	कूवाव तलाईवस्तीकियासं०४४मेंदेकूवा
							पक्काहोनेसेपक्कागामहशा॥
३९	गोडु					१०५	एवहरनाथनेसोलंखीथानेमकोलगोडुसेव
	सं०२२ ऐ०					५०९	सायाथासोसुताथोदरवारसेकूवाकरयाविस
							नोईशानसा॥
४०	गैनेगेमला						गोडु केजारगैनेसं०२०मेंकूवाववस्तीकरी
	सं०२३ ऐ०						
४१	रणजीतपुरा	१६	१	०	०	१६ ११६	जमानेसावरुमेंनागडाकूवोंपक्कस्वाथफकी
	सं०१९६६ ऐ०	३				७१७	केथ्रापसेवीरानहशाफकीनंकहाथानाग
डाफलकडोकडींदापागडा) इसबोलपरथोबसाहवांनेथोरणजीनसिंहजीसाहिवाकेनामसे							
सं०१९०६सेकूवावनगामवसायाफेरदूजाकूवावठानियोड्डेसं०४१में							
१	रामसर	२	०				विसनोईगजैरामसरकूवाकरायवस्तीकरीत
	ऐ०						याविसनोईलछमनवाघाणीकूवाकियाहै
२	रंगु						कूवारैणुसं०८८मेंमरोदायांकोवसादियापा
	ऐ०						नीखारेकेसवववस्तीनड्डेखेतबोवेहैं
	नायावस्ता	२५	२	०	०	१२ १०७	इलाकैवीकानेरकेनाईयांकूवावगामकोया
	सं०३३ ऐ०						फेरथोरहीलोकशावसा॥
४३	साबु	२३	२	०	०	१३ २५	तांडेसाबुमेंभीमुसल्मानोंगामवसायो
	सं०११ ऐ०	ना.				८८	नेगलीयेमेंघेवगीररहवासकीयो॥
४४	फतुवालो	२२	१	०	०	१२ १८	लांगावफतुकाजूनागामसुताथासोकलादी
	सं०२१ ऐ०	१२				७२	मगनवसाया॥

४५	मेघेवाला	१०	१	०				मंगलीयेमेघेसाचुवालेकूवाकायापानीखार
	सं०३३	१०		१२				
४६	ढोलैवाला	२५	१	०	१२	८		रतकेथलकानामढोलाहै लाड-म्हाम
	सं०१८	१०	वा	१२		३४		कूवावगामकीया॥
४७	खाराख	२२	१	०	१२	१५		खारीपानीसेनामहृष्टाकोटवालमीरनकूवा
	सं०३३	१०	कवा	१२		५४		कीयोफेरविसनोयांकूवाकीया॥
४८	आदासरउर्फ	२०	१					कलरचंदेसरकूवाववस्तीकीया॥
	चंदेसरवाला							
	सं०४०	१०	वा					
४९	नोरंगवाला	१६	१	०	१२	१५		कोटवालानोरंगकूवावगामकीया॥
	सं०३५	१०	वाउ	१३		५४		
५०	पुरोहितवाला	१९	१	१	१	विकम	०	रावदर्जनशालजीपुरोहितोंकोजमीनदीउन्ही
	सं०२६	ता०	३			पुरमें		कूवावगामकियापरसूनाथाकईघरचाकरोंका
								जारहारेवतपुरोहितोंका॥
५१	विकासर	१२	१	१		नोषमें	०	गामसूनासोलंकीविके काकूवावथोडीसीव
	सं०३०	जा०	३					रावसाहवदीनकीदीसोगामकहा॥
५२	कोटविकम					२६१		सुनाहैकिराजाविक्रमाजीतने१दालदकापूत
	पुर	जा०				८६३		लाखरीदासोईहैविकमपुरनामीकोटसं०२मेंव

नायरखासोमोन्दहैऔरकहतेहैकिपुतलासिरहलवैजदहीकोटयालैठेचुनवैअबलपुवारथे  
पीछेऊमरसुंमराफेरहानीठोरवादसूनारहातोतणुरावकेकुंजेतुंगनेलीयाफेरसोमभाटीसे  
केलराजीलीयाथापाछेगोपाकेलगाहसं०१५१८मेंपूगलसेरावदर्जनशालजीआयेजब  
सेबरसंगहैपरयालटाणोहवाही१दर्जनशाल२मुंगरसी३उदैसिंह४सरसंग५विहारीदास  
६जैतसी७सुंदरदास८लाडसां९हरनाथसिंहजीश्रीदस्वारकाखैरखाहसं०१८०४में

फोटहुवाजबसुंदरदासकाछोटाबेटाअचलदासकाबेटाकुंभारवड्डासं०१८०ईमेंश्रीअसैसिंह  
 जीसाहवांवफातदेकोटरवालसेकीयासं०१८१ईमेंसरूपसिंहलाडखानोतूकोदीयाथाइसको  
 उताकरकुंभाकाभाईबांकीदासबैठासोफोटहुवाजबपोतायानेगुमानसिंहकाबेटानाहर  
 सिंहगदी. बैठा८महीनेबाटइनकोमाकरसेरसिंहसरूपसिंहोतरवड्डासं०१८३ई  
 मेंश्रीमूलरजजीसाहवांइणनेस्वर्गभेजनाहरसिंहकेबेटेजूरारसिंहकोरावकीयासो  
 सं०१९मेंमराजबकुंअनाडसिंहरावहोताहीइसअदलीपेशानेसेकोटरवालसेइ  
 आअनाडसिंहतोगडियालेमेंमर्जेचेचकसेफोटहुएछोटाभाईशिवजीसिंहसं०१८२में  
 कोटपरघावाडालापरकुछनइआश्रीदरबारनेवडापणेसेसं०८९मेंगांवजूरहवास  
 दीयाफेरसं०१८०कीसालकोटमेंआवसेजेसलमेरसेफौजगईकोटकायमकरइनको  
 कूरभेजाफेरहीवदनीयतीकागुमानपकाइवाजबसं०१८०मेंबजूसेनिकालेसो३०  
 वीकानेरमेंजारहेसं०८मेंबारूठाजेटमलजीनेपिताभोजरजकेबैरमेंशिवजीसिं  
 हकोमारसं०२५मेंशिवजीसिंहकेबेटेखेतसिंहकोकोटमरावोफवसंथासामानऔर  
 ८गामथलकोरकेदेकररावकीयाबाकीपरगनाखालसेरावकरमौजैनोखमेंकचहरी  
 कराई.

## जुगराफिया मुल्क माडमें कोट विकमपुर का हाल

सुनाहैकिराजावीरविकमाजीतनेएकपुतलादालदकाखरीदासोयहांवीरानजंगलमें  
 सं०२मेंविकमपुरनामीकोटबनाकरदरवाजेकेआगेरक्तासोहनोजमौजूदहै=  
 कहतेहैकिजबहीपुतलाशिरहलाचैकोटपालटाकरैनुनाचैकोटमेंअचलपवारमालि  
 कयेपीछेअंमरसंगफेरहडीठोरकेबादसूनारहाजबभादीतणुरावकेपुचजैतुंगनेकच  
 जाकियाफेरसोमभादीसेकेलणजीनेलियाथापीछेगोपाकेलणरहा= सं०१५१८मेंपुंगल  
 सेरावडुर्जनसालजीआयेजबसेवरसंगमालिकरहेहैंनाहमपालटातोहोताहीरहायानी  
 दुर्जनसालडूगरसिंहपदैसिंहसरसिंहविहारिदासजैतसीसुन्दरदासलाडखानहरनाथसिंह

जं श्रीदरवारके बड़े खैरवाहये सं० १८०४ में फोत हज्जा बसु १६ ११ ११ ११  
 सका वेदा कुंभा गाम गिराज सरसे आकर राव हुवा उसको सं० १८०६ में  
 ने स्वर्ग भेज कर कोट खाल से किया था सो सं० १८१८ में लाड खान के बेटे सरूप सिंह को  
 इसको मार कर कुंभा का भाई वांकी दास राव हुआ इस के मरने बाद इसका वेदा गुमान  
 नाहर सिंह गादी वैठा ६ महीने बाद इसको मार कर सरूप सिंह का बेदा ११ १० १०  
 १८३८ में श्रीमूलराज जी साहवां इसको वफात देकर नाहर सिंह के बेटे जुमार सिंह को राव  
 सं० १८३७ में फोत हज्जा जव बड़ा वेदा अनाड सिंह राव होता ११ ११ ११  
 ल कर कोट खाल से किया और हा कम रहने लगा अनाड सिंह तो गाम १६  
 से फोत हो गया और छोटे भाई शिवजी सिंह ने सं० १८८८ में कोट पर धावा डाला मगर  
 छन हज्जा फेर सं० ६७ में शिवजी सिंह को गाम वजु में बैठाया बाद सं० १८०० में ध  
 का बज हज्जा था जे सल मेर से फौज जा कर इनको निकाला और १२ २ १  
 न हज्जा जव सं० १८०४ में वजु से भी निकाल दिया सो इलाके वीकानेर में जा रहा था  
 ठा० जे दमल जी ने इनको मार कर पिता भोजराज जी को बैर लिया इन के बेटे खेत सिंह को  
 १८२५ में बुला कर कोट मरा ८ गाम थल कोर के देकर राव किया सो अब है ११ ११  
 से उठा कर कोट नोरव में कचहरी रावाइ और खेत सिंह से लिखत करवा लिया है कि १८१  
 की को कूफी बहाली और पट्टे के गामों में दीवानी फौजदारी का अखतियार श्रीदरवार  
 गा और रु० २६१) हर साल रेख का भर दै ॥

५१	कोलासर	८	१	२	०	१६	१२	०	एवन गुजो के कु० जैतुंग के बेटे
	जा०	३०		१			६०		या ॥
५२	पावूसर	६	१	१	०	५	१६	०	राठोडां पांजूजी के नाम से कूवा
	सं० ११ से०	३					७२		

ए गाम भाटों को दिया फेर रु० दे कै पोछा लिया पर सूना था सो राठोड जी वंराव साया ॥





भाटीयावाला	५	१	०	०	१२	०	रूपसे होत माटीया पक्का कूवा वगाम किया
सं० ११	३	१					
डेहरीया	३	१	०	०	०	०	लंगा हां वगैरः कच्चा कूवा वट्टांनी किया ॥
सं० २४	रोः	१९					
निसुंमा	७	१	०	०	११	०	भटो व वलोचों की वस्ती हुई ॥
सं० ५	ई० ३	१९					
नुवरांवाला	६॥	१	१			०	राव मंडलीक की ठकराली वीकानेर महाराज
	ई०						कल्याणदासजी की पुत्री सगण देनै सगण

दिसर कूवा कराया सो वीरन था सं० में तुवरो क गाम वसा ॥

मिसरीवाला	१२	१				०	लपड मिथ्री सं० १५ में कूवा किया पानी खा
	ई०						से वस्ती न हुई ॥
जगासर	८	१	०	०	१६	०	कोहरी मुसल्मानों कूवा व वस्ती किया ॥
सं० १६	ई०	१८					
भालैवाली	७	१	०			०	विसनोयों सं० २० में कूवा किया पानी खा रे से
	३	१	१३				वस्ती नही हुई ॥
मोडीया	५	१	१			०	माटीयां वलोचों पिषजा दं कूवा वगाम किया
	५						
वैकनरी	७	१	०	०	१	०	पडे हार सां वण के कूदा पर जा द वसा हुआ कूवा
सं० ३०	५	१२					किया
अखुसर	७	१	०	०	१	०	दादरी परानों वगैरः कच्चा कूवा बनाय गाम
सं० २४	५	१२					वसाय ॥
रूपरवाला	५॥	१	०	०		०	वलोचों कच्चा कूवा व वस्ती करी
सं० ३०	११	१४					

१	भैसोदुंक	५	१	०	०	१५	०	नायवांकचाकूवाववस्तीकिया॥
	सं० २२	वा०			१४			
२	ढेढणीवाला						०	ढेढणीकेडोहरमेंपडेहारेकूवाकियोपानी
	सं० ३८							खारेसेवस्तीनहुई॥
१	साहवों	७	१	०	०	०	०	भीयाकचाकूवाववस्तीकिया॥
	सं० २०	३			१४			
१	सुरीदसर	१३	१	०	०	०	०	कोहरियांसं० २०मेंकूवाकरनोचाह्याथापत
	सं० ३८	ई०पू			१९			इआफेरविसनोईआवसा॥
१	जैतेआलीक	३	१	०	०	०	०	विसनोईआयवसेकूवेकापानीखाराहै
	व्यसं० ३६	पू			१९			ज्यादःवस्तीकीउम्मेदनहीं॥
१	कोटवाषखा	४७	२	०	१५	३६४	२वि	भो०खडे२ याथ्रीकेलगाजीसाथपल्ली
	लसे	३				१५४७	१शि	वाल आवसेसोहैसं० १८७७मेंविकमपुरपुर
							१म	खालसेइवाजबसेइहोजुदाहाकमरहतेहै

पुरानीगडीगांवमेंहैअबतालाबमेंघडासरपरकोटबनैगा भैरोजीकाथानकदीमीहै  
सोमीदलुनाथजीकामठसं० १६३०मेंउमदाबनाऔरकसवाभीतरकीपरहैकिअब  
नवीगुवाडियोकारहनेवजोलेकैलीयेजमीनवभुसकलमिलतीहै हाकममौकाती  
सालमचन्गराखेचाहमीरमलेवनायवमैतासामसिंहपरोहितनोत्तारामऔरमातहत  
याणावसाथरकीचोकीगांवसीहडावस्तीरवेमेहैपनोखववापकीतहसीलकामभीउन्हो  
केतशलुकहैसं० ४९सेगावोंमेंहवालदाररकवागयाकिखेतीमेंतरक्कीवरखवालकेसि  
वायमहसूलवगैरकीभीनिगरानीरखै॥

१	गोमटीयाम	१॥					०	गोमटीयेम्हारेरहतेहै॥
	होरागीस	८						





भागचन्द हवार का दासोत अकार कबजा की याज व से कई दफा वीरान भी हुई मगर फेरही भाटी  
रहे और अब सीव में तलाया पर दोनी या जो नीचे लिखी है हुई ॥

१	खेतुसर	३	१		११		०	भाटी हीरजी
	हे०	ई०						
१	धोली	३	१		१		०	गाम जेदमलजी
	सं०	हे०	५०					
१	डरजनरी	३	१		११		०	
	सं०	पू०						
१	देदासरी	३	१		११		०	
	सं०	पू०						
१	शनजीरी	२॥	१		१		०	भाटी शनजी
	सं०	जै०						
१२	कांनासर	८	१	१	१५०	३६	२५२	सं० १८८३ में खरीगे के विसनोयाने अबल यह
	स्वा०	प०					१२८८	गाम कालासर तलाव पर वसाया श्री रंगरावत

जी सांके पड़े था वहुत से घर मारवाड से आये ॥

१	भवा		१	०	१५		०	वहुत से गाम पल्ली वालो ज्यों वसाये परन्तु
	सं०	हे०		६				जमीदार नही क्यों के हनोज किसी ने जमीन
								मंगली कन्ही लिखाई है
१३	रावरो	६	१		१४	४३	०	भो केलरा
	भो०	प०	१			१८१		
१४	हरभा	३	१		२१२	१०	०	हे०
	हे०	हे०				४८		

१	दुरगाणी	११	१		१९	०	रे०
	ऐ०	नै०					
१	जोधाणी	१०	१		११४	०	रे०
	ऐ०						
१	खालंडा	१२	१		११३	०	रे०
	ऐ०	प					
१	भायडा	१२	१			०	रे०
	ऐ०	प					
२	विरोलाई	१	०	०	०	०	भो पाहुंसेखासरमेहैठाणआधाभरेहै
	भो०						
२	अक्लमाली	१	०	०	०	०	भो कोटडीयासेखासरमेंहै
	ऐ०						
१	सीहड	३५	१	१	१००	११४	८६
	भो०	पूडे	२			४४५	

सं०७७ सेहकुमतवापका दोसियाई पानेरहते सं०२७ में जुदा परगना की याथा फेर सं०३२ से वापके मानहत सुहर व्यास अभयक एणव कई सवामहै ॥

१	पंडितारीदा						कूलाखोदते देवी की मूर्ति निकली जवथान था
	एणयोदोयहै						पकरनाम देवी सरदीया किसी से प्याउ वेचै तो
							पानोमें कीड़े पड़े ॥
२	टेकरो	३	१	११२	२०६११	१९७	भादी हारका दासोत
	जा०					५३४	

३	छायण ऐ०	५	१	२	०	२४	१५२	६३४	पड़ेहारकी जमीनमें दूसरा गांव वसाय श्रीखेतसी जाके बैटे सब रहे थे सो दूसरे गांव में जा रहे द्वारका दासोतय हं है ॥
१	त्वाठी जा०	१८	१	७	०	१५	१६७	७०९	भो० जसोड लोहरा से ठा० राज श्री ईसरी सिंह जी गांव खरीदा फेर श्री दरवार में हाथी

नजर कर वसी लिखाय कसबा आबाद कीया व कोट बनाया था पर पल्ली बाल साहू कारवगैर वहुत से लोग व कोट विखर गया सं० १८२३ में ठा० राज श्री छत्र सिंह जी ने कचे पत्थरान का कोट बुर्ज ७ व दरवाजा व मकानात महलात बनाया हुकूमत के काम पर श्री दरवार का हाकिम रहता था सं० १८०३ से यह काम भी ठा० मोसूफ के ताल्लुके हुआ था सं० ३८ से परगना तो अलग कीया बोली वारे ही लेते फी मनुष्य ॥ नदी में कूबा ७२६ पानी वहुत वमीठा है गांव से ५१ मील डेढ़ कोस पर छत्ता सरगंधान हमीर राजसी ने सं० ४१ में बनाया ॥

१	लोहराट	२	१	०	०	१९	९७	५६	जसोड लोहरा है है
१	धोलीयो सं० २७	१	१	०	०	१५	५१	२४२	विसनोया एक कूबा सं० २७ में दूसरा सं० ४२ में किया गाम वसा पानी वहुत भीठा पुर्से ॥
२	रतनरीवसी भो०	२॥	१	१	०	११९	१५	४७	भाटी माल दे होत है सं० ७८ में नदी आई जब १ गुसाई कूबा बनाओ सो गुसाई सर है कई वर्ष उदै सिंहोत सरू ३ सिंह का ही रहया ॥
३	छत्ता सर उर्फ करालीयो सं० २७ ऐ०	४	१	०	०	२४	४	१५०	हमारी राजसी ने गाम डेला सर व भैरवी से जमीन ले कर वसी लिखाया कूबा ताला व कोट डी पक्का बनाय गाम किया

४	धायसर ऐ०	७	१	२	०	१५	४६	१८१	भोजसोड-महारा बलभोगी धायकृष्णकर या जसोड-खेतसोगामवसाया कृष्णका पानी
साराहुवा पीछे फतेपुरिया जो सं० ८० नं० दूजा मारा कृष्णकरया आईजी का थान व कृष्णपरको ठापका है॥									
५	भैरवा ऐ०	८	२	१०	०	१८	३५	१२०	भोजसोड-आईजी का थान फकीर उदाये का कोठापका नदी में वेरीगों पानी मारा
६	सागर ऐ०	८	२	१०	०	१८	३५	१२०	भोजसोड-सागरगान चांधन की जमीन में वसा पास सं० ३२ में आईजी का थान पक्का कराया
७	चांधन ऐ०	७	१	२	४	११	४०	१६३	भोजसोड-चांधन नाम दावडी कृष्णका बरोंया सथाई लैजी के वेटे जगे गाम वसाया गांवसे उ-
त्तर १ कोस १ कृष्ण नोत्तर दूरियोडा है तथा नदी में वेरीयां गाम पास कृष्ण थान पक्का है॥									
८	जेटा ऐ०	८	१	०	०	१४	१२	१४	स्यावा जुदावा है
९	सावल ऐ०	९	१	०	०	१५	१२	३०	भोजसोड-सावल गाम माली गडे से आकर चां धन की जमीन में वसा आईजी का थान व सं० १० में कृष्ण पक्का किया ॥
१०	मालीगडा ऐ०	७	२	३	०	११	२३	७५	भोजसोड-गजै गाम डेला सरसे आकर चांधन की जमीन में गाम वसाया ॥
११	सुतोयो चांधन	४	१	१	१३	२१	४८	१००	भोजसोड-कोदेरा बरसे बुलाप गाम वसाया पहले यह जमीन गंगापुर के थी ॥
१२	टावरकी जा०	४	१	१	०	१३	१४	६३	टावरिया का सुनां गाम टावरकी परिवारे वासे सो आखे जाता को दीया था सो बो रुगये

मई वर्ष बाद सं० ८५ में आसकने को वसा दीया कूवा खाग वशाई जी का थान को कड पर है ॥

१३	रेता	७	१	३	१५	१४	८४	२८७	१८ कूपे रेता गाम भुत्ने सूना कीया था सो
	जा०	३							भो० रांठो डपिय डाने वसाया फेर खाल से हो

कर सं० २२ में राज श्री तेज सिंह को जा गिरा हुआ १ कुवर गोपला कालु हारसी वा० प्रताप सिंह जी को दीयो डाडे १ पगवा व दूरोडी

१४	चांदसर जा	८ ३-३	१	२	१२	४३	१६२	गाम रोला की जमीन डूटी है स का आधा कूवा वसी व वा० चांद सिंह जी को दीया जब सं० १८८८ में गाम बना ॥
१५	लुहारसी जा०	८ ३-५	१	२	१३	४८	२१२	भो० भणक मल का गाम लुहार सीत पर है भा दी सगत सिंहो तरं हे थे सो गाम बडा रो है रे गावर व प्रताप सिंह जी को वसी दीया
१६	नवातला जा०	४ ३-३	१	२	१६	१४३	४४५	१ दि० १ म० पल्ली वाल सधा कूवा करा के गाम उया सजार ही वा० केशव दास जी को वसा दी

या जब कसबा वसाया सं० २६ में आई जी का थान व सं० ४२ दो कू० नवा हुआ ॥

१७	भाईया	२	१	२	३५	१४३	४८१	ज सो ड मल के भाइयो ने लो हंटर व भाई वसा
	सा०	३						या भाई हे डकानी में कु० बनाने से रूक बा सं

८० में श्री स्वामी जी का थान बनाय सांसन सी व सुधा किया फेर सं० ८८ वा १८०५ में दो था न कूवा बनाया

१८	अर्जन गार	३	१	१	१२	१५	५६	भाई की में कलरो को वसाया त्ताग माफ सफ
	प०	वा						र की सवारी में ११ ऊंटर निष्फ किराये हाजर
								रहे १ कूवा के शव दास ने बनाया सो सवार है

१६ सोडाकोर	३	१	१	१२	२४	२८	६६	भोजसोड डेलेके वेदे सखराने वसया चौबु
भो०	पा							खोगडी पकी में झाईजी की हकम थापीया
२० डेलासर	४	१	१		३०	४४	१४६	१ मडीमानपुरीजी की भोजसोड डेलेजीमा
भो०	ने							वरोसे आकर कूवा वगाम कोया फेर झाईजी
								काथान, न
० मयाकोहरा	३॥		दूरो					रावभवानी सिंहोतां को दिया था सोनरूहा
महेरानकोहरा	३०		डा					जमीनपोलमें पड़ोसीया द्यवी॥

## नकशाकुलपरगनातके गामहानीआवादीरानजोजुना यानवावगामोंमें नवाकूवापक्काकच्चाफसलहुईसो तथावस शिसकियेसो

क्र.सं.	नामपरगना	तादाद कुल गाम				नवाहवासो		पड़ोसइनाकां परगना				गाम या सीवुलेखर डीनजोजागीरभूमि			
		आवादी		हानी		वीरान		कूवा	पक्का	पूर्व	दक्षिण		पश्चिम	उत्तर	
		अ	आ	इ	न	जु	न								
१	रावसशहर	१२	६	३	.	.	.	७	३	१	जिसल मेर	जे.	जे.	जे.	वार्डजोगराजगामस खेवालेकोय वद्यसे से०७
१	जिसलमेर	७६	४२	२	१	२	१०	५	४	७	नारी देवी कोर	कनेबद सुयाल समगद	आभा देवा मुन गद	राघुआथानसिंहको गामगसीपाभो कुचा से ३२	
२	देवीकोर	४६	२०	१	.	२	५	.	१	४	मार चाउ	कनेबद मेर	जिसल जुगदी	भाटीरजसीगावेवा लानेवालेकोगाम आसरजा सं० १०	

३	फतैगढ़	४७	३४	१	२	०	११	०	०	१	१०	मारवा	मारवा	महाज	देवीको	राजश्री उम्मेद सिंह जी को
												ड	डलस	जसल	ट	गाम दुधू जा
४	लाखा	२२	१६	२	२	०	२	०	१	०	३	ऐमल	जोध	महाज	फतै	सोढाऊमजी गाम भुकावा
	प०											नी	पुर	लार	गढ़	लेको गाम कीता दिया था सो है
५	महाजलार	२४	६	२	६	४	०	०	१०	२	२	लाखा	ऐ०	अप्रेजी	सम	मगये सं० ४१ खाल से हड़ाह
	प०											फतैगढ़		खैपुर	खाभा	जुरीगोशदास जी को
६	खाया	२४	१६	०	०	२	६	०	१	०	७	जसल	महाज	सम	अप्रेजी	मुंदडी काजमीन में सीवदी
	प०											मेर	लार		खुयाला	तलाईवस्ती सं० १३ में कीया
७	सम	२२	१३	५	५	०	०	०	१३	३	८	साभाम	ऐ०	सहा	खुया	राजश्री छव सिंह जी यहां के
	प०											हाजला	सिधु	गढ़	ला	गाम मेरागरी सीवजा सं० १५
८	सहगढ़	६०	४४	०	२४	०	०	०	३	०	०	सम	सिधु	सिधु	देवगढ़	वरी से हजेरमलजी को गाम
	प०														खारा	कुशाधी जा सं० १५
९	देवगढ़	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	खारा	सहाग	ऐ०	खारा	सीया भांयि सीवकन को गाम
	प०												ढ			चैनु दीया था सो छोड़ गया
																सो रावल लमान जी को दीया
१०	खारा	१५	५	६	०	०	१	०	१०	०	०	खुयाला	देवगढ़	ऐ०	रामग	भाटी वैरीशाल गाम तापुवा
	प०											राम	सहाग		ढ	लेको गाम भुजा
११	खुयाला	१०	४	०	६	०	०	०	०	०	२	जसल	सम	खारा	ऐ०	मे दीया था सो नही रहे जबक
	प०											मेर				विराज जी को सं० ४३ में दी
१२	रामगढ़	१६	१०	२	४	०	०	०	०	०	६	ऐ०	खुयाला	खेय	मिथन	कनेतिकन सिंह गाम चांदस
	प०											देवा			गढ़	मेंवाले को गाम को राजा
															नाराह	मे दीया था सो नही रहे ॥



[illegible]

२१	सीहड	४	३	१	१	१	१	१	१	माखा	माखा	लाठी	वाप	सेठप्रतापचंदहिम्मत
	प.									ड	डलाठी	नाचना		कोगामसिंधु प. सं २
२२	लाठी	१	१	१	१	१	१	१	१	जोधपु	देवी	जिसल	मुनग	भाटीजैतसिंहोत दूधल
										२	कोर	मेर	मुगाग	सीवदेवीकोरमे सं

Handwritten musical notation on a five-line staff. The notation includes various note values, rests, and bar lines, written in a cursive style. The notes are mostly eighth and sixteenth notes, with some longer note values. The staff is filled with the notation, showing a continuous melodic line.

सोदारनजातसिंहसुहृद्

सीवमूलपसारी जा. सं. ३० व्यासपालजी तुं सीवडोहरी राधरा चैनजीरानागामजैसुरारोकात-भो  
जासरवकु. १ भो. सं. ३२ हमीरराजजीगेनजीयोत-गामकरलियाजा. सं. २७ गयागुरनुं सीवपुन्यार्थ  
गामजैठमलजीरानुं <sup>सं. ४१</sup> सीवरावल्लोतमोडजी. गामखारीयाजा. सं. ४२ सोडाखेतसीवगैरः बहुतांको  
घरखेतकाहासलमाफ ॥

गोसवारकुलपरगनेजातदेहातवदानीजोसं०१२४५वैशाख  
सुदी३हं

[illegible]



## देशमें

रहने के मकान खास शहर व पल्ली वालों व राज जागीरदार नभोभीयों के गामों के पत्थर के और उत्तर की तरफ वरसल पुर व गैर में साहूकारों व गैर के इलाक़ों व चुने संघों के भी है बाकी सिंधी सिपाहीयों व गैर गुरवा लोग व राजायत को भेके रूपे होय खुसपोस व छप्पर बंधा धास का है सो सं० ४१ से हिदायत की गई है कि छत्तन लीये व खपरेल का बनाया जावे स्थान इसमें कूबों की गहराई फुट ८० से ऊपर ५०० तक की है और ८० से कम को घेरे कहते हैं पानी मीठा फीका खारा यानि सब तरों का है व गाम वालों नामें सड़ा देकर गिरज पर विक्रम पुर व गैर कूबों का पानी विरावा जो प्यासे के वासों जहर है तथा परगन नोख नाचना मुहनगढ़ में जहां २ पानी खारा या विरावा है या कूबा नही है मीठा पानी की कुमायां का वास के पानी से भर रखते हैं अब दूसरे परगनों में भी कुड़ा बनाने की ताकीद व नसीहत की गई है तथा जमीन इस देश की रेतली पत्थरीली व खड्डों की चिकनी है और जो जिनस भैदा होती है वह तही उमदा -

तथा न मालूम कौन आपसे पल्ली वालों के गाम विलकुल घट गये व घटते जाते हैं ज्यों ही खास शहर के लोग भी निकलते जाते हैं बाकी सब मुल्क में आबादी बधी व वधती जाती है चुनांचे परगन बाय व नोख नोखीतरखा आबादी हुई व होवे ही है अब नवांगाम व सने को गामों की सीवा निकल निवाह जगह मिलेगी और परगन नाचना व मुहनगढ़ चाराह सम महाजलार में कूबा नाम हो सकेंगे और सहागढ़ चोदड़ खारा रामगढ़ खुड्याला लावी लखामें जो लोग रहते हैं उन्ही के भाई गिनायत के सिवाय दूसरे लोग नही रहने पाते और खाभा देवा फतै गढ़ जे सलमेर के परगनों में तो विलफैल व धने की सूरत नही दीखती है श्री वडेगा साहब ने फरमाया था कि जब जमाना अच्छा आवे मुल्क व साने का उपाय करना मगर सं० ४१ से बहुत से उपाय करके चुप होना पड़ा ज्यों ही व्यापार की तक्की मौज बाय वरसल पुर मारुली में तो ठीक हो गई नोख नाचना मुहनगढ़ रामगढ़ सम महाजलार सहागढ़ गामों में भी होने की गुंजायस जमाने कर हर चन्द तदबीरे की गई पर कहन सा ही पाने का मयाबी नही होने दी सो जमाना अच्छा आने पर ऊपर लिखे मुजुबीये गामों में तरकी होने

को कोशिश करनी होगी तथा गैहूं पैदा होने की मात्र जगह का नक़्शा करके सब तरफ से रायलिवो बालिक उपाय भी कीये पर जमाना अच्छा व करसे लागे हो न संकामधावाहं अर्थात् बिल फैल तो अच्छे होने की उम्मेद न सूखन कोई नही बंधी॥

## अहवालखाणा

**दफै १३** अकसर पत्थर की खानें बहुत हैं वह पत्थर ये काम नक़्शा की निहायत न उ नदा व पायदार होता है कि हिन्दुस्तान भर में कम होगा. जाली करोखे वगैरः कानारोफ़ का हातक लिखो जावे देखने से ही मालूम हो. खान फरीदराव अकला कंठड़ी काभला रूपा सरवगैरः को पादुपान कहत है. रंग जर्द और पड़ने में नर्म मगर सजबूत बहुत इमारतों के काम में जाता है. इन वरयों में पत्थर का काम बड़ी गपाह सिवाय किवाड़ों के दीवार व छत भी पत्थर के पंटी बटुकड़ों का होता है. यह तरकीब सं० ३० सेनिकाली ६० वर्ष पहिले सुरंग काहन नही था जब बड़ा पत्थर निकालने में सर्वज्यादह लगने से ठहरा दी थी कि पत्थर का छत यह स्तोके पर में अशुभ है. सो अब कम लगने वह काम उमदा व सजबूत तुर्त व नने से लकड़े का अशुभ रहा. ये संग अहमदाबाद व सिंध वगैरः मुल्कों में जाता है. महाराणा श्री सजन सिंह बालो उदयपुर ने सजन गढ़ में कमरा बनाने को व जोधपुर व नीवाड़ा में जैन के मंदिर में लगाने को मगाया. अब उम्मेद है कि दूसरे मुल्कों में भी ज्यादा हो जावे गा. क्योंकि रेल नजीक आगई है और महसूल भी सिर्फ ३ रु० गाडे. ये ४०। ५० मन देजी डोंबेलो से ले जाते हैं लगता है. खान कुडकडा के संग का खरल प्याले गलाश कावी फूल दान आवखोरे वगैरः वर्तन काच व चीनी से जिलोदार होते हैं. और यह खूबी बढ़कर है कि थोड़ा सा वोम डालने पर भी पानी में तिरता है. पर संग कडा के वाइस नक़्शा की काम नही हो तत्ता. तथा नोकी कुरसी देवली व फर्से निहायत खूब सूत होने से दिशा वरों में ही जाता हैं. खान बिछूपान जो विदीया रंग त्याह व पीला अबरदार इसका भी संग कडा वह वर्तन कुडकुडे जैसे होते हैं. मगर लेवा चौड़ा १ फुट से ज्यादा हयह रंग इसका नही होता.

खान हाबूर शहर से यह १६ कोस गाम हाबूर के पास है। पत्थर लाल माइल व स्या अवर पीला फासी हफों की सिकल है इसका भी वर्तन व चौकी व कवार के नाबीज बनते हैं संग नर्म के कारण जिला कम जाना है परन्तु फर्स खुसनुमा दीखता है। यहां की सौगात भी ताइबले गों वगैरः को इस पत्थरों की चीजें भेजी जाती है वल्कि निहायत पसन्द होने से फैमायस भी इसी को आती है। मगर बनाने वाला कारीगर एक ही है। मौजै भादासर से पत्थर की घन्टी सिंध को जाती है महसूल फी चक्की एक आना है। तथा गाम सोमले आई बनीवा में स्याह पत्थर की घंटी पड़ोसी गामों विकती है। सिवाय इसके शहर व पल्ली वालों के गामों व आई ताते जरा तादी वाय बर्मसर वगैरः में खाने हैं। मगर अलावा गाम मुनापिया व जाजिया के मात्र जगह के पत्थर काला या रोड़ा या कच्ची दीवार के काम में आते हैं। तथा परगनः कोटरखारा पार एकल पास खान मसीत की वह परगनः खुइयाला में वह खरी का पत्थर कूवा बांधने व दीवार के काम में ठीक है। तथा मौजै जायन के पत्थर की चक्की उमदा बन सकैगी।

**खानमेर** - यानी मुलतानी परगनः देवा मौजै मंधा व नहडाई में निकलती है लबा ना वगैरः मुल्क सिंधु व पंजाब को ले जाते हैं। महसूल रहादारी फी गोना एक आना है स्या परगनः खास में वह परगनः फतैगढ़ गाम मंराई में वह सं० ४९ से परगनः जेसल मेर गाम भोज के वह परगना खाभा गाम खुहडी में भी निकले हैं। बाल धोने व ऊंठ घोड़े के चंदा पर लगाने में आबी है।

**खानमिट्टी** - सुफेद जो सेड़ी परगनः जेसल मेर गाम माभला व परगनः देवा कोटर खास में निकलती है। मकानों की आरास में काम आती है। इसके इतर से सिखी गर्मी कम होती है व जरगिर मुडी बनाते हैं। सिवाय इसके दूसरी मिट्टी ३।४ रंग की खास शहर व कई गामों में निकलती है सो छोटे पत्थर की जो डाई में वजाय चुना के काम आती है वा कुम्हार वर्तन बनाते हैं। खससन मौजै मंराई की पीली मिट्टी

उमदा मकान की अगनाई लीपते है, वह इसको जलाने से सुरक्षित पाना हो कर मकान शा  
गा की दीवारें रंगते हैं तथा गाहे २ सिंघ है दरवाजा भी जाती है और लालंगती जो मु  
र चिकनी को गोबर में मिलाकर मकान लीपते है, इसी ने के कंकर सुड़ी आ जो  
बुत्त पर ८१९ ई. व खूब जमाने से पानी नहीं रुकता तथा मरडीया व कतल जला  
ने से पीला सतर जो खारा चूना बनता है गुप्पू गुल सणी मिला कर ऐ की अगनाया  
बरीया करते हैं वह भी ठा चूना निकलते से पाहिले पत्थरों की जुडाई भी इसमें करते थे

## खानगेरू

खानगेरू देवी को दरवासा वृद्ध गाँव सीता डाई मास संग नडा में भी छोड़ा सा होता है  
अतीत लोग भगवा कपड़ा रंगते है सो रंग जही मिट्टने से दर २ सुत्कों में लेजाते है व इस  
से जेवर लिजाई को ओपनी देते हैं तथा पानी में धो लू कर जगा के दरवातों व मकानों  
की दीवारों पर डालने से दीमक नहीं होती ॥

॥ खान मीठा चूना को संदडा व खंगर व सुड़ी भी कहते हैं शहर से उत्तर १९  
कोस मौजै देवा वह अगाडी मुहनगढ़ नाचना विकमपुर वरसलपुर तक बहुत जगह  
निकलता है सो जला कर पीसते हैं सो इमारतों के काम में नो ऐसा है कि कैसा ही भारी  
पत्थर हो थोड़े ही चूना से सजबूत हो जाता है दीवार गिरती को लगाने थ भै ही थी  
अव फर्स भी बनोते है पहले गुमान था कि पानी से कच्चा पड़ेगा परन्तु ख्याल कि सा कि  
रांका व कुंडा में राख पोत कर चूने का लेपा देने से ४०। ५० वर्ष तक प्राप्ती साफ भरा  
रहता है नो फर्स ही क्यों विगडेगा ये चूना गाम देवा में अव्वल मट में लगा था फेर  
शहर में शुरू हवा महसूल फी गुन १ आना खान परलेते है और शहर में निरख १  
रूपये का ७ आठ मन अतीन से ररहता है स्या खंघर कृता बांधने व देहात में दीवा  
र बनाने को वजाय पत्थर व ईंटों के लगाते हैं कि कोट विकमपुर नाचना व कई गाँवों  
में बुर्ज व गैर मौजूद हैं ॥

## खानमुतफारिक

शहरसे उत्तर द्वाकोस मौजै हमीरा के कू में कोयले निकलते हैं गन्दिफ जैसी बूहक  
 १० से अबासम नामगर साहवान ने पसन्द नही फरमाया कि पत्थर के नही लकड़  
 के हैं और दक्षिण को ७ कोस डुगेर चिया के डुगर वह पश्चिम को ७ कोस ने जुवों के डुग  
 र में लोहा बतावा है श्री ठाकुर साहब ने न्यारीया से निकलाई भी थी परन्तु नाइ  
 ल्मी से नफा का ऐवज टोटा रहा और गाम पोरवर सं० ४२।४३ में झील डाम साहब  
 कई दिन रह कर पत्थर ले गये कि अच्छा मिला मालूम नही अच्छा पन क्या था तथा  
 देवत सुरताना वह गाम सांवला का कू में भी धातु है कहा गुमान कवी है परन्तु  
 वगैर इल्म वे मालूम नही हो सक्ता गाम जायन के कूवा वगम सता के डुगर में  
 थोड़ा सा कोयला वगम लुहारखी के कू में महमाई निकला था और कोट सहा  
 गढ़ के परलं तर्फ थलीयां में पानी जमने से सं० ३२ में खारा की पुडपुडी जड़ थी  
 जिससे अनुमान होता है कि मुदित तक पानी भर रहे तो अजब नही कि खारा भी  
 जावे क्योंकि खारा की तिथां जोई खैरपुर में है वहां से नजीक ही हैं तथा मौजै  
 ताप में आगे साजी पैदा होती थी वह गाम दामोदर के ष कजा सोनरा में खार होता  
 है सं० १३ में साजी बनवाई भी थी सो हासल कम हुवा वह कानोध वगैर के रत  
 में भी खार नहत होता है परन्तु बनाने वाला नही॥

और खान से पत्थर वगैर के निकालने पर हकूक राज का इस मनसा से माफ  
 है कि शहर इलाके में जो कोई मकान बढिकाना बनाते है तो उसके रहने की पाप  
 र का फायदा समझा और जोई गैर को ले जाते है उनसे भी खान का हकूक नही  
 लिया कि कितना रात से ज्यादा ले जावे बिलफैल महसूल रहा दारे लेते है सो  
 परलिरा उतना ही महत्ताना कालगता है और जबकि यह काम खातर खा न  
 गा खान का हकूक देका सादरशासना का हकूक निकालने के अन्दाज पर मुनासब वक्त



तजवीज की जावैगी जव पत्थर खगैर निकलने की तादाद व नाम दनी मालूम हो सकेगी

## नदी व वहाला

**दफै १४** भूगोल हस्तामलक में शास्त्रानुसार लिखे हैं कि इस डूलाके में नदी नालाक  
स साने की भी नही है सो बहुत लनवी या १२ मास चलती तो कोई <sup>मगरी</sup> मगर छोटी २ नदी नय  
वहाले ज्यादा बारस होने से जहां तक चलती है जिसमें काकनय वला ठीकी नदी तो नागी  
व गोगडी सूकड़ी ठीक २ वाकी वाकी या खगैर वहाले है

**काकनय** गाम भोपा से सोडां कोट्टी गोरा रा सतापास वहती हुई १४ कोस गाम कुल  
परा से दो साख हो कर एक तो पश्चिम को डाई से ५ तक खाभा बुज में खतम होती है  
जहां जरात ३ साख हो सक्ती है मगर बड़ी कबाइत है कि कम बारस से तो खाभा भरतानही  
और ज्यादा से ज्यादा भरे है उस साल जरात हो सकै नही क्योंकि पानी निकले का कोई रा  
तानही ६ कोस के घेरे में दीरया व सा दीखता है और खाभा मुहार भी भरजाता है तो बीच में  
कुंगरी निभ जो बेट सी शोभा नी है फेर पानी सूकने से जरात करते हैं आगे पल्ली वाल  
वसे ते ये जब बुज में १५ व मुहार में ६ हजार मन वीज वहता था दूसरी साख गाम कुल  
परा से गाम कहाले लुइवा हो कर रन में गिरती है वहां पानी खार हो कर जरात तो क्या  
घास भी नही होता यह साख बंध करने को बंधा वंधा ते ये सो डूटता था अब नदी का पत्थ  
र काटना शुरू किया है सो पूरा कटने बाद पानी निकम्मा नही जावैगा सम्वत् १३ में  
थीठा करा साहब ने शहर से दक्षिण ३ कोस पर भारी बंध बंधवा कर तीसरी साख इस  
मनुसा से निकलाई थी कि घर सी सर गुलाब सागर किशन घाट समघाट करा हकलया  
न घाट भर कर कानों धके रन में होता हुआ मुहनगढ़ पानी पहुंचैगा तो २० कोस में नदी  
के दोनों तर्फ खेरे निकलने से जरात होहीगी और बुज में भी ज्यादा पानी न भरने से हर साल  
पैदावार होगी क्योंकि रन में जो साख जाती है बंध हो जावैगी ऐसे कई फायदे जान कर ६०  
ता ६५ हजार रु. लगाने से वह धर सी सर बहुत खुदाया गुलाब सागर नया बनाया किशन

घाट का बंधाया व रामघाट कल्याणघाट को हजारों रुपये लगाये थे सो सम्बत १६ में  
ज्यादः बारतसे काकनय आदि सब बंधे टूट गये अब कोई साहब यूरूपियन इंजिनियर  
देखकर वाजवजाने तो रुपये लगाये जावै. आय साहबों ने तो काकनय देखकर कहा  
था कि हो सकैगा. स्यारन का पानी मुहनगढ़ जाने के लिये सम्बत ३५ में पैमायस वाले रारन  
साहब ने मौका देखकर कहा था कि हो सकैगा मगर रुपये ज्यादा हवताये थे. ब्रह्मा के पुत्र  
काक ऋषि यहां तपस्या करे थी जिससे काकनय. वहरे सेही चांवड ऋषि के रहने से  
चुंधी कही जी जहां पानी के कई कुंड वह सजीवन वहाला है. सो मूल राज सागर के मगरे  
से ३ कोस चल कर मौजै लुडवा के पास काकनय में मिलता है ॥

**२ लाठी की नदी** - गाम बेगरी वह माडवाई. मारवाड से शुरू होकर लाठी के पास  
१ सारव होती है सो गाम सूजया से दक्षिण व आईता से उत्तर वहती हुई ३४ कोस पर गाम  
मुहनगढ़ के पूर्व रन में पानी दूर २ फैलने से जरात हो सक्ती है लेकिन यह नदी अव्वल  
सम्बत १८४८ फेर ५२ में आई थी जब जाट वगैरः लोग भी आने से कसबा मुहनगढ़ वसा  
बाद सम्बत ८२ में आई थी वह सं० १९३८ में भी जीमी आई थी नदी नही आने का सबब  
यह है कि इ. पौकरन में कई बंधे व. रेत के टीबे हो गये हैं ॥

**३ गोगडी** - परगनः देवी कौट गाम छोडियां से शुरू होकर गाम सांवत मूलाना  
वडे गाम की सीम में होकर गाम सगरा से अगाडी चांधन के खडी न रखाय में जहां अब गें  
हूँ होते है भर के गाम मालीगड़ा से उत्तर लाठी की नदी में २० कोस पर मिलती है

**४ सूकडी** - गाम खूहडे के मगरे का पानी परगनः देवी कौट के गाम महासरनेडा  
नडवाडा धायसर जावंध के पास होकर भैरवां से अगाडी १ कोस पर गोगडी में मिले है और  
पिछाडी के गामों में १४ कोस तक कुछ नही होता है व उम्मेद भी नही क्योंकि सारव निकाल  
निबांध बंधाने वगैरः गामों के भोमियां से तो बने नही और राज जबरन करते नही ॥

**५ बाकिया** - वहाला परगनः जेसलमेर गाम आकल से पूर्व ३ कोस मगरे का पानी

गाम जेरत व दोनों वास्नपीके बीच जहां श्रवबंधे बंधने से गंहे होते हैं भस्के गाम रिंदजेसु  
रना आईता तक १५ कोस पर लाटी की नदी में गिरता है॥

**६ मुतफ़रक** - कहाला रतो मौजै मलारई मारवाड़ से पानी गाम खारवा वायवान  
नवीतिया में जो थोरे श्रवबंधों है भस्कर गाम से वड़ा नोख से श्रगाड़ी गामा डाना की थली  
यों में १५ कोस पर विस्तर जाता है २ दीपु से शाकली तक गाम सादा से वारू की थलीयों में  
पानी फैलता है नाम जिस २ गाम के पास बहते हैं उत्तकीनय ३ प्रल्लागां रथनांक डूंगरे से  
मंडां साउ तो डान हो करै गंङ्ग तक पानी बहाए में भार रहता है ४ प्रराम गढ़ गाम जो  
गाम खडीन सरन का खडीन बिजडा सर भरने बाद से रड से १० कोस पर लाहा सल जाता  
था नो सरन का बंधा श्रवबंधाया सो यकीन है कि सरन बपे सर बिजडा सर रंवरड में गंहे  
होने वगैरे निकलने से बड़े फायदे होगे॥

**७ नदी** - गाम महोरी से शुरू होकर गाम थोला पास बहता इई इ मारवाड़ में मौजै  
काश्मीर तक पानी जाता है॥

**देखने लायक मकान जो गढ़ व शहर व डला के जात में हैं**  
**१५ दफे** - खास शहर व देहात पल्ली वालों में प्रती पत्थर मजबूत व नकासी का  
गाम वारिषा वजःदार मकान अच्छे हो हैं मगर क्लिवा एज भवन सभान वास वा मोती म  
हल में शारस निहायत उन दा व गज विलस सर्वोत्तम विलास नीचे नया महल वगैरे व  
कोठा स्थन पूर्णो व मन्दिर श्री लक्ष्मी नाथ जी टीकम जी रनछोड जी महोदेव जी सूर्य  
जी के अलावः जैन के ७ ही मन्दिर तो देखने से ही गाल्लुं कर रखते है ताएफ कहां तक लिखी  
जावै ५ हजार खंभ व हर पत्थर में बड्डत ही चारीक काम चुनाचे जाव जितना मन्दिर तिल  
जितनी पुतली इसो में है बनाने का हाल जुदा लिखा है

## जैनके मंदिरों का हाल

चुनावैः कैफियत यह है कि गढ़ जेसलमेर में ८ मंदिर बड़े ही नामी हैं जहां दीदः आदमी देखकर कहते हैं कि इनके सानी कही नहीं देखे बहुत बारीक नकासी काम पत्थरों में और बहुत ही उमदा खंभे जो करीब ५००० होंगे ज्युं ही पुराना शास्त्र भी बहुत जो तब ही के जमाने में दूसरे सुलकों से आये हुये बड़े ही जतन से रखे हैं और तादाद नहीं लिखी मगर लखों ही रुपये लगे हैं - नित्य पूजा व पुजारी भोजकों की तनखाह वगैरह खर्च वास्ते संग पर लगमान है और निमन्तक मनोर्थ व यात्री वगैरः की भेट व केसर आरती का धृत वगैरा का द्रव्य भंडार याने मजबूत तलभ वरे में डालते हैं सो न मालूम कितना होगा

### नकशा

क्र.सं.	नाम मूल नायक मे तिमाका	संवत्	नाम बनाने वाले का	नाम श्री प्रज्यया जिसने प्रतिष्ठा क राई	कैफियत
१	श्री पार्श्वनाथजी	१३८८ १४५८	जे संग वचोले साहसेठीयान सिंह व भोजे साहराजने	जनरज सरकी आसासे सागर चन्द्र आचारीये	लुइवा से पुरानी मूर्ति जो १८ सौ वर्ष की है लाये गढ़ में साकाह वाज बजमीन में रखी थी फेर जोर नो धार में बड़ा मन्दिर बनाया पाट पर पधारई
२	श्री संभवनाथजी	१४८७	कुंकड़ चोथ डपो चे सहा	जन भद्र सर	
३	श्री सीतलनाथजी	१५०८	डागा लुणसा मुणसा		
४	श्री चन्द्रप्रभुजी	१५१५	भन सासी भाडे साहमेह सदस	जन चन्द्र सर आचा र्य	खुर सीवन ते द्रव्य हो चुका तो अहमदा बाद शम्भू हाटी पणी नहई फेर जंगल में

					दफ्तीनायायाजब संगमें धालीमिबी देकरबाकीद्वयलांकरलगया
५	श्रीसुधापद्मजी वसुन्नाथजी	१५३६	पांचेसाहा		
६	श्रीसंतनाथजी	१५३६	संगवीसेतेरी देसाहसंखवाले	जनचन्द्रसर	दोनामन्दिरसामूलवनेहैं
७	श्रीरिखभदेवजी	१५३७	चौपड़ासंखीस वसंगवीगण		
८	श्रीमहावीरजी	१५८१	वरदीयासमो साहाववेठाध लराज		

बीचकीगलीसम्बत् १५८१ में बूबाईब्राह्मणोंकीहुज्जतमिटानेकोऊपरश्रीला  
ह्मीनाथजीपधराये तथा सेठगुमानचन्दवालोंनेमन्दिरकेलीयेजमीनवपत्खरतैयार  
करायापरनहींवनसकाफेरअमरसागरमेंदोयदोगवंदोयमन्दिररिखभदेवजीकासवा  
ईरायलीने सं० १५८१ में बूबाईऔरहिम्मतगमनेबड़ासम्बत् १६२८ में बनाया श्रीपूजज  
नमुक्तिसूरनेप्रतिष्ठांशजन्मसल्लाकाकसईपांतलहटीयानेशहरमें१मन्दिरश्रीपा  
रधनाथजीकातपेगखवालेनेसंवत् १८७५ में करायाऔरपंडितरुंगरसीजीनामीजती  
इसजमानेमेंगुजराहैजोधपुरवर्मसरवगैरःबहुतजगहकुंडपानीकावथानकउपासर  
वगैरःश्रीकानाबनायाकुनाचैःअमरसागरमेंबगीचावमन्दिररिखभदेवजीकासंगकी  
नर्फसेसम्बत् १८७५ में बनाया यह प्रतिमा कोटविक्रमपुरसेझाईहैजी १००० वर्षकेपहि  
लेकीहै-

गाम लुद्रवा में श्रीचिन्तामनजी का मन्दिर मनशाली थडुसहाने सम्बत् १६७६ में बनाया  
व गाम वर्मसर में बागचार लाओलाद के द्वयसे १ मन्दिर सम्बत् १६४४ में हुआ और  
गाम देवी कोट में १ देगसर व गाम वरसलपुर में १ मन्दिर जैन का है ॥३॥

और अरा ईशरलालजी की हवेली व चोवटा में मशाला व देवी घंटी आलका धान  
तथा शहर में श्रीवल्लभकुल व श्रीसीतारामजी का मन्दिर व कूवारामसर मये कोठ  
बंगला व श्रीजी के सहन में बादल बिलास जो अब नई वजः का बनाया है व ठाकुर  
राज श्री केशरी सिंह जी का डेरा में छत्त बिलन्द पत्थर के लदाव का और सेठ शुभान चंद  
के ५ बेटे की हवेली व नोहरे रे से ही दीवान सालम सिंह जी व नथमलजी की हवेली  
भी बहुत उमदः है तथा जैन का मन्दिर उपासरा भी अच्छे हैं शहर से बाहिर त व ऊपर  
र मन्दिर महल वगैरः मकानात व बगीचे बहुत हैं १ घर सीसर इसमें कालग सर  
मिलाने लम्बा चौड़ा बहुत हुआ २ गुलाब सागर ३ मंहतासर ४ गजरूप सागर  
जिसकी नहर पहाड़ के अंदर ही अंदर खोद लाये है ५ देदानसर जो सम्बत् २८ से दी  
नथमलजी ने तब तरह अच्छा बनाया है ६ ईशरलाल का तालाब ७ गंगा सागर ८  
जो सीका तथा पडूगरी पर ब्राह्मणों के समसान की छत्री भी दूर से बहार दीखे है  
बाग १ अमर सागर तक के बंध व ऊपर महलात मन्दिर बंगले व सेठ सवाई रामजी  
हिमतरामजी वागा में जैन के मन्दिर व महलात निहायत खूब व पं० डूगरी सीका म  
न्दिर बगीचा २ मूल राज राज सागर में महल बंगले व त मेकू कालरा ३ बडा बाग  
का बंध की कैफियत तोलूगा करनजी के हाल में लिखी और डूगरी पर समसान में छ  
त्री बंगले अच्छे हैं गाम लुद्रवा में मन्दिर श्रीचिन्तामनजी व देवी का और ब्रह्मकुण्डाम  
कुंड चुंधी में ठिकाना व पानी का कुंड है परगनः खाभा में खडीन वुज मुहार व मुहार में  
वुज महादेव व डूगरी पर देवी का मन्दिर परगनः रामगढ़ में त नरासर विजडा सर  
देगसर व परासर व परगनः देवा में लखीसर परगनः देवी कोट में त विजडा सर

॥ हे हिमतरामजी जैन का मन्दिर जो नया अमर सिंह के पुत्र ने बनाया है देखने लायक है

तथा कोट किशनगढ़ व कूवावहावल सरव कोट घोटः डूब घंडसिया की गढ़ी जो १७ जे  
२० फुट ऊंचा है • कोट देवा व नाचना व कूवा चौतीणा व कोट विक्रमपुर में जीस्ता  
त दरवाजा और कोट वरसल पुर व लारी के भी अच्छे हैं • गाम लाट्टीया में श्री स्वा  
याजी का थान अलावा इसके पल्लीवालों के गामों में मकान मंदिर कूवा त • खा  
वगैरह देखने से हैरत होती है कि क्यों कर छोड़ गये सो हाल अलग लिखा है • तथा  
काफन चलती है जब गाम कुलधरा पास अच्छी कैफियत दीखती है •

## बारस व खेती का हाल

दफे १६ वर्षा हर्ड रोस्सा जमीन में तेह व नौ वान में पानी आने की है सम्वत्  
३८ से शहर में जनावर जो इन्ट साह व बहादुर ने पैमाना रखाया • सो बारस होने बाद  
पाप कर हर हफ्ते नकशार जी डंडरी में भेजते हैं परन्तु पैमाना से थोड़ी ही दूर वर्षा कमो  
बेशका हाल मालूम नहीं होता इसलिये हुकूमत से रपोट आने का नमूना पूरक  
है नम्बरी नाम गाम मिर्ती व र्सा जमीन में रज व नीवीन में पानी कितना • घास चरा  
किशा • हाल खेती • हाल तन डुरुस्ती वगैरह • गाम में मनुष्य जनमे भरे या आये गये  
की तादाद मये सब व • तथा शहर में बारस हर्ड का ईंच व सेन्ट सम्वत् ३९ जो सन्  
१८८३ में ६।६८ सम्वत् ४० में ८।६५ सम्वत् ४१ में ६।१९ सम्वत् ४२ में ८।१९  
सम्वत् ४३ में २।७० सम्वत् ४४ में ४।४४ कुल छः वर्ष में ई • ३७ सन् १५ ओस्त फ्री  
ताल ईंच ६ सेन्ट १९ हर्ड मगर इन वर्षों में कैहत ही रहना अच्छा जमाना में  
में ईंच ६।१० व ज्यादा १२।१५ तक भी होती है • सेम हीने बैशाख से पीछे जब ही अच्छी  
बारस होतो खेत बोया जाता है • फेर शाम्बन तक ४।५ दफे वरसने से जमाना श्री कार और  
कम होता काम •

सारव सियाल बाजरी मूंग मोठ गुवार आगे से कई दर्जे ज्यादा होते हैं तो भी बाजरी  
मालानी व सिंध से और मूंग नाले वगैरह से आवही है तथा हजुवार व चावल कम होते हैं •

ज्यों इसका सर्व भी कम हो गया है. तथा काकडी मतीरे काचरी नीडसी बगैरह ज्यो देव  
उमदा होते है. तिल सिर्फ ऊंठां के चारे व देश में सर्व वास्ते वाजरी के साथ थोड़ा सा  
बोवते थे सो सम्बत् ३८ में विलायत जाने लगा तो खेती भी बड़ गई चना चैः सम्बत्  
४१ में बहुत ही पैदा हुवा था सो ३ साल में ५ रूपये लख से ऊपर निकाला हुवा.  
पर कहत सालीयां से नहीं हुवा. मगर जमाना अच्छा होने से इसकी तरकी रखात  
रखाह होगी. ऐसे ही रूई की पैदा हो सकै हैं और हिदायत व कोशिश भी हद भार  
है. लेकिन दो कबाहते भारी हैं. १ तो यह है कि १ साल की बोई रूई तीसरी साल  
फलती है सो ४।५ साल तक रहे जितने वर्षा बराबर नहीं होती. दूसरे मवेशी के  
बिगाड़ने से लोग बोने में डरते हैं.

**सारख ऊनहाल** - जो महीने भादों व कुवार में ख. व बंधे भर जावे तो परगन  
१३ याने जेसल मेर देवी कोट फतहगढ़ लखा खाभा महाजलार सम खुरयालार  
मगढ़ देवा मुहनगढ़ वाय सीहड़ लाठी में होती हैं सो कनागतों से दीवाली तक  
चने कातिक शुदी १ से महावदी तक गेहूं व वराय नाम सरसों धना बगैरह और  
बाज २ खडौन में फागुण वदी १ से चैत्र वदी तक जुवार व मूंग भी बोया जाता है.  
गेहूं चना की नेपे जो महावट हो तो १ मन का ५० या ६० बल्कि ८० मन तक होती  
है. मगर बारस की कमी से हर साल नहीं होता. मुल्क सिंध व पोकान वालो जा बगैरह से  
आते हैं. व परगनह वाय से मारवाड़ व बीकानेर को जाता भी है इस काम में हद से  
कमाल कोशिश है ज्यों सलहर तरह की होती है. व उम्मेद कबि है कि अगर बारस खा  
तरखाह हर साल होती रहै तो ई. गेर से आना बंध होकर हजार हां मन जावे हीगा  
क्योंकि अब जागीर भोम सीरन में भी होते हैं. जुवार की नये वे सुमार होने के सिवाय  
कुज सीतयर द्रगोरा व गैर में ये खूबी बढ़ कर है कि १ दफा बोबने से १ ही साल में ४ या ५  
दफे फलती है व सर्त कि बारस होती रहै. इसमें १ दफा का हक खाव दूसरी दफा के



ही कहते हैं हासल कम तो सरे बोदरी का हासल माफ चोये बुहीगावों को बर  
ने है उत्तम को मेहली भी नहीं लेते पांचवे काल वीजुवार किसी काम का नहीं ज  
वर भी खावे तो मर जावे ॥

हजूर का राज साख उनहाल का हिस्सा ५ या ६ निखत्रा व जहां हिस्सा ज्यादा  
है तो भी ऊपर की लगान से इतना ही रहता है और साख सीयाल में पल्लीवाल  
व जाद विस्त्रोया से लादा का तो ऊपर लिखये से १ हिस्सा ज्यादा और जहां  
खारीया या चंचडीया का कुंता होता है तो भी हिस्सा ऊपर बमूजव है और राज  
पुत या सिंधियों से जहां हलोदा है फी हल ५ रुपये से ४ रुप तक नगद है  
और पड़े के गाम ये सो खाल से हो कर जो बहाल है गामों के नकमे खे है और  
सम्बत ६ में गेहूं का ४ हिस्सा होकर कणवार पल्ला वगैर लाग बूट डूई  
सिर्फ १ कणवार बहाल है १ देवी कोट हजरी जेदा मलरे व गंग व ऊंडा सिपाइ  
लशकर के मुंड कड़ाई में थी सो जोगे वीखे के है व गाम पीथोडाई चाबक सवा  
र जो रावर खा के भूम की एकज में है व गाम में धा व देवत की की पाट प्रोवाल  
गीर के ३ गाम नहड़ाई खंधारी जमादार जादखा व तेजौनीयां के व गाम  
खावल सर हजरी जीपन जी, राम जी दास जी व सुजाणियां के व गाम रामगछ  
हजरी रंधा किशन के है और लाग पल्ला जो भोग मन १ पीछे ५३ में ५१ थी  
जी के गंगा जलीये का है सो अब मात्र गामों के भोग में सो कोठार से करा दिया है  
व ५॥ जिस हजरी की देदी कर दे व ५॥ जो मडे पल का था और ५१ गंगा जली  
ये बमूजव देवान के सोई का है इस वरस के सिवाय दीवानी की लागे बकल जो  
फी मन कक्षा पर छाध आना वह लोरा में फी हल ४ आना व कूता के फी बनी ५५  
पुत का सम्बत ४१ से ५ आना ४ पाई नगदी की या सो तथा विधो की मात्र लाग -

सायर के महसूल व नौकरों की तनखाह व जमीन के बिकाय व इजारा ठेका वगैरः २ पर है सो श्री दरबार में जमा कराई कि नगदी तनखाह की जावै और भोग का नाज श्री कोठार पहुंचावें जब नाम खिड़ाई का मन १०० का ७ रुपया है अलावा इसके भीलों दुमां वगैरह से खेती का हासल राज में अलीन है सो खेती नहीं कर सकते भूखा मरते हैं और किसीने किसी के सीर में खेती करी तो उस सीर वी के नाम से हासल कोठार में आया तो भी ठीक नहुवा सो यूँ चाहिये किये लोग खेती कीया करे जिसका हासल राज में लेना तो अलीन ही रहे परन्तु चौथाई कम हासल लेकर राज के भीलों दुमां वगैरह में मज्जी हो जिसको दिलाया जावें ताकि सबका भला हो ऐसे ही साध का हासल कोठार में लेना छोड़ कर श्री राम कुण्डे दीया जावै और महन्त जी ठिकाने में मेल के दिन जो साध आया है साधू मात्र को रसोई दीया करे व रमते साधू को चोमा से मेंठ हरावै तथा आय सका मठ गुरु द्वारा का भी गुजरान वास्तः मुना सब तज बीज करनी जरूर है

### हाल कहत सालीका

बूढ़े आदमियों से अगले दुकालों की बातें सुनी थी सो लिखने में तो क्या यदृशाने से ही कलेजा थरकता है जब यह तसल्ली दी जानी थी कि मूर है क्योंकि सम्बत् १८०२ के बाद सम्बत् ५।१७।२५।३४ वगैरह में जो भारी कहेत पड़ा था तो भी वह दुख नहुवा जो सुना था बल्कि सम्बत् २५।३४ में मारवाड़ बीकानेर की आया डुली थी परन्तु यहां तो अच्छे ही रहे सम्बत् ४२।४३।४४ तक अकहेत बरबर हुये तो भी परवाह न करे सम्बत् ४४ के बैशाख से बहुत सी मवेशी मरने से बाजे पर गनह का लोग दूरा भी ताहम दिल की हिम्मत नहीं दूरी थी अब के बारस नहने से तो कई बातें अगले दुकालों जैसी हो गई कि ३ साल में बाजे लोग तो ऐसे कर्ज में

द्वगये है कि अन्तो गिर मुंडान से ही नहीं मिले हैं और तू से मुट्ट कली सल  
सी वगैरह हवा था सा कहत साली में गुजार करते थे सोही नहीं हवा सारा सना  
वडी वगैरह घास व केरे से तडी के छोड़े खाने नक नो वत पहंची लाचार वहन  
से लोग सिध वगैरह इलाकह गैर में चले गये और मवेशी जो बची है सोही  
वारस जल दो होने से रहेगी नयो कि ऐसा घास पानी किसी परगने में नहीं है  
कि सुव देश क माल बच सकै वस खुदा ही हाफज है हो १ परगनह नोखे  
४४ वर्ष से कहत नहीं हवा बलिके नाज वतिल व प्रसम मंहगा विकन से लोग  
अस्त है होगये और अब के भी वहां के चास न्दा को साल भर के खर्च लायक घा  
व ताज हो गया है तथा परगनह वाय व नाचना मे भी कहत का सदमा कमही  
हवा बाजे लोगो ने पाली में कचे कूबे बना कर माल बचाया और मौजै विकमपुर  
में कूवा क्रा मानी खारा भी विरावा था व नोखड़ा मे कूबे होने की उम्मेद ही नहीं  
थी इम साल फजल इलाही से मोठा पानी विकमपुर में तो ३० फीट खोदने से  
११ फीट व नोखड़े में ३० फीट में ५ फीट उखेड चडी ऐसे ही गिरराज सरवर सिंह  
सिंगाता सिंह रा की दानी में कूवा हवा और गाम वंजु वगैरह में हो रहा है इति शुभ

## दरखत व घास व चारा छोड़

नाम अपार है परन्तु जो जो नाम आसिद्ध काम में आते है सो लिखा रेजंडो  
पहुंऊ गुणी लकड़ी किस्सी जैसी परमन करे जब सुलते से कदर कीमत नहीं पाई  
बैशाख में फल सौगरी कचीया सुका कर साग होवै ऊपर सूके सो खोखा करीर  
लकड़ी पायदार छत में काम आवे बैशाख में फूल तो खटा फल कच्चा सो कैर फका सो  
पाका देर दो जात की १ कोकन जो कातिक में फले फेर काटे सो आन पाला ऊटका  
चार दूसरी वडमहा फाल्गुण में फले कुंभट के कुंभरिया साग होवै वगुद-

अच्छा होवै व लकड़ी जलने में तेज पर सुले तुस्त रोहीड़ा बाज २ गाम में है फल फूला  
 निकम्मा लकड़ी बहुत उसदा आली नही कटे कांकोडा पान धाव पर सुफीद है लक  
 डी घर में रहे तो कलेंह होवै बबूल बाज २ गाम में लकड़ी इमारत में छाल खाल खने  
 में राग सराब में काम आवै फल बाबलीया ऊंट का चारा गुंद होवै है बाबली परगना  
 सम सहागढ़ में बहुत व परगनाह मुहनगढ़ बरावा तनीट किशनगढ़ रामगढ़ में  
 भी गुंद होवै है नीम पीपल बड़ मरेस संदे सड़ा बाजे गाम में है मुंदी धजात दो  
 तो बागा में रायव बड़ १ सहरी १ बनगूदी के लसोड़ा सो गाम ओलावा रह में है  
 पीलवाणा ३ जाल इफरात से है लकड़ी पायदार परत्तु है कम फल पील सूरा के  
 कड़ मुफीद होवै है सिरगुंद होवे बिलायती बाबल लकड़ी निकम्मी अरना  
 डूकेरी नया होवै सोलवाणा मागाणी फल गांगीया गूगलाण गूगल होवे दांत न बरी  
 हरता जीरणी फलों में खुसबूह बीज तेजवान गाराठी मुराली दान पर डालने  
 से ओहरुन होवे लांकस खीरखीप फोग लाणो लाणी थुकरव आक उपगारी  
 बहुत है ऊंड नही खावे द्वाक उरोटा बकरी नही खावे खीप अकालो वणा लवा  
 साकुड लगेई लवी आकड़ी पनीर फोटा लगे पोवन बूरोड़ा सुरंभ अच्छी धामणा  
 मुरट पीपां होवै फलीस हंछा लंप कुरी लुग सीहे ग्रामणो गंठीया रोड  
 सखस ज्यों टारा होवै व जड़ तेल में डालते है भुटेहं वर हं कडे खिबाई हं  
 द्रोब मखणी भोडसी वोभरीयाह डाम थंडा में भरे कल कलमां होवै वाणाणो  
 मोथ जड में खुसबूह घीरीहं रातडीया खड बूकन कांय बद्रफ कुतियोखड  
 पडद पूछोयो मोरीया मिल अच्छी वूह रोहवुह अच्छी पीने अफीम जहर उत्ते  
 सोनेला सोनल घुडला कलांज दूधेली अम्ब जहर उत्ते छपरी दो जात मधी  
 या नोली तिलकंट बीज कालीजीरी कड़ लुथ लारीया रावस सपन चमकश

गायके पेठ बुटने पर पाते हैं। माशा उ। काली फिल दंतन अच्छा। सलेरी, चगा छय  
 र बांधी होवे। बीसुनी, हाड़े का सेत उ। कंदारो, बिडी रोखेत, वगारा फलम में बगरी जग  
 ल में होवे। चंदेला बड़गुण, रत्न जोत उ। सनावडी, रंती धा जावे। साठो, लाल रुहू  
 पचमिटे, हिलड़ा, काटी, भकडो, धकड़ी, ओइन, बेकर हूं, भागरी बीज उरीग  
 न, दोधा खीरें लगे, हर्ने नप जो छिड़नी, बुई स्याह व सपेद, वादी यर बांधे, फेल  
 दो जात, गेहड़ो, ममामोली दोनो, ककड़ो, सएतर, लातर, उबेली, ईकड,  
 खसए उजात, धामासा, खार, द्रेंवल, कोतक बलत, में होवे गायतु मुफीद  
 मागी संधे, । नाह सेत पउतरे, क्व दंत दंत पकरहे, शांभी माड़ा, कपुतण, जल भंग  
 रा, काला भंगरा, कुदक, बल फूली शाफू उतरे, चुंखो, बहे फोड जले पर लगावे,  
 लोरो लिया उ, गंदा गंठीयां, कुता धुटे, खुंभी, नागच्छत्र, बत मेथी, बन बुलसी  
 घोड़ा ल जो सनाय, कवाडीया, गोरख मुन्डी, पाइल, सुवा, पीलवाण, गोली बाड़ा,  
 फल गोलां मीठी, तूसण जो इन्द्रायण के तुवा के बीज मीठा करके नाज में मिलाय  
 खाते हैं व घोड़ा भैंस को देते हैं, व हडिया निकाल कर पांय पै लगाते हैं, गडरीया,  
 भाख फुरणो सो, ओकरु, करेलां, रीगंणी, शमर बेल, कटोल बिछुकी दवा, गिलाय  
 कोडीया फली लगे, पीछ, गुलां, जल बेल डी, घोड़ा खाते हैं और ऊर्द कनी वगैरह  
 बहुत सी जड़ी है ॥

इलाके जात में बड़े दरखत बंधाने वंरख बाल के लिये सम्बत ३ से आज तक  
 बहुत से डूबन जारी हुये मगर बारस के कम होने व लोगों की बेवकूफी बद नियती  
 ने लगने नही दिये, ग्राम नाचना व लखा में नही कंदन से खेजंडी बे सुमार हो गई बाकी  
 शहर के जोगिंद चोकोसी में खवाल से बहुत से पेड़ खेजंडी बबूल वगैरह के लगे थे सो भी  
 अब न रहे सो इस काम को जितम हवरी कारो जंगार भी लोगों को कर देना कि हर रुख न

कटे व सूकी लकड़ी काम राज में आवे और बलीता जैसी बोले जिसके ठेका के रुपये  
 से जगार में कटे और बीयाली निगरानी करता रहे . तथा बाजे गाम में श्री श्वांगिया  
 जी या किसी देवता का श्रायन है जहां बोरडी वगैरह के रुख बन रहे हैं क्योंकि लोगों  
 को यकीन है कि श्रायन काटने से नुकसान होगा सो ऐसे होता भी है . ये देश जोग  
 नी पीठ कही जाते हैं चुनांचै : देवी व ६४ योगनी ५२ बीर व भोमिया जुमार व सिध  
 सामिया की समाधे व दलीफ कीरों की कबरे व रामदे पाबू हरभा गोगा वगैरह २  
 केथान हरगाम में ५ दस होवै हीगे . अलावा इसके सम्बत ४१ से देहाती लोगों  
 को समझाया कि त . की पियाई हर साल लेकर सहाजोग में रखो सो जबही कहत  
 साली हो त . खुदा वो तो नीवान वढे और गरीबों की गुजरान भी होवै . तथा घर मकान  
 की छत नलीयां की व अच्छे जमाने में घास की कीटु जरूर बनावो . और खेत का धोरा  
 बांधो ही व दरखत लगावो व गाम में घर बंधे ज्यों बरतन रखो . ऐसी कई बातें कही हैं  
 व हाकिमों जिले को लिखी हैं मगर जमाना अच्छा आने पर हमेशा हू पूरी कोशिश  
 रहने से तामील होगी ॥

**नकशा बीडयाने जोड की बीह कहते हैं जो  
 सरकारी रखवाल हो**

नं. क्र.	नाम जिला	नाम जिला	नाम जिला	नाम जिला	नाम जिला	कैफियत
१	जे.	जैसलमेर	१ से ५ उत्तर	कराह	१२	सेवन
						सम्बत ४ से राशत बेला खर्च को ये जोड की या सो बडे फायदे व आराम हुये . राज में घास खरीदने से लोगों को आधे मोल

						मिले है ऐजडी वौर रुख धने से सब जी के सि
						प ठो फीलों के चार का सुख हवा अवमन शा
२	ये	से	चोत फी नीह		ये	है कि राज में पास कटे सो उठाने बाद हो ले से वर्षा
						होने तक शहर का माल चरने को सावक बमूज व
३	ये	मूल सागर	२ पश्चिम बहला		ये	लाग बीह का ले कर जेठ वई में पानी पीने काना
						लक्ताया जावै तो बहुत तरह से सब काम लाहे
						चोत फी दी से बारस होने से शम ईने बाद का तिक सु
						दी १५ त अघोर ते भारी पालावे फी भारी लाग १)
						रूप यामें अघोर चौ धरी वौर को छूट भी है व बांग
						का १५ त चे ल १ २ ॥ कुल १५ त है सो ऊपर
						लिखे बमूज बहोने से अगो ज्यो १०० ॥ त से ऊपर
						होगा २० राज में पास कटा कर हर साल का लार
						जी दुब ॥ या जावै जो कहन सालों में काम भावै
						मूल सागर का बहला में बागां के सर्व को पास
						कटे ने बाद लोगो को बिला लाग छुट्टी होती है
४	ये	धीयो डाई	७ दक्षिण सीर		सिबई	की
५	ये	सागां एगा	८ पूर्व सागां	४	सेवन	पास कटे सो उठाने लोगो को छुट्टी बिला लाग
						होवै है ॥
६	स्वामा	स्वामा	१२ पश्चिम की लू	२	सेवन	करा हमें नही होतो यहां से पास तबेले जाये फर
			नैकतु रिया			छुट्टी लाग नही ॥
७	सम	सम	१५ ये त सम	३॥	खनह	कोट के सर्व व कभी तबेले खवाई जाने बाद बिला
					लगसा	लाग छुट्टी

८	खुयाला	खुडयाला	२० पश्चिम	लाखी	२	खिवाड़	रे
९	देवा	देवा	६ उत्तर	देवा	५	खिवाड़	
१०	रे	पनुध ३ गाम	७ उत्तर	ऊपरला	४	गविया	ये वीह सिर्फ घोड़ीयां के चरने को है जिस साल घास
						संघका	यहां नही हो तो दूसरी जगह जहां अच्छा घास
							हो घोड़ियां भेजते हैं तथा इस के नजदीक में घास
							कटा कर काला भी बनाई जाती है
११	अ.		७५ वा	खरीमा	८	खिवाड़	ये ८ ही वीह कदीमी पके हैं लोगो के माल
							ने की बुट्टो हो जब लाग जो दाल कहते हैं
१२	रे		रे	बटीया	२		जिस की सरह मुनासिब वक्त याने मैं १
							से ३ का १ रुपया व गाय बैल ७ से ३० का ५५
१३	खामा		८५ नै	कुन	८		छांग १ का ५५ नगद व १ दिन के बिलोना
							का घृत १ जोटी ऊन १ वेडो जट की लेते हैं
१४	रे	खामा	११ रे	हरजि	३		सो १० जनावर की गाय के हिसाब से नकद
							ही लेना चाहिये घृत ऊन जट नही लेना
१५	रे	दामोदर	रे	सोन	१॥		आमदनी वटीया की तो दा ॥ राज श्री केशरी
							सिंह जी के नेरे बाकी खास तबेले या खज
१६	रे	रे	१० रे	कुछां	२		ने जमा होती है खवाला ३ बीयाली शाने
							ठके दारथे अब घोडा सुधा को तन बाह मिल
१७	रे	सिपुल	८ नै	मुहारे	२॥		ती है ॥ खिवाड़ का वाजिब है कि इस से घोडा
							रीना व बछे राद ध हो डते है खवादा भी जो
१८	रे	देवी कोट	१२ पू	अ. बी.	५		वान व गाय खरीरि न्यापे घृत ज्यादा होता है



१८	जे.	वासनपी	६२९	सिंग	यहां तो लाठी-ठाकुर साहेब की घोड़ी वैसे ही गाम लंगोला में राज्थी मान सिंह जी की घोड़ी या रहती है *
----	-----	--------	-----	------	---

## जिकर चौपाया

**दफे १७** थक सरल्लों की गुजरान भीमवशी की पैदा पर है और इन वरसों में बवा इस कामन रखते भी बहुत है परगन सहारागढ़ में महयिकम हो तथा ठाकुराण श्री केशरी सिंह जी की तबुज्जह्व को शिश से नसन भी उमद हो गई बुनाचे माहेय का मोल ३० रुपये से ७० रु० तक था वह कंहावत यो कि जीता वेचो या मरा अब देलें ज्यु काम नें लेने से मोल भागना हो गया तथा बैल भी लदने व हल गाड़ी लायक होते थे सो अब सरकारी थाड़ा वगैर इका रखा लायक होने से बाजे जोड़ा रुपया २ दाईसों की होती है और गाया भैंसों की थाड़ा राज में बधने से छत बैल हजारे रुपये के होते हैं और ऊंट निद्रायत उमदा सखसन परगन सहारागढ़ - घोटड़ - सम में थलीया जो कद्दावर कम लेकिन तेज रौब व मज्जिव बहुत होते हैं कीमत ६० रुपये से १५० रुपये तक व फिराहुवा ४ या ५ सौ में बिकता है सिंध के अमीर दस ग्यारह सौ भी देते थे सिफत चलने की थी बड़े हजूर श्री गज सिंह जी के वक्त में कोकवान नामी ऊंट जेसलमेर से जोधपुर १४० माल चार पहर में जाता उस पर बैठने वाला भी एक ही सख्या मिथी नाम नामड़ा था और मलंगोपा नामी ऊंट पर मुहम्मद फेरणीया रल्ला की त्वाल में बली दादरी तक जो २२ कोस है जाना व रोटी साकर पाँच छः घंटे में पोछे आता था इस चाल के फिरे हुवे ऊंट को अमीर व रईस भी पसन्द फरमाते हैं क्योंकि कितनी ही मज्जल हो चाल नंदी छोड़ता तथा अब भी पाँच छः घंटा में ४५ कोस जाने की तारीफ निषवत ऊंट की खान फैजुल्लाखा की मारवाड़ रपोर्ट में लिखी है व ऊंट भी इलाकः हाजा

\* बुद्धिमान दारुण पैदा होने के कारण ही की अजिसे व हन से सर्दार भी थे पोकरन व कुरसाहब के व हकाने से जेसलमेर को लून के गंधी भन्नु जसलमेर की कोसने इसलादी गान मे आकर लीकाने की फोज को रसीलता रल्लाई कि भागने ही गनी

१०० दादी का माहायये ॥ नः सुरल्लो ॥

गाम राजगढ़ के बाकुर अन्नूपतिह के सीढ का था वसवाड़े बाकुर मजकूर शते  
जीतकर सो जन से पीछा जोधपुर आया . जब वह ऊँट खान मोसफ ने बड़ी खुसी से  
खरीद लिया . अलावा इसके सर्करी व विसनोया के सीढा का ऊँट कदावर व खूब  
खान व तेज होते हैं ॥

**घोड़े** . ख . देवा के खूब सख्त व असालत में अजइर हैं व चलने में तेज व  
मजबूत बहुत होते हैं . चुनाँचै : श्री जी साहब सम्वत ३० में डूंगरपुर परनी जन  
पधारे जब इन्हीं घोड़े ऊँटों की सवारी चार दिन में अबूजी पहुँचे थे तथा खेत  
देवा की एक घोड़ी परेहित इन्दराज जी से जोधपुर में खीची वसतावर सिंह जी मां  
कर महाराज सर श्री प्रताप सिंह जी साके घोड़ा साथ ४०० रुपये की सते कर  
देड़ाई ओडेढ घंटा में ४२ मील पाली पहुँचने की तारीफ़ रपोट जोधपुर व सफे  
१३ दर्ज है अलाहानुलयास ख . खुईयाला हरराज सर खरीगा उपरला वगैर  
भी घोड़ा का खेत बहुत ही अच्छा है ॥

**खीड़** करह को कवियों ने अबलही कानली बन कहा था सो सही हुवा कि  
अब हलाँ पैदा होते हैं . चुनाँचै : एक हथनी के दो बच्चे उमर : तीन साल में पैदा  
होते . जब दूसरी हथनी मंगवाकर इस बन में छड़ाई जिसमें एक के तो बच्चा मादा  
पैदा हुवा . व दूसरी के भी होगा . श्री ईश्वर नाथ जी लेखें ॥

चौपाये पर श्री बाकुर साहवां की तो तबुजह थी ही . कि अच्छा चारा में माल को  
रसाना व दत्त मसाला दिलाना व हर साल तीन चार दफा शिकार वगैरह के बहाने  
पधारकर नजर मुवारक से देखना वगैरह रतदबीरें कराते थे के राज में घोड़े ऊँट  
खरीदने वंघ होकर फरोड़ा हुवे . सो मात्र हिन्दुस्तान में जाने से मशहूर हो जावें सम्वत  
१४ में चैत्र के मेला में भेजाये भी थे और शव भी श्री जी साहवां की उमर दराज हो  
सात सहाह तकजू फरमाते हैं . मगर देवना मना है . वखशिश सो गात के दिये हुवे

दूसरे सुल्कों में जाते हैं। साधारण लोगों के ऊंट व बैल व घेदे बंकरा बौयारी लोग खरीद-  
कारिके ले जाते हैं। जिनका मुमा मायक नकाशा में है॥

## मालजी सालियाना की लाग है व खडोटा

**दफे: १८** जमींदार कोटखार के महार १५७ रुपया व रंगगढ़ के सालत २७ रुपया  
में २२७ रुपया व म्हाणियां के छूट व खुडयाला के कोहरे ४३ रुपया व देवन की के देवन  
३७ रुपया व कुट्टी के जंर १७ रुपया व सम के भइये ५७ रुपया हैं। सो छः साल के बाद  
जब ही अच्छा जमाना हो खांडवारस नुनावेधा वगैरह रकमां मिलाकर रुकके मयादी रखा  
४ महीने के लिखावे हैं फेर जानोत लोग नात्र घरे की गाये बैल व १ सांढ १ भैंस की दो  
गायें व १० बकरी मंडा की १ गाय मुमा करं रुपया फारते हैं। ऊंट व घोड़ा रु पर नहीं खोएं  
कि खेड सुहोम में नोकरा दें हैं। रुपय कजेये शये ६॥ के म्याद तक दाद पक्के ७॥ के जो  
चलन है लीये जाते हैं। आंग साहकार लोग रुकके लेने ये सो कच्च पकाई व जीमण  
३७ रुपया पीले ७ रुपया व खर्ची सुदवगैरह मुनाफा वोहराते ये सम्बत १६०६ में शा  
फज श्री चचासंह तो व महता मालमचन्द जी दीवान राज जो इससे बाकि यें रुक्का ले  
कर सय मुनाफा शाप नहीं रुला रंज में जमा कराया जब से राज में जना होता है  
इन वर्षों में भवशां ज्यादा व धने से रुपये भी बधती होते हैं। ताहम भी ७ साल में की  
गाय आठ ७ आने से कम २ आध आना तक वराड पड़ता है। और इलाक अहावलपुर में  
हर साल इससे ज्यादा तणी के लेने हैं। लाग मुनाफा वगैरह कुल चीरे माल के सम्बत  
६ में १५१७२ रुपया व सम्बत १३ में ६३३ रुपये सम्बत १६ में २२६५३ रुपये व सं  
२६ में २६३५७ रुपये व सम्बत ३२ में २६५८५ रुपये व सम्बत ३८ में ४३५४४ रुपये  
के हये शायन्द ह ज्यादा हो हीगे

माल भर लाग इलाक गैर में बैठे भी माल भर देते हैं। सो कहत साली वगैरह में वह  
माल ले आवें तो खडोटा नहीं लेकर मदद खातर रहती है। मगर कई बरसों से वदनीयती

के बाइस रुपये कम भरने से बकाया ज्यादा होने सम्बन्ध के बाद ३८००० रुपया करीब  
 तो राज के का १० या १२ हजार साहूकारों के होंगे . तथा जमींदार जामोतों से बौहरा  
 के आगे सर्त थी कि आसामी निकेड के रुपये जो हिसाब नहीं हुआ है तो नये माल में  
 भर दे यही सम्बन्ध ३२ या ३८ में हुआ . और कोई सरदार बागी माल भरु का माल ले  
 जावे तो फी गाय १० रुपया व ऊंट सांड एक के ४० रुपया माल में राज से वसूल दिये  
 जावें . माल ब्राड ने जमींदारों को बुलावें जब मोहरा के जामोत मूगर खां को अम्ल  
 ५१ पाच १ थान १ भेजते हैं . व माल भरु लोग जब तक शहर में रहे बल अम्ल  
 सब को बसके लिखें जब श्री जी साहिब के सलाम कराय जामोतों को पिरोया व देकर  
 कुल खर्च हर कोम के चौर में भर लेते हैं . कोम मगलीये जो जमीन राजड़ों को देने से  
 जमींदार नहीं जिससे माल की एकज पटोला का जब ही ब्राड हो नजराने के १२ ऊंट  
 की कीमत १२०० रुपये पक्के और दूजी लागे ऊपर व मजिब हैं . तथा मुहार के  
 त्वर उ . सिपुल व हाड़े के खालत मछे व मुंदड़ी के जावध भी माल भर हैं परन्तु सिपुल  
 से तो सालियाने के ४४ रुपया व मछों से १५ या बीस साल में छोड़े से रुपये का चौरा  
 करते हैं . और मुंदड़ी की जमीन थोड़ी सी व सम्बन्ध १४ में हजूर गणेश दास जी को बख  
 शी बदले में मेडी की जमीन दीवी तो भी माल का हिसाब बाकी ही है . यह रिवाज बंध  
 करके भूषी वरसात या तणी व गैर ह जो ही मुनासिब हो तजबीज करनी वाजिब है . कि  
 सब को आराम रहे व सफाई भी हर साल हो जावे . यह काम पुस्तों से नथमल जी पास  
 है . तथा माल भरु व छोटे भूमियां से राज में हर साल फी ब्राग दो जनावर लेते थे सो  
 वाघालीये के तो नकदी रुपये बरसीत के समूल किया व चैवालीया जी वाल खास तब  
 ला ताल्लु के पडदार ले आते हैं . खड़ोटा जो खडचरा इलाकह गैर की मवेसी पर लग  
 ता है कि इलाकह सिंध में चोमा से क्रीडकी होने से मवेशी इलाकह हाजा में लाते हैं  
 सो कातिक वदी " तकर रहे तो गाय दू का ५ रुपया व होली तक रहे तो आधा फेर ही लेते हैं .

\* याने दीवान श्री मोथा मलजी जिन्होंने वहुत वरसों तक पहिले आवकी वकालत की और फिर देश दीवान हुये पुस्तें  
 से वज्जारत का हौदा इन्ही के खानदान में है और इस तबारीख के बनाने वाले ये ही महाशय हैं ॥ मो . मुतादल्ली

इसमें महीरादी में मूंगरखा गांव १०० व मुवाको ५० न खालतेरे में मूला को ८० की ला  
ग बूट के सिवाय फी टोला ७ रुपया हक जमींदारी का में कुछ हक कामदार का भी है  
और कोट देवा वगैरह में जमींदार को हक नहीं देकर कामदार ही लेते हैं व परगनः  
तणोट के टोभा पर माल रहता है उसका खडोटी जाम ग्राम दख्ख लेता है सो जाम  
से लिराली पा है कि हिसाब में भर लाय जावेंगे कुल पैदा ज्यादा ३०० रुपये  
वरुम ५० रुपये कहत में कुछ नहीं औसत फी साल १०० रुपये होगा इस काम  
पर विसा मंगन मल या कोई जावे सो ताल्लुके के कामदार साथ माल की गिनती करके  
रुपये ले जाते हैं किसी साल मालानी मारवाड वगैरह से मवेसी आवें है तो रजपूतों  
को माफ जाट पल्लीवाल वगैरह लोगों से लाग वक्त मुनासब ली जाती है सम्वत् १५  
में रजपूतों ने जाटां वगैरह का माल बिपाषा जिससे सम्वत् ३४ में तलासी में माल  
जाटां वगैरह का सावत करके खडोय जिसपर वेईमानों ने बदनाम किया कि हम  
से खडनग लिया खैर सम्वत् ४१। ४४ में माल भरु लोग इलाकह मारवाड मल्लो  
नी से जाटां वगैरह का माल बड़तसा लाया व डक़ार ही किया तो भी खडोया नहीं  
लीया ॥ इति शुभम् ॥

## दरियावहकड़ावश्रीतेमडारयजी

टिप्पणी: १८ किसी जमाना में हिमाला के पानी से दरियावहकड़ा जेसलमेर से ज  
१९ कोस से गढ़ मरेट तक चौड़ा चलता था सो लेख तो नहीं मिला दत्त कथा है कि  
दरियाव के वाडस ईलाकह माइ में जा बजा पानी की इफरात से गुलवाड होती थी  
कि निसानी बड़त से गाम में पत्थर की भारी घानीयां निकम्मी पड़ी हैं तथा दरि  
याव की जगह वीरान जंगल उ पाली में बाज बाज जगह रेत उड़ जाने से सीपा सीगोटी  
या वगैरह मिलने से अनुमान दरियाव के चलने को होता है

तथा दरियाव के सखने का असल हाल तो ज्ञानीजाने मगर सुना है कि शायद ग्यारह  
 बारह सौ वर्ष होगा एक चारन मामडीया जमाना के त में दरियाव पार जहां अश्वरह  
 ते धे जा रहा ७ बेदी आवड आदि जो सकती थीं उसरों की बदनीयत समरु चील हो  
 कर बाप को साथ ले उड़ी सो दरियाव सोसन करके जेसलमेर से ७ कोस दरियाव डूंगर  
 पर आते ही छोटी बहन अगाड़ी डूई सो खोह में एक राकस को पकड़ कर फेंका सो  
 नीचे गिर मरा जहंगोडा की घुरसे पत्थर पर मौजूद है - दूसरो वहिनों ने पूछा किते  
 है पासब दिया कि मड़ा है - जिससे तेम डाराय व मुल्क माड से माड धनी आनी व डूंगर  
 पर थान से डूंगरे चिया नाम कही जी सो नाग के ७ फन पर ७ कन्या रूप से दरशन  
 देती थीं फेर पुजारी गोगली भोवे हुवे सो डरने से बलुद्री का दरशन होवे है - वीका  
 नेर महाराज श्री राय सिंह जी यहां पर नीजन पधारे जब दोनों राजे दरशन को गये  
 महाराज ने बलुद्री पर संका करी तब नाग के फन पर दरशन हुवा था - और कई  
 बातें चमत्कारी की बिरव्यात हैं जिसमें बाजे २ मोका पर लिखी भी हैं -  
 तथा यू भी कहते हैं कि अडोड का बंधा बंधने से दरियाव इस तरफ चलना बंद  
 हुवा - जब बहुत सी जमीन निकली सो सिंध में तो रेशाल वहे लोड वगैरह होने  
 लगी इस देश में पानी से खडे ये जिससे खाडाल वही इसकी एक सारवी है कि  
 वल वह सी हकडो - तुरसी बंध अडोड सिंध में उसी सखडी वहे मंछी अर लोड।  
 १ ईश्वर जाने कब होगा - तथा सिंध की तबारीख में यू भी लिखा है कि दरी  
 याव मोठा महाराज शहर अलूर के किले के नीचे बहता था दलूराय के जुल्म से  
 एक सौदागर की फारियाद पर खुदाने हदा दिया सो रोहडी भक्तर के बीच में बहने  
 लगा - इस बात को भी अरसा ऊपर लिखा व मूजिव हुवा है ॥

**देश की पैदावार व दस्तकारी चीज**

**दफः २०** खाना व चौपाये वखेती व जंगल में गूगल गूद फलोस भुट वगैर  
का हाल तो मौका मौका परलैखा ही है तथा बाग में शॉव नारंगी अमरुद अन्नार  
सीताफल रायग खारकां बेर नीबू जाबुन जमीरी करंग दाख सहतूत केला सूफ  
करेंदि गूलर सेजरा खाखरा मंहरा रायडोडी बादाम वगैरह फूल बादव  
छोटी रशाल सेलडी सांठा संकरकन्द खरबूजे मकीयां वगैरह वगैरह जो पानी  
की कमी से पेड़ व फल होते तो कम है मगर जो लोग दिश्वरो में रह आवे है सो कहते  
हैं कि यहाँ की चीजे बहुत ही उमद रह है खास कर मिश्री आव जो एक फकीर वरक  
न बाले ने श्री अमर सिंह जी के वक्त में लगाया सो ऐंसा तो कहीं नहीं है।

तथा उसी फकीर ने एक पेड़ के तकी का लगया सो फूलता तो गाहे गाहे है परन्तु  
निहायत खुसबूहदार होने से किसी ठिकाने रईस या नबाब को सो गांत भेजाते है  
उसी फकीर ने जाते अमर खाव पर नाराज होने से पानी कम कर दिया।

और मालीया के वाडीया में साग पात के सिवाय खारका व थाज उमद रह खास  
कर भोजे लुद्रवा के वेणखु का थाज गुणकार भी होता है सो साहब लोग वरईस  
को भेजते है।

सन्वत् ४४ में जनाब स्जीडंस फौलट साहब बहादुर व महारजा श्री प्रताप सिंह जी  
साहब ने खजूर के सहस्र पेड़ लेजाकर व फेर ही भगवाकर इलाक हजोचपुर में  
रुई जगह लगवाये है मगर इसके फल तो नर मिलाने से अच्छे होंगे तथा  
जानवरों के चमड़े तो सिंध को जाते ही ये अब हडडी भी जाने लगी चत भी बहुत  
उमदा परगन रह सम जैसा तो कहीं नहीं होता होगा।

### हस्तकारी

सिलावटों की कारीगरी की सिफत तो पत्थर के काम में लिखी है वाकी हर एक कारी  
गर अपना अपना काम करते हैं मगर तारीफ ज्यों नहीं हो पस की कमल एक अर्ज की

जो हजार गाम वरमसर में एक शरव बुनता था सोही मारा गया - दूसरों को तसल्ली  
 व लालच देकर समझाया परन्तु काम नहीं कर सका - धोती जोड़े व दुपटी कम्बल  
 वगैरह बुनते हैं सो दिशावरों में बहुत जाते हैं - लुहार चकमक का कड़ा व कलीया  
 न मोचना अच्छा बनाते हैं - खत्री की रंगत आल मजीठ की सिंध अनारकोट को जाती  
 है - व गाम सागड़ में जाजम भी रंगते हैं - कोली मुसल्मीन व चमार देशी सूत के  
 रस्ते धोती जोड़े पाग बनाते हैं - ईलाकह प. में कमी लोग ऊंट बकरी की जंट व भेड़  
 की ऊन से बेरी बोरे व सतरंजी खड़ीये बुनते हैं - व और लोग ऊंट की सजाई तंग  
 मोहरा मोहरी गौर बंध वगैरह उमदा तैयार करते हैं - व मौजै नोरख में एक जना  
 सूत की दरी वगैरह भी बुनता है - गाम कनोई लुद्रवा मोहनगढ़ विकमपुर के सूत  
 र ऊंट घोड़ों के पिलान अच्छे बनाते हैं सो सिंध वगैरह में जाते हैं - गाम शेखासर  
 व खूहड़ी में कुम्हार मिट्टी के वर्तन पोकरन से भी पक्का बनाते हैं कि उसमें ताँवे  
 पीतल के वर्तन जैसा घतर रहता है - गाम भू. भोपा देवी कोट के भील मोसम सरमा में  
 जमीन से शेरानिकाल कर हलकासा बारुद बनाते थे सो अब सिंध में गये हैं - गाम  
 भिसड़ा में चमार मोची चमखड़े की कोथली जो थई का काम देवे बनाता है व खास  
 शहर में मोची व गाम मंडाई में मेघवाल - चमड़े के डक्के व थही व घोड़े ऊंटों का  
 साज पर कसीदा रेशमी व कलबत्त वगैरह का अभी २ अच्छा बनाने लगे हैं - और  
 कारीगर मंजूरों की तनखाह फजर सुधां देनगी ७ रुपया थी सम्बत् से सिलावटे  
 वगैरह किराची जा रहे देनगी फजर सुधां ॥३॥ आने ६ पाई गजर की अर्थात् ॥॥ अभी  
 शहर में और राज में निस्फ और दूर भेजना हो तो भत्ता मुनासब वक्त वधा देते हैं और  
 ईलाकह जात में सरह मुकरर नहीं - खारा चूना का काम आगे बहुत ही पक्का था  
 कि वाजे अंगनाया वटीपां वगैरह जो पुस्तों का है नये से अच्छा है - ४० वर्ष से यह  
 काम कच्चा होने लगा - इस वास्तः पिलासतर जो बिलायती चूना मंगा कर इस्तेमाल



भी कर लिया अथ शंगनीयां. टांका वगैरह बनाये जावेगे. लागत भी कम है. क्योंकि  
हिस्सा नदी का बालू मिलाकर गाग खुं काम से लेते हैं.

## बोली इल्म इन्नर

**दफे: २१** बोली-शहर में जातों जात मे प्राब्द सिंधी पंजाबी थे क्योंकि वहां से  
आये व दुकानें कमाई भी वहां ही की थीं सम्बत् १८६९ से पीछे लोग हर ४ तर्फ  
मुल्कों में जाने लगे तो बोली भी हर आदमी की जुदा जुदा खाने जो जिस देश में रह  
आया वहां के शब्द मिलने से मिश्रित हो गई है. इलाकह जात में जो परगनह  
जिससे पड़ोस है बोली भी उससे मिलती है. तुनाचै: परगनह लखाव महाज  
लार में मलानी घाट व माड के ३ ही शब्द मिले हुये हैं. परगनह सम व सहागढ़  
घोडड़ का सिंधू मोरपुर बैरपुर से व खारा व तनोट सिंध महोर व डहर से परगन  
किशनगढ़ खयली बहाला नाचना सिंध वहावलपुर से गास बुरसलपुर विक्रम  
याने परगनह नोख का सिंध वहावलपुर व इलाकह बीकानेर से. परगनह  
बाय व सीहड़ इलाकह मारवाड़ से परगनह लावी परगनह पौकरन से तजील  
है तो बोली भी उनसे मिलती है. और परगनह जेसलमेर देवी तोट फतहगढ़  
खाभारामगढ़ बाराहा देवा मोहनगढ़ में देशी बोली जात जात की जुदी जुदी  
हैं.

## इल्म

बिलकुल ही कम है हां खास शहर में कोम ब्राह्मण पुष्करना में कई व्यास संस्क  
त व कोम महाजन व औरही ब्राह्मण वगैरह जो पेश साहूकारी करते हैं हिंसा व  
किताब काम चलाउ पड़े हुये हैं और देहाती साहूकार अपने काम लाग्र कुलिस  
पद लेते हैं. व कोम चारों व सेवकों में बाजे बजे कविता डंगली दोहे गीत वगैर  
सीखते बनाते हैं. तथा बाजे दूसरे लोग भी कका बारह खड़ी पद कर ऐसी ही

जमसकीहमगर २०० टावर्तिकालपर फरफर माला है चुनने राज के छोड़ने नम एसे दो पर पर हवन अफनी आराम देवे धर्मारी समर में जमस नम आराम  
 नमसकीहमगर २०० टावर्तिकालपर फरफर माला है चुनने राज के छोड़ने नम एसे दो पर पर हवन अफनी आराम देवे धर्मारी समर में जमस नम आराम

चिढ़ी बांच सक्ते हैं और जागीरदार भोमीयां तो पढ़ने को ऐब व औरते पढ़ने को  
 अशुभ समझती हैं फारसी अंगरेजी का तो नाम ही नहीं था अब अहलकार राज  
 के पढ़ने लगे हैं व दिल से चाहते भी हैं परन्तु रिवाज व पढ़ाने वाले कम हैं श्री  
 जी साहबों की उमर दराज हो बिलफैल तो मंदरसा जिसमें सम्बत ४९ से लड़के  
 साहूकारी हिमाब सीखते हैं और अंगरेजी फारसी पढ़ाने वाला भी रक्खा है बाजे  
 लड़के पढ़ते ही हैं इस काम को तरक्की दी जावेगी कि सब तरह का इल्म लोगों  
 को हासल हो और ऐसे ही अस्पताल में वैद्य हकीम रहे सो लोगों को दवाई मुफ्त  
 मिले तथा मन्दिर तालाब सांमीया वगैरह धर्मा दे के काम व शहर सफाई वगैरह  
 सुधारने के लिये शहर के मुखिया वगैरह लायक आदमी कमेटी किया करे इस  
 बाबत पैदा व खर्च वगैरह को तजबीज बिचार रक्खी है मगर बड़ी हो कमायत  
 है कि ऐसे कामों को शहर के लोग दिल से तो क्या समझने से ही ख्याल नहीं  
 करते हैं जिससे उम्मेद नहीं ताहम भी श्री दरबार में ३००० रुपया साल का खर्च  
 वैद्यों हकीमों की तनखाह व लोगों को मुफ्त दवा देने का मंजूर किया है तथा दो चले कच्चे  
 भुज भेज कर टोका लगाना वगैरह का काम डाकडरी का सिखाया सो जारी है  
 बाकी इस देश में अम्ल व गुल्ल बड़ी भारी रवाई थी व है जैपुर के मुसबबों से  
 काम तसबीर व अगयस का व भुज की भी खाजी से काम फोटोग्राफ का हजरी  
 सालजी को सिखाया मगर ऐसे काम को कोई समझते ही नहीं सेबक लख में  
 को मुमारे भेज कर काम छापा खाना का सिखाया सम्बत ४२ में भाद्राडा १३ से  
 मतवै माड नाम रख कर शुरू कराया परन्तु कोई को चाह भी नहीं व पानी का  
 नल मंगा कर बाग में लगाया सो न मालूम कल में बल है या क्या परन्तु काम नहीं  
 चला ऐसे ही घड़ी व राग पेटी वगैरह कला का काम बढ़ावा तो २० रुपया तन  
 खाह का कारीगर बुलाया कि यहां के कारीगर को काम तैयार करके सिखावै

अंस १८८८ ई. अरबी में जेसलमेर गये कोई सरकारी मंदरसा नही देखा ॥ ४१ खास जेसलमेर के कारी  
 जेसलमेर का जो कीमती पत्थर निकलता है उसमें रंग दीमियां किस्म की रंग पत्थर पाया गया जिसका पोबलुवी  
 थोपाफ का किंडोमन पत्थर मौजूद है अगर यह निकाला जावे तो रियासत को लाखों रुपयों का फायदा हो ॥

सोभीअम्ली आलसी बठोव हैं : ज्यू ही कपड़ा सीवने की कल मंगाई सो निकम्मी  
 पढी है जिससे दूसरों कले आटा वतिल वगैरह की मंगानी बिलफैल मुल्त वी  
 रक्ती : पैमायस के काम के वास्तः एक सरखा को बुलाया कि गामों की हद बंधी  
 व देशका नकशा बनावै ताकि सरहदों का जो भारो चखेड़ा हर गाम का जरूरही  
 मियना है सो आसानी से फैसल होकर कई काम राज व लोगों के फायदाके  
 अटक रहे हैं सो निमत जावै : व इस काममें कई लड़के भी हुमियार होंगे मग  
 र बिपयारी अम्ली था सो डेढ बरष में १०७ रुपये वेहक खागया : ज्यू पंजावी  
 लुहूर भी खा जावेगा : दिशावर के कागज कसीदा साथ आते जाते थे सम्बत  
 ३२ में जनाव रज़ीडन्ट कर्नेल पोवेलट साहब बहादुर की सलाह से परोहित  
 गिरधारी लाल फलोदी वाला से डाक बिठाई थी फेर सम्बत ४४ चैत्र वदी से  
 सरकारी डाक जारी होने से काम ही बढ़ गया व लोगों को बड़े ही आराम फायदे  
 हुये साहब मौसूफ ने कहा कि डाक के साथ राज का सवार रखना होगा जवा  
 व दिया कि इस देश में चोरी धाड़े का नाम ही नंही है और जो डाक में कुछ हो  
 जावै तो हमारी जिम्मेवरी है : अलावा इसके कई बातें दूसरा मौका पर लिखी  
 गई हैं : उन्नाए जरूर नही ॥\*

## प्राहरंखाश व देश में इज्जतदारों व बड़ी काम का हाल

टफे: २२ जो कि : भाटी व सोढे तो उमराव व सरदार हैं ही : ज्यू ही वीरता  
 व दातारी में नाम किये चुनाचै : जंरुन आली : डाकुरों का : सो : सुक्या भावी तो  
 वाल किया वारोतरे जागा जतन करे मोटा की धा मूलचन्द : ११ नर नाडीया  
 नीकन कनाले ओखी जे परा : मूला मन महाराण : कइखे बिल्यो कल्याण उत

नू नहुता तथ मूलजी प्रधान राजने डाक के साथ सवादेना नामें जरू किया जिसे रज्य एक बडा खर्च उदाने से  
 सुगयाह्यनुशफनी आम्स सेरे साकि अकेला हलकारा जंगल विधावान में लाखे रुपये का माल लिये हुये  
 चलाजा तावे और कोइ प्रसताप पुढुम हता साहब के इन्तजाम की खूबी दें । मो मुगदशली

। रा. तथा बाहु ठाकरा का दो साल माल अलंग सेती बाहु धारी चहोडे वरते नहीं  
 माशो इक मेवो शाहनशाह सोडे । १। सो. अमी नजर अर आर महीयत दावे  
 मिथरी. नाडी साकर नाख. सरवत की धो साल में । २। ज्यू ही डंगरी. ठाकरा  
 का. सो. भगुपारस भेट कवि लोहा के चन किया मसरा आखर नेट की कुंरा भाटी  
 करे । १। अलाहाजुल व्यास सब के है ऐसे ही सोदा का. दो कीरत वीरियां काह  
 ला. दत विरियां दोहा. परनी जे सारी पृथो गार्ड जो सोदा । १। याने व्याह में गावे  
 हीगे कि सोढे सारो खोन कोय. तनोट के ऊन डों का जाम व सिरायां का जमा  
 दार भी सरदारों व मूजब है व चारन रत्नु पाद बाट तो थे ही अब कविराज भी  
 हुये. अलावा इसके मुसलमानों में ज्यादा ह. आदमी तो म्होर व बहादुरी में  
 राज डंगोर इतवार भरोसा में व भरे व कंधारी सिपाही है. तथा मुसाहबों में  
 महेश्रीयां में दावरी सुंता जो १००० वर्ष से दो वान यही है. व ब्राह्मण पुष्करना  
 में. परोहित व्यास आचार्य थानवी. व ओसवालों में. भोजा सुंता व सिंहवा  
 सहा. मुहा. कि कुर्ब काय दे बकिरीयावर आही रान अजहद है. तथा रयत  
 शहर में ब्राह्मण पुष्करना व ओसवाल महेश्री तो अब बल है ही. मगर  
 ब्योपार में भारिये भी रंग भर खेले हैं. ब्राह्मणों में परोहित व्यास आचार्य विस  
 केवलीया. पणीयां थानवी बड़े नामी हुये व क्रीयावर नफसील जैल किये.  
 १ लख भोज १ व्यास लाल गाम लुद्रवा. व सहस भोज ८ में १ व्यास घेरु २ घड  
 सी ३ रनछोड ४ बलदेव सम्वत १८२७ में ५ लाल सम्वत १८४० में ६ जेठ  
 मल सम्वत ० में ७ परोहितां सेवाराम सम्वत १८५२ में ८ केवलीया मूल  
 चन्द मयाचन्द सम्वत १८३६ में. व पंच परबीयां में १ व्यास वल्लभ दास २  
 उदैराम ३ किशन दास ४ केवलीया इरादराम ५ परोहितां बिहारी लाल सं.  
 \* में ६ नन्दराम. सम्वत १८७२ में ७ गिरधारी लाल सम्वत १८३२ में.

८ जोसी श्रीरामगामडामलेसम्बत\* में ८ श्रीका हरवंश सम्बत\* गाम कालो  
 १० भागवन्द ११ किराडू गंगाराम १२ पणीया खडूमल सम्बत १८२३ में १३ विसा  
 चन्द्रसेन सम्बत १७०७ में १४ मुत्तलाल से १८ ८६ में १५ आचाजे नन्दलाल से  
 १८ ५८ में तथा जोसी साचोर में हेमराज जोराज वदेश बोहराहुवा नरहरको  
 सहस्रभोज बबडत न्यात करके फी मनुष्य २७ रु० दक्षणादिय बाद ८ लावरु  
 महतेजी खोसालिये अफसोस है कि तालाव को सेवाय पानी देवा भी नहीं रहा।  
**पुष्करने.** घर १२०० मचे ७०० शहर व अमरसागर मूलराज सागर व गाम वहा  
 लेडाभलेनव ८४ में २३ हैं. १ सुचन परोहित रड्यानी गजा २ टंकसाली उ. व्यास  
 ३ विसा ४ आचारज ५ केवलिया ६ जोसी बदल ७ पणीया ८ हरस ९ किराडू १०  
 रामदे पानवी ११ बोडा १२ कल्ला १३ लुगांनी गढडीया देरासरी १४ श्रीका १५  
 बुरा १६ बांसु १७ वहु १८ व्यासडा १९ नै पारा २० कपटा बोहरा २१ उपाधिया  
 २२ तिवाडी २३ कीया अता. इसमें परोहित लखुवीरे व व्यास तीथिर्मा बाकी  
 सब लोहडी तथा चौधरी परोहित धुडे ५ केजने ५ व्यास १ अचारज १ विसा १ केवली  
 या २ हैं न्यात को सिंधी में मस्तान कहे हैं न्यात समधी लिखत सब की सलाह से  
 व्यास भोपत लिखे सो परोहित सिरयत पास रहे व राज में काम पडे तो साह ३ परोहि  
 त व्यास व लोडी की शाट कर दें. वरोठी श्रीसर वगैर न्यात होय जब सांगी दिन  
 शहर में नहेतरी व ४ गाम में चिढी भेजे श्रीरलहोडी वाले १ दिन पहले थिर मे से  
 ७ जगह आगन्या लेवे. परोहित में १ वरसा को साथ ले २ जेठमलजी की कोटडी  
 ३ वलाणी के श्रोटे ४ जगाणी देवचन्द के ५ गोपा की वहाली ६ डाडानीया के कूह  
 टे श्रीर ७ व्यासा की छपरी तथा गामो वाले आगन्या चिढी के सिवाय १ जंठलावे  
 सो परोहित सिरयत व व्यास भोपत चडजावे तथा दरवणी लफसी पर छकडया १  
 फदोया खा के सीरे पर ३ ११ बुंदी जलेदी पर ७ आने से ३ रुपये तक हो गई.

दक्षिण निसरावा देवे जिसके जाति भाई वदे जगर गनायत व सच्चे हेतु नहीं लेवे और संगपन कितेक नखांसे मोद व खुसी से करते हैं मगर बड़ी ही कभायत व शर्म की बात है कि सगाई करके मिलनी बात भात दाली तदपि फेरे न पड़े जितने कोई फरीक सगाई रखे या बोड दे . ऐसे ही बेदा गोद ले दें कि चाहे जर फेर दे . यह बुरी रस्म बन्द करने को कई बार लिखत भी कीया परन्तु कुछ भी न हुवा स्या कितेक नखांसे संगपन सदा से होता है . नखांके नाम नीचे सीधा मोदवा लों की वचोकडी सदे का है॥ इति शुभम्॥

## श्री साहबालों

मैं साहबने की अकल पूरी श्री जामुको काम बहुत किये जिनके मन्दिरों की तारीफ देखने लायक मकानों में लिखी है . राजा साहा महेवे नगर से ताने पर सम्बत् १४८४ से आया जिसके जदानी है . वीदेसाहा की चोर्धर्य दरवार में बैठक साहा का लकव पाया और कान्बवा धरमान सेदाई में नाम रक्खा कि मोड बंध व धिर रुड़ाये का काम अटका नहीं रक्खा . व थिरुसाह ने लुद्रवा में मन्दिर वीदेसाह गढ़ का पठा बंधाया एक सख्या पठा से कुजी धसता वहाँ सो सोना की हुई थी थिरुसाह जब अहमदाबाद में गुरांजी वखाण बाचते धर्म लाभ कहा तो सावका पूछा किसको कहा गुरां बोले जेसलमेर का धर्मा सेठ विमान बैठे बंद ना किया तथा सेठ गुमान चन्द जी के पाँच बेटों ने राजपूताना में सानी नहीं रक्खा चुनाचै : उदैपुर जेसलमेर कोटा इन्दौर कालावाड रतलाम अजमेर वगैर में हुबेली मन्दिर बाग नोहरे वगैरह मकानात को ५० लाख रुपया व गास मेरा मल का व्याह बीकानेर करने में ८ लाख रुपया वासिंह तीर्थ से व्रजामें १३ लाख रुपया लगे और सम्बत् १८६२ में पीछे आये जब श्री जी साहब सामा पधारने का कुर्ब वसिंहवी सेठ का खिताब दिया . व खुस हुवे कि ऐसी रैयत है दानमल को

को पैर में मोना व सवाई राम को जीव मोती लाल को पग में पोली सायं वगैरह  
निवाजस करी. और उदैपुर जसल मेर कोठा वगैरह के राजा वों को जनाना सुधां  
कई दारह बेली पधरये व जैपुर तो पपुर महाराज से भी सेठ काल कवयाया-  
हर साल ६ लाख रुपये का मामूली खर्च था. फेर आपस की फूट से वह ठाठ न रहा  
आप आपका घंथा करते हैं संवत् १८२८ में हिम्मत राम जी ने अमर सागर के  
मन्दिर व बाग की प्रतिष्ठा करी जब पैर में लंगर वैडी इनायत किया. तथा न्यात के  
घर आगे नियादह ये श्रव ३०० सिंह में २० नखा की मोकला ४८ में ४९ है पाडाये  
य १ जंचला में शंख बाले चामे १ जंदाणी मयाचन्द साह २ थिरपाल साह ३ गो  
ठी हेमराज शिवदान व वरदिया में ४ मोजा ५ तेजसी. मावक विजैचन्द ६ ताते  
७ सुखमल व कूकड चौपडा में. दासोत तो ७ नरपाल ८ रायपाल खताणी ९  
कपूरचन्द १० जालमचन्द ११ सुणीया वर्धमान १२ लालाणी जीवरज. चम्म  
जीवदास फेर कु. सिंहवी १३ अचलदास. सरूपचन्द. सूरतराम १४ चोरडीया  
तो धराज १५ परमेचान हवरिया जोगी दास व तिशाणी १६ हेमसी १७ साहवसिंह  
१८ श्री श्रीमाल जसरूप मनो ननरूप १९ मालु धर्मसी फेर सम्बत् २० अमर सुगरी  
या गुमानचन्द २१ वंडेर लकव काजी देवचन्द २२ वेगड ब्राजेड अणदचन्द स्यापा  
लो नीचला में २३ पारख वर्धमान २४ बाफणा गुमानचन्द जी व भनसाली २५  
मूलचन्द २६ विजैचन्द २७ गुलेखा तिलोकचन्द २८ कस्तूर भनसाली कस्तूर  
षंद भं. थिरसाह २९ धाडी बाल नरसल पुरीया जोधराज ३० वोहरा खूबचन्द  
३१ सें. नवरीया भवानी दास व वागचार ३२ लाडवान ३३ मनरूप ३४ वकीठा  
री थिरदारमल ३५ वोहरा फूलफगर वहादुरमल ३६ गोधी ३७ राखेचा पेमच  
न्द ३८ न्हाटा लुणीया मनरूप ३९ बुई ४० सामसुखा राजसी ४१ फौफलीया देव  
चन्द हैं. इसमें मुलीये नौधरी तीन नं. १. २३. २४ तथा नव कहीजे सो १२ हैं.



नम्बर १। २३। २४। २। ४। ७। १३। १६। २१। २५। २७। २८ इसमें मुंनोमो ४। ५।  
 १३। १४ बाकी सब साहनामे हैं। बेटी का विवाह दिशावर से ही आकर जेसलमे  
 में ही जकरें। और बेटे का चाहे जहां करो। की आवर सादी में बेटे का बाप बरोही  
 फ १ सेरू ७ तक माढ़े के तर्फ में वहेचे और सामी वत्सल का जीमन करे सो  
 सेवगा सुधा जीमावे व बर थोडा करे तो सामी बखल के दूजे दिन पारनेत में भी  
 दोनों को जीमावे तथा गमी के कार्य में लावण खाड ५ एक चाऊपर ॥ आने गछ  
 में ॥ आने न्यात में और मिश्री व ७ रुपया करे तो शहर व बरमसर रूपसी देवी  
 कोट डांगरी याने ५ गाम न्यात में देवे। व मर्द को ओसर करे तो सेवग भी जीमे है।  
 तथा जीवरस खमावे सो खाड मिश्री की एवज नारेर बाकी रीत लावन ज्यू तथा  
 मोकल व दीप में नाम अबल जंदागी का होवे है। न्यात समधी लिखत संग क  
 हे ज्यू काजी लिखे जब जंदागी नं० १ सही करके कागज ही रख लेवे। राज में  
 ओस बालों से लिखा वट करावे तो भी सही नम्बर १ बाबा ही जेकरे है। व राज  
 के धुवे के ३२५ रुपये वर्ष एक का व देव नूता नजराना व गैरह काम पडे जब होवे  
 जरा सेठ गुमान चन्द पर बाड लिखे जंगामे आध बुद तथा राज के १०० रुपये में  
 बाड महसिरियां पर ७० रुपये इना पर २५ रुपया पडता है। और सगार्डे खोल  
 साह हवा बाट कोर्ड फरीक बदले सो २७० रुपये ओलज भरे ॥

## महेसरी

भी सानी व सब तरह लायक बल्कि क्रियावरी में जियादा है। मगर गुमान चन्द  
 के बेटा जेस्व नाम करने वाला नहीं हुवा। हा एक जन्मलपुर में शेवारा म खुसाल  
 चन्द वाले द्रव्य पात्र तो है और वहां रुपये लगाये भी परन्तु यहां कुछ न किया चै  
 न उम्मेद है क्योंकि यहां आने सही नफरत रखता है। श्री जी साहवा बडा पने से  
 धणीयाप फामाय यहां बैठे को सेठ का खिताब व हर तरह से तसल्ली कराई



जवसम्बत् ३२में नामकी दुकान करी, खैर-  
 न्यात केआगे घर २७०० ये बहुत से दिशावरोये वहाँ ७५०० हैं सो भी राज व  
 न्यात की रोज बराबर मानते हैं और यहाँ कुल ७५०० घर शहर व परगनात में बड़े  
 लोड़े दोनों बड़ा व २७॥ याड़ा के हैं : खोपा ७२३ मोकना ८५ थी अथ ६६ हैं मुखी  
 या सेठ १२ में ६ मड़ा नामे का १ पाटवी सूरदासेन दोय गाय दानी थहारू दास  
 व अखैराज के १ घुरका १ जीवरजोन ये ५ तो दावरी व धीरन हैं और ६ ही साह  
 नामे के दो विशानी कांनजी व मदसूदन के दो कोल किशन दास व भेघराज के  
 १ जेठा १ वीमाणी इसमें कांनजी किशन दास मुख्य हैं - लिखत महे जरवगैर  
 मे १२ साह डूबे हैं : व दोय हीज हों तो १ मड़ा नामे की पाटवी व सहा नामे की का  
 ताती मदसूदन का करे व कागज ही इसके पास रहे हैं सो अब मुनासिब है कि  
 महाजगत् वहां श्री लखमी नाथ जी के भंडार में रहे तो सब को वाकफ़ी इनकी  
 क्त पर मिले - तथा मोकना के नखा का नाम जो मौजूद हैं अगड़ी अंक और  
 जो नही है जिसके सीधा लगया है - व धड़े की निशाती बडे की दो आने छोटे को  
 १ आना रखी है - १ भूतड़ा चाना - २ भूतड़ा - ३ भठडनी कानेरिया - ४  
 नावधर धीरन हीसांनी - ५ भसूदा - ६ डांगरा - ७ वायती कपूसा - ८ डागा  
 नहार - ९ चांडकजसेरा - १० कावा हरडवेगंज है - ११ मुंघडा नागोरी - १२ भा  
 रांतरा - १३ रुडी कोठारी नीवेरा - १४ मालपाणी चोला - १५ कुचोलीया मु  
 काती - १६ डां - गोलकीया - १७ डां - पशारी - १८ क - नवीरा - १९ रा - गुंगावाला  
 - २० रावापेचा - २१ रा - वगड़ा - २२ रा - दलाल - २३ रा - गेहरोया - २४ लधडजा  
 वधीया हरेदतश - २५ वा - मशानिया - २६ टावरी कुलधरिया - २७ तापडिया कंधारी  
 - २८ चां - सांवलजुवारी - २९ नधीरन - ३० सां - चती दासरा - ३१ मल्ल - ३२ सां -  
 लोहरीरा - ३३ सां - भ - लरीरा - ३४ भ - धलोणी - ३५ भा - देदीया - ३६ फोफलीया जांव

जीया मोटलरा = १ सेठी मुंगार केले हेमराजरा = २६ करवा खोली = ३० सा० उजल  
 = ३१ रा० सांगडीया = ३२ नहवरीया = ३२ से० साढडा - ३३ घूतगंगूर = ३४ हरकंठ  
 हडकुटीया = ३५ ह० आप - ३६ म० सहेरा = ३७ म० मुहणा = ३८ मल्लकोठारी - ३९  
 गलरा ढेढीया = ४० धूत = ४१ रा० काजलराईसराणी = ४२ लोड्याढक = ४३ सांग  
 भईया = ४४ म० ढेढीया सांगडीया = ४५ मा० गघरा = ४६ म० जेठा नरसंगरा =  
 ४७ रा० सातल = ४८ म० दुठी - ४९ खासट गोरोरीया - ५० डा० कुलधरीया जो सहा  
 गडीयाहे = ५१ क० देवानन्द = ५२ चा० वजाज चांदाणी = ५३ मंत्री - ५४ सोनी  
 वसुबीया = ५५ भा० लोलाणी = ५६ चा० जोगड़ - ५७ रा० लीलाणी = ५८ झांवर - ५९ भ० दि  
 लवारी = ६० रा० लारीवाला = ६१ म० हाथीरा - ६२ खा० दुर्जन = ६३ मा० परवतरा  
 न्यात समधी कीयावर था येजब तो सब नख वखाड गले व न्यात जीमे वलाव  
 एनालेर वहेचे जब १२ सेठों को खुलावे है - और सूवसोज माणात नखताणा  
 दौरेह में जीमे तो सब न्यात जीमे तो सब न्यात पण बुलावे भाई पडोसी गना  
 यात भायां में वहे चणा व बटा भी ओसर से आधे है - तथा सगाई खोला बदले  
 सो ओलजमरे - त्या - ब्रह्मभोज फलबंध वगैरह करे सो १२ सेठों से पूछकर  
 या पुष्करनो के चौ० पांसे आगनिया लेवे - दक्षिणा महानामा में चांदीस०  
 १२ सेठों जब ब्राह्मण से लिखाया कि बिला दक्षिणा रोटा दाल जीमन में उजर  
 नहीं करे - तथा कीयावरों पर ऊपर की लाग व वहेचना हद से परे हो गया है  
 व और हीरोति जो जो बेजा है सुधार होना जरूर है - तथा पोकरन के महेसरी  
 यां ने कच्चा मनुष्यों की मूठी बात पर गोसाई वसे कहकर लिखत किया कि जेस  
 लमेखेयों नहीं देंती ज्यूही कलोपी के भा० ओसवाल महेसरी कहते हैं कि हम  
 पोकरनिया के पीछे हैं और धारियों ने सदा से संगपन करना किया इसमें तीन जग  
 ह इजाजत दर बड़े शरमन्दे हैं - यहां से सम्बत १८०१ में कामदार व १२ ही सेठ -

पोकरन जाकर हर पन्द कहा कि पुत्तों का त्तादने मत दोहों परन्तु नहीं माना।  
 पोकरनेयां इलाकह हाजा में रहने वालों ने सम्बत १५ से लिख दिया था कि लि  
 खत पदा वगैरह या जो सलमेर में रहकर दुमारा से बंधेंगे - संगपन होना चाहिये  
 सेठाने कहा दीक है - पर यूँही रहा - वहाँ के लायक पक्ष पछिताते हैं कि बोले  
 ही बीकानेर जोधपुर लगये पिण द्वाइ सौ लड़की बंधती हैं कैसे निकलेगीं कि छी  
 तरह लिखत फटे तो ठीक हो - तथा यहां वाले वात कहते हैं कि पोकरनियां से छु  
 ट्टी हुई तो जो सलमेरी या जो दिशावर से सिर्फ संगपन के लिये आते हैं सो ही नहीं  
 आवेंगे देखिये अब क्या हो ॥

## भाटीया

भाटी राव श्रीतणु जी के छठे कुंवर जाम के वंश का महाजन आगे यहां २७००  
 ये अब १२५ हैं मगर सिंध कच्छ बम्बई में हजारों घर बडे ही द्रव्य पात्र व साहूकारों  
 में नामों आगी हैं और शास्त्र विलोकन करने से धर्म के पावन व सुधारे में स्व  
 प्रेम का अभिमान हट भर रखते हैं चुनाचैः उच्चम वरन हिन्दू व कोम भाटीया व  
 जिस देश में वगाम का बासिन्दा है उनके भलाई व आराम फायदे के लिये वेशु  
 र रूपये लगाकर इस कूलां तात्त्व कूवा मन्दिर वगैरह रंकई पड बंध कीये व  
 कर रहे हैं इनके हर तरह की खूबिया लायक पने की सुनने से इस बात की खुसी  
 जियादे होती है कि भाटी वंशी ऐसे हैं - तथा संसार उत्पन्न होने से आज पर्यन्त  
 का हाल तरीया फत करने व अपना पने की निशवत् ख्याल रखने में कमाल की  
 गा है परन्तु मध्य का याने वंश भाटी से यह कोम पैदा हुई है असल वत्त में सुधा  
 र व नां मुज वगैरह का कुछ भी ख्याल न किया मालूम नहीं सब क्या है - हों गो-  
 कलदास तेजपाल के धर्म फन में से लखमी दास खीमजी की सलाह से एक कूवा  
 में जै जायन में बनाते हैं - अब यकीन है कि जै से कच्छ वगैरह देश में बासन्दा पने

हमारा बाड़ में जा रहे थे यन्त्रों की...

कह मारवाड़ में जा रहे थे यहां ही महाधोर हुआ कि १ दिन में दमन जने उ उलरी  
जब बिस्तर गये आरी शोह गाम झोला में आकर पल्लीवाल कहलाये फेर इलाकह  
हाजी मेहर ४ तर्फे जाने शहर से पूर्व ४० दाहिना २५ पश्चिम २५ उत्तर ३० कोसके बीच  
में जमीन खरीदी व हजार हज़ रुपये रजमें देकर मंगलीक कराई व हासल ही देना  
करके ८४ ग्रामों में २०००००००० सब जात के बसाये तथा धुंवा सरा आदि बहुत सी  
लगें यह खुदव ग्रामों में रही याँके सिवाय मोदी वोहेर वगैरह जो इनसे रोजी  
कमाते सो इजारा भरते थे तथा मकानात उमदा बनाने के अलावा खड़ी न बाज  
मुहार नावणी हर राजसर सोनरा कुक्का खरीगा बरीया लाणोला काठोडी सीतसर  
लोथीयर इसाल द्रोगरा देवा ऊपरला मुढेली सृजप टेड्या धनवा चोगीणा खी स्वर  
बलासा साजीत मनचीतया वगैरह नामी मौल जो खड़ी न उन्नाल शाख  
पेदा होने के सदहा कब्जे किये और अन्न रेही वगैरह मनवार व ऊद्र छोड़े शस्त्र  
वगैरह सरदारणी का ठाठ बदानी वीरता भी बडे जागीरदारों ज्यू रखते व सादी गरमी  
में वे सुमार रुपये लगाते थे जमीन का हासल व जिन्स का महसूल व लागार क  
मों के सिवाय दुंड नजराने सुकरणे वगैरह हर तरफ़ से जो गाम काठोडी में सम्विर  
वनान पर वाहमी तक रासे ८४ हजार अलाहा जुल क्यास कीरोडा रुपये सिर्फ ज  
सीन ही की पैदावारी से रजमें दिये सोनकी विडी ये कहा जी ज्यू ही सम्प्रत १७६०

\* परमेश्वर का खेल है कि आज दिन उन्हीं पल्लीवाल अन्यवान ब्राह्मणों के गांसू में पड़े हैं और इनके  
मकानों पर उल्लू बोल रहे हैं कहा जाता है कि दीवान सालिमुद्दीन ने उनको उजाड़ा। ड० मो. सुरूपली

से १६०० तक उडकर दिशावरें गई कई गाम बीरान हो गये और बाज २ गाम में रहे हैं तो एक गाम बाय में तो सम्बत् १४ के बाद ६० अस्ती घर बचे बाकी तो मात्र गामों में इतने ही नहीं हैं वस इसके सिवाय क्या लिखा जावे कि इस देश से अन्न जल उठ गया फेर तो महा खलजी श्री रनजीत सिंह जी साहब राज ब्राजे थे जब से इन्हों के पीछे आने के बहुत ही उपाय किये सो अहंले गये कि बाज २ गाम में कोई २ आया भी पर रह सका नहीं श्री बैरागल जी साहबों की उमर दरान हो सम्बत् ४० बाद भला सादमी बास चतुर्भुज दास वगैरह को भेजाया और बहुत सी लागें माफ़ व कदर इज्जत बढ़ाने वगैरह खानों लिखाई जवाब में अरजी कागद भी आया कि जमाना अच्छा आने से हज़रतों मगर चार फाल से कहैत ही है सम्बत् ३ के बाद इन्हां के आने की उम्मेद पर जो २ लोग जाट बिसनोई सिंधी वगैरह २ आये तो दूसरे गामों पुरानों या नया में बसाये गये और इन्हों को इशितहार दिये कि अब भी नहीं आवेंगे तो दूसरे लोग बसाने जावेंगे क्योंकि श्री जी हज़र की मनसा मुल्क आवाद करने का है चुनाचैः कई बार दोरा करा के मात्र देश व गाम नजर मुबारक से देखे व हर एक को खात रखा हू तसल्ली श्री मुख से फरमाई यकीन है कि यह लोग भी आवेंगे और जमाना अच्छा आने पर दूसरे तो आवें हींगे॥

## हजूर

जो चले खवाश याने खाने जाद हैं श्री जी साहिबों की खाश खिदमतगारी के सिवाय मात्र कारखाने राज्य के शहर व परगनात में मुस्तफारी दरोगाई किले दारे व हवालदार बखीदार चपरासी कनवारिया बीआरी व सबार सिपाही खिदमतगार व घोरे का पंडव वगैरह की नौकरी देते हैं २५० घर बखीदार गौड़ वगैरह कई जात के हैं महा रानल साहिब के धमा व भाभा मो यही लोग हुये हैं श्री अखै सिंह जी साहिब के पास वाने नेन शोभा कानेन शोभा कई शोहदों पर थे अब भी अजीत मल तो शास्त्रा

कोलखानी का दरोगा है ऐसे ही श्री मूलराजजी साहब के पासवान खुसियाली का जीवनजी रामजी दासजी गकरों कहलाये व ऐसे कयापात्र थे कि जहां सूरजी रामजी जहां राजी मूलराज इनका बेटा खेतसी तौ कबर कही जाता और सतराम जगमाल वगैरह कोटों में किलेदार थे व पौते अब भी हैं व गणेशदास कोठार तबेला का दरोगा व कोशिल में भी सलाहकार था ज्यूं ही अब पौता बलदेवदास सुतर खाने व सोढों के वर्गों का दरोगा है तथा सालजी तौ नेकनीयत सन्तोशी याने येह सुराजी जी श्री जी साहिबों के पोशाक व धरान वगैरह खाश खिदमत बजाला कर के बास्त का नकशा रजी डन्टी भेजने व मुसब्बर व फोटोग्राफ का काम करने व वदेशी डाकरी का काम याद बाधने में अदने बीमार को भी नित्य देखने व तोप खाना सभालने व जूरराज का काम भी कोठार तबेला की दरोगाई का देने वगैर बहुत से काम करने पर भी फुरसत में दीख रहा है तथा श्री गजसिंह जी साहिबों ने नाई मालदान को हजरी कीया सो रसोड़ा व शराबरखाना व घाटों का दरोगा था ज्यूं ही अब पौता जेठमल है व खरीदार रामसहा का बेटा गिरधारी तौ औसारी व बागों का दरोगा व पौता प्रभू दरवारी है तथा कौम मजदूर भी हमाल काहार फरस नोबदार उस्ता चुनीगर भिपूती गाडीवान व ताइफा कलावत इमों भाडों वगैरह का दरोगा व तबेला में कई काम चमारों की दरोगाई वगैरह का देते हैं इनकी औरतें भी राजमें कठयानी व शहर में दाई पने वगैरह की चाकरी देती हैं॥

## कौम मुसल्मीन

परगनह नम्बर ७ सम में १७ नाचणा तक में जो लोग संधी कहाते हैं ३०। ४० वर्ष पहिले ऐसी इर्दिशा की बप्प खीपोरा खोलरा बोन मुर्दो खाईजै मुक्ता जुयादि - मोहि खाणहूं दो खाईजै कूझा पुरसों ६० नीर बले जिणरी खाए हले ऊंठ हाकजै इध पीजे अज्याए जीवता मनुष्य भूतों जैसा पशू पसमचा पंगररा - त्रिणदेश जन्मते जल

तवे रखे दोए धामण १ सो हूँ पे तो शव भी सुख पोस ही हैं मगर हर तरफ समाने रस्ता  
 लगाने वखातर परवाराण करने से आसुंदे होकर कपडे भूख सजाई वगैरह अच्छे रखने  
 के सिवाय शादी गमी में हजारों रुपये लगाते हैं जूही आदमी भी बहुत बध गये  
 राज में हजारों रुपये देन के अलावा खाल से की भारी फौज भी इस देश में काम के लिये  
 यिही लोग हैं तथा भारी कहात है कि नवेशी को अच्छे चारे में रखने वास्ते खाना इतना  
 तो घे हां कभी न देने को नीयत बद से इलाकह गैर में जा रहे ते हैं सम्मत ४९ से ठीक  
 नदवीर की गई हैं कि कई ती पीछे आये व दूसरे भी जमाना आने से आवै होंगे तथा  
 इन लोगों में बड़े आदमी का लिहाज व अहसान रखने की ऐसी मुर्वत थी कि खून  
 तक कैसा ही रुगड़ा हो भाई गनावत या भले मनुष्य मेड़ करिके मुदई से माफ़ करते  
 थे और कोई सरसा मुफ़ उधार मांगने को गोर में आया या किसी संधी पर शाफ़त है  
 तो हर घर से है सियत मूंज व बाली बेल व कुंद तक देकर हाजतरफ़ा कर देते थे सो  
 भव कमीना को कमीना के वापस अब नहीं है यह हगा हो गई है व डोल सिंधी दो  
 छाचो कुंम कडा केयो सायर मर गया तिर तो चांहा पांइ जी न कर सड बेया १ इलाक  
 हाजामें यह लोग इतनी कौम है माहोर मंगलीया खगड़ रंद वलोच भईया वंभरा  
 पतान लं चा जंग कौहरी रुग्गा गजू कलर कटा कुंनर खालत देवत कोटवाल चानीया  
 जांव च जोइया भुटा वहोड़ संमा से मेजा ही गोल जा फकीर जूँ जोजा नौ हड़ी मछा  
 लाइ धुकड़ सेख सय्य दटावरी सेख जादा धुनिया तुवर भटी आलीसर पन्नु मैन्  
 सोड़ा सोरा घोबेचा सुई कमी दरस लधड़ सर नायक मकोल वगैरह वगैरह जो  
 सिंधी कहाते हैं ॥

### अजायब बातें प्रतक्ष हैं

बाजे सादां लावय व बंगां नकरी भेड़ी को दिवाली से होली तक तस्याली करके  
 सादे चार महीने जंगल ही में रहते हैं यानी नहीं पिलाने और पास नीलान नूस होतो



गोवा भी पानी नहीं पीती हैं सो तो खैर परन्तु उनके ग्वाल भी सिर्फ दूध व खट्टा ही  
 पीते हैं धान पानी मुतलक नैस्त २ सायद प्रेत जून होगा गोव या कंग का आलम  
 कहाते हैं सो परगनह सम महाजल १२ सहागढ़ चोट डू तो इलाकह हाजा व परग  
 नह जिवाइ खैरपुर व परगनह मिठडा इलाकह सर्कार खाली में हैं मनुष्यों से अदृष्ट  
 वस्ती गौल व मवेशी व वहवार मनुष्य ज्यू है बाजे बाजे मनुष्य जो इन्हों के गडा  
 यत है सो इन्हों को देखे और दिखाय भी सकते हैं तथा दुनिया में भली बुरी वर  
 तने की कहे ज्यू होवै ही है और दूसरे मनुष्य या मवेशी पर बाया या दाव ठोंवियो  
 का लगे तो तुर्त या मुद्दत में बीमार होकर मर जावे सो उनसे मिलता है परन्तु उनका  
 गडा यत आकर फीणा नारवे उतारना करा के बचाय भी लेता है कहते हैं कि इन  
 के मालक परगनह सम गाम कनोई ख मिट्टी अला में रहे है ३ गाम छोडिया की  
 सीव में तो दिवाली के हीडे व अला में पाबूजी के थान पर दीवे और गाम नेडान  
 करालिया वसी में होलीगेवाउ दिखलाई देवे है सो कहते हैं कि मलीनाथ की  
 होली जगती है चुनाचै ठरडा के पोकरने काथल हैं कि जिस साल होली ज्या  
 दह होती है जमाना अच्छा व गामों में व आराम रहेंगे ४ फकीर सांध पोतो की  
 नवान से अवाज डुउ डुउ अहा हा सुनने से दिवाना कुत्ता बस्यल नहीं होवै व कांठे  
 का अस्तर न रहे जिससे इनको १५ रुपया व पाग थान सीरना तो राज्य से व फी धर  
 २ पैसा लोग देते हैं ऐसे ही चेचक टांकने में विरडी फकीर इलाकह हाजा में हैं  
 ५ देवतो के पस्चे व भूत भोमीये की बातें तो वे सुमार हैं ज्यू ही जोगी राज सिध व  
 फकीर वक्त वाले थे चुनाचै फतहपुरी जी ने तो जैपुर के राजे को जी थारामने  
 चूक किया उस वक्त अफसोस से कहा कि ऐसा डूवा व फकीर स्थल ने कु माली  
 गडा जो आगे किसी फकीर ने सुकाया था सम्बत १७ में मुकाम पर जाग के कु मीठा  
 करा दिया अला हाजुल क्यास हरयालपुरी लालपुरी खैमानाथ महरलाल वगैर



ये ऐसे जव नही हैं . ६ घास मधीया से नमड़े को रंगे सो मधीया जिसका चडस व  
गाय के आला चमड़ा की बरत से गोहड़ी कुं में डालने का मनाई पर ही २० पं के  
गामों में है . परन्तु गाम जरून जाली का कुं . देवी के नाम से माला सा पुं ६० मील  
है उसमें ऐसी मध्याई हो तो पानी थूक कर कीड़े से गंगा जल डाल कर गोवा करने  
से अच्छे हों . ७ सिंधी लोग पैदल चलने में कमाल करते हैं सांढा के पीछे न  
गालूम दिन भर में कितना पैदा करते हैं . कोहरी गोहू राम शाधमन बोन लेकर  
३ पहर में ४५ कोस सहज सगाव से चलता था ऐसे बहुत से हैं

## कलमी फौज

हफे: २३ जो कि पलटनों में रिशाले याने कवायद फौज आगे कभी नहीं थी .  
भट्टा सांढे वंगरह हिन्दू न मुसलमान देशी व काम पड़े पड़ोसी इलाकों के भी हाजर  
होते थे . श्री लूत करल जी के भार से पठान लाये जब से श्री अखौसिंह जी के अहद  
तक सवार पदल यही कंभारी बड़े इतवारी रहे . फेरखोसा जमादार साहब खों के  
सवार भी रखे . और श्री गर्जामिंद जी साहब उदैपुर से पीछे पधारते गुसांई भैरूपुरी  
का निशान याने पलटन साथ लाकर वेड़ा मुकरर किया ॥

## पलटन

गाने पैदल का वेड़ा . १ महन्त भैरूपुरी का वेड़ा जो गुरु महाराज का निशान सम्बत्  
१८०८ से है . महन्त भैरूपुरी २ सावतपुरी ३ सतावपुरी जो कौट विक्रमपुर से सम्बत् १८००  
में बरसंगा से खूब लडकर शूरति के साथ कैलाश गये ३० शूर्ति चायल होने के बाद  
निशान यहाँ आया . ४ गंगापुरी ५ खुमानपुरी ६ धीरतपुरी अब है . तथा गुसांई पदम  
पुरी हिंगलाज से आकर विलग वेड़ा किया था सो चेला परवारी होने से न रहा .  
२ मन्वदर सँडे खों पठान का वेड़ा किया था सो वेअदवी पेरा जाने से सम्बत् ८४ में

पठान अलीखान जीवन्तखान को जो उदैपुर से साथ आये थे संपा गया फेर सम्बत ८६ में कंधारीखान कोटा बाला को संपा इसके मरे बाद सम्बत ८८ में पठान मीरजी को सूबेदार किया था सोही सम्बत २ में मरा जब बेड़ा दूटा जवान बाघ सिंह के बेड़े में मारा है ३ बेड़ा सूबेदार मोहकम सिंह अजब सिंहोत पुरबिया का सम्बत ८९ चैत्र में हुआ मोहकम सिंह सम्बत ९६ में मरा जब बेड़े भाई केशरी सिंह का बेटा बाघ सिंह सूबेदार हुआ सो सम्बत ३६ में फोत हुआ जब से बेटा कन्हो सिंह सूबेदार हैं ४ अरदली का बेड़ा सिपाई कंधारी जमादार केशरी सिंह पुरबिया व जसगिर पुसाई सम्बत ९६ में हुआ केशरी सिंह सम्बत २ व जसगिर सम्बत २६ में मरे जब कंधारी जानेखान को जमादार किया सो सम्बत ४० में मरा बाद जं बगुलाखान है भोजी गोमट इलाकह पोकस्त के गोमटीये महोर नाराज होकर सम्बत ९९ में आये जब ५० नामा शहर व हकूमतों में नोकर रखे जं कवासी व कादुखान थे सो सम्बत २३ तक रहे फेर मतेही पीछे गये परगनह वायमें जो पहले से गाम व नोकरी में थे ज्यू ही हैं कप्तान पूरन सिंह पुरबिया बहाबलपुर से सम्बत ९२ में आकर बेड़ा भरती किया सो सम्बत ९६ में चोरियों की तोहमत से दूटी रसालदारखान जानेखान सम्बत २० में नोकर हुआ सम्बत २२ में बेड़ा भरती किया सम्बत ३२ में बेड़ा पेश जाने से दूटा दादूपंथी भंडारी भगवती दास का बेड़ा जोधपुर से आकर सम्बत ३० में नोकर हुआ सो सम्बत ३५ में पीछा गया देशी रजपूत अरदली में व पहलकारों पास वगैरह नोकरी में हैं परन्तु एक जमादार नहीं के कारण बेड़ा कानाम नहीं हैं जो पखाने व जेलखाने पर पहरे व शिकार कार में सरवबलोच हैं इनके हवा लदाखुदे २ बेड़ों से विलग हैं ॥

## रिसाला

सवार १ सिपाही कंधारीया पास तो चौड़े बागीर थे सो सम्बत ४९ से नहीं है पाइया

के पंडे बहुत काम देते हैं • २ सोसा-जं-साहबंखां के घोड़े शहर खास में व हकूमतों में  
 ये ज्यंही है परन्तु कम हैं • २ मिहूखां ३ पीरखां ४ साहबंखां अब हैं • ३ जं-फतह  
 सिंह शिख का रसाला सम्वत् ५ से है • फतहसिंह के मोरेबाद जं-बेदा विष्मसिंह  
 व भाई मशतानीसिंह है • दोनों के सवार अब हजरी सिपाही वगैरह यहां ही के रहते  
 हैं • ४ जं-मिथ्रीखां दरियाखांन का खोसा मौजै तखतावाद इलाकह मलानी का  
 रसाला सम्वत् १४ से सम्वत् १८ नकरहा • फुटकर सवार व पैदल देशी परदेशी शहर  
 व हकूमतों वगैरह में कई रहते हैं परन्तु १ शफसर नहीं के वाइस वेडा का नाम  
 नहीं है • शहर तनखाह पैदल सिपाही की चार या पांच रुपये व हवालदार के ७  
 से ७ रुपये व जमादार सूबेदार के १७ रुपये से १७ रुपये व सवार के ७ रुपये से ८  
 १७ रुपये व जमादार के १७ रुपये से ३७ रुपये तक महोने के हैं • और नोकरों का पेट  
 से नहीं ली जाती सिर्फ थोड़ी की वड़ाई से परवरस है • वक्सी महता रत्न लालजी॥

## अहवाल अशियाइनसा

### वशकुन

दर्पे : २४ नसा अफीमतो वड़ी वड़ाई है लखों रुपये का कोरा व मालवा से आता  
 है खास शहर के ब्राह्मण महाजनों में बड़े आदमी • बाकी सिलावयें के सिवाय मात्र  
 काम व सर्दार आदि देहात के मात्र लोग खाशकर पल्लीवाल तो इष्ट के बराबर मानते  
 हैं व कहते भी हैं वड़ी देवता के शरियो कंवर है तथा दूसरा मिले है तो बजाइ चाइथान  
 के यही मनुहार है और देवा पैदा होने व सगाई बिबाह व तिवहार मजलस यानी  
 खुसी में तो गालवां व गमी उदासी में कोरे की मनुहार होती है व रंज आमना वल्लि  
 बाल बैर भी कटाने में अमल पाते हैं व किसी गाम जाकर मनवार करी तो गाम वाले  
 सब तरह दिल से हाजरी करेगा व बीमारों में भी अव्वल दवा यह है कोई आदमी मुक्त

हो या थक गया या शकुन हलका हुआ या खींक उबारी खाई तो अफ़ीम देवें होंगे व शादी  
 गर्मी के बाद या सुसगर वगैरह कही जाकर आवे उससे अव्वल यही पूछेंगे अमल  
 कितना लगा वा बच्चे को भी ३४ साल तक देते हैं बल्कि बाजे बूटी का ही अफ़यूनी  
 है अर्थात् हर काम में यही मुख्य है अगर सोचें तो इसके गुण से औगुन कई दर्जे  
 बढ़ कर है कि अमली हमेशा दोनो वक्त बीमार व कम वेश देने लेने से कई तरह का  
 डर होता है शरीर में लवन खुशक व मगज हिम्मत घटै है वगैरह वगैरह कहा तक  
 लिखे जावें परन्तु इसके औगुण ही दिलों जान से यहां तक कबूल करते हैं कै रेजी  
 कमाने वगैरह फरजी कामों से भी यह अव्वल है हां निकम्माई में मनुहार में दिल लगी  
 व चोल चाल ठीक होवै है - तलाश करिके इस निर्धन देश में इतना खर्च लाहासल  
 बहर्जे कबूल करने का बाइस क्या है तो वाहीयात फ़ायदे बताये कि यह सती मर्दक  
 लड़ाई के मदद देता है वगैरह २ परन्तु मालूम होता है कि ला इल्म व निर उद्दम  
 आदमी थे और हैं जब कभी इल्म पढ़ कर नेक व बद का तमीज़ करेंगे व उद्दम में  
 लगेंगे जब रिवाज घटे हीगा जैसे मारवाड़ में घटा है - ऐसे ही तमाकू का बिसन  
 सबके है कि खाना पीना संधना व मनुहार का रिवाज हट है फ़ी घर व औसत ५ रुपये  
 का खर्च साल भर में होगा अलावा पैदा देश के करीब एक लाख रुपये की इलाक़ सिंध  
 व मारवाड़ व मालवा वगैरह से आती है तथा तरब का रिवाज कम है क्योंकि देहात  
 में तो पीते नहीं अरु नही किसी गांम में बनाने वाला है अगर सरदारों के शादी में पीते  
 हैं तो बीकानेर फ़लोधी पोकरन बारमेड से मंगाते हैं खास शहर में भी १ दुकान कला की है  
 व पीने वाला भी सिर्फ सुनार पातरियां व कई सिलावटे मजूर हैं राज के बुलाजिमों में राज  
 से मिलता है वह पीते हैं कलाल से ठेका नहीं है फ़ी दुकान पर राव प्रति दिन आध  
 या रवतिवार को १ सीता लेते हैं व राज में परी दे तो निस्फ़ कीमत से तथा चर्श का तो  
 नाम नहीं है भागव गांजा लाड़ी देवानोख औला लिधवा में होता है पीने का रिवाज

भोग शहर में तो व्यास भोजक बाजे ओसवार तौ हमेशां वाकी लोग मजलस मौका पर तथा  
गंजा अतीत लोग पीते हैं देहात में भुतलक नेस्त ॥+

## शकुनों कारिबाज प्रज हृद है

जो निषव महर्त से वद कर जानवरे का एतका दहै कि आपातीज को जंगल में जाकर देख  
ने से जमाने आदि साल भर में नेक वद का ख्याल कर लेते हैं और फेर किसी के कोई काम  
का मनशा डूँड तो दांत बार को शकुन देखेंगे जो दिल में ठाना बोही डूबा तो काम  
सिद्ध अगर सफर जाना है तो वक्त खानगी के दिन का तो अव्वल बायें तीतर खरचील  
अरु दायें पालं व हरण होने बाद दायें तीतर बायें पालं व ऐसे ही मंजिल के अखीर में  
पादि न छिपे दायें तीतर बायें पालं व हरण तथा बीच में दायें नाहर को उवेड़ा कहते  
हैं देखा तो अतीव शुभ जैसे राज्य का बचन परन्तु इसको पूज करके कई पहर उहरना  
होगा और एवी को बायें स्याल दायें कोचरी बहुत शुभ और वरखिलाफ रमाने हैं  
सो ठहर कर अच्छा सयुन डूबा तो चलेगे तथा जख या नाग या नीलिया देखा एत  
को नाहर या कोई बोला तो नहीं ज चलेगे अतीव नेष्ट है हकीकत में शकुनों जैसा  
फल होवै हीगा तथा जानवरे के देखने व बोलने में बहुत ही बारीकियां भी निका  
लेते हैं कि कौन सी दिशा में बोला वहां कौन बार है दरखत कैसे पर्या वगैरह र  
मगर सही ऊपर लिखा सोही है सिवाइ इसके घर से निकलते ही शकुनों का  
ख्याल रखेंगा कि कुत्ते ने कान हलाया या बिल्ली आड़ी फिरी या किसी ने छीं कर खाई  
या आदी जवान किये का ऐ दिया तो ठहरे हीगा और गीतरण वगैरह शुभ आबाज  
याने तोप का चलना नस्कार व चढ़ियाल बजना अच्छा आदमी सोमा आना वगैरह  
को शुभ समरते हैं तथा वसन्तराज की छाया को प्रवीन सागर में शकुन भेद लिख  
है जिसका खुलासा है कि चक्र के घेरा के ऊपर के घेरे में पूर्व आदि दिशा व पतियों

के नाम और नीचल्ले ७ घेरों में पती अपने घर है या किसी के पाहुंण है सो अब्बल पूर्व दिशा का पति खेडू दीत बार को ऐसे ही अनुक्रम बार से अग्नि रज पूत दक्षिण राजा नैऋत वैश पाश्चिम ब्राह्मण बायव बादशाह उत्तर भील अपने घर है अरु बाकी ६ दिन बिलोम गती से अलावै ईशान कौन के याने सोमबार को खेडू भील के घर उत्तर में पाहुंण इसी तरह सातों ही फिरते रहें और ईशान कौन को धीस ईस अचल है ॥

### फलाफलम्

दिशां वा के पती की जाती स्वभाव से व पाहुंण जिसके घर है उससे व्यवहार नम्र जब समरुना अर्थात् राजा के घर वैश है तौ ऐत की बात है अरु ब्राह्मण के भील विरुद्ध है अलाहा जुलक्यास तथा चक्र के घेरों में ओं क दिशां वा का १ पूर्व से ८ ईशान तक और बार १ दीत से ७ शनि व पती १ खेडू से ८ इस तक जानना सिबाइ इसके ८ ही दिशा के बीच ८ बिदिशाओं याने पूर्व अग्नि के बीच अग्नि और ईशान पूर्व के बीच में लोह की नदी तक ८ ही नाम चक्र में मये शुभाशुभ हर एक खाने में लिखा है अगर ऐसी जल्दी है कि बुरे शकुन होने पर ही उहर नही सक्ता तौ पढ़ना चाहिये ॥

### श्लोक

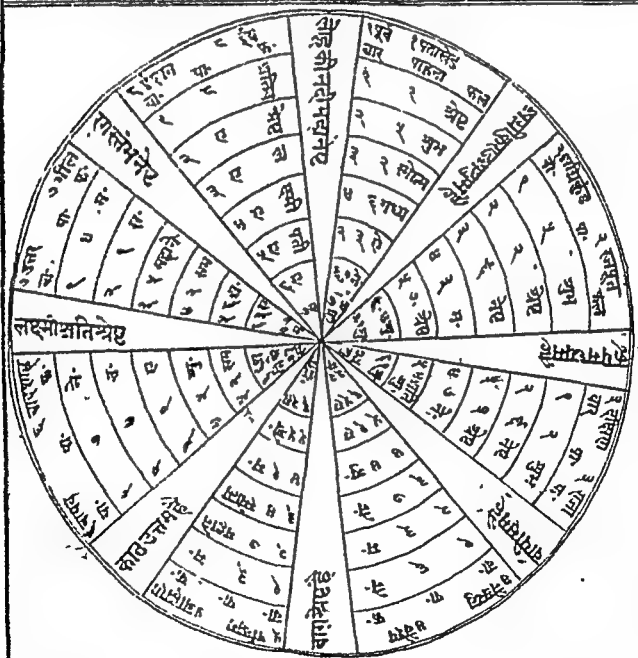
वाराणस्या दक्षिणे कोणो । करकुटो नाम ब्राह्मणः

तस्य स्मरणं मात्रेणः अप्रपाकुनो शकुनः भवेत् ॥ १ ॥

श्री ॥ जो कि रमल शकुन वली अनेक हैं परन्तु वैष्णव के अन्याश्रय नांही होने को गौस्वामी जी महाराज श्री गिरधर जी ने प्रस्तावली लिखी है कि सेठ पुरुषोत्तम दास के प्रश्न का उत्तर श्रीमद आचार्य जी महाप्रभु जी ने दीये ज्यूं ही फलाफल है सो अनजान मनुष्य से १५ तिथिन में ३ के नाम लिखाय संख्या में ८ का भाग ते बचेता अंक प्रमाण मन में चिन्तये कार्य की सिद्धी असिद्धी जानना

**प्रश्न १** दंडवर्त कीनो उत्तर आशीर्वाद दीनो सो कार्य अतिव शुभ ॥

**प्रश्न २** काशी यात्रा करोगे या नहीं **उत्तर** नहीं सो कार्य सिद्ध नहीं ॥ **प्रश्न ३**  
 वैष्णव काशी में आवै सो कहा करे **उत्तर** तोर्थ अज्ञान विधि पूर्वक करे सो कार्य प्रमत्ता  
 ध्य जानो ॥ **प्रश्न ४** वैष्णव दुर्गा देवी के दर्शन करे कि नहीं ॥ **उत्तर** हंसाप्रिय कहै सो ना  
 हो करे सो कार्य न होवै ॥ **प्रश्न ५** विन्दमाधव के दर्शन करे कि नहीं ॥ **उत्तर** पंचगं  
 गा स्नान करे करे सो बिलम्ब सिद्धी है **प्रश्न ६** वैष्णव पंचकोसी करे कि नहीं ॥ **उत्तर**  
 इच्छा होय तो करे आग्रह नहीं सो कार्य बनवा ॥ **प्रश्न ७** मेरे घर पधारिये वहां उतरिये ॥



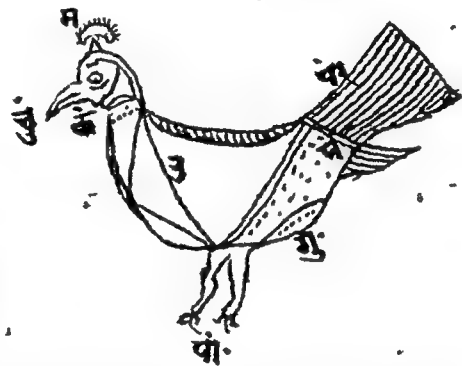
**उत्तर** अर्थात् सो कार्य तुरंत सिद्धी होय ॥ **प्रश्न** ८ वृजयात्रामें महादेव देवी आदि अनेक देवताओं के दर्शन करे कि नहीं ॥ **उत्तर** वृज के सब देवता बौद्धमं वै हैं सो जरूर करना ताते कार्य श्रम बिलम्बते होयगो ॥

तिथिन के नाम लेने से पहले पढ़ने का **श्लोक** त्रसुलोके सुयत् सत्यं यत् सत्यं वेदबादसु । पतो ब्रता सुयत् सत्यं तत् सत्यं मम दर्शनम् ॥ इति शुभम् ॥  
**चिड़िया के किसी जगह अनजान आदमी अंगुली रखे जि**  
**सके फलाफल का ॥ दोहा ॥ चिड़िया**

चंचल मुखं परे मरन करे ठे हो सिध काज ॥

उदर भोजन गुरु धनं मस्तक पावै राज ॥

जो सुकलीणी पांय पड़े तो पक्षी आवै आज ॥



**मेला**

**दफे: २५** दिशावरी ब्योपारी आने या कई दिन हज्जूम रहने का तो कोई नहीं नाम के मेले तपसील जैल हैं कौम ओसवालों का सुबह से सामतक बाग अमर सागर में १ कार्तिक सुदी ३ । दूसरा चैत्र वदी २ । तीसरा भादों सुदी १० को इन्हों की अर्ज खातिर से श्रीजी साहब भी पधारे थे । ब्राह्मण पुष्करना का बड़े बाग सब दिन बैशाख सुदी ७ व भादों वदी ७ व तलाव घर सीसर सांम का बैशाख सुदी ४ व श्रावण सुदी ४ व भाद्र वदी ४ व मन्दिरो में चैत्र सुदी ८ इसोड़ा का । महेसरीयां का बैशाख सुदी ७ श्रीगंगा जी का जन्म चुंधी के कुण्ड में न्हाय के अमर सागर आते है व भादों वदी ७ अमर सागर श्रीजी साहब भी अर्ज खातिर से पधारते थे । इसमें किसी को मनाई नहीं । ब्राह्मण व महेसरीयां का कार्तिक सुदी ८ अवला की पूजा मूलराज सागर का मेला था अब अमर सागर का है । व घर सीसर का फागुन वदी १४ शिवरात्री श्री महादेवजी के दर्शन को



श्रीजी साहब भी पधारते थे व बैशाख सुदी ३ नीलचास देखने जाते हैं - सरकारी मेले चैत सुदी ४ गनगौर की सवारी मये लवाजमा घड़सी सरझौर तारा अस्त हो तो मन्दिर पधारे तथा दसहरा का आहन सुदी अष्टमी या नोमी को गढ़ के चौवटा में शाम दर्वार होकर हाथी घोड़ों की पूजा आरती के बाद वकरे पाडे बंध होते हैं व सुदी १० पद्मबाजा से बाहर चौगानिया पाडानिकालने को खांडा की सवारी बड़े ही ठाठ से होती है व श्रीजी साहब या बाल तलवार से पधारे हैं व नजाक परगनह के हाकिम भी मये जमीयत खेडू आते हैं - शाम मेले घरसी सरअवण सुदी ३ हरियाली व भाद्र वदी ३ कजली का साम को तलाव भरा हो तो गाहे २ श्रीजी साहब भी पधारते हैं - व भाद्र वदी ५ तलाव महता सरकेशरीये कुंड का मेला महता अजीत सिंह जी तवाजः करते हैं - व भाद्र वदी ४ श्री गणेश जी का मेला तलाव गंगासागर का था - सो तलाव ईशरलाल जी के होता है - व माही भाद्र शुदी ६ तलाव गजरूपसागर श्री स्वागियांजी के दर्शन व सुदी ११ रामदेव जी का मेला तलाव गुलाबसागर व शुदी १४ रावत सरीयां के थान - ये बहू मेले तीन जगह सम्बत् १३ से हुये श्री बड़े हजूर पधारते थे - व भादो शुदी ८ सरण का मेला शहर से उत्तर ४ को - जहां सिद्ध जोगी की गुफा है - चमार लोग सब रात शब्द बो लते हैं - व चैत वदी ७ श्री सीतल देवी का तलाव देदान सर सम्बत् २८ से होता है - अबल तो रानीजी साहबा की तर्फ से पूजा को मये लवाजमा जाते हैं बाद कभी कभी श्रीजी साहब पधारते हैं और हर साल रजवी आदि सब सरदार मुसाहब पधारने से बड़ा हजूम रहता है महता नथमलजी की जानिब से तवाजा होती है नगारखाना व तायफा वगैरह के इनाम मुकरर हैं - केशरहिन्द का मेला माघ वदी ४ या १ जनवरी को तलाव गंगासागर सम्बत् ३३ से होता है ॥

**रवास कर दो मेले** - भारी हैं १ बैशाखी का इसमें अजीत लोग शहर व नजीक

मंडलके वैशाख शुदी १२ को जावे सो भंडारा व रसोई न्यात या किसी की होवै जि-  
 तने दिन रहे शुदी १५ श्रीद्वारसे व १ दिन फतेपुरी जी के ठिकाना की रसोई होवै  
 ही हैं व यात्री लोग शुदी १४ को शहर व देहात व मारवाड़ मलानी वगैरह के वहां  
 जावे सो शुदी १५ सुबह को ब्रह्मकुण्ड में जहां अस्त भसमी डालने वाले से ७० रुपया  
 लेने व हर साल कुण्ड साफ कराने का वरम सरके दाणी पर सम्वत् ४३ से हुक्म है  
 न्हायकर बड़े बाग में आ रहें वहां बहुत से लोग शहर से जाते हैं दिन भर आनन्द व ठाठ  
 रहता है एक हाकिम मये जमीन जाबते को साथ रहता है ऐसे ही भादो शुदी ८  
 रामकुण्डे को कई लोग जाते हैं सो शुदी को तलाब के लंगरी पर शहर से दूसरे लोग भी  
 गोगाजी के थान पूजन करके बड़े बाग में आते हैं इन दोनों मेलों का साम के वक्त तला-  
 ब देदानसर पर बड़ा भारी हज्जूम होता है यहां भी गोगा का थान है व लोगों को ऐत  
 काद है कि गोगा चौहान की पूजा करो तो सर्प नहीं काटेगा इसलिये हर गांव में गोगा  
 का थान व खेजड़ी रूख होवै हीगा ॥

## मुसल्मानों का

भादों शुदी २ नो हथे जोधों की कबरे व सिलावटे मूला की तलाब पर व शुदी को  
 सिपाही कंधारी वगैरह भागुरे गाम फकीर उवाया की जाल जिसके २॥ पत्ते खाने से  
 दिवाना कुत्ता काटने का जहर न रहे जाते हैं ॥

## मुतफारिक मेल

भादों वदी १ तलाब खेतासर पर महते सूरदास वगैरह व सलीया की डूंगरी  
 महते गौयदानी व तलाब सुदासर सुदा बिशानी व आवाण शुदी ५ तलाब सोनी  
 सर सोनारे व तलाब दर्जी आर्द्ध भादों वदी १ दर्जी तथा जेठ व भादों शुदी १३ या  
 १४ को मौजे लुद्रवा में याताजी के थान सी को देखने नहीं देते ॥

**परगनात में** माही भादों शुदी ६ श्री स्वागियंजी १ गाम भादीया में श्री भाद्रा

एषजी के थान जहां पोकरन फलों की वगैरह दूर दूर के यात्री भी आकर सड़ कड़ो चूने सोने चांदी के चढ़ाते हैं - ज्युंही मनोर्ष होते हैं - दूजे श्री देगरायजी के थान जसोड कर्मसे वगैरह नजीक गांमों के लोग आते हैं - व-जसोडा टीमे माव गांमों में थान हैं जहां गांम रके लोग पूजते हैं - ऐसे ही माही भाद्री शुदी गांम वायमें श्री भैरू जी के भी दूर दूर से यात्री आते हैं मगर रात्रि को नहीं रह सके - तथा इन वर्षों में वभूता सिद्धने बड़ा भारी चिमत कार दिखाया है - कि नाम लेने से सर्प नहीं काटता व पहिले काटे के खडी वंधने से अस्त्र नहीं रहता - इसलिये गांम चारन आला में कालीया नाडे थान पर मारवाड बीकानेर पोरवावादी सिंध वगैरह बहुत दूर दूर के लोग भाद्र शुदी ७ को यात्री आते हैं माह भाद्र शुदी ७ को श्री तेमडाय के थान नजीक गांमो वाले आते हैं - मौजे महज-लार से १॥ कोस तक रब्याले पर सहज नाथ की समाध फागुन वदी १४ को मेला में घाट वगैरह से बहुत लोग आकर चड़ावा करते हैं क्योंकि सोढे इनके कन्धी वध है - ठिकाने की तर्फ से सीरा परसाद सबको जीमाते हैं - गांम हद्दा घडी या पास काले इंगरे बीयां गांम जानरा में देवी मालण - वगैरह मात्र गांमों में कोई देवता या पीर वगैरह के थान पर पर माह भाद्र शुदी में गांव वाले पूजते ही हैं - गांव स्त्रीयां से १ कोस तक पनरासर इंगरी पर राहड पनराज नूरार के थान भाद्र शुदी १० खडाली पल्ली वाल वरहाड कुल वगैरह लोग आते हैं - गांव रामगढ़ से दक्षिण ४ कोस तक जीअदेसर पर जोगनीया के थान भाद्र वदी १४ मालत माव व महोर व वाजे सिंध के लोग भी आते हैं - ऐसे ही कोट खुयाला में जोगनीया के थान को हरे वगैरह पडोसी गांव वाले आते हैं ॥



जुम आला जुमार के थान तो कुबडी वगैरह में भी हैं परन्तु मेला गांम कनोई माह भाद्र शुदी १ को होते हैं ।



### श्रवमनसा है

कि मेले दोष को तरकी दी जावे १ तो कुल देवी श्री भाद्रायारयजी के भाटी जात जाये पर नये की जात देवै व श्रीजी की तर्फ से पूजा करने को पन्डा जैसे को भेजे जावे व जावने को

१ हाकिम मये जमीयत वहां रहें। बूजे वभूता सिंध के मेला में भी हाकिम का रहना होया- दोनों जगह ठिकाना भारी बना कर सब तरह लवाजमा का ठाठ बांधने वगैरह की तजबीज हिसाब सुधान्यारी लिखी है। इन मेलों में दिशावरी ब्योपारी व और लोग खरीद फरेमन वाले दूर दूर से आने को इशितहार मुल्कों में जनाव रजीडन्ट साहब बहादुर जी की मारफत जारी करना होगा। व मिति भी शुदी १ सिंध के व शुदी ६ श्री स्वागियां जी के मेला की रहेंगे सो ब्योपारी दोनों मेला साज कर शुदी ११ रामदेहो जहां हर साल आते हैं पहुंच सकेंगे। तथा सिद्ध के ठिकाने में पानी का कुण्ड या कुण्डे का व कु-वगाने व पुजारी रहने वगैरह के लिये सम्बत् ४९ में नोख के हाकिम को तजबीज लिखी भी थी परन्तु कहत सालियां से कुछ न हुआ। सो दईव की इच्छा होगी तो होगा। बिलफैल इच्छा मालूम नहीं होती॥

## रकशाल

कदीम से १ ही जगह श्री जी के महलों नीचे छाप लगती है। शिवका मुहम्मद शाही था सम्बत् १८१८ में श्री अखैसिह जी साहब जसोल से सोनी नाथा को कैद से छुड़ाया लाये उसने छाप तो वोही रखी नाम अखैसाही कहा। जब से रकशाल नाथा नो ५ घरो पास है व छाप खोदते भी यही हैं। नमूना छाप १८ फहिन्दी दूजे पासे  फारसी हरुफ हैं सम्बत् का अंक हिन्दी व छाप आधी लगती है तो भी बदमास खोटे बनाते हैं पूरा छाप को टिकड़ी डबड़ी चाहिये। व तोल में ११ मासे का कलदार बराबर  में खार जिया दे था ठाकुरां राज श्री केशरी सिंह जी ने खालिस चांदी का छपाय १० आने में चलाया तो लोगों को तकलीफ रही जब एक माशा काम करके पूरे १० माशे का रक्खा तो भी ब्योपारियां ने माल नहीं मंगाया काम बन्द रहा। फेर फी रुपये १ रत्नी खार मिलाने की ठहरी व राज की छपाई भी फीस दी ३॥ रुपया अलावः हक अहलकारों के ये सो छोड़ कर १॥ रुपया रक्खा था सो ही न रह कर ॥ आने रहा था जिसमें ॥ आने-

सुनारों को टांका जाय घड़ने का महनत वं नीबू कोयलों का देते हैं - इसपर भी व्यापारियों  
 लालच से खार बंधवाया सो श्रव १॥ या १॥ स्ती होगा । साहूकार लोग मुमाइ खानपुर  
 वगैरह से नीणाई चांदी की पांटे खुरीया गयल व शिस्के वार नग वगैरह माल मंगाते हैं -  
 वतुमार निकला कर मुसाहिबों ने हर जिन्स का निख उहराया है - फेर माल अच्छा या  
 हलका या नवी जिन्स आवै तो सब के रेबरू तपास कर के निख उहराते हैं - जुने रुप-  
 ये वजेवर कटकर नये रुपये व नये रुपये कटकर जेवर बनाते हैं - कलदार रुपये का  
 निख को हुंदाण या बट्टा कहते हैं फीसदी ३ या ४ रुपया बधती रहता है कहैत सा-  
 ली में जियावह - व कभी दोय से कम होता है तो साहूकार लोग ३ रुपया ले कर अखे  
 शाही छपाते हैं १ सुनार दरोगा जो तनखाह एज से पाता है रुपये की टिकडी तैयार  
 हो जब देखें कि खार बडोल पूरा है तो बाप लगाने दे - सम्बत में सरकार दोलत मदार  
 गंगरेजी के हुक्म से रुपये में नाम अगले बादशाह का निकाल कर महारानी जी कूं  
 इन विस्कोरिया का लिखा सो नमूना  है - हिन्दी सम्बत हर  
 साल नया होता था सो १७ ही का है  अठनी चौअनी दो  
 अनी भी छपे हैं । सोने की अण्णफी १०॥ माशे की व अथेली पावली दोअनी की छपाई  
 ७॥ आना है - सम्बत ४९ में इसको खूब सोच कर यह तजबीज करी कि रुपये डोल  
 में छोटे न करने - व और ही वाजिब जान कर दो निशानी १ तो मेघाडम्बर खूब व कुं  
 ल देवी की यादगार पोलं व याने चिडीया का चिन्ह बधाया - जिससे रुपये फुटरे व  
 अच्छे होने से दूर दूर में ॥ आने व २ रुपया बधती मिलता है - व छपाई भी ७ आने  
 बधा कर पूरा २ रुपया की या वजमा खूब का कायदा भी बहुत अच्छा रखाया है  
 कि नकश तैयार होकर जिस तरह जो बात समझनी हो मालूम हो सकै - तथा  
 यह दस्तर है कि व्यापारी लोग कामदार की भारफत टकशाल में माल तोल देवे तो  
 रुपये दिन १५ व बकाया १ महीने में चुकना कर देने का फर्ज कामदार पर है ढील

हो तो सूद दिलाया जावे और बाला बाला माल सुनारों को देवे तो कामदार जिमें वार नहीं । तथा रुपया तोल में कम या खार जियादह हो तो सुनार को सजा कैद व जर माना की होती है । व लिखा लीया है कि खोटा रुपया छापै तो हाथ कटाया जावे । सुहा कि सब तरह से अच्छा बन्दो वस्तु है तो भी निगरानी में जरा सी गलती हो तो चालाकी हो ही जाती है । तथा सम्बत् ८ से कामदार गोल किया सुखराम व बेटा बखराज हैं

## ताँबे का

चलन पैसा अमरशाही था सो तो रोहड़ी सक्कर में है । यहां भी मशाही जरब जोधपुर व किसी कटर काड शाही जैपुर का निर्वेशागे १४ टके का था सो बधते बधते अब २८ से ३२ टके का है । नया पैसा तोल में तो २० माशा ही है । ताँबा हलका है । तथा कलदार भी चलते हैं ॥

## डोढियां

खास इसी शहर में ही हैं । अबल किसी जमाने में छपा चा फेर श्री अमर सिंह जी ने छपाया सो तोल में भारी व निर्वेशाभी १६ बीसी था । सो कटकर व नया सम्बत् १८८३ में छपा सो तोल में कम है । ज्युं निर्वेशाभी ३० से ३६ बीसी तक रहता है । नर्व फारसी हर्फेन मालूम क्या है । यह चलन ढींगला नाम मेवाड़ में भी है । तथा कछ देश में त्रांबीयां ४८ दोकड़ा ३२ ढींगला १६ जो १ कोरी में चलता ही है । और ७ रुपया में कोरी ३ फदीया ७॥ छकड १५ खुरदा ३० दुरगानियां ४० आना का पेका ६४ दोकड़ा १०० जेथल १५० जेथलो का पेका ६०० ये नाम सिर्फ हिसाब के लिये हैं । जैसे गुजरात व गैरह में ७ रुपया के दोकड़े १०० व १ दोकड़े में १०० फो कड़े हैं । चलन नहीं । सम्बत् ४१ के मृगासिर महीने से सायरात में तोल महाजनी व हिसाब में ऊपर लिखे नाम उठाकर कलदार पाई जी १ आना में १२ पाई हैं । चलन जारी कीया

और कई बार सलाह हुई परन्तु काम नही हुआ सो यह है कि एक साल में माल राज का छपे - ब्योपारी के माल आवै तो उसी वक्त रुपये निरख से देकर माल राज ले इसमें दो कमाहते हैं सो तह होने बाद यह हो सके - वचलन तांवा का आधया पाव आना का नाम पैसा या आधीया या बांबीयां या जो मुना सब हो रखकर छपा ना जरूर है कि भाव में कमी बेशी की तकलीफात न रहें व काम भी जारी रहकर नाम भी हो - ऐसे ही

## तोल माप

इलाकह जात में १ की याज वैगा चुनाचै : लोहे के वाट छपाये हैं - बिल फैल हर जगह मुरजलिफ हैं - याने तोल तो भीम शाही पैसे १३ से ४५ तक कई कि स्म का सेर है व ४० सेर का १५ मन और पायली ५४ व मांणी सेर ५ का सो भी अमर शाही तोल १ से ३ सेर तक और गोंम बारू में पायली सेर ५ का पोकरन मूजव व तनोट में दोषा सेर ८ का फलोधी मूजव है - तथा पायली १६ की १ से ई व १६ से ई की कलसी जो अमर शाही मन १२ की होगी बाहर गांमों में है - तथा कपड़े नापने का हाथ शहर में १६ ईंच व देहात में २४ ईंच का है त्र १५ हाथ का १ गज सिरकी ८ हैं ३६ ईंच का शाहजहांनो गज इससे सवाया सभनो

## सागरात

महसूल कारिबाज कोम कोम वस्ते स्ते जिन्स २ का जुदा जुदा था कि अव्व ल कोट में पीछे शहर या किसी गांम में माल आया जब दांण लिया बाद बहुत सी लागें बिधाबंधान कनोती वगैरह फेर फोरे पर मापा उर्फ मुकाता वनेसार पर भी लगता था सो सब बंध कीया सो मुफसल हाल लिखना अवजरूर न रहा १० ११ जगह हिसाब करने व पेशगी रुपये देने वगैरह तकलीफात ब्योपारियों को थी सो नरही श्रीजी साहिबों की उमर दरज हो व सलाह जना व खी डन्ट कर्नेल

परसी डबल्यू पौलन्ट साहब बहादुर नई तजबीज सम्बत् ४१ का मृगासिरवदी १ से का  
 ई मात्र सरदारों भोमियों सेठों चौधरियों ब्योपारियों वगैरह से सही कराइ जाये कि-  
 या कि इलाकह भरमें एक जगह पूरा दांण लीया बाद दांण की खंचल न होवै मात्र  
 कोमों से चाहें सो रस्ते माल आवै जावै दांण का शिरस्ता एक रक्खा है कि खाश श्री  
 दरबार के माल का भी दांण लगै हीगा बिधा बंधान कनोंतियों वगैरह हक दांसे  
 को हक श्री दरबार से दीया जाता है ब्योपारी से कम या बेश नही लीया जावै - माल  
 आवै जावै सो अव्वल चौकी पर मंडी जै और गर्भ माल की तस्तासी होवै - तथा बीच  
 की चौकी पर परताल की जावै तो प वहै सो कसूर बार व निज़र पर वरिषा रिआया  
 जुवार बाजरी का पैसा बिल्कुल माफ सिर्फ ७ शाना फी ऊंट मंदर से कालिया जाता  
 है सो ही चारणों फकीरों डूमों स्वामियों से नही और ब्योपार की तरक्की वास्ते पेशार  
 दांण पूरा लिया बाद ने सार चूर है और पेशार में भी हाथी दांत अफ्रीम के सिवाय  
 सब चीजों में कमी हुई सो नकशे के खाने और सत साबक में लिखा है - जागीरदारों  
 का हक पट्टे बरसलपुर का तो राव जी दांण लें और बेके का रुपया १००७ बारों  
 मल्लीनों का राज में दै और विकमपुर राव जी को दांण में पांचवां हिस्सा श्री दरबार से दिया  
 जाता है और बाकी गांमों का माल परगना उतारने सार में तो पैसा रुपया सरदारों  
 का राज से वसूल देना और पेशार में उनका जी चाहें सो लें राज से सुदो नही और  
 बहलीवाल में हक है ही नही यह हक सिर्फ पाटवी का रक्खा था पर वो समरे नही जिस  
 से सदा ही रुपया पैदा हुआ सो रेल में जिसके हाथ लगा उसने उड़ाया भोमियों  
 का कुछ भी हक नही था सो मुखिये को दांण की निगरानी को श्री दरबार से १७ रु०  
 पर ७ रुपया इस शर्त से करा दीया कि दांण चोरी न हो अगर कोई संख्या दांण बे  
 करै तो मुखिया उसको पकड़ावै जब उसका माल नीलाम या जुरमाना हो उसमें भी  
 मुखियो का हक हो चुका और जो मुखिये से बाला बाला खबर लगी तो मुखिये को हक



जितनी सजा दी जावे और मुखवर मुलाजिम एज है नौ चौथा हिस्सा और दूसरा खेसबाह  
 है तो उसको आधा जुमाने या नीलाम में से मिलेगा तथा खालसे गाम के मुखिये को  
 भोमिये से आधा हक निगहनी का उसी सर्तो से दिया जावे - ब्योपारी माल लावेगा  
 सो खरीद का बीजक या आढतिये की चिन्ही या बिलटी रेल का नकल या दूसरी रेल  
 सत के दांण चुके की असल चिन्ही बताओ माल नुलाकर चिन्ही होगी - बहतीवान  
 दांण चुकायों से दिन ३१ में माल इलाकह पार करेगा उपरान्त हासल पेशार का  
 लगेगा - अगर किसी सवब से माल इलाकह हाजा में दूवातीसे बेचैगा तो हासल  
 पैसार में बहतीवान बसल होगा - और जो माल बेच के पीछे कहैगा बसल नही मि  
 लैगा और चने बेचैगा तो सजा दांण चोरी की होगी - भार बरदार व सवार का ऊंठ  
 गाड़ी व पहन ने कपड़े या कपड़े के डुकड़े जिसको कीमत ३ रुपये को है या खाने  
 की जिन्स व रसाल का हासल नही - देश की पैदावार बीज सिवाय पास शहर के  
 देश में हीन एक से दूसरे परगनह से ले जावे तो गैहूं घृत तेल कपास इस ४ चीजों  
 का पेसार मुजब दांण है बाकी माफ - तथा देश का बासी देश में हीन देश के बासी से  
 बलध मैसार जीयाल मरकब लेवे देवे तो दांण छूट और रजपूती सिंधी याने खेड़ में  
 आवै सो बचारा डूम फकीर स्वामी आपस में ऊंठ ले दें तो भी छूट है - कोटों का काम  
 दार ताल्लुके में वाजव जांणे जहां भायर की चौकी रक्वे हिसाब हरअभावस्था मए  
 फारम व कौणिल में भेजे अथवारुपया हुक्मी चिन्ही से सर्वेदांण की चिन्ही आप लग  
 वाने में करें॥

दांण का खुलासा फारिस्त में है - और जो चीज लिखे से नवी आवै तो कीमत व  
 जात दूसरी चीज से मिलाकर दांण लेनों - तथा दांण में कमी वेसी श्री दरबार साहेब  
 जंदाकदे मुनासब ख्याल फारमावे तो हो सकेंगा - एक जगह दांण लेने में व हकदा  
 रों को श्री दरबार से देने योग्य है २ तदवीर ऐसी हुई कि राजव ब्योपारियों से खससन

सुरा लोगो को तो बड़ा ही आरम व फायदा हुआ ही सब पर इकसा होने से जिस रोगों को माफी थी सो न रही ॥

तथा हिसाब का कायदा भी निहायत ठीक है कि चाहो सो हाल बखूबी आसानी से मालूम हो सकै सायर में कदोमी तोल कच जो मन २० याने अमर शाही मन ६ का एक ऊंट था अब शाहजहानी तोल है बिधा बंधान कनोतियों का हक ऊंटों पर था सो शाह मन का १ ऊंट रक्खा है और अमर शाही मन ६ का शाहजहानी मन पांच का होता है ॥

### खन्ना याने दाण की चिठी सायर

नमूना व चिठी	वोपारी का नाम ज्ञात	कहां से माल आया कहां जावे गा किस गस्ते	पैसा सोने सार या वहरी	तादाद भार व दर	नाम जितस	सह महसूल	रुपया महसूल का	दसखत यानी नि सानी सायर दाव वोपारी
--------------	---------------------	--	-----------------------	----------------	----------	----------	----------------	-----------------------------------

### नऊ शा सरह महसूल व आमदनी सायरात

नमूना व चिठी	नाम जितस	नाम नग कीमत	सरह महसूल			शोसत साचक	सं. ४० कार्तिक शुदी १ था सं. ४३ कार्ती वदि सल ३ को पैदाव शोसत				मरु शोसत बाजार	
			पेशार	नेशार	वहरी वान		पेशार	नेशार	वहरी वान	कुल पैदाव वर्ष ३ के दाण का रुपया		शोसत १ वर्ष का रुपया
			सब दर शोस	अहा से	बाहर से		मन जितस या कोमत	मम जितस या कोमत	रुपये हासल			
१	श्रीफलम १	१	१			१	१॥ ५६॥ ५६॥		५७॥	५६॥	५६॥	१८६॥ ३
	गिलेखो १	१	१			१	१६॥ १२६॥ ५३॥		६०६	३३३॥	१८३५॥ १२६१॥ ३	४



१०	खीर	१	३०	.	.	१॥	१२॥	१५॥३	२१३०	.	.	॥३	१॥३	२१३०॥३	७१२॥३५	.
११	घाट	१	३	.	.	॥॥	३॥३	२१०	८६॥॥	.	.	१५॥॥	१३३	६१२॥॥	३०५॥	.
१२	खीर	१	१॥	.	.	॥	३॥	१०५६	१२१६	.	.	३६८३॥	१४१६॥	२६३५॥	८७८५॥८	.
१३	खीर	१	८	.	.	१॥॥	८	३२०५	२६५॥॥	.	.	१३१०	७८	२७२॥॥३	६०॥॥३५	.
१४	खीर	१	१॥	१॥	.	१॥	१॥॥	२४३१	२७१६	११५॥॥	११८३	६३	५०॥॥॥	२८८८॥	६६२॥॥३५	.
१५	खीर	१	१॥	.	.	॥	.	१०५६	१२१६	.	.	६३०५	४४८॥॥	६७७॥॥६	३२५॥॥३२	.
१६	खीर	१	१॥	.	.	॥॥	६०१	२१०५॥	२१	॥॥॥	२२७३॥	३८०॥॥	५६२॥॥६	१८७॥॥३२	.	.
१७	खीर	१	१॥	.	.	॥॥	२१०	॥॥॥	.	.	.	.	.	.	.	.
१८	खीर	१००	६॥	.	.	३३	.	२०८१	८६॥॥॥	.	.	३३३२	१	८७॥॥॥६	२८३॥२	.
१९	खीर	१००	६॥	.	.	३३	.	८७७	४६॥॥॥	.	.	.	.	५६॥॥॥३	१६॥॥६	.
२०	खीर	१	१॥॥	.	.	॥॥	३॥	७२॥॥	१२४॥॥३	.	.	२॥	१॥३	१२६॥	४२५॥५	.
२१	खीर	१	१॥॥	.	.	॥॥	३॥	१०२	१२६॥॥	.	.	१२५	५४०६	२३१॥३	७७॥१	.
२२	खीर	१	१॥॥	.	.	॥॥	३॥	१३६॥॥	१४६॥॥	.	.	.	.	१४६॥॥	४४३॥१	.
२३	खीर	१	१॥॥	.	.	॥	॥॥॥	१६८५	१२२१	.	.	६६०	३९५॥३	१५३०॥	५१२८॥५	.
२४	खीर	१	१॥॥	.	.	॥॥॥	३॥	६८८	३६॥॥॥	.	.	.	.	५४८॥॥३	१८३॥॥	.
२५	खीर	१	८	.	.	१॥॥	८॥॥	४८॥॥	३८५॥	.	.	६६८	६३॥॥	१३०२॥॥६	४३५॥॥६	.
२६	खीर	१	१॥॥	.	.	॥॥॥	३॥	१२३॥	१८९६	.	.	६०६	३०७॥॥	२१६॥॥॥३	७३२॥॥	.
२७	खीर	१	१॥॥	.	.	॥	१	७२१॥	६१६	.	.	३००६	१२०८	२२२७॥॥६	७०६॥॥२	.

[illegible]



		बेकचरी, बहेडे दोनों, बलबीज, रेवनचीनी, रंजनी, चडखबीला, भोडला, मृगफली, शारीठा ॥
५.	॥॥	नकचिकनी, नोसादर, नीबू, फूलगुलाब, गरमाला गिलोय, गोमरु, नोखमुं नडी, सिंगोडे, साधार, काकडासींगी, सतावर कन्था, कटखजूर, किरमच, कुटक, आलूबुखारे, अड्डा, इन्द्रजब, उन्नाव, ऐलीया, मैदानकडी, माल कांकण, पतंग, पित्तपापडा, हरडे, बायफुंछा, घोडाबख, भारंगी, तालमाखाना, राल धूप ॥
७.	॥॥	सावन, सहैत, चन्दन दोनों, चिचक, कालीजीरी, कायता, कनजा, कसीस, कबाब चीनी, जोहरडे, जमाल गोदा, जरेस्क, मुलहरी, मोचरस, मुदासिंगी, नायबिडंग, विदारिकन्द, ब्रह्मी, देवदार, दारुहरदी, रीगनी, गन्द्रफ, खस, खससास, पचास, नमालपल ॥ नागकेशर
७.	॥॥	लासबाटिया, सोनागेरु, सुपारी हर्च, सकाकुल, सतली, भोजपत्र, भोजांद, बिजयास्तोर, बहमनसुखे, गजवां वनष्ठा, हजरतबोर, हंसराज, माजूफल, जेरनालेरगिरी, अर्तीस, भायडे फूल, चिमीसर्व ॥
३.	॥॥	सिंदूर, स्यांठ, कसबा, केशरपिबली, गुलाल, मूसली दोनो, निशोद ॥
२७.	३.	अगर, आवलासार गंधक, अकलंकरा, इलायची, नगर, मलांगरी, मैण, सुभी रा, मोरयाद्या, हरताल, हीमालु कीकू, केशरके फूल, कपूर, कालीमिर्च, गुलाब जल, सुरतेल, शिलारस, सींगीमोहरा, शंखिया, सीतलमिर्च, सुर्मा, सोझगी, सपेदा, स्वाहजीरा, सुपारीदक्खनी, चण्डा, चन्द्रस, पीपरा, पीपरा मूल, पीप रदराज, पनडी पारो, बडेडोडे, कण, जावबी, जायफल, जेरकुचीले, जंगल जवासार, सकपूर, रत्नजोत, रसोत, बीदाना, बंशलोचन, खैरसार, खाफ रिया, दालचीनी, लोहवान, लोंग, भिलावा, बेरजो, चोपचीनी, सरेस ॥

आमदनी नकशे के अलावा इलाकह बरसलपुर का रवजी से १००५ रुपये १२ महीने को ठेका है . बाकी लाठी तनोट दाखली वसिया वगैरह गांमो का दान नही मंडा है व राजडां म्हीरा लोगो दान चोरी करी सो अलग अगर पूरा दाण मंडे तो पैदा डवही है तथा परचुण दाण रुई की गठड़ी वा छाली कंटा वगैरह के में चोरी व कभछत हट से परे है सो जो जी चीज छोटी याने चोरी छिपा सकै सो छूट करके गुंजायश की चीजों पर ऐसी तजबीज हो कि हर्ज हरकत न रहे ॥

## सायरमापाउ.

तकड़ी मुकाता में सम्बत् ४१ से सिर्फ इतना रहा है . बाकी सब उठ गया . जेवर , वरतन फरोख का २५ रुपया पै ५ रुपया बहिरण्य तोले ३० पै ५ रुपया व चांदी रुपया १०० पै ॥ चार आना लगता है सो बिके उसी दिन विगत से मंडवावै . सो चोरी वा डगड़े का माल नही बिक सकै . कंदोयां से खांड गालने पर वमिश्री बनाने पर फी मन . व दूसरे लोगो के खांड गालने की महनत में चार्म सो हर पख वाडे मंडाय दे . दरवाजों की लाग घास चार पर फी कंट १ आना . इसमे हजूरी कंधारी वगैरह को बूट भी है . फाटका सोदा पर लाग सम्बत् २० से लगी है सो सब है . १०० रुपया पर ॥ आठ आने दोनो फरीक से . व सवदा हो उसी दिन ब्यौपारी या दलाली का मंडवादे . कि मगडा न पड़े व भाव करने वगैरह कायदा की कलमा सम्बत् ४१ में लिखाई है . दलाली का ठेका या आध है पहले ॥ ३ आने राज के थे . न्यांरिया का इजारा रु० उहरे सो . लखार का इजारा दरवज्जा के दरोगा की तनखा ह है . पटवा का काम करने वाले से हर महीना में ५ रुपया था सो कई साल से नही लीया गया ऐसे ही पीजारे कसाई वगैरह से भी था सो नही है . ऊपर लिखी लागों में कम बेश करके पुखता बन्दोवस्त करना जरूर है कि दाण चोरी न रहे ॥



## बरसोत

लाग रेखाया से धुंवा सए भूमी ठाण भासोला डंड चेनालिया बायालिया व इजारा  
 वगैरह कई नाम तो मौका मौका पर लिखे गये व फुटकर नाम बहुत से हैं कि सालिया  
 ना बाबतरुषया १० हजार करीब होगी सो एक जगह जमान होने से ठीक हिसाब भी  
 मालूम नहीं होता है - ऐसे ही तबेलाणलके मोचीयां चमारी का इजारा वगैरह  
 वाहका बहुत काम है और पास चाण मूगभण पानी वगैरह का खर्च भी यहां ही से होता है  
 इस काम में बन्दोवस्त लिखा तो है परन्तु कीया नहीं सो जरूर ही करना चाहिये - कामदार  
 व्यास मुल्तान बन्द है इनके ताल्लुकः खीमा खाना व घोडों ऊंटों का संज बनाना सोभन  
 व और ही मुतफरिफ कई काम है - तथा बाया का काम याने बागा की पैदा व सीया सांण  
 लाग व मालीयां से बरसोन वगैरह की पैदा वतीनू बागो का खर्च अगारचः रंज का है  
 मगर अलहदा रकबा गया है - सो अब समूल समझा जावेगा - और बाग बावडी याने  
 आबाद होकर हर तरह की साल व आमदनी होने की तदबीर सम्बत् ४९ में बहुत ही  
 खूब की गई हैं क्योंकि रब्याल किया कि एक पेड़ आम वगैरह व एक कूवा व एक क्यो  
 हो जहां बहुत पैदा होती है सो सदहां पेड़ व ऐसे ही कूवे कर्षे होकर नुक शान ब्यो  
 रहता है - मालूम हुआ कि मालीयां ने पैदा करने की कसम वास्ते न देने एज वकज  
 के की है - इस वास्ते इन्हों से मुनासब कल्मा लिखा लिया है - परन्तु जमाना आने  
 से वनैगी ॥

## नमक

शहर से उत्तर १० कोस गाम कानोच के ॥ कोरन में बारस का पानी सूकने बाद बोरे  
 का पानी क्यारियां में - सोयाले के दिन २०। २५ में ३। ४ दफा व ऊनाले के दिन १५। २०  
 में ४। ५ दफा भरने से नमक जमता है - सिवाय पानी व जमीन की सौरीयत के कोई चीज

नहीं रंग सुपेदे से भर से सोरीयत मादल है - नमक में जागीरदार वगैरह का हक नहीं  
 राज ही मालक है - खारवालों को महन्ताने का हिस्सा तीसरा था सम्बत् ३३ से फी  
 मन शाह जहांनी का १ आना दिया जाता है नमक बताने के औजार व बेरा क्यारीयां  
 का खर्चा में खारवालों के हैं - तथा निखे अमर साही तोल से ७ रुपया आगर पै मन  
 से १४ व शहर व परगनह में ११ मन था - सो अब शाह जहांनी मन एक पै ७ आने  
 कीमत व ७ रुपया महसूल आगर पर रक्वा और शहर व परगनह में किराया ५ मन  
 पर एक कोस का ७ आना ज्यादा हो सो सम्बत् ४४ के चैत्र में सब जगह निखे सेर ७५९  
 का व आगर पर दोनों गाम काणोध के सिवाय बेचना मना करके परगनात में कोरा  
 कराये सो गामवाले नजीक कोठार से लैवै जिसका नाम लिखने वगैरह कायदे की कि  
 तावे ब्याकर बेचने वालों को दी गई कि राज का नमक बेचने की आडत तुलाई की  
 जगह का भाडा फीसदी ३ रुपया मिलेगा निखे में फर्के न रखें और जो रुपये पेशगी  
 दे जिसको ३ रु० कमीशन जुमले ६ रुपया दीये जावै व निखे भी ७ रुपया से कमती  
 लेने वाले को ५९ सेर कमती देवे - परन्तु दोनों सूतों में हिसाब हरमहीने ताल्लुके  
 के हाकिम की मारफत नमक के महकमामें भेजा करें - सो साल तमाम पर नकशा  
 तैयार होवै कि किस किस कोठार व गाम में कितना नमक कितने मनुष्यों ने लीया -  
 व पैदा खर्च वगैरह सब हाल मालूम हो सकै - और आमदनी व जबा से निष्फ भी  
 नहीं होती है सो ऐसे काम चला तो सही हाल खुल जावेगा -

सिवाय इसके मौजै वाय में भी रंन है मगर नमक निकालना बन्द है व गाम वरमस  
 व पहेडों के रन में खारा पानी के बाइस जरात तो क्या घास भी नहीं होता और न खारी  
 नमक होता है - तथा मोहनगढ़ के रन में पानी तो खारा होता है लेकिन जरात दोनों फस  
 लें - सम्बत् ४९ से होती हैं - । स्त्री डन्डी में खोद निखे की हर पखवाडे व नमक खानों  
 से निकालें व बेचै की से माही व साल तमाम पर की जाती है - तथा सम्बत् ३३ में सरकार

दौलतमदारने मारवाड़ वगैरह का नमक ठेकै लिया जबयहां से दीवान नथमलजीको जोधपुर तलाकर जनाव कला साहिब बहादुर व रज़ीडन्ट साहब ने कहा कियातौ खानोंको वन्दकरो खर्च के लिये नमक सरकारसे मिलेगा या खानों पर सरकारी वन्दो वस्त मंचूरकरो । अर्ज करी कि इतनी गुंजाइश नही है कि सरकार नमक निकाले और वन्द करने सरकारको नगक पहुंचानेमें १०६ हजार खर्च होगा सो मुनासब जाने तौ सरतै लिखा कर राजको खर्च जितना नमक निकालने की इजाजत दी जावे जनाव कानवालासाहब बहादुर न सदरसे मंजूरी मंगाकर ऐसा ही किया कि नमक १५००० मन से ज्यादा वगैरह कम नही निकाले । सरकारी महसूल चुकै नमक का इस इला के में राहदारी नही लेना । ३ नमक गैर इलाकह नही जावे । ४ ५ में निरखे वरपोटका हाल ऊपर लिखा है । ६ मारवाड़ में सरकारी नमक का काम जारी हो जबसे जारी करन चुनावे इस मंजब वरतै हैं । कानोपमें तौ कामदार गो-बच्छराज व एक दोग्ग दो अश बारन शहरमें गो-तुलाएम है । तथा नमक हरजगह पहुंचाने व बाजरी वगैरह लाते केलिये राज के कंट पे हरीदास जीवणदास मिर्धा व कई हाली रखे कि खर्च से बौच नुद फायदा होगा परन्तु उलठा नुकसान रहा सो अब कोई ठेकेदार ५० ऊंटर सबका शर्तौ मंजब काम देतौ बड़ा ही नफा व सबको आराम रहे ॥

## दीवानी फौजदारी

कानवा कायदा सम्बन्ध ४४ का माघ से आँम लोगों को सुनाया गया परन्तु तामील न इंडो सो होहीगा (खुलासा दीवानी) लैन दैन कारिवाज ७ पीडी का था अब १५ वर्ष से पहले की सफाई या दावा ५ साल तक कर लें पीछे सुनाई न होगी वरसस मुदई को रुपये दिलाने में आरम राज व फीसदी ५ रुपया धर्मो देऊपर गई के दोनों फरक से व ५ रुपया फैसला काले ते थे सो छोड़कर फीस नीचे लिखे मंजब वक्त दावा के मुदई से

ली जावें सो वक्त फैसला के हाके म अदालत बाजिब जाने जिस पर खर्वे व सुवाल तल  
वाना व नकल फैसला वगैरह वगैरह का इष्टाम भी नीचे लिखे हैं अपील सिर्फ ॥ अ  
ना के कागज पर हो सकैगी ॥

## फीस

१०० रुपया का ७ रुपया, तो १००० रुपया के दावा तक — ऊपर दावा १ हजार पर  
कमती याने रुपया ६।७। ३।२ फेर चाहे जितने हो फीस दी ७ रुपया के हिसाब से  
जिसके जुज रुपया ७ तक ॥ अने, रुपया ७ तक ॥ अने, रुपया १६ तक ७ रुपया,  
२५ रुपया तक ३ रुपया, ४० रुपया तक ३ रुपया, ५० रुपया तक ४ रुपया, उपरान्त  
२०० रुपया तक जुज २५ को, ५०० रुपया तक ५ रुपया का, १००० रुपया तक १०० रु  
२००० रुपया तक २०० रुपया का, ५००० रुपया तक १०० रुपया, १० हजार तक १०००  
रुपया का, २० सहस्र तक २००० रुपया का, व २५ हजार तक २५०० रुपया, पीछे जुज  
१ आयुत का है। सो हिसाब फीस के ५००० रुपया के ४०० रुपया, व १०००० रुपया के ७००  
रुपया, व १५ के र्द व २० के १०॥ व २५ के ११॥ व ३० के १२ व १ लाख के १६०० रुपया स  
मको। तथा लोगो के आयस में तहरीर सं. ४४ का माघ पिबली स्याम पर सही होगी  
जिसका दस्तर (छांम्य) लगाने का यह है कि हंडवी हर किता पर एक दफा १ सौ तक  
नहीं ऊपर ३०० आना ६०० तक ३ आना १००० तक ३ आना १५०० तक ॥ आना २००० तक  
३ आना ३००० तक ॥ आना, ४००० तक ॥ आना, ५००० तक ७ रुपया, ऊपर १० रु  
ज्यादा नहीं व पैठ पर पैठ पर सिर्फ ७ आना के पर हंडी पर नहीं लगा हो तो पूरा। सूदी  
देन लेन पर (छांम्य) चलखाता साहूकारी पै नहीं और खत खाता व रुक्का वगैरह में  
सामले से सही निशानी करावै तो अंग उधार या जेवर वर्तन वगैरह जंगम चीज सिंदी  
पर सूद ॥ तक है तो फीस दी ७ आना का और सूद ७ रुपया तक हो तो फीस दी ॥ आना

वसूद १ से ज्यादह परदूना जिसका जुज रुपया ३५) का तथा रजिस्टर किसी कचहरी से  
 करावै तौ ३५) रुपया पै ३ जुज का हिसाब से लगेगा । जगह जमीन खेत कूवा बगैरह  
 स्विमर आडत पर ऊपर लिखे हिसाब से डोढ़ा । नया या पुराना हिसाब करके रुपया  
 वाक्की निकालै जिसपर ऊपर लिखे मूजिव । खेत जमीन बगैरह का सनदी हुक्म कि-  
 सी कचहरी से का रुपया ७) पर लिखा सही होगा । बेदा गोद लेने सगाई करने  
 तलाक लिखने बगैरह ऐसी तहरीर का रुपया ७) पर लिखी सही होगी । रसीद  
 इकरार नामा जामनी भाड़ा बिंदी बगैरह ऐसी तहरीर का ७) आना पर फाखर्त  
 अभियम न दावा की रुपया ३५) का ३ आना जुज के हिसाब से रुपया ७) तक हद  
 है । ठेका इजाए किसी किसम का रुपया ३५) जुज का ३ आना के हिसाब से । सीर  
 साका किसी किसम का मवेशी जगह जमीन बकोई जिन्स या ब्योपार दुकान दारी  
 बगैरह की लिखा बट रुपया २००) तक ३ आना रुपया ४००) तक का ७) आना रुप-  
 या ८००) तक का ७) आना रुपया १६००) तक का ७) रुपया, रुपया २४००) तक रुपया ३५००)  
 से उपरान्त रुपया ७) से बडती नहीं । घत ऊन धान बगैरह जिन्स लैनी लिखावै  
 तौ का वध ब्याज मूजिव पर मगर ऊन तिल बगैरह खरीद करने का सद्दा ब्योपार  
 लिखावै तौ का फीस दी ७) आना पर परन्तु इसमें माल कमती तुले का भावनहीं  
 मिलैगा रुपये सूद से लैने होंगे ॥

## इस्लाम

घर काम या बेचने को इकट्ठे १००) रुपये से वधती खरीदे तौ कमीशन फीस दी  
 ७) रुपये से ३५) रुपये तक वधती जिसका जुज यूँ है कि ३५) रुपया तक ७) रुपया  
 ५००) रुपया तक ६) रुपया १०००) रुपया तक ७) रुपया व ऊपर ३५) रुपया का  
 इस्लाम रुपयो के हिसाब से मिलेगा परन्तु अदालत की फीस का कागज प्रे मोल

कचहरी से हीज लेना होगा • ऊपर लिखे में कामवेश करना श्रीजी साहब के हुक्म से हो  
सकैगा • जिसका इशितहारजारी की याजावैगा • ऊमसीगा याने चौपाया जवरन चीन ली  
या है या देने करिके नहीं दीया है तो दावीदार ६१ थीतर मजाज कचहरी में दरखास्त  
देकर सफाई कराले दरवा जदही दावा करैगा कीमत मिलेगी • ऐसे ही खाते में लेनी  
करे जिन्स नहीं आवै तो मियादवाद सफाई कराले भाव नहीं मिलेगा • रुपये सदसे  
सही होंगे • तथा जगह ठग की मसवाड़ भी ३ साल तक लेही लें पीछे जमादह  
इकही नहीं मिलेगी • खेत में विगाड़ हो सो तो जिसपर दावा लग सकै उससे भरा  
लेना परन्तु खेत छोड़ना नहीं अगर खेत छोड़ेंगे तो दावारवारज • झला हाजुल क्यास  
ऐसे ऋगड़े पुराने रिवाज के नहीं रहे •

टफ: २६

बड़े शहर बरेल तक रस्ते में गंम का नाम वदूर को सवकू गहरा  
वपुखता बबरी वत बड़ी छोटी

जोधपुर १४० को.						बालोचा रेल है ५५ को.						कच्छ भुज १४० को. बगाडवी द्वारा को.					
१	मोकलात	४	१०	५	५	१	डामला	४	१०	५	५	१	जीया	३॥	०	०	५
२	बाजिया	१	४	५	५	२	आकल	२	०	०	५	२	लु.	१॥	०	५	५
३	चांधन	७	१०	५	५	३	छोड	४	३५	५	५	३	पीथोडर	१	२५	५	५
४	सोदाकोर	४	३	०	५	४	देवीमोटर	२	६०	५	५	४	कोरुवा	४	०	५	५
५	लाटी	२	२	०	५	५	लखमन	३	०	०	५	५	बेलक	४	०	५	५
६	आडानि	६	२५	०	५	६	बोडिया	१॥	०	०	५	६	देवडा	५	५०	०	५

७ फोकास	६	१०मी	व	७	झंगरी	३	८००	व	७	कुकास	२	१०मी	व	७						
८ लउवा	४		व	८	झोला	४	८००	व	८	जोगीर	२	८००	व	८						
९ मडता	५	मी	व	९	झारग	२	८००	व	९	शे-गंव				९						
१० देव	५	४०५	व	१०	जंड	७		व	१०	कोहर	७	१०मी	व	१०						
११ टादीया	२	मी २५	व	११	खेत	२		व	११	महाकाली	जुडो	पान	कुपा	११						
१२ लाडता	२	३-मी	व	१२	मुवा	४		व	१२	हाम्पानो	१०	१२	व	१२						
१३ चामु	५	४०५	व	१३	जगरी	७		व	१३	गडडा	१२	खा	हैं	१३						
१४ पाचुना	५		व	१४	मलवा	५		व	१४	मोहली	६	१०मी	व	१४						
१५ चंडालीया	२	१०मी	हैं	१५	खेड	६		व	१५	सीवसर	व	विछडा	पोगे	१५						
१६ बालाभा	५	गवां	हैं	१६	बल्लेत	२		व	१६	बाछा	१५	हैं	व	१६						
१७ इद्रोया	२	१०	हैं	१७				व	१७	भोरीला	२२	खा	व	१७						
१८ नाहस	१	वेग	हैं	१८				व	१८	मिखी	१०		व	१८						
१९ चमोचोवन	१	वेग	हैं	१९				व	१९	दीपला	१३	मी	व	१९						
२० नासंज	३	मी	हैं	२०				व	२०	विलेहारी	५		व	२०						
२१				२१				व	२१	समेधर्म	शंकर	देवा	रोडी	२१						
२२				२२				व	२२	बाहसे				२२						
२३				२३				व	२३	लावडा	२०	मी	व	२३						
२४				२४				व	२४	वीनमें	३१	४०	गंव	हैं	२४					
२५				२५				व	२५	भुजना					२५					
२६				२६				व	२६	फेसाडरी	को	२०	वर	जागर	में	को	२६			
२७				२७				व	२७	जबल	कर	थो	द्वारा	को	विदे	आग	में	दे	२७	
२८				२८				व	२८	सेगो	मती	जी	हैं	अवडा	से	आसा	पुरा	के	में	२८
२९				२९				व	२९	डको	२५	फेना	पारा	स	को	२५	हैं			२९

इसरा रत्ना चलके गांवों में होकर दो तीन है जिससे नाम नहीं लिखे व वालोवा से रेल है

**बहाडमेर - को. ४३**

गंव भू. सीतु: डाई. रामा. एखेम

डाईतक इलाका हहजा-गांव गंग

या हहवा से सिवाय-इलाकह मा

नाड फेर गांव भाउला से नाहडमेर

और गहां से गुड़ा होथी गांव धनी

पर वाव सुई गांव वगैरह होते हए

कच्छ भुज का भी रास्ता है

१७ तावडा २० मी. हो

१. बीनमें ३१ ४० गंव है शेर

१८ भुजना

फेसाडरी को २० वर जागर में को २२ हह

जबल कर थो द्वारा को विदे आग में दे

सेगो मती जी हैं अवडा से आसा पुरा के में

डको २५ फेना पारा स को २५ हैं

वहडमेर-को-५३  
 गंव भू-सीतः डार्-रमा-गखी में  
 डाईतक इलाकह हज्जा-गांव गंग  
 या हडैवा सौसिवाय-ईलाकह  
 बाड़ फेर गंव भाउसा से नाहडमेर  
 जोरनहां से गुडा होंथी गंव धनी  
 परवाव सुई गंव वगैरह होते हए  
 कच्छ भुज का भी रास्ता है

दूसरा रस्ता बलकेश्वरों में होकर  
 दो तीन है जिससे नाम नहीं लि  
 सेव वालोवा से रेल है

फेसाडरी को २० वर जागर में को २२ जह  
 जबल कर थो द्वारा को विदे आग में दे  
 सेगो मती जी हैं अवडा से आसा पुरा के  
 डको २५ फेना पारा स को २५ हैं

हैदराबादसिंधको-१०० (१) सताको-७ कुवापुखत-१५ मीठा त- (२) खुह  
 हीकोश ७ कुवापुखता १२ मीठा (३) त- बछणाईकोश ६ (४) फलियाकोश ५ कुवा  
 पुखता ३० मीठा त- (५) महाजलारकोश ५ कुवापुखता ४० मीठा (६) व्यधीवाबली  
 कोश ६ चौहददां है- कुवापुखता ४५ खा- (७) सैदाउकोश ५ कुवा पुखता १५ मीठा  
 (८) जाफराउकोश ५ कुवापुखता १० मीठा (९) रणाउकोश ५ कुवापुखता १६  
 मीठा (१०) आसरांडहरकोश २ कुवापुखता १८ मीठा (११) गपनीरोढंडकोश ८  
 पानी लणद्या (१२) हथंगाकोश ४ यहां तक कोश ३० रेत के टीबे हैं पानी कानला  
 व कुण्डा हैं (१३) खिराकोश २ बावा है (१४) खिराउकोश ६ (१५) मीरपुर  
 जूनाकोश ४ (१६) मीरपुर नयाकोश २ (१७) तंडा अजायार कोश ८ (१८) लाठी  
 कोश ४ (१९) खासशहर है हराबादकोश ६। दूसरा रास्ता कोट महाजला से गाँव  
 सुन्दराकोश ७ ईलाकह भारवाड- गाँव रांगरादेरकोश ७ ईलाकह सिंध- फेर पर  
 चीरा बेरी होकर गाँव बोलकोश १५ वेरी है नाला भी है- गाँव अमरकोटकोश ७। सांड  
 लोकोश ८ फेरढानियां होकर तंडा अजायार से हैदराबाद। अगाड़ी नगर धरा  
 कोश- व किराचीकोश ६ है- वहां से केलात व बलोचिस्तान व मक्का सरफ बदे  
 हिंगलज को जाते है- तथा किराची से बम्बई बन्दर व बिलायत ईङ्गलिस्तान को  
 जिहाज जाते है॥

गोहरीभारवायानवीसकवरकोश १०० हांसे १२ शहर शिकारपुर व कोश १२ खैर  
 पुर मीर साहब का है जिसका रास्ता कोट सहागढ़ में होकर भी है (१) चुंधीकोश ४  
 कुण्ड मीठा (२) खचेलकोश ४ वेरी पुखता ७ मीठा (३) कुच्छड़ीकोश ७ वेरी पुखता  
 ८ मीठा (४) कोट खुंयाला कोश ५ कुवापुखता १२ मीठा (५) बांधाकोश ४ वेरी पुखता  
 २ मी- पानी कम (६) असूकोश ८ कुवापुखता ४० मीठा (७) कोट घोटहडू कोश ८ कुवा  
 पुखता ४० मीठा (८) सोजरेका कुवापुखता २४ मीठा- इलाकह हाजा (९) मिठडा पुई सिंध



कोश १६ कूवा पुखता ७ मीठा (१०) उधड़ कोश देवेरी पुखता ७ मीठा (११) मतेरी खु  
ई कोश ४ वेरी पुखता ७ मीठा (१२) वस १२ कोश वेरी पुखता ७ मीठा (१३) सिंगार  
कोश ४ कूवा पुखता मीठा (१४) भिडो कोश २ रोहड़ी कोश ६ दरियाव है ॥

**खैरपुर डहर का कोश ७२** (१) राम कुण्ड कोश ४ मीठा (२) लांगेला कोश  
३ वेरा तलाव (३) भादासर कोश १ वेरा त- है (४) मोकल कोश १ त- वेरा (५)  
सांखु कोश ६ कूवा पुखता ६० (६) कोटराम गढ कोश ६ वेरे हैं (७) खैर ड कोश ३  
वेरे हैं (८) रणाड कोश ८ कूवा पुखता ३२ मीठा (९) घेढाली कोश ५ कूवा पुख  
ता २० मीठा (१०) तणोट कोश ३ कूवा पुखता २० खारी (११) खैर गढ ईलाक ह  
डहर कोश १६ वेरे हैं (१२) खेजुका रू कोश ८ कूवा पुखता ८ मीठा (१३) खैरपुर को  
श ८ पानी का वावा है फेररेल है सो सकवर कंडेरा शहमदपुर वेगड की गढी बहा  
बलपुर पंजाब वगैरह की जाती है ॥

**खानपुर ईलाक ह बलपुर कोश ७३** (१) वरमसर कोश ४ तालाव  
कुण्ड वेरा है (२) सुलवे कोश ३ तलाव कूवा पुखता २५ मीठा (३) कंडीयाला कोश  
३ कूवा पुखता ३५ खारी तलाव है (४) खावलसर कोश ५ तलाव कूवा पुखता खारी  
(५) रता कोश ११ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) डावर कोश ३ तलाव करना है  
(७) वराहा कोश १० कूवा पुखता ३२ खारी ईलाक ह हज (८) नहर कोश ८  
ईलाक ह बहावलपुर कूवा पुखता ३५ मीठा (९) मूराटोभा कोश १२ (१०) तणारपुर कोश  
११ करना है (११) खानपुर कोश १२ खु-त वावा है दूसरा रस्ता नहर से मिठडा कोश  
२४ वेरा है फेररेल है ॥

**बीकानेर कोश ८३** वासुपी चांधना सोढा कोर तक कोश १६ (१) भाड़ीया को  
श ३ कूवा पुखता २५ मीठा तलाव (६) नवानला कोश ३ कूवा पुखता २८ मीठा तलाव  
(७) लुहारखी कोश ४ कूवा पुखता ४५ मीठा तलाव (८) देकरा कोश ६ कूवा पुखता

४५ मीठा कम तलाब करना है (९६) सीहड़ कोश ३ कूवा पुरबता ३८ मीठा तलाब (९७) सखासा कोश ६ तलाब (९८) बधाऊडा कोश २॥ तलाब (९९) कोट बाप कोश २॥ तलाब व वेरी पुरबता ७ है (१००) गाऊण कोश १॥ तलाब (१०१) वडी सिर्ड कोश २ कूवा पुरबता २० खारी, तलाब (१०२) बुलजीरी सिर्ड कोश २ कूवा पुरबता १८ मीठा, तलाब (१०३) नोखडा कोश ६ वेरी तलाब कूवा पुरबता २६ मीठा इन्द्राजा (१०४) रावणी येरी कोश ४ ईवीका नर कूवा पुरबता (१०५) देयात्रा कोश ३ कूवा पुरबता तलाब (१०६) मड कोश ४ कूवा पु-तलाब (१०७) चानी कोश ३ कूवा तलाब (१०८) गजनेर कोश ३ बाग तडाग व राजभवन है (१०९) नाईयारी वस्ती कोश २ (११०) फो कोश २ (१११) खासा शहर बीकानेर कोश ४ फेर सरसा भीथानी देहली वगैरह का भी यही सस्ता है तथा सीहड़ से फलोधी होकर नागौर का रास्ता कोश ६ है॥

## कौम राजपूतों के सादी गमी में खर्च वगैरह की रीत

जगद कला साहब कर्नेल बालटार साहब बहादुर जी ने बमंजिव डूबम बाइसराय गवर्नर जनरल मात्र रियास्तों के जी इरहयार भौत मद व कैबराजों की कमेटी से मुकाम अजमेर सम्बत् १८४४ का चैत्र में कौम राजपूतों के शादी व गमी में खर्च वगैरह का बन्दोबस्त कराया कि सगाई के वक्त वेदी का बाप बडे सिरदार तो टीका देते थे और गरीब राजपूत रुपया लेता था यह एम कि तई बन्द अगर कोई विल्कुल नादार हो तो विवाह के वक्त रुपया १०० से कम लेकर विवाह को लगा दें और सगाई करे जब अमल दस्तूर के बाद सगापन कीये की चिद्दी एक दूसरा लिख दे कि फेर मगडा नहीं पड़े तथा विवाह में खर्च की तादाद भी है सयत मंजिव लिखी है उसमें चारणों भाटों डूमों वगैरह की त्याग की तादाद शादी के खर्च में फीस दी ६॥ रुपया उस इलाकह वाले को देवे कि जहां मादा है दूसरे-

इलाकह का मंगल आवे सो ताल्लुके का हाकिम सजा दे और इलाकह कहेली में चारन नही है जिससे शेरवाबादी का जाने की इजाजत है. इस बन्दोवस्त से इलाकह हाजा मे शादी की बाबत बड़े सरदारों के नौ ठीकदुआ सो आसानी से चलेगा और गरीबों के रुपया लेना का रिवाज पुस्तों से है सो मुश्किल से मिटेगा मगर यह तजवीज हर हाल है नैकसी राज से पूरी कोशिश होकर मिटी रोटी. बाकी मौसर में खर्च की तादाद खर्चा है सो चलने की नही क्योंकि पैदा के हिसाब से तो औसर हो सकै ही नही और करना ऐन फर्ज है जू इस खर्च में हर्ज भी नही है भाई गनायत हेतू वगैरह दबदार पूरी मदद देते हैं अलावा इसके शादी में उमर की कैद लगाई है सो भी हो सकै नही कैद बमूजिय उमर के बरकन्या का मेल लगाना मुहाल है हां यह ब्यावहत मुनासिब है कि गकरों के कुंवर हों तो ४५ वर्ष की उम्र बाद शादी न करे तथा इस के बंदोवस्त को राज में कमेंटी रहवें वह हर बू. माहीरपोद अजंटी में देने का हुक्म है सो हुसी ही इस बात: हुक्म तो से रपोटी के जाने से नकशे का नमूना जेल में दर्ज है और हुक्म है कि सगाई विवाह होवै उसी दिन नकशे में लिखवें॥

**नक़शा मिती वदी शुदी दमाही इलाकह जेशलमेर में कोमराज  
पूतों के बेटा या बेटी की शादी हुई का संबत ४ मिती शुदी १ थी**

बेटी का बाप	बेटे का बाप	कैफियत
<div>मामर प्रानर</div> <div>बेटी का नाम बज्जर लिसका शादी हुई</div> <div>बाप का नाम</div> <div>नाम</div> <div>शेख</div> <div>गांव व इलाकह</div>	<div>सागड़वा तो क्या</div> <div>बेटे का नाम बज्जर लिसकी शादी हुई</div> <div>बाप का नाम</div> <div>नाम</div> <div>शाख</div> <div>गांव व इलाकह</div>	<div>रुपया लिया तो फिनाता</div> <div>बीद की शादी पहली है या फितनो द्वींद पाटवी है या भा ई मती जा वगैरह तथा और ही जोर हाल वर्ते सो</div>

तथा साहकारों को भी बहुत सी हिदायते: अबन्ध बाँधने की की हैं वरखसूशन सगाई  
बाबत समझाया कि कोई बेदी के रुपये लेवें ही तो उधारे कर लें सो पीछे दीये बार  
आड़ा ओसर कर सकें और धरा करे तो सटाई मर्द औरत जीवे जितने आड़ा ओसर  
न हो परन्तु बिलकैल तो असर न हुवा मंगरय कीन है कि ऐसे ही होगा ॥

इति

शुभम्भूयात्

इति श्री तवारीख जैसलमेर के राजपूतों की सम्पूर्ण

शुभम्



श्रीगणेशायनमः

तवारीख

# अथ तीसरा भाग लिखते

— (३३) —

जोकि ब्रह्माजी के स्वयम्भू मनुजी आदि हिन्दू राजे जो सूर्य चन्द्र वंश में हुए जिन के नाम वराम रुष्मादि अवतार व शोरही बड़े सामर्थवान होकर जो जो काम किये सो भागवतादि पुराणों में हैं ईं उसके पीछे के नाम व हालात् शिलाशिले वार जो मिलता तो तिमिरिनाशकादि बहुत ग्रन्थ बने हैं जिसमें लिखते हीज और भावी वंश के नाम श्री रुष्मा चन्द्र से आज पर्यन्त तवारीख में लिखे ही हैं बल्कि उदयपुर की तवारीख में नाम थे ज्यों दूसरे रईसों के नाम वगैरह हाल मालूम हो सका सो वह बादशाहान दिल्ली व लाट साहब व स्लीडन्ट साहब बहादुर व स्लीडन्ट गुरबी राजपूताना के नाम व सन्जलूस व चार्जेकाइस भाग में लिखा जता है

## दफा १

बादशाहान देहली के नाम और लकब व कौम व जलूस व सन् विक्रमी

(१) सुल्तान साहबुद्दीन गोरि सं. १२३८ (२) रुतबुद्दीन ऐबक सं. १२४८ (३) आरमशाह सं. १२६६ (४) संमसुद्दीन सं. १२६७ (५) रुकनुद्दीन शीरोजशाह सं. १२६३ (६) स्लीया बेगम सं. १२६३ (७) मौजुद्दीन बहरमशाह सं. १२६७ (८) शलाउद्दीन महमूदशाह सं. १३०० (९) नासरुद्दीन महम्मदशाह सं. ३११७ गयासुद्दीन बलवन सं. २२ (११) मौजुद्दीन कैकबाद सं. ४४ (१२) शमसुद्दीन



(५२) रफीउद्दोला सं. ९७० ई (५३) रोशन अखतर सुहम्मद शाह बादशाह सं. ९७० ई (५४) अब्दुलहसन अहमद बादशाह सं. ९८० ई (५५) अजीजुद्दीन आलम गीर शानी सं. ९८१ ई (५६) महीउलमुनन सं. ९८१ ई (५७) अली गोहर शाह आलम बादशाह सं. ९८१७ (५८) अकबर शाह बादशाह शानी सं. ९८५३ (५९) सरजुद्दीन अब्दुलफारवहादर शाह बादशाह गजी सं. ९८८४ सं. ९८९४ मे काला लोगों के गदर से सामिल होने से नाम की बादशाही करके कैद हुआ।

## दफा २

### सरकार दौलत मदार अङ्गरेज बहादुर

जनाब मलिक मोश्मि रफीउलदख्तान क्यूं इन बिकोरिया फरमा रबाइ इङ्गलिस्तान का जन्म सन् १८९८ ईसवी। सन् १८३७ में काका चौथा उर्डिलियम के तरफ्त नशीन होकर सन् १८४० ई. के जनवरी में जर्मन का मीन्स आलबर्ड साहब से शादी करी और राज काज करने की खूबियों में बड्क बाल बिलन्द का हाल मशहूर आम है लिखने की हाजत न ताकत खुदा उमर दराज करै ६२ किरोड़ मनुष्यों का अन्धान सीब है और औलाद का नाम व शादी नीचे लिखी हैं भये सन् व माह व नारी व॥

बिकोरिया अडलडी मेरी लुईस का जन्म ४०।११।२१ येसीयो क शाहनशाह जेडारिक उर्डिलियम से शादी ५८।१।२१।११ मेन्स ओफ वेल्स अलबर्ड इडवर्ड का जन्म ४१।११।८ केंनमार्क की बेटी अलख जतुरा से शादी ६५।३।१० मेन्सस अल्स मोडेपेरी ४३।४।१५ हिंसीडार मिष्टाड कालुईस से शादी ६२।७।१।२१ मेन्स अलिमे ड अनेष्ट आलबर्ड ४४।८।६

सन् ६६।५।२४ मेन्सस हलेना अगष्टा बिकोरिया ४६।५।२६ हसएन का केंवरकसयन

से शादी । । मेन्सस जुईस काऐलाइन एलवर्ट ४८।३।१८ लौने कामारकुइस से शादी ७१।३।२१ (३) मेन्सस अर्थर विलियम पारदीक अलवर्ट ५०।५।१ (४) मेन्सस ल्यूपा वलनजरुडन केन अलवर्ट । । ।

सन् १८७८।१।१ कोकेशरहिन्दकासिताब स्वीकार किया सन् १८८७ में सन् जुबली की खुशी मात्र जहांन में हुई सन् ६१ में मेन्सस अलवर्ट के फौत होने का शोक ४ वर्ष रखा था॥ **इङ्गलिस्तान में वजीर आजम के लकबव नाम वतारीख**

### चारज

(१) भाई कवंट मेलब्रान सन् ३५।४।१८ (२) सररवर्ट पील्सं ४१।८।१ (३) लार्ड जोनर सल ४६।७।३ (४) अर्ल ओफ डर्बी ५२।२।२७ (५) अर्ल ओफ अवेर्डेन ५२।१२।११ (६) भाई कवंट पामरन ५५।२।८ अर्ल ओफ डर्बी ५८।३।२६ (८) भाई कवंट पामरन ५८।६।१८ (९) अर्ल रसल ६५।११।६ (१०) अर्ल ओफ डर्बी ६६।७।१६ (११) वन जामन डीजराइल ६८।२।२७ (१२) विलीयम वार्ट गलंडष्टम ७४।२।२१ (१३) डज राइल । । (१४) वलीयम वार्ट गललंडष्टन ८०।४।२८ (१५) मारकुइस ओफ सालसबरी ८५।६।२४ (१६) वलीयम वार्ट गलद्रष्टन ८६।२।६ (१७) मारकुइस ओफ सालसबरी ८६।८।३

### गवर्नर जनरल के शरहिन्द वतारीख चार्ज

(१) राइट आनरबल वार्न हष्टंस ७४।१०।२० (२) लार्ड कोर्न वाल्स केजी ८६।८।१२ (३) सर्जन शोरवार्डे ८३।१०।२८ (४) दीमारकुइस ओफ अलस्ली ८६।११।८ (५) लार्ड मंड सन् १८०७।७।३१ (६) मारकुइस ओफ हष्टंस सन् १८१३।१०।४ (७) लार्ड एम हार सन् १८२३।८।१ (८) लार्ड ओर्डिलियम वटंगसं १८२८।७।४ (९) सर चार्ल्स मीट कोफ कायम मुकाम सन् १८३५।३।२० (१०) लार्ड अकलंड सन् १८३६।३।४ (११) लार्ड इलनबरा सन् १८४२।२।२८ (१२) लार्ड हरडीज सन् १८४४।७।२३ (१३) दीमारकुइस ओफ डेल हवसी सन् १८४८।१।२ (१४) भाई कोट किना सन् १८५६।२।२८ -



(११) लार्ड इलंग सन् १८६२।३।१२ (१६) सरलन लोर्से सन् १८६४।१।१२ (१७) अर्ले  
 मिशे सन् १८६६।१।१२ (१८) लार्ड नार्थब्रुक सन् १८७२।१।३। (१९) लार्ड लीटन  
 सन् १८७६।४।१२ (२०) मारकुइस ओफ्रीपन सन् १८८०।६।२ (२१) लार्ड अर्ले  
 ओफ्डफ्रीन सन् १८८४।१२।१३ (२२) दीरडट आनरबल ओफ लेन्स डोन बाइस  
 राय इनुगवर्नर जनरल इंडिया सन् १८८८।१२।१० चार्जलिया सम्बत् १९४५  
 मृगसिरसुदी ८ चन्द्रका॥

## साहबान जन्तुगर्व जनरल सज्जपूताना

(१) जर्नेल दिप्टीड अकटर लौनी दिल्ली सन् १८ । । । (२) सरचारल समिटकाफ  
 २५ । । । (३) मिस्टर सर ऐकाल मुक सन् २८ । । । (४) कर्नेल लाफ्ट  
 अजमेर-३५ - - (५) कर्नेल अलवीस - - (६) कर्नेल जे-सदर  
 लेन-३८ - - (७) मेजर जेथयोर सी कायम मुकाम- - - (८) कर्नेल  
 जे-सदर लेन- - - (९) क-जे-लेबो- - - (१०) सरहनरी लार्नस  
 आबू- - - (११) जर्नेल जार्ज लार्नस- - - (१२) क-डबल्यू एफ  
 ईडन कायम मुकाम-६० - - (१३) जर्नेल जार्ज लार्नस साहब-६१ - -  
 (१४) कर्नेल सी के इलियट साहब-६४ - - (१५) क-डबल्यू एफ ईडन  
 साहब-६४ - - (१६) क-आर एच कीरिंग साहब-६७ - - (१७)  
 क-जेसी मुक-७० - - (१८) सरज्युइस साहब-७३ - - (१९) मिस्  
 एसेसी लायस साहब-७४ - - (२०) क-सी के एम बालटर साहब कायम  
 मुकाम-७७ - - (२१) मिस्टर ऐ सी लायल साहब-७८ - - (२२)  
 क-ए आर सी ब्राड फ्रीड साहब- - - (२३) क-सी के एम बालटर साहब  
 कायम मुकाम- - - (२४) क-ए-आर सी ब्राड फ्रीड साहब- - -

(२५) क. सी. के. राम बालदा साहब बहादुर सन् ८९.

मातहत यूरोपियन साहब बहादुर बहोत सेहें चुनावैः झलावा सिकतरी के  
अजमेर में कामिश्नर बन्दैपुर वजैपुर जोधपुर में रजिडन्ट व भरतपुर देवली में  
अजन्त साहिबों के पास पटोसी रियासतों के वकील वास्तः काम मंचायत वगैरह  
के रहते हैं तथा बीकानेर अलवर कोटा मालावाड़ में पोलटी कला साहब व नये  
गहर वगैरह में भी रहते हैं और जैशालमेर सिरौही मलानी का रजिडन्ट साहब  
जोधपुर बूंदी टोकलवाला अजन्त देवली में वडूंगरपुर बंसवाडा देवलिया अना  
पगढ़ का रजिडन्ट जदैपुर में व करोली धोलपुर का अजन्त भरतपुर सम्माल वरपो  
ट करते हैं. और खनाव कला साहब बहादुर जी पास १४ वकील उदयपुर जैपुर  
जोधपुर जैशालमेर बीकानेर किशनगढ़ अलवर भरतपुर करोली धोसपुर टोक  
बूंदी कोटा मालावाड़ के रहते हैं. तथा यहां के वकील मुशी लक्ष्मण राय थे  
सं. १८८८ में हजूरी रामजी दास जी फेर सं. १८ में मो. सरदार मलजी गये सं.  
१८ में अजमेर का लाला पहोकर न लालजी को नायब रक्वा सं. ३ में मो. जी मिम्ब  
र कौशिल रहे व सं. ८ में फोट हुये तो लालीजी का यम मुकाम रहे सं. १० में गांधी का  
का सोडा वा. ऊमजी गये फेर बेटे जोधसिंह को रक्वा था सो सन् १२ में आया बादलाल  
जी व बेटा लक्ष्मण राय को काय दिया. सं. १८ में व्यास धनमुख दास वकील हुवे  
सं. २० का कार में महता नथमलजी दीवान साबिक जरूरी काम के लीये वहां गये सो कला  
साहब बहादुर जी के साथ जैसलमेर आये जब सं. २१ के कार्तिक में महता अजीत सिंह  
जी को साथ ले गये सो सं. २३ के ज्येष्ठ में पीछे आये दार पीहकर लालजी का बेटा गुलाबरा  
जी जो नायब था अच्छा काम देने लगा वह कहार था ही. वकील हुवे सो हैं.

पोलटी कला अजन्त मालवाड़ जैशालमेर फेर रजिडन्ट वारवी  
रजपूताना

- (१) कप्तान चन्द्र साहब अजमेर सं. १८०० (२) कप्तान जैमसयड साहब उदयपुर सं. १८०० (३) लचनीयम साहब सं. १८०० (४) एच २ ग्रैयर्ड साहब सन् १८३० (५) मेजर जान तडल साहब सं. १८३० (६) कप्तान माच साहब सन् ४४ (७) मि. थॉमस हेड साहब सं. ४५ (८) कप्तान मेकमीसन साहब सं. ४५ (९) मेजर नालकर साहब सं. ४८ (१०) कप्तान हाडलपुन साहब सं. ५१ (११) क. सिकतानिपर साहब सं. ५१ (१२) कप्तान मीसन साहब सं. ५६ (१३) कप्तान मारेसन साहब सं. ५७ (१४) क. सुक साहब कायन मुकाम सं. ५८ (१५) मेजर निकतन साहब सं. ५६ (१६) मेजर डैम्पी साहब सं. ६५ (१७) क. बुक साहब का. सं. ६८ (१८) मेजर ईम्पी साहब सं. ७० (१९) मेजर एवर्ट साहब सं. ७२ (२०) मेजर सी. के. एम. वाल्टर साहब सं. ७३ (२१) मेजर सी. ऐ. वेली साहब सं. ७५ (२२) मेजर केडल साहब सं. ७८ (२३) कप्तान बा. साहब का. सं. ७८ (२४) क. परसी डवल्यू पौवलट साहब सन् ७८ (२५) क. दोडी साहब सं. १८८० (२६) क. परसी डवल्यू पौवलट साहब सं. ८२ (२७) मेजर सी. ऐ. वेली साहब सं. ८५ (२८) क. परसी डवल्यू पौवलट साहब सन् ८५ (२९) क. एफोर्ड साहब सं. ८५ (३०) क. पौवलट साहब बहादुरजी सं. ८५

रियासतों के साहसी युद्ध नात की वृत्तवास्तो चबकील उदयपुर जमपुर जोधपुर जैशालमेर सिरोही सिंगढी पालनपुर बांका नेर कप्तान गढ़ रहते हैं ।

यहाँ के बकील से ४ में व्यास वद्रीदास व से १७ में हाफ़ज अबदुल हक़ जी बासदे  
नागौर जो नायब थे से ३७ में फ़ोत हए बंद बेरा अब्दुल हसन जी हैं दोनों को पैर  
में सोना मिला ।

## अजन्ती में

नक़शः वरपोट भेजते हैं

(१) हरदेफ़े नक़शा बारस (२) हरपरखवाई निखे वाज़ार (३) से माही नक़शे  
पांच । १ में फ़टक कर नमक डाक ठगी डकैती (४) शसमाही महाजून व दिसम्बर  
के अखीर में । तादाद फौज सवार पैदल व तोपा । तादाद मुलाज़िम ईसाई बिला  
यती मकरानी । तनखाह सिलावटे व मजदूर । तादाद मुजरमान जो इलाक़  
ह गैर से आये मये हाल उसको सलाह व गैर हका । तादाद अफ़ग़ान देश में पैदा  
बदिशावर से आया व खर्च हुवा व रुपये महसूल । पैमायश के मिनारे सम्भाल  
कर पोर्ट करना । राजपूतों के शादी ग़मी का हाल (५) सालयाना रपोट अखीर  
दिसम्बर में । तादाद बारोमिये हैं व इमशाल हुवे की । बीज गंदम व रूई कितनी  
ज़मीन में कितना बूहा कितना पैदा व खर्च व ने काल कहां को हुवा मये निखे  
व अमदनी राज । तनदरुशती व सेहत आम खलायक । मेउ कालेज अजमेर में  
कौन गया । हिस्सा व कुल पैदा खर्च की । तादाद वारदात साल तमाम व सजा  
मुज़रमान । तादाद दीवानी फौजदारी में कितने व काया साबक व नये रज़ू व  
फेसल मये पैदा राज । जो कोई तरकी व तनज्जुल इमशाल हुवा हो (६) झाला  
न पूछने पर करजा घास चारा घोड़े बैल खच्चर व गैर ह व गैर ह लिखा जाता है  
(७) खीडन्ती से नक़शा माहवारी महसूल अफीम का जो पाली मे से ३८ से लेते  
हैं व छः माही हिस्सा व खजानची का जाता है ॥

# यूरोपियन साहब वहादुर शाह साहब ईलाक जैशमर में

तशरीफ लाये ॥

(१) जनाव साहब कलौ लाफट साहब वहादुरजी सं १८८२ श्री सरकार से हथनो एक लक्ष्मी व सोगात लाये (२) बवलिया साहब सं ८९ में बीकानेर महाराज से मुलाकात कराई (३) तडल साहब वहादुर सं में बाप फलोधी की सींव निकाली (४) जैकिस साहब सं ८९ वहादुर में मुफसिदों को सजा दी (५) (६) कलंजर साहब मेपलादन साहब श्रीजीगंगाजी पधारेजव साथ थे (७) सा. स. में साकल सेजमीन मापते थे (८) जनाव क. ज्ञान सदरलेन साहब वहादुरजी सं ४ माघ शुदी १४ क्रांतशरीफ लाये दिन १५ मुकाम डाकर साहब व सिकतर साहब साथ थे (९) कप्तान बीचर साहब सं १६ में आये सिंध से शीव निकाला (१०) कप्तान सिवल सं ८ में पोकांत से शीव निकाली (११) साहब सं में आकर मुलतान गये वहां काम आये (१२) सिंध से कामिश्वर साहब के भेजे सं १४ गदर में अजमेर जाना मरे फौज बलोचां का बिलाक साहब व दू सदे साहब आये ये तोफारिसाला भी साथ था (१३) तरवद साहब साहब अमरकोट से सं १४ में आये दिन रहकर ऊंठ खरीद किये (१४) (१५) (१६) कप्तान जुका साहब व डाकर साहब व डिकसन साहब सं १४ फाल्गुण शुदी १४ को आये चैववदी की कूच (१७) मकाली साहब सिंध से तोपरवाना ले जोधपुर गये दो साहब साथ थे सो पीछे आकर सिंध गये (१८) मकाली साहब सवार ५०० सिंध से आये थे केरजी साहब सं १४ आषाढ शुदी ० को सवार ४०० साथ ५०० गारवानात के आदीटों में से पहला आडीटर जो सन् १८८६ ई. के अन्त में जैसलमेर में आया उसका नाम मोलमी मुहम्मद मुगदली घडीटर राजपूताना गजट अजमेर है इसकी मुलाकात श्री महाराज वल्लभ शिरोहाली साहब से हुई गौरद्वाराने १०० रु० ऊंठ और दुशला नंगा इनको बख्श था

अजमेर से आकर सिंध गये (१९) गुलसमद साहब सं. १५ माह शुदी १२ अमरकोट  
 से आये दं रहे फेर पौकरन से पीछे आकर सिंध गये (२०) डिकसन साहब सं.  
 ११ कार्तिक वदी ५ सवार दो सौ साथ आये थे (२१) (२२) जैकिसन साहब पाटी  
 साहब सम्बत् १७ माह वदी ६ वहाड मेर तो फालाये (२३) नैकिसन साहब व  
 हाड अजन्त जोधपुर से १७ माह शुदी १ वहाड मेर से आये सो गिरि राज सरत शरी  
 फले गये (२४) सिकंदर हिमलतीन साहब सं. ९ कार्तिक में बीकानेर का कांकड  
 देखा सं. १९ में सरहद निकाली (२५) कप्तान इष्टन साहब सं. १९ पौष शुदी ११ को  
 आये शुदी १४ को कूच फेर चैत्र वदी ७ को आये वदी ८ को कूच (२६) निकसन सा  
 हब वहाड जोधपुर से सं. २१ के मृगसिर वदी ३ को आये वदी ८ को कूच (२७) जना  
 व कलां क. इडन साहब वहाड जी सं. २१ कार्तिक वदी १३ को त शरीफ लाकर र्थ  
 जी साहबों को तख्त नशीन कीये डाकर लोग साहब व सिंध विलीयर व रायर्ट साह  
 व साथ थे (२८) जोधपुर से इस्पी साहब वहाड सं. २० कार्तिक वदी १२ को आये  
 वदी को कूच पैमायश के काम पर (२९) रान साहब सं. ३० माघ सं. ३२ पौष सं. ३३  
 पौष माघ कार्तिक सं. ३४ के कार्तिक में गये (३०) रावर्स साहब सं. ३२ के चैत्र में आये  
 सो जनाब बालदर साहब के दोस्त लिखने से खातिर ज्यादा करार्ड (३१) पाथ साहब  
 सं. ३१ व सं. ३३ मृगसिर माघ चैत्र व सं. ३४ के कार्तिक शुदी १२ को आये थे (३२)  
 बूलर साहब बुम्बर्ड से आकर सं. ३० के माघ में जैन का शास्त्र देखा व कैद उतराया  
 कि नया मिला एक साहब शेर करने को बिलायत से आया साथ था (३३) जोधपुर से  
 स्त्री डन्ट बालदर साहब वहाड सं. ३० आ सो ज शुदी ६ को आये बड़ी धूम से दस हरा हु  
 शा फेर सं. ३२ के फाल्गुण में श्री जी साहब की मिजाज पुरसी के वास्ते त शरीफ लाये  
 डाकर साहब जी से ये युमत साहब साथ थे उनको वाजसत घोड़ा व रुपये देराये (३४)

विलाटफोर्डसाहबसे ३३फाल्गुणशुदीकोपत्थरदेखा इंगार तेमडे व तेजुवांमेंधातु  
 क्रहकरपत्थरलेगवे (३१) कृष्णकानलसाहबवहादुरव एवज र्जीडन्तसाहबसे  
 ३३के पौषशुदीमेंशाकरकेशरहिन्दकादर्वाकिया (३६) यष्टनसाहबसे ३३के  
 वैशाखमेंफलोधीसेनमककाआगरदेखनेआये (३७) फिरटीसाहबसे ३३केवैशा  
 खवदी १ (३८) जनाबबारसाहबवहादुर र्जीडन्तजोधपुरसेसे ३५केनाथमेंफलोधी  
 सेआयेकागुलपरतुर्काकीचढ़ाईदोलियेकंठररीदकराये (३६) जनाबकलामेंत्राड  
 गेहसाहबवहादुरजीसे ३३केकार्तिकवदी५कीतपशीफलायेवदीदकांकन (४०) जना  
 बकपोलटसाहबवहादुर र्जीडन्तजोधपुरसे (४१) मिश्रीलतायसाहबसे ४२  
 ४३मेंदेशकेइंगारदेखे (४४) डाफरलडमसाहबसे मेंआये॥

## दफा ३

नकशारियासतहाफजोसूवाअजमेरवआबूकेरजपूजानामेंआवादीव  
 आमदनीबंगेरहकासन १८८१ ईस्वीवमूजि

नं०	नामसिपासत	लकब	नामरईस	नामसिपासत	नामसिपासत	म र ड म गु मा री				नामसिपासत
						घर	कुलमनुष्य	भरद	औरत	
१	उदयपुर	महाराज	श्रीमन्मन्मिहरी	१९८०	५३२२	३२४९६	३४७३९४४	३०२५५३	६०५५२	५२००००
२	जयपुर	रे	श्रीरामसिंहजी	१५४६३	५६६५	५३६८८	१५३५३५७	१३६६१४	१६६६६६	५०००००
३	जोधपुर	रे	श्रीब्रह्मसिंहजी	३३०००	३३८५	३३६५४	१३३०४०३	६६६६६६	३६६६६६	४०००००
४	नेसलमेर	महा खल	श्रीविहीरामजी	१६६५४३	४४४४	३६६६३	१०६६६६			
५	बैकानेर	महापद्म	श्रीद्वारासिंहजी	२३३५०	१३३६	१३३६६	५०६०३२	२६६६६६	२६६६६६	१३५०००

६	अलवर	रावराजा श्रीमंगलसिंह जी	३०२४	२७४७	१९३४८	६२८२६	३६०३८४	३२२५४२	२३०००००
७	भरतपुर	महाराज श्रीजसवंतसिंह जी	१८७४	१३५८	८८१०४	६४५५४०	३५०४७५	२८५०६५	२८०००००
८	करोली	महाराज श्रीअर्जुनराजजी	१२०८	८६२	२५८३०	१४८६७०	८०६४५	६८०२५	५००००००
९	टोक	नवाब	२५०८	१९८२	७३४८२	३३८०२८	१७६८६८	१६११६०	१२०००००
१०	बूंदी	महाराज श्रीरामसिंहजी	२३००	८४२	६०५६५	२५४७०२	१३३९०३	१२१५८८	६००००००
११	कोटा	महाराज श्रीशत्रुघ्नसालजी	३७८७	१६११	१३०८८८	५९०२७५	२६८८२४	२४७३५१	२८५००००
१२	भालाबाड	राजराणा श्रीवसुदेवसिंह जी	२६८४	१४५७	६३००१	३४०४८८	१८५०२८	१४७४४८	१५०००००
१३	सिरोही	रावराजा श्री	३०२०	३६६	३०५३२	१४२८०३	७६१३२	६६७७२	
१४	झगरपुर	रावलजी श्रीउदेसिंहजी	१००००	४२१	३६८८६	८६४२८	४४५६८	४९८६१	२००००००
१५	वासवाडा	रावलजी	१५००	१०८१	३५८२०	१०४०००	४९९९८	३८१८०	२८०००००
१६	मतापगढ	ऐ.	१४६०	५६८	१८६२२	७८२८८	५८०८८	५३५३५	
१७	किशनगढ	महाराज	७२४	२१३	२४८२८	११२६३३	५८०८८	५३५३५	२८०००००
१८	धोलपुर	ऐ	१२००	५३८	४८४२८	२५८६५७	१३८३४२	१११३५५	१९०००००
१९	शाहापुरा	राजा	४००	१४८	१०८४८	५१७५०	२७३१७	२४५३५	३५०००
२०	लवा नरुकाग-रूकसेशमी								
२१	अजमेर सरकारी मूवाकमिश्नर		२७११	७०३८	६४११८	४६०७२२	१४८८४४	२११८७८	
	साहब हैं राजानही के डाँठकाने								
	राखोडवगौर इस्तपुरा हैं								

तथा मीलों ने खाने शुमार नही कराई सो तब मीन नउ ५१ ७६५ ५२ १०४० ४५३ २० कुल १६६३ ४३ है ४

इति शुभम् ॥ सम्बत १८४८ माघ शुक्ला १५ सन् १८८२ तारीख १३ फरवरी ॥ इति

हस्ताक्षराणिक्षेपकणिब्राह्मणमोडस्य



## \* दफ़ा ४

दूसरी रिश्तास्तों वरईसों के नाम जैल में लिखे हैं और उनके तेज प्रताप व दातारी वीरता के हालात नवारीखों में हैं ईसाग्रंथ बध्नों के लिहाज़ से नहीं लिखे

## रियासत उदयपुर

श्री आदि नारायण से ई० पुस्त श्री रामचंद्र अवतार के पुत्र लव के वंश में ७८ विजैनाभ से कौम गहलोत हुई १३२ गंधर्प सेन ने (१) तंवावती व १३५ कनकसेन ने उजेन वसाई - १४२ किरीये जी मयाने हुआव में राज किया अयोध्या छुटी १६० केसवदत्त मगर ईंडर में रहे १६१ नागदत्त नागदां में राज किया १६४ आसदत्त अड वसाई १६७ यहदत्त ईंडर के राजा से लड मरे - कु. आपा ब्राह्मण के घर में रहे सिध्दहीरदत्त ने श्री इक्ष्वाकु गजी के दरसन कराव दफ़ीना बताया जब सोरीयां से चीतोड लेकर राजधाना करे रावल कहां ये २०५ समरसी प्रधीराज चहुहान की मदद गये यनोज के राजा जैचंद से फातह पार्द बादशाह महम्मद से लड मरे प्रधीराज को पकड़ कर बादशाह गज़नी ले गया - २०७ करन सिंह के छोटे पुत्र रायपत ने डुंगरपुर का राज किया वसिस्तून को नाग काटा - श्री पुजने जिजाया सो सीसोदिये महाजनहुस - २०८ महीपत मंडोवर के राजा को पकड़ने से राना कही जे २१८ रत्न सिंह सिंगल दीप में पदमावत से शादी करी - २२० अजीत सिंह ने अडसी के बेटे दमीर से मौजे वावचा को मरवाय गांठवाड में दखल किया हमीर को जो करामाती था राज दिया और कु. सजन सिंह ने सनारे का राज पाया - २२४

मोकल जी को राठोड़ों ने चुक कर नाचाहा जब मंडीवरही बेली थी छोटे कुं-  
 रघुमारा देवलीये खत हुवा जिनके सूरजमल प्रथी सिंह - बाघजी - भानु - हरी  
 सिंह - प्रतापसिंह - गोपाल सिंह - सालमसिंह जी अब है - २२५ कुंभाजी  
 १६० अनियां सिवाय पासवाना के थी ३६ किले जहीर वफत हू किये - करा-  
 मानी थे ब्राह्मण के कालिव में अपनी सूह तबरील करके स्वर्ग गए ब्राह्मण ग-  
 दी बैठ कर यह हाल कद्र दिया जब कुं. उदाजी ने उसको मार डाला जिस से  
 छोटे कुं. रायमल जी गदीन शीन हुए - २२७ सांगाजी किला रंगात भौर बना  
 या - वहुंटांड में सांगानेर बसाया मंदसौर तक अमलदारी हुई - कुं. भोजराज  
 तो फोन हुए - रत्न सिंह राज बैठे - शेर विक्रमावत जी को खवास बन भीर  
 ने चुक किया और आपराज बैठा जिसको निकाल कर २३१ उदयसिंह जी-  
 सं १६०८ में राज बिराजे - सं. १६२२ में चीतौड़ में बादशाह का कबजा -  
 हुआ जब देवडे राजपूतों से गिरदी वकई गांव जहेज में मिले थे यहां रहे -  
 उदयपुर शहर बसाया व उदयसागर तालाब बनाया - सांगा राठोड़ से सलूवर  
 लेकर रावसिंग जी सावे वाले को दी बहले कनवारिया दिया - सं. २४ में चीतौड़  
 ही कबजे हुई - २३२ प्रतापसिंह जी सं. १६२८ पांचवां कुं. बाघजी जहाजपुरा  
 ये - २३३ अमरसिंह सं. १६५२ बादशाह को खिरनी ४ हजार देनी कर थाने -  
 थाने उठाये - फेर नहीं दी - तीजा कुं. सूरजमल जी सायपुरे गए - जिनके २३४  
 कर्न सिंह जी सं. १६७६ शाहजादे खुरम को तखत बैठाया जब इलाका मालवा  
 मिला था - २३५ जगतसिंह जी सं. १६८४ - २३६ रायसिंह जी ब्रज से पधार  
 सो हनोज बराजे है - २३७ जैसिंह जी सं. ३७ इलाके से बादशाही थाने उठाये  
 २३८ अमरसिंह जी १७५५ - २३९ सांगरामसिंह जी सं. १७७६ - २४०

जगतसिंहजी सं. १०८० भानेजमाधोसिंहजीको जैपुरगद्दी नशीन किया-  
 रुसखर्चमें १५ लाख का इलाका भानपुर रामपुर मलार एवं को दिया २४१  
 प्रतापसिंहजी सं. १८०७ - २४२ राजसिंहजी सं. १८१० - २४३ अडसी  
 जी को सं. १८१७ राजबिठाया जिला नीमच मांजो सीधीवे को दिया - २४४  
 हमीरसिंहजी सं. १८२४ - २४५ भीमसिंहजी सं. ३३ नुरागा अखतर साहब  
 ने छावनी नीमच आबाद करी यट साहबने उदयपुरमें कंठी बनाई - २४६  
 जवानसिंहजी सं. ८४ - २४७ सरदारसिंहजी सं. ९५ कोटा भाई सेरसिंहजी -  
 काघोरदा - २४ सरूपसिंहजी सं. ८८ रियासत सरसवज्ञ करी - २४९ शंभूसिंह  
 जी सं. १८१८ अजंदी कायमदुरी - २५० श्री सजनसिंहजी सं. १८३०  
 आसोज सज्जगढ़ बनाया - २५१ श्री फतहसिंहजी सं. १८४१ सावरा सुद  
 ४ चिरंजीव

## रियासत डूंगरपुर

जो उदयपुर महाराजा के खान्दाने में शामिल है ॥

ख्यातमें लिखा है कि अनादि पुरुष ॥ १ ॥ से १६७ पीढ़ी रावल सवंतसिंह के  
 बड़े कुं. सीहड़ ने पिता की आज्ञानुसार छोटे भाई भूहरा को गढ़ चीतोड़ का  
 राज देकर आपउत्तर दिशा में नदी सांम पास यवनों से लड़ कर धरती ली-  
 और राजधानी करी - ॥

१ रावल सीहड़ ॥ २ दूदा ॥ ३ वीरसिंह ने सं १३५५ में डूंगरा भील को  
 जो १० स्त्रस भीलों का सरदार लुटेरा था मार कर उसे पुरमें शहर वसाय डूंगरपुर  
 कही - ॥ ४ भरतुंड ॥ ५ डूंगरसी ॥ ६ करमसी ॥ ७ कानड़दे ॥  
 ८ पाताजी ॥ ९ गोवाने जी गोब सागर तालाब बनाया ॥ १० सोमदासजी

\* अखिलनामधन का यकट्टर जो नीलायदूरे जी फौज के जनरल थे शाह आलम बादशाह ने इनकी नसी  
 सुना काहिना व दया का छावनी नसी एबादुल्ला सादिवने अपने ही नाम से बसा दी - ॥ म. मु. १९३०

११ गांगाजी से गहलौत हूय ॥ १२ उदैसिंह ॥ १३ प्रथीराज ॥ १४ आस  
कर्न ॥ १५ संहसमल ॥ १६ करमसी ॥ १७ पूजो जी ॥ १८ गिधरजी  
१९ जसवन्तसिंहजी २० खुमारासिंह ॥ २१ रामसिंहजी २२ सेवसिंह  
जी ॥ २३ बैरीसाल जी ॥ २४ फतहमलजी ॥ २५ जसवन्तसिंहजी  
हरीसगत हूय बहुत द्रव पुन्य कर के अथराजी में देह त्यागी ॥ २६ रावलजी  
श्री उदैसिंह जी चिरंजीव कुं. जी श्री खुमारासिंहजी भंवरजी श्री विजय-  
सिंहजी ॥

## रियासत जयपुर

श्री रामचन्द्र जी पूरा अवतार के पुत्र कुसके बंस में सुमित्र के बेटे कुर्न  
से कुर्न बपोते कतख खांध के कछवाहे कहो जे मगधदेश के नागवंसीयो  
जे अयोध्या कीन ली जवसे अन्तरवेद में मौजे मुगद फेर नरवर में रहे - और  
ज्वालिअर भी नावे किया सो इसी सिंह ने अपने भानेज तुंवर जेसा को रिया  
पीछे नंदावडी में रहे इनके कुं. १ सोड देव ने मोरियां बडगूजरों से ही सा  
लेकर सं. १०२६ में राजधानी करी वादमीना का मुल्क माची पीह गरीर -  
भोटावाड़ा लेकर किलारा मगठ बनाया ॥ २ दुलहराय षोह में ३ का-  
कलदे आमेर में राज बैठा - ४ हरगुदेव ५ जैनड ई प्रद्युमन ७ मलेसी  
यो ३२ पुत्र हूय ८ बाजल राज बैठा कूकी से व आन जाति मन्नाजन नाई  
जाट वगैर हूय ९ राजदेव से पीछे तडाहूई - छोटे कुंवर भोजराज के -  
४ सारव कछवाहे हैं १० केलरा - केलरा गठ बनाया ११ कुंतल कं हमीर  
के हमीरदे गांव दुंगीरावजी १२ जूणासी कुं. कूम्हे के कुंभांणी १३ उदै कारी

कुं० नरसिंह व बरसिंह के नरसू के गांव लदाराण उनेहारा लावा वगैरहैं- और  
 खाला के सेखावत मौजे मनोहरपुर व सीकर खेतड़ी चौकड़ी वगैरहैं- व  
 सोब्रह्म के सोब्रह्म पोते व पातल के पातल पोते व पीथा के पीथापोते (१४) गल्ली  
 (१५) वनभीर कुं० मंगल के मंगल पोते व वरा के वरापोते व नरा के वनभीर पोते  
 (१६) उधर्रा (१७) चन्द्रसेन कुं० कूमा के कूमावत (१८) प्रथीराज के १८  
 पुत्र में पूर्णमल व भीम व भीम कावेटा रत्नसिंह व आसकर्म ने तो थोड़ा  
 थोड़ा राज किया और १२ की १२ कोटड़ी हुई जिसमें कई लुप्त हुई जोहीं  
 दूसरे मिलाये गये ॥ पिचान के पिचानोत ॥ सुलतान के सुलतानोत ॥  
 गोपाल के नाथावन गांम चामू ठाकुर सरमोद रावलजी मुसाहिबी के हक-  
 दार हैं ॥ जगमाल के बेचारोत गाम डिर्गा ॥ बलभद्र के बलभद्रोत-  
 गां० अचरोड ॥ रामसिंह के रामसिंगोत ॥ प्रताप के परतापोत ॥ सार्ई  
 दास के सार्ईदासोत ॥ चतुर भुज के चतुर भुजोत गां० बगरू ॥ कलपां-  
 रा के कलपांरां ॥ पूर्णमल के पूर्णमलोत गां० नीमडा ॥ सांगा  
 (१८) भारमल कुं० भगवानदास के वांकावन ॥ सुन्दर दास के सुन्दर-  
 दासोत ॥ (२०) भगवती दास कुं० मांधोसिंह के मधारी व सूरसिंह के  
 सूरसिंहोत ॥ वनमाली दास के वनमाली दासोत ॥ (२१) मानसिंह जी से  
 राजावत हुये ॥ कुं० रुर्जनसिंह के रुर्जनसिंहोत गां० धूला भावसिंह राज  
 किया मिरज़ाराजा का खिताब पाया बिम्बा गांव वसाया ॥ सगनसिंह के सगन  
 सिंहोत ॥ कलानसिंह के कलानसिंहोत ॥ हिमन सिंह के राजावत ॥ (२२)  
 जगनसिंहजी ॥ कुं० जूभासिंह के पुत्र संगराम का उल्लाय ॥ प्रथीसिंह  
 के खिरणी व ईशरदे है ॥ अनोपसिंह के राजावत ॥ तानार सिंह ने गय

ज़ादा का खिताब वनागौरका परगना पाया ॥ (२३) महासिंह ॥ (२४)  
 मिरजा राजा जैसिंह जी ॥ (२५) रामसिंह जी बादशाह ने आमेर खाल  
 से कर पीछी बरवशी ॥ (२६) किशनसिंह जी ॥ (२७) बिशनसिंह जी -  
 हिन्दोन का परगना पाया था ॥ (२८) सवाई जैसिंह जी सं० १७५६ बड़े  
 ही प्रतापी हुये सं० ८४ में ग्राहर जैपुर बसाय राजधानी करी सवाई तथाराम  
 ज राजेन्द्र का खिताब पाया बादशाह ने आमेर खाल से कर पीछी दी बाद ईशर  
 सिंह जी राज बैठे थे - बूढ़ी कील लीवी थी ॥ (२९) सवाई माधोसिंह जी -  
 किला रागत भोर फतह किया - प्र० एव बरामपुर दरबानियों को दिया ग्राहर मा  
 धोपुर व सवाई माधोपुर बसाया वेय प्रथीसिंह ने भी १० वर्ष राज किया  
 (३०) सवाई प्रतापसिंह जी सं० में हुये इनके अहम में मांचोड़ी रावनरू का प्रता  
 पसिंह जो ६ हजार का जामीरदार था अकल व बीरता से जैपुर - भरतपुर - मे  
 वात व गौरह का मुल्क दबाकर अलवर में राजधानी करी - बरवतावर सिंह जी  
 को गोद लिया जिनके वनैसिंह जी उनकी शिवदान सिंह जी उनका मंगल  
 सिंह जी - अवराव राजा है ॥ (३१) सवाई जगतसिंह जी सं० १८६० इनके  
 बाद नरवर से मानसिंह जी को लाकर राज बैठाया था परंतु कुं० जैसिंह जी -  
 पैदा हुये तब उठा दिया - (३२) सवाई जैसिंह जी सं० १८७६ ॥ (३३) सवाई रामसिंह  
 जी सं० १८८१ राजविराजे अकल व होशियारी से राज बारी आया व सरदारों के ठिकाने सर  
 सन्न किये खालसा ३२ लाख का था सो २५ काहुआ सरकार अंगरेजी की मेहरबानी से  
 कलकत्ता कौनसिल में मेम्बर हुये कोट का सम का प्र० पाया और नेक निश्चिती या  
 नेरबास व आम पर नेक नज़र व गौरह २ खूबियां अज़हद थी एक काम बहुत ही  
 बुरा किया कि श्री वल्लभकुल के मन्दिर उठा दिये - उत्राधिकारी न होने से ईशरदे के

\* २१ मई सं० १८८६ ई० को महाराजा भोगलसिंह जी मौ० सूफनैनी ताल के पहाड पर जहां आब व डबा बदलने  
 गये थे स्वर्गवास हुये लाश २५ को अलवर में लाई जाकर दफा दिया गया ३ जून को इनके पुत्र जैयसिंह जी १०

पृथ्वी का अथर्वस्था में गंभीर नशीन हुये - सं० मराठे अली

उ० कायमसिंह को कि जिसकी ईशारे दो का इलाके से ही खार्ज किया था हस्त लेकर माधोसिंहजी नाम रखा ॥ (३४) सवाई माधोसिंहजी सं० १८३० राजवैठ चरजीव ॥

## नकशास्थियासतउदयपुरके१६सण्यतोंका

नम्बर	खांप	लकन वनाम जागीरदार	ठिकाना	आमदनी	कैफियत
१	भाला	राजराणा राजसिंहजी	साहडी		
२	चौहान	रावजी * रावतसिंहजी	वेदजे		
३	रे०	रे० फेसरीसिंहजी	कोठारिया		
४	सांसोदिया	रावतजी जोगसिंहजी	सबूर		
५	पोयार	रावजी गोवददासजी	बीजोलिष		
६	चूना०	रावतजी किस्नासिंहजी	देवगढ		
७	रे०	रे० मेवसिंहजी	वेगु		
८	भाला	राणा * फतहसिंहजी	केलवाडे		
९	चूना	रावतजी शिवनाथसिंहजी	आमेट		
१०	रे०	रे० अमरसिंहजी	मीजारी		
११	भाला	राणा मानसिंहजी	गुणादा		
१२	सारंगद	रावतजी न्हासिंहजी	कानोड		
१३	सगनावत	महाराज मदनसिंहजी	भीडर		
१४	मेडतीया	गह्वर केसरीसिंहजी*	वदनोर		
१५	सगना	रावतजी मानसिंहजी	गन्सी		
१५	किस्नावत	रे० प्रतापसिंहजी	भैसरोड		
१६	सुहान	रावजी रत्नसिंहजी	पारसोली		
१६	किस्नावत	रावतजी जैनसिंहजी	कुडगवर		
५	मेडतीया - चारोएवयांसोअब गोदवाड-साथमावाडमेंगया -				

सबजमें, किस्नावत रावजी सज्जनसिंहजी गांवआसींदेवांहे -

रवैखर्नासिंहजीकाजूनस० १८८२ई०केअनमेंदेहान्तहोगयाइसकीजगदइनकेपुत्रकरणासिंहजी गादीपरवैठेदे मु०मुगदअली

\* फतहसिंहजीका देहान्त होगयाउनकेपुत्रराजनाका लिमसिंहजीमासिकने० ॥ मुदमदसुरअली

\* इसकी भी देहान्त होगयाअब इनकेपुत्रगोदवाड-साथमावाडमेंगया

## रियासत जोधपुर

कमधज या कमंध याने राठीडों की नवारीध्वसिजसिनेवार नहीं मिली  
 शहर कजोजमें बडगाजथा ॥ १ राजा जैचन्द के बाद २ सेत आरचाड में  
 आये और कई पुस्तों सह नौशानासे मुल्क लेकर पड़े रहे ३ सीहा ४ आ  
 स्थान ५ धुंहुड ईशवगाव ७ जालरासी ८ झाना ९ तीडा १० सलखा  
 जीके बडे कुं मलीनाथ के लगभग लफा दो सालानीने वकुं पावगौरह को राज  
 जैसलमेर से बहाडमेर कोरडा गिराव भर परगने मिले और जैतमाल  
 अहमदाबाद जाने अखानंदा पुवारोंको गोठ जिमाय चुक करके गुडा राडधरा  
 सर ४८ गांवोंके लेकर राणां कहीजे तथा ११ बीर्मजी ने हलाखां वगौरह जी  
 ईगोंको पनाह दी और उनके मुल्कमें जारहे और वहांही मार गये- बाद कुं  
 गोगादेने हलाखां वगौरह को मोरे हलाखांके बेटे ने गोगादेको श्रम भेजा ॥  
 १२ चूमाजी को ईरां ने मंडोवर दी ॥ कुं चवदे राव भर ॥ १३ खिडमल  
 जी तीरेपुरमें काम आये अंडोवरही छुटी थी सो १४ जोधाजीने पीछीली फेर-  
 मं १५१५ में गढ वशाहर जोधपुर आसाहकर राजधानी करी फेरनोराज नीत  
 याने सजी धर्म मूजब जलीनके ग्राहक हुए चुनाचे हूपीडी में हर तरफ पड़ो-  
 सियों वगौरह का बहुतसा मुल्क दवाने रहे बल्के बीकानेर किशनगढ रतलाम  
 आबखदरा वगौरह कई जगह जुदा २ राज बांधा १५ सूजाजी १६ पाधाजी  
 १७ गांजाजी १८ बालदेजी १९ उदैसिंहजी २० सूरसिंहजी २१ गजसिंहजी  
 २२ जलवंतसिंहजी २३ अजीतसिंहजी कई वर्ष पहाडों में रहे गढ में बाँशा-  
 ही आगा रहा २४ अभैसिंहजी को गढ खिला- कुं रामसिंहजीको निकाल कर



४	करनांत १८	३०॥	०	६५८६३	०	३०॥	६५८६३
५	मेडतीया २२१	५८६॥=	६	१४९२०७८	१६५००	५८६॥=	१४९२०७८
६	जोधा १४५	२२२॥	६॥	४१०७०॥	३००००	२२२	४४८४५०॥
७	जरावत ७०	१२७	२७॥	२८३४००	६६६६८०	१५४॥	३५२०२००
८	कर्मतीत ३४	४४	१७	२७००००	१३४०७५	६१	४०४०७५
९	नरावत ७	६॥	०	१६५०००	०	६॥	१६५००
१०	महेचा ८	१३॥	६	१८६६३	३०३६६	१८॥	२१६६६
११	घवेचा २५	३४॥	॥	३०६६६	४०००	३४॥७	३१०५६
१२	जैतावत ३	२॥	०	२७५००	०	२॥	२७५००
१३	पानावत ३७	४२	०	६९५८०	०	४२	६९५८०
१४	रुपावत २॥	२॥	०	३००००	०	२॥	३००००

१४	बोदावत ३	१॥	०	(१०५०)	०	१॥	(१०५०)
१५	कालान ३	२॥	३॥	(४२५०)	२४३०	३॥	(६६५०)
१६	वादिशान ३	३	०	(६२५०)	०	१	(६२५०)
१७	रावभालान ३	३॥	०	(६०००)	०	३॥	(६०००)
१८	मानयोगिन ३	०	०	(१०५०)	०	०	(१०५०)
१९	मानयोग ३	१४	१०	(२२५०)	(२२५०)	१॥	(२०५०)
२०	मान ३५	मान	॥	(२०५०)	(२०५०)	मान	(२०५०)
२१	मान ३५	४१॥	०	(६०५०)	०	४१॥	(६०५०)
२२	मान ३	॥	०	(१०५०)	०	॥	(१०५०)
२३	मान ३	३	०	(२०५०)	०	३	(२०५०)
२४	मान ३	०	॥	(१०५०)	०	॥	(१०५०)

भार्ई २५ वयतसिंहजीराजवैठे - २६ विजैसिंहजीकेपोते- ३०  
भीमसिंहजीसं० १८४८ मेंराजविराजे- फेरगुमानसिंहजीकेकुं०  
श्रीमानसिंहजीसं० ६० मेंराजादुख जब फेरमानसिंहजीस्थाकोवेजडसे  
ठा० सगतीदानजीने वडा स्तेव का मुनशा लाकरराजवेगया- यादश्रैम  
नगरसे २८ श्रीतखतसिंहजीसाहबकोसं० ८८ मेंतरयतनशीनकिस-  
सरकारअंगरेजीकाअजन्त रद्दनेसे वाआरामराजकियासितारहिन्द  
कानुगमा पाया-

३० श्रीजसवंतसिंहजीसं० १८३० फागुराबुदि१ चरंजीव- नेकनियती-  
कीवरकन व वजन्द शकवाल सेरजीडन्त तोकरनल पावलट साहबवहादुर-  
औरकारमुखतारछोटाभार्ई महाराजसरप्रतापसिंहजीमिलगिरिआ-  
सतसरसक्जहोगर्द चुनावेखारवावेसे जोधपुर-बालोतरा गक रेलहीने  
वनमक काटे कासरकार अंगरेजीको देने वहीबानीफोजदारी व सायरान  
वगेरः २ फानवावन्दो वस्त करनेसे आमदनी १८ लाखथी सो सहचन्दहुई  
और ऐसीही काररबाईरही तो इससेभी दोचन्द होजावेगी तथासरदारो  
से हर पीढ़ीमें वपेडगरदेथा सो नामही नहीं रहा- जसवन्तपुरा गाव व  
जसवंतगढ बनाया-

जामीरदारोके गावोंकीतादाद व आमदनीवगैरेकानकशासं० १८८६केफैस-  
लामूजव जुंदा लिखाहै - ॥

जीसी एस आर्ट कानुगमा मिला श्री प्रतापसिंहजीसाहब इंगलस्तान-  
जाकर कैमपोशी हासिलकरी- के.सी. एस. आर्ट काखिताव पाया-  
सं० १६ में महाराजकुमारश्रीसरदारसिंहजीजन्मे-

\* दुआकेसरहीन्दकी

आठ मिसलों के खांपांव गांव होहा वसोठा में लिखे बाकी १६ । ३२  
गाने बहुत से हैं -

होहा - चांपा कूपा मेडत्वा ऊहाव कनोत - आठ मिसल जोधाअ  
स जैतावत अमसोत - ॥ सोठा

आठवा वआसोप रियां रायपुर कारागोशां । आठ मिसल अरूप पिखा  
पेकनोवद नीमाजरास भाद्रजुरा

नाडा खीवसर - ॥ प्रगनायनेहकूमतोकेनाम

(१) जोधपुर (२) नागोर (३) डीडवाणां (४) मरोट (५) परबत  
सर (६) मेडत्वा (७) जैतार्या (८) सोजत (९) वीलाडा (१०) पाली  
(११) बाली (१२) जालोर (१३) भीनमाल (१४) सांचोर (१५) शैबाना  
(१६) पचपधग (१७) शिव (१८) मेराट (१९) फलोधी (२०) सांभर -  
(२१) नवा - (२२) जखनपुरा - औरमातहतथानेवहुतहैं ॥

हियासतभारवाडमेंजगीरदारोंवेषवधारेकेगावोवआमदनीकी  
तादाहसं-१८६६ के फौसले मूजब ॥

क्र	नामखांप	तादाहगांव		तादाहपैदा		कुल	
		रेष	वधारे	रेष	वधारे	गांव	पैदा
१	चांपावत	२३५	४०५॥३	३२०१४॥	१०२१२५॥॥	३१०॥३	४६२२६६॥
२	कूपावत	७७	१३	१४४८३७	५४६२०	८०	१८०७५७
३	जैतावत	२२	३॥	३६६००	५२२५	२५॥	४५०६५

२६	सी पल १	३८	०	३१६७२	०	३८	३१६७
२७	देवराजोत २	२०	०	१०४७५	०	२०	१०४७५
२८	जुभाणीया २	१	०	४०००	०	१	४०००
२९	चाडदे	११	०	२६००	०	११	२६००
	जोड २५८	विकानरा होड-	२०५	विकानरा जान-	२८३	जोड हीनो कीरव	३५२३८१८
१	भाटी सरदार ८४	२२४॥	३५॥	१७२८	२०४००	१८०१	२७३३०८
२	चुहान ७४	१५	३	१८७६३५	६६६५०	१६८	१७४२८५
३	सेखावत २६	२०१	१	४७०२२॥	८७५	२११	४७८८७॥
४	रांणावत २	४८	१०	५१२१७५	०	४८	५१८७५
५	देवडा १०	३०=॥	०	२८२८२	०	३०=॥	२८२८२
६	सो लखी ३	२४	०	३३५५०	०	२८	३३५५०







७	सोनगरा ५	१॥=॥	०	४७५०	०	१॥=॥	४७५०
८	पीपडा १	१	०	४००	०	१	४००
९	सांखला ३	२॥	०	३४००	०	२॥	३४००
१०	बोडा २	११	०	११२५	०	११	११२५
११	कावा ३	२७	०	२०००	०	२७	२०००
१२	रंहा ३	४६	०	१०३५०	०	४६	१०३५०
१३	जुमाबत १	१॥	०	२०००	०	१॥	२०००
१४	मांगडीय २	१३	०	२३००	०	१३	२३००
१५	सोळा ४	४	०	५०००	०	४	५०००
१६	बालोचा १	१	०	१०००	०	१	१०००
१७	सुर्था ४	४	०	३६५०	०	४	३६५०

१८	पुवार ९	॥	०	१०००)	०	॥	१०००)
१९	खालोत १२	२२	०	२२६२५)	०	२२	२२६२५)
२०	गैलोत २	२	०	२४००)	०	२	२४००)
२१	भायल २९	२३॥	२	२९६०३)	२२००)	२५॥	२३६०३)
२२	डोडाया ९	१-॥	०	१६६६०)	०	१-॥	१६६६०)
२३	आसायच ९	९	०	७५०)	०	९	७५०)
२४	तुवार ४	७	०	१५५००)	०	७	१५५००)
२५	पूरखीया ३	३	०	१०००)	०	३	१०००)

मजमईहालतरकवारियासत ३५६०२सीनसुरवा. आवादी १०४६०२ आमदनी  
 ०२ लोख-खिराजसरकारअग्रेजी ८८ हजार-फौजखर्च १लाख १५ हजाररुपयाहै  
 नादादफौज ६ हजार-शाहनशाहीखिदमातकी फौजके अलावहई-  
 अखत्यारगोदलेनेकाहासिलहैसलामी १८ तोपें औरसरकारसेसितार-हि  
 न्दरनेअब्वलकाखिनावमिलाहैखासलकबअस्तिसत्रीजोधपुरसुमस्यान  
 सिधसत्रीमहाराजधिराजराजेश्वर श्रीमहाराजाजसवन्तसिंहजीहै-  
 श्रीमहाराजकुंवारसरदारसिंहजीसाहिधानीमाघसुदी १ समत १८३६  
 कां न्नेयेचिरंजीव॥

इन गाओं की पैदा बहुत बढती है तथा इसके सिवाय बिलारेख के बहुत गांव हैं - ॥

## जो धपुके श्रव्वल और दूसरे राजः के सरदारों का नकशा

नम्बर	नाम ठेकाना	पट्टा	तादाद गांव	सालाना श्रम दही	कैफियत
१	पोहकरन	चामपावत राठौड़	१००		यह ठिकाना बहुत जबरदस्त है मथो कालिज में तालीम पाई है-
२	आसोप	कुं पावत	५		राठौड़
३	खेखह	जो धा	१०		श्रैजन
४	रास	उदावत	१७		श्रैजन
५	नीमवाज	उदावत	१०		श्रैजन
६	आहवा	चामपावत	१६		यह जागीर पहिले जियाद थी मथो कालिज में तालीम पाई है-



७	शियान	मेडतिया	८	३६१००)	रागोर
८	भादराजून	जोच्या	२७	३२०००)	अजैन
९	रायपुर *	उदावत	३८	५००००)	अजैन
१०	कुचामन *	मेडतिया	१६	४८०००)	अजैन
११	घानेराव	अजैन	४२	४५०००)	सौवर्षपहिलेमेवाड कमातहुनथा -
१२	आहोर	चामपावत	१०	२३०००)	रागोड
१३	दासपह	अजैन	१३	२६०००)	अजैन
१४	रुयट	अजैन	११	१७०००)	अजैन
१५	कन्दालियह	कुंपावत	१२	१४०००)	अजैन
१६	लांबिया	उदावत	७	१८०००)	अजैन
१७	गुलर	मेडतिया	५	२३५००)	अजैन
१८	भाखरी	अजैन	५	१८५००)	अजैन
१९	बूळसू	अजैन	२४	३८०००)	अजैन
२०	मेंढा	अजैन	२८	३७०००)	अजैन
२१	बलोंदा	अजैन	६	२०५००)	अजैन

\* अब इस को बन्मीन राकुर हरीसिंहजी के नाम से हरीपुर कहते हैं और रेल का स्टेशन भी हरीपुर  
 निरवा जाता है - \* इस ठिकाने को अपने यहाँ टंकसागर खाना और सिक्का चलाने का अधिकार  
 है - मः मुराद अली

२२	खेमसर	करमसोत	३२	१२०००)	राठोड़
२३	राखी	चोहवान	२२	१२०००)	गैरकोमजागीरदार
२४	कानानह	करमोत	३	१२०००)	राठोड़
२५	मनाना	मेडातिया	७	१७०००)	अँजन
२६	पालासनी	उहावत	२	१४०००)	अँजन
२७	खेनवाडा	चाँपावत	१७	१६५००)	अँजन
२८	बाकर	अँजन	७	१७५००)	अँजन
२९	चंहावल	कुंपावत	८	२२०००)	अँजन
३०	अगोवह	उहावत	३	२१०००)	अँजन
३१	आलन्यावात	मेडातिया	४	१४०००)	अँजन
३२	चानोह	अँजन	२४	३४०००)	अँजन
३३	जावला	अँजन	८	३८०००)	अँजन
३४	बरु	मेडातिया	१२	३३०००)	अँजन
३५	मीठडी	अँजन	१५	२८०००)	अँजन
३६	लाडन	जोथा	७	२००००)	अँजन

३७	दगडी *	जैनावत	७	१६००७	अैजन
३८	कल्यानपुर	चोहान	७	१०००७	गैरकौम
३९	खेजडला	भाटी	८।	१५००७	चंद्रवंसी गैरकौम
४०	भल्लामंड	राणावत	८	१५००७	गैरकौम
४१	डुडियाना	मेडतिया	९	३३००७	रगोड़

सिन्धी माहिबजादह अब्बासअलीखां की इज्जत तमाम सरदारों से खासतौर पर जिषादह है - यह दोनो दरजे के सरदार पांच सौ रुपया सालाना आमदनी पर एक सवार के हिस्से से नोकरी और हाजरी देते हैं - ॥

### राज्यवीकानेर

यह राज्य राजपूताने के उत्तर में फैला हुआ है जो धपुर के सिवाय दूसरी समस्त रिमास्तों से लग्वाइव चौडाई में जियादह है - इसके उत्तर में हरियाणा भठयाना जि लेहिसार व सिरसा पश्चिम में भावलपुर जैसलमेर दक्षिण में जोधपुर का राज्य और पूर्व में शेखावाटी है लग्वाइ पूर्व से पश्चिम को २०० मील चौडाई उत्तर से दक्षिण को १६० मील रुकवा १७६७ ई मील भुख्या आवादी ६ लाख आदि मियों की है आमदनी खालसा आठ लाख से अधिक है और फौज सवार व पैदल ७ हजार के लग्वाभाग है - इस मुल्क में तीन भाग जाट और चौथा हिस्सा राजपूत रगोड़ - सारस्तू ब्राम्हणा जोड़्या दरहिया जात के राजपूत (जो मुसलमान हो गये) और चारन भाट माली आदि वस्ते हैं इनमें एक हिस्सा थोरी धानक और रज्जात के लोग भी हैं जिनका पंशा चोरी लूट का है - यहां का खेत उमड़ा होता है

\* यहां का राफुर श्री दरबार जोधपुर को राजतिलक देता है जब लों तिलक न दे प्रगडी जन्म रती है - मः मुहम्मद अली -

जिसको रेत की नाव कहना चाहिये - और भेड़ बकरी भी देहात कर रहे बाले बहुत पालते हैं जिनकी बालों से उमदा कबल बनाये जाते हैं बीकानेर का जिस तरह तर मुल्क रेगिस्तान है लिहाजा यहां फकत एक फसिल बाजार मोठ की पैदा होती है तरबूज यहां का जिसकी मतीरा कहते हैं बहुत मोटा होता है खास बीकानेर की मिसरी मशहूर है कुर्ये डोंघे होते हैं और अक्सर खारा पानी निकलता है इसी कारणा बहुधा लोगों का गुजर तालाबों के पानी से होता है नही या पहाड इस राज्य में कोई नही - ॥

### बिकानेर

बीकानेर वाले जिनकी रियासत आज से चार सौ वर्ष पहिले स्थापन हुई थी जोधपुर के राठोडों की खांप है राव जी धाजी ने जब समस्त १५१५ में पुरानी राजधानी मंडोर को छोड कर जोधपुर बसाया तो उस का बेटा बीका नामी अपने काका कांथलजी की सहायता से तीन सौ राठोडों को लेकर उत्तर दिशा के जंगली मुल्क को बिज्ज करता हुआ चला गया और वहां के सांखला राजपूतों और पुंगल के भादियों से लड कर कोरमदेसर नामी नगर कब्जा किया और उस मुल्क के जाटों को जो आपस के भगडों से बरबाद हो रहे थे अपना सहायक बना कर जोयों और भादियों का जोर घटाया और अच्छी तरह से दरखल कर लिया तो मंडोर छोडने से ३० बरस पीछे वैसाख बही १५४५ में बीकानेर अपने नाम पर राजधानी बीकानेर को बसाया और उसके चचा कांथल ने उत्तर देश को अपने कब्जे में कर लिया जहां आजलों कांथलों की राजधानी बहादुरा नगर के इधर उधुर बस्ते हैं - राव बीकाजी १५८५ में उत्तपन्न हुये सं० १५४५ में पाट विराजे और सं० १५५१ में बीकानेर बसाने से ६ बरस पीछे ५६ बरस की अवस्था में देहान्त पाश हुये वही से बीकानेर

राज्य की बुन्याद पड़ी - ॥

बी काजी के १३ पुत्र थे जिनमें से बी काजी के देव लोप होने पर बड़ा बेटा राव नाराजी गादी पर बैठा नाराजी सं० १५२६ में पैदा हुये और सं० १५५१ में गादी विराजे और थोड़े दिन राज करके सं० १५५१ में देव लोप हो गये - ॥

रावलनकरन सं० १५२७ में उत्पन्न हुये १५५१ में पाट विराजे और १५८३ में स्वर्ग याश हुये - ॥

राव जैत सी १५४६ में जन्मे १५८३ में गादी विराजे और सं० १५८८ में देव लोप हुये इनके वक्त में जोधपुर के राव माल देव ने बी कानेर इन से छीन ली थी परन्तु इनके बेटे राव कल्याण मल को अकबर बादशाह ने माल देव से वापिस दिलवा दी - ॥

राव कल्याण मल सं० १५७५ में जनमे और १६०१ में पाट विराजे और सं० १५८८ में देव लोप हुये यह नागौर में अकबर बादशाह के हजूर में हाजिर हुये और अपने भाई कान सिंह की बेटे अकबर को ब्याही जिससे राव माल देव को निकाल कर बी कानेर पर कब्जा पाया - ॥

राव राय सिंह सं० १५८८ में जनमे १६२८ में गादी विराजे और १६६८ में देव लोप हो गये इन पर अकबर बादशाह की बड़ी मिहरबानी थी गुजरात की लड़ाई में बादशाह के साथ थे ताज रवां जालोर बाले और सरोही के सरान देव दुह को पकड़ कर बादशाह के हजूर में हाजिर किया एक हजार का मनसब पाया अकबर के मरने पर उसके बेटे जहांगीर ने राय सिंह को पांच हजार का कामनसब और चार हजार सवार रखने का हुक्म बखशा - ॥

राव दलीप सिंह सं० १६२१ में जन्मे १६६८ में पाट विराजे सं० १६७० में परलोक वाश हुये इन्होंने अपने पिता राय सिंह के मरने पर हाजिर हो कर जहां

गीर बादशाह से राव का खिताब और खिलअत पाया - खुद जहांगीर ने अपने हाथ से दरबार में राजा तिलक देकर दो हजार जात और हजार सवार का मनसब बखशा - परन्तु अन्त को बादशाह से बगावत करने के अपराध में कतल किये गये और राजा इनके छोटे भाई सूरसिंह को मिला - ॥

**राव सूरसिंह** सं० १६५१ में जन्मे और १६७० में गादी विराजे और १६८८ में देहान्त होगया दो हजार जात और हजार सवार का मनसब पाया सं० १६८८ में दक्षिणा की लड़ाई में काम आये - ॥

**राव करनसिंह** सं० १६७३ में जन्मे और अपने पिता सूरसिंह की जगह सं० १६८८ में पाट विराजे सं० १७२६ में देवलोप हुये यह दक्षिणा की लड़ाई में बादशाह से सौख लिये बिना भाग आये थे बादशाह आलमगीर ने खफा हो कर इनके बड़े बेटे अनूप सिंह को गादी पर बिठा दिया और यह दो वर्ष कैद भुगत कर मर गये - **राव अनूप सिंह** १६८५ में जन्मे १७२४ में पाट विराजे सं० १७५५ में देवलोप होगये सं० १७७८ में अनूप गढ़ बसाया और कारगुजारी दिखला कर आलमगीर बादशाह से राजा का खिताब पाया - ॥

**राजा सूर्यसिंह** सं० १७५६ में पैदा हुये सं० १७५५ में पाट विराजे सम्मत १७७५ में देवलोप होगये - ॥

**राजा सुजानसिंह** सं० १७५७ में जन्मे सं० १७५७ में गादी विराजे और सं० १७८२ में देहान्त होगया - सुजान गढ़ बसाया - ॥

**महाराजा जोरावरसिंह** सं० १७६८ में जन्मे और सं० १७८२ में पाट विराजे और १८०२ में परलोक बाश हुये - इनके अहम में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने बीकानेर का मुहासरा कर लिया था परन्तु सं० १७४० में जोधपुर के महाराजा सवाई जयसिंह और नागौर के हाकिम तख्तसिंह ने बी

कानेर से २१ लाख रुपया दिलवा कर जोधपुर का कवजा उठवा दिया - ॥

महाराजा गजसिंह सं० १७८० में जन्मे सं० १८०२ में अपने भाई जोरावर सिंह की जाह्नू पाट बिराजे और सं० १८४४ में देवल्लोप हुये - ॥

महाराजा राज सिंह सं० १८०९ में जन्मे सं० १८४४ में पाट वैठे और छोटे भाई सूरत सिंह की मां के जहर देने से १४ दिन राज करके सं० १८४४ में मरण हो गया।  
महाराजा प्रताप सिंह सं० पैदाय मात्सूमन्दी सं० १८४४ में पाट बिराजे सं० १८४५ में देवल्लोप हुये - ॥

महाराजा सूरत सिंह सं० १८२२ में जन्मे और सं० १८४५ में अपने भतीजे कोमार पाट बिराजे और सं० १८८५ में फौत हो गये - इन के वक्त में संमत १८६१ में किला भटनेर मुसल मान जोड़े राज पत्नी से फतह दुआ जोधपुर के दायीं दार चोकल सिंह का साथ देने में २४ लाख रुपया खर्च किया परन्तु नवाब मीर खां के दायों से हार कर वैठ रहे संमत १८७४ में सरकार अंग्रेजी से अहदनामा हुआ महाराजा साहिब सनोख खेअंत को ४० वर्ष राज्य का के देवल्लोप हुये।

महाराजा रतन सिंह १८४७ में पैदा हुये सं० १८८८ में गादी बिराजे और १९०८ में देवल्लोप हुये - ॥

महाराजा सरदार सिंह १८७५ में जन्मे और सं० १९०८ गादी बिराजे और १९२८ में देवल्लोप हुये इन्होंने गहर सं० १८५७ ई० में मदद देने के बदले में सरकार अंग्रेजी संधीवी का परगना पाया जिस की आमदनी १५ हजार ३ सौरुपया सालाना है इनके समय में सरदारों और दरबार में बखेडा खडा हुआ जिसका सरकार ने फैसला कराया - ॥

महाराजा डुंगर सिंह सं० १९११ में जन्मे और १९२९ पाट बिराजे और सं० १९४० में वदनजी रियासत के सबब माजूल किये गये और माजूली

यह बहन पुराना किला है सुलतान महमूद गजनवी ने हिन्दुस्थान में गयारवां हमला इसी गठ पर किया था सरकारी जिला सिखा और वीकानेर की ठीकसी मापर है हमने भी इसे देखा है - मः मुगदखली

ही की हालत में सं० १८५५ में परलोक चार हुये- यह महाराजा गज सिंह जी में छठी पीढ़ी में मिलते थे इन के वक्त में समस्त जागीरदार नाराज हो गये थे अन्त को सरकारी फौज ने सं० १८५० में बिदासर में जाकर ठाकुर राम सिंह रईस महाजन बठाकर मेघ सिंह रईस जसना और बकुर बिदासर को पकड़ा और महाराजा साहिब को आजूल कर दिया चार वर्षों में उक्त सरदारों के बीकानेर जाने की आज्ञा मिली - ॥

**महाराजा गंगा सिंह** - जी येह सं० १८३६ में जन्मे और १८५५ में अष्टने बड़े भाई महाराजा दु. गुर सिंह जी की जगह पर पाट बिराजे अभी आप की उमर ग्यारह वर्ष के लगभग है मयो कालिज में तालीम पाते हैं चिरंजीव रियासत का बन्धो बस्त साहिब राज नू बहादुर की निगरानी में कौनसिल दूरा होता है जिसके बाइस प्रेसीडन्ट राय बहादुर सोही हुकम सिंह जी है - ॥

### तवांरीख राज्य किशन गढ़

राजपूताने के मध्य में राठोड़ों की छोटी सी ( परन्तु रुखे में बड़ी ) रियासत है जिसके उत्तर व पश्चिम में मारवाड़ और पश्चिम व दक्षिण में अंग्रेजी जिला अजमेर और पूरब में जैपुर का मुल्क है स्कबा ७२५ मील मुरब्बा - आबादी एक लाख १२ हजार से अधिक खालसा आमदनी साले तीन लाख और इससे कुछ कम आमदनी की जमीन जागीरदारों के कब्जे में है फौज सवार व पैदल ६०० आदमी कहे जाते हैं तोपें ३० हैं सलामी १५ तोपों की है जमीन कम पैदावारी की है अतएव तलाशों के पानी से खेती होती है - जियादः जमीन पहाड़ी है जिनमें थूहड के रुख बहुत हैं - समस्त राज्य में किशन गढ़ - रुपनग्र - सरवाड \* तीन ही परगने हैं जागीरदारों में ठिकाना फतह गढ़ मशहूर है जो राजा कहलाता है -

\* सरवाड में तांबड़ा पत्थर बहुत अच्छा निकलता है जिसके कंठे और नगदूर खाले हैं कलो द्वारा खान की खुदाई हो तो राज्य का बहुत फायदा हो - अः गुरदह अली -



खास राजधानी किशनगढ में २० हजार आदमी बस्ते हैं . ॥

### इतिहास

यह रियासत आज से पौने तीन सौ वर्ष पहिले जहांगीर बादशाह की मेहरबानी से कायम हुई थी जहांगीर ने जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह जी के बेटे किशनसिंह को उसकी खिदमत गुजारी और अच्छी चाकरी से खुश होकर जिले अजमेर में सीटूला आदि गांव सं० १६६६ में बखशे ये उस के दो वर्ष पीछे किशन सिंह ने अपने नाम पर किशनगढ बसा कर वहां रहना श्रवतिचार किया . किशनगढ वाले यध्यपि जोधपुर के छुट भईये हैं परन्तु वंदेरो की जासीर में से कुछ हिस्सा न पाने और अपने परीश्रम से ठिकाना बनाने के कारणा जोधपुर वालों का अहसान नहीं मानते . बादशही राज्य में किशनगढ के रईस का कुर्ब जैपुर . जोधपुर . बीकानेर . बूंदी . कोटा के पीछे माना जाता था परन्तु आलमगीर बादशाह के मरने लों उसको राजा थाराव आदि कालकच नहीं मिला था तो भी चारह जारी मनसवर खता था मुहम्मदशाह बादशाह ने बहादुर सिंह को राजा का खिताब वखशा और २०० वर्ष में १५ रईस इस गादी पर बैठे जिनका हाल यह है . ॥ किशनसिंह ने सं० १६६६ में सिटूला की जागीर बादशाह से पाई महबत खां के साथ मेवाड में साका किया २० आदमियों को मारा ३०० को पकड कर बादशाह के पास ले गये बादशाह ने खुश होकर ३००० हजारी मनसब और १५०० सवार रखने का कुर्ब बखशा सं० १६७२ में गोविन्ददास भाटी प्रधान मारवाड से लड कर अपने भतीजे करन समेत काम आये राठोड सुहं समल राठोड जंगमाल यह महा वत खां के बेटे अमानुल्ला खां से लड कर काम आये . राठोड हरी सिंह सं०

१६-५ में गादी बिराजे १५ वर्ष राज किया राठोड रूपसिंह १७०० में गा  
 दी बिराजे इन्होंने बादशाही फौज के साथ बलख बदखशा काबुल आदिमें  
 अच्छी-बकरी की साहुल्ला वजीर के साथ चित्तौड का गठ तोड नेमें ब  
 हादुरी दिख लाई जिससे बादशाह ने खुश हो कर मांडुल गठ इलाके मेवा  
 ड का परगनह बखशा सं० १७१५ में आगरे के निकट औरंगजेब और शाह  
 जादेदाशिकोड की लडाई में दाराशिकोड की तरफ से औरंगजेब के हाथी  
 पर तलवार मारते हुये काम आये- राठोड मानसिंह सं० १७६३ में साका कर  
 के काम आये- राजा राजसिंह १८०५ में देवलोप हुये- राजा सावन्तसिं  
 ह राजा बहादुरसिंह रियासत की आमदनी के दसवें हिस्से की जागीर फ  
 तहगठ इन्होंने अपने बेटे बाधसिंह को बिनारेख बखशी थी महाराजा  
 बिडुधसिंह सं० १८४५ में गादी बिराजे और सं० १८५२ में देवलोप होगये  
 महाराजा कल्यानसिंह १८५४ में गादी बिराजे परन्तु सरदारों ने फसाद  
 किया तो साहिब एजन्ट की सलाह से ३६ हजार रुपया सालाना तनख्वाह  
 लेनी करके राज अपने बेटे मुहकमसिंह जी को सौंप कर दिल्ली चले गये ज  
 हां ६ वर्ष पीछे मित्यु को प्राप्त हुये- महाराजा मुहकमसिंह ८ वर्ष राज  
 करके सं० १८६७ में बे औलाद मर गये- महाराजा प्रथ्वी सिंह संमत  
 १८६८ में ठिकाने फतहगठ से गोद लिये जाकर चार वर्ष की अवस्था में राज  
 बिराजे- यह बड़े बुद्धिमान बढयावान रईस थे सं० १८२७ में ३ लाख रु  
 पया खर्च करके अपने राज्य में शताब्दी सुदवाये इनके राज्य में हो कर रेल निकलने  
 से ६० हजार रुपया सालाना राबदारी के महसूल की आमदनी का मारागवा  
 परन्तु महाराजा की लाय की और गरीबी को देख कर २० हजार सालाना सर  
 कार उक्त हानी के बदले में देती है बहुतसे सुभ कार्य करने और धर्मरा

जय कार्तिक के पीछे सं० १८३६ में स्वर्गवाश हुये माहाराजा सारदूलक्षि  
 हुजी (चिरंजीव) जैनवरी महीने की - ता: सं० १८३६ में पाटविराजे अप  
 ने पिता के समान नेक नीयत सादा भिजाज धर्म कर्म के पक्के हैं सं० १८४२  
 में बाबू शामसुन्दर लाल जी मयों कालिज के दीयम मास्टर नम्ब करनै  
 ल ब्राडफर्ड साहिब बहादुर एजन्ट गवर्नर जनरल एजपूताने की आज्ञा  
 अनुसार किशनगढ़ के प्रधान नियत हुये बाबूजी ने दीवानी फौजदारी  
 अपील आदि महकमे जारी किये और श्रीदरबार का इजलास महकमास्त  
 से कह लाता है - इस्टेम्प भी जारी किया गया - श्रीमहाराजा साहिब बहादुर  
 को मई सन १८८३ में सरकार से जी.सी.एस. आई. का तमगा भी  
 इनायत हुआ जगदीश्वर सुवारक कोरसरकार अंग्रेजी के श्रीहस्तेवरीता के  
 लिफाफे पर बमुत्ताने महाराजा साहिब मुशफिक मेहरबान मुस्त  
 लिसान महाराजा धिराज - लकब और श्रीनामे पर महाराजा  
 साहिब मुशफिक मेहरबान मुखलिसान सलामत लिखा जाता  
 है कागज सुन्दरी थेली कमखाव की होती है - ॥

### राज्यबंदी

राजपूताने के दक्षिण और पूरब दिशा में बूंदी का राज्य दूसरे दरजे का पु  
 राना राज्य है जिसके उत्तर में जैपुर पश्चिम में जहाजपुर ब्लाके मेवार - दक्ष  
 ण में गवालियार - पूरब में कोटे का इलाका है - लम्बाई ५० मील चौड़ा  
 ई ५० मील रुकवा २२८१ मील मुख्या आवादी २ लाख ५४७ - १ आदिमि  
 यों की है - खालसा की सालाना आमदनी ५ लाख रुपया और इसी के लगभ  
 ग जागीरदारों की आमदनी है - फौजसवार और पैदल दोनों २५०० हैं १ ला  
 ख २००० रुक्या सरकार अंग्रेजी को खिराज देते हैं सलामी १७ तोपें हैं शहर बूंदी

जो इस राज्य की राजधानी है आगरा से १८५ मील दक्षिण दिशा में पहाड़ी घाटे के मध्य में बसा है इसमें ५० हजार आदिमियों की आबादी है महाराजा साहिब के महल ऊंची पहाड़ी के ऊलाव पर उत्तम रीति से बने हैं जिनकी खूबसूरती प्रसंसा के योग्य है - ॥

### बूंदीखोर्द

बूंदी वाले चौहान जाति के हाडा खांप में अजमेर के राजा मानक चंद के पोते अस्तपाल के वंश में से हैं आदि में हाडा भिन्न २ स्थानों में रहे और अंत को सं० १३८८ में मेवाड़ के महाराजा की सहायता से बूंदी का राज पाकर सव दो सौ वर्ष चीतोड़ के मातहत रहे और सं० १६२६ में वह रतमभोर का गुरु अकबर बादशाह को सौंप कर खुद मुखतार राजा और बादशाही मनसबदार बने मतलब यह है कि आज से ५५६ वर्ष पहिले वह राजपूताने में सरदारी के दर्जे पर पहुंचे थे और ३१८ वर्ष पहिले खुद मुखतार राजा हुये राजपूताने में आने के समय से आज लों उन की २५ पीढ़ियां हो गुजरी हैं बूंदी के रईस मेवाड़ की मातहत से इनकार करते हैं परन्तु सत्य यही है कि उनको दक्षिण से निकलने के पीछे मेवाड़ ही में पनाह मिली और मेवाड़ ही की सहायता से पहिले भेंसरोड़ और फिर बूंदी का राज्य पाया जैसा कि बादशाही मनसबदार बने से पहिले अकबर का वजीर अबुल फजल रावसरजन को मेवाड़ का मातहत लिखता है और इकबाल नामे जहांगीरी व बादशाह नामे शाहजहांनी आदि इवहासों में भी ऐसा ही लिखा है अस्तपाल के बड़े में से अजेपाल ने अजमेर को बसाया उसके पीछे मानक राय ने सं० ७५१ में सारखंमबीदेवी के नाम से सारखंमबीग्राम बसाया जिसको अब सांभर कहते हैं (सांभर कालोन प्रसिद्ध है) इसी मानक

राय की औलाद में एक खांप की नवीं पीढ़ी में **प्रथ्वीराज** उत्पन्न हु  
 वा था • खीची • दाडा • मोदल • निर्भारा • देवडः • दिडोरिया • भोरिचा •  
 धनेरया • वागेरचा • आदि चौहानों की खांपें हैं • मानक राय का वेटा  
**अनोरराज** असी अर्थात् हांसी का राजा था जिसके बेटे अस्तपा  
 लको शत्रुओं ने सं० १०-११ में वहां से निकाल दिया वह दसरा में जा  
 कर **असीर** का राजा हुआ वहीं से दाडा खांप चली अस्तपाल के पीछे  
**लोकपाल** हुआ जिसका वेटा **हमीर** प्रथ्वीराज के साथ सं० १२४६  
 में **शहाबुद्दीन भोरी** से लड़कर काम आया • हमीर के पीछे काल क  
 रन • नाइमगदः • राव बांछा • राव चंद आसीर के राजा हुये राव चंद को सं०  
 १३५२ में **अल्ताउद्दीन खलजी** बादशाह ने कत्ल किया तब उसका  
 वेटा **रैनसी** काई वर्ष की अवस्था में दिफाजन के लिये चितोड़ में लाया ग  
 या • रैनसी ने जवान होकर मेवाड़ वालों की सहायता से डोंगा भीलको  
 मारकर भेंसरोड़ गढ़ लिया • रैनसी का वेटा **कोल** और उसका वेटा बां  
 गू हुआ बांगू के बेटे देव ने जोर पाकर मीनों को जेर किया सं० १३८८ में बां  
 हो खाटा के बीच में शहर बूंदी बसाया जिसके गिद्दी हाडों के फैल जाने से उ  
 स देश का नाम भीं हाडोली हो गया • राव देव का वेटा **समरसी** और समर  
 सी का **नापूजी** नापूजी का वेटा **हामूं** सं० १४४० में गादी पर बैठा और  
 १६ वर्ष राज करके मर गया उसका वेटा **बीरसिंह** सं० १४५६ में पाट बैठा  
 और सं० १५२६ में मर गया तब उसका वेटा राव बांदो गादी पर बैठा फ  
 नु उनके दो छोटे भाइयों ने मुसलमान होकर बादशाह की सहायता से बूं  
 दी दीनली और **समरकन्दी वउमर कन्दी** नाम से बूंदी के राजा कदला  
 ये • राव बांदो २९ वर्ष पहाड़ों में खराब हो कर मर गया तब राव नारायन

दास अपने पुत्रों सुसलमान का काश्री को कतल करके राज बिराजे और ३२ वर्ष राज करके मर गये उनका छोटा भाई महाराजा संग्रामसिंह साथ बाबर बादशाह से लड़ कर काम आया - ॥

राव सुरजमल सं० १५८० में पाट बिराजे और महाराजा सांग्रामसिंह के बेटे तनसी से शिकार में लड़ कर काम आये - ॥

राव सुलतान सं० १५८१ में गादी बिराजे परन्तु राजका काम न चला सके सरदारों ने इनको गादी से उतार दिया इन के कोई बेटा नथा अतएव सरदारों ने राव बांदो के पोते अरजुन को पाट बिठाया - राव अरजुन सं० १५८२ में ५०० हाडों समेत चीतोड़ के गढ़ में बहादुर शाह गुजराती के सुगाउडाने से उठ गया - ॥

राव सुरजन सं० १५८८ में गादी बिराजे और सं० १६२६ में रतमभोर का गढ़ अकबर बादशाह को सौंप कर मेवाड़ की मातहत से निकल कर बादशाही चाकरी में गये इसी कारण उनका कुर्ब जैपुर जोधपुर के पीछे बीका नेर आदि के बराबर रखा गया और सुरजन सं० १६४१ में देवलोप हुये - ॥

राव भोज अपने पिता के सामने सं० १६३५ में गादी बिराजे और १६६४ में मित्यु को प्राप्त हुये (कियोंकि इनके पिता इनको राज्य सौंप कर बादशाही चाकरी कसे चले)

सरबुलन्द राव रतन गादी पर बैठ कर बादशाह से सरबुलन्द का लकड़ और छद्दी हजारी जात मनसब और १००० सवार का कुर्ब पाया और अंत को पांच हजारी मनसब और राय राव का खिताब पाकर सं० १६८८ में दकन की लड़ाई में काम आये - राव रतन का पाटवी कुंवर गोपीनाथ पहिले ही मर चुका था इसवास्ते बादशाह ने उन के पोते शत्रुसाल को बंदी का राज दिया और दूसरे बेटे माधोसिंह को कोटा और पलायता की जागीर दे कर

ढाई हजारों मैनसब बरवशा उसी दिन से कि (२५०) वर्षी हुये कोटा बूंदी से अलग हो गया - ॥

राव शत्रुसाल सं० १६८८ में राज विराजे सं० १७१५ में आगरे के निकट लडाई में काम आये - ॥

राव भाउ सिंह सं० १७१५ में बाप की जंगल पाट विराजे और सं० १७३१ में वे शौलाद मित्यु को प्राप्त हुये - ॥

राव अनरुध सिंह सं० १७३५ में पाट विराजे और सं० १७६२ में काबुल में लड़कर काम आये - ॥

राव राजा बुधसिंह इन को बादशाहने राव राजा की पदवी बखशी इनमें और कोटे वालों में खूब लडाइयां हुई यह अंत को सं० १७८६ में वेगों में देवलोप हुये - बुधसिंह के छोटे पुत्र दीपसिंह को कापरल जागीर में मिली और बड़े उमेदसिंह राज के मालिक हुये - ॥

राव राजा उमेदसिंह ने सं० १८०० में राज पाया कुंवर अजीत सिंह उदयपुर के महाराना आरसी जी के हों ही ने पिकार में धोरखे से मारा था जिसका राज बूंदी और मेवाड ने आज लो है परन्तु उसी पाप से कुछ दिन पीछे अजीत सिंह कर्षा होकर मरा गया - ॥

राव राजा विशन सिंह सं० १८६१ में पाट विराजे और सं० १८७५ फरवरी महीने की १० ता० को सरकार से दोस्ती का अहदनामा किया और संमत १८७८ में देवलोप हुये - ॥

महाराव राजा राम सिंह १८७८ में दसवर्ष की अवस्था में कार्नेल टाडसाहिव के सामने पाट विराजे यह रईस बहुत बुद्धिवान और विद्वान थे उनके समय में बड़ी २ बातें हुई सरकारने दिल्ली के दरबार सन १८७७ ई०

में इन को सितारहिन्द और मशीर कैसरहिन्द की पदवी बरवशी यह बड़े पंडित और धर्म कर्म के बहुत पाबन्द थे परन्तु जैसे दाना और दयावान होने पर भी काफ़ूर का ठिकाना जगतकर लिया जिससे कई सरदार इनसे नाराज रहे - राजपूताने में इनकी उमर से बड़ा कोई रईस नथा इस लिये सरकार इनकी बहुत इज्जत करती थी सन १८७८ ई० में ८० वर्ष की अवस्था में ७० वर्ष राज करके नेकनामी से देवलोक पहुँचे ॥

महाराव राजा रघुबीर सिंह २८ ता: सेप्टम्बर सन १८६८ ई० की जन्मे थे और बड़े भाई भीम सिंह जी के स्वर्ग वाश होने से पादवी करार पा कर सन १८७८ ई० में अपने पिता की जगह राज बिराजे यह भी अपने पिता के समान धर्म संबन्धी कामों में सरगम और अच्छे रईस हैं रियासत का काम बहस्तूर पुरानी रीति से चल रहा है बूंदी के राज्य में ७० सैन्यकृत पाठशाला और १० फारसी के मदरसे हैं ॥

### राज्यकोटा

राजपूताने के दक्षिण और पूरब में कोटा का राज्य आमहनी के लिहाज से जैपुर, उदयपुर, जोधपुर के पीछे दूसरी रियासतों से बड़ा है इसके उत्तर में बूंदी पश्चिम में भेसरोह इलाके मेवाड़ दक्षिण में मकन्दर घाटा इलाके इन्हौर हुलकर और पूरब में टोंक और ग्वालियर है लम्बाई पूरब से पश्चिम को ८० मील चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ८० मील - रकबा ७३५० मील मुरब्बा आबादी ५१७२७५ आदमियों की सवार पैदल ५००० आमहनी खालसा १८ लाख रुपया है जिसमें से ३ लाख ५० हजार रुपया खिराज और देवली की सरकारी फौज के खर्च की बाबत सरकार अंग्रेजी को दिया जाता है शहर कोटा जो राजधानी है बंबल नदी के किनारे परबस्ता है और नदी में रईस के रहने की जगह बहल



भी बना है इस रियासत की जमीन सरसबज है परन्तु हवा खराब होने से बीमारी  
अक्सर रहती है ॥

### नवारास

कोटा के रईस हाडा जालि के राजपूत बूंदी वालों से निकले हैं, जैसा कि बूंदी के इत  
दास में हमने लिखा है। शाह जहाँ बादशाह के शुरु अहद में उन्हीं की मेहरबानी से  
यह रियासत कायम हुई है ॥

राव माधो सिंह बूंदी के शंवरतन के मरने पर इनके भतीजे बूंदी की गादी  
पर विराजे और शाहजहाँ बादशाह ने इनकी चाकरी से खुश होकर कोटा और पला  
यता की जागीर इनको सं० १६८८ में बखशी और तीन हजार जाति का मनसब  
दिया उस वक्त इनकी अवस्था १५ वर्ष की थी सं० १७०० में देव लोप हुये ॥

राव मकुन्द सिंह माधो सिंह के पांच बेटे थे बड़े मकुन्द सिंह गादी विराजे  
और मोहन सिंह को पलायता, जुभार सिंह को कोटरा, कन्हाराम को कोयला और  
किशोर सिंह को सांगोद जागीर में मिले। राव मकुन्द सिंह सं० १७१५ में उज्जैन के  
निकट लडाई में काम आये इन्होंने उस बड़े घाटे में जो हाडोती को मालव से  
जुदा करना है महल बनाये थे इससे वह घाटा मकुन्दरा के नाम से आज लो प्रसिद्ध है

राव जगत सिंह यह अपने दादा मकुन्द सिंह के मारे जाने के पीछे आलमगो  
र बादशाह के हजरत से दोहजारी मनसब पाकर पाट विराजे और बादशाह के सा  
यदसरा की लडाई में लडकर सम्मत १७२६ में काम आये ॥

राव भीम सिंह जगत सिंह के मरने पर कन्हाराम के बेटे भीम सिंह गादी  
पर बैठाये गये परन्तु सरदारों ने उनको बेवकूफ समझ कर कोयला की जागी  
र पर गेज दिया जहां अब लो उनकी श्रौलाद मालिक है ॥

राव किशोर सिंह भीम सिंह को निकालने के बाद सांगोद से किशोर सिंह

को लाकर गादी पर बिठाया यह सं० १७४२ में बादशाही फौज के साथ दक्षिण में लडकर काम आये इन के तीन बेटों में से बड़ा बेटा बिशुन सिंह बादशाह की चाकरी में नजाने के कारणा राज से महरूम रहा उस को अंता की जागीर मिली और दूसरे बेटे राम सिंह ने राज पाया ॥

**राव राम सिंह** इन्होंने बादशाही चाकरी दक्षिण में दिल से करी जिस के बदले में मौ मैदाने का परगनह भी जागीर में पाया और राव राजा की पदवी मिली बूंदी और कोटा में इन्ही के अहद में बैर पडा सं० १७६३ में काम आये **महाराव भीम सिंह** सं० १७६४ में गादी बिराजे और सं० १७७७ में सत्त हजारी मनसब तक पहुंच कर नरवर के राजा गज सिंह के साथ बादशाह की तरफ से हैदराबाद के निजाम उल मुल्क से लडकर बुरहान पुर में काम आये ॥

**महाराव अरजुन सिंह** सम्मत १७७७ में पार बिराजे और चार वर्ष राज कर के लावल्ल फौत हुये ॥

**महाराव दुरजन साल** सं० १७८१ में पार बिराजे मुहम्मद शाह बादशाह ने इन को राज तिलक और खिल अत बखशा मरहू गो को महर देने के बदले में नाहरगढ़ पाया इस के दूसरे वर्ष पीछे हिमत सिंह किलेदार का भतीजा **जालिम सिंह** भा ला (भालावाड वालो का बड़ा) पैदा हुवा इन्ही महाराव को मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह बेटी ब्याह कर गादी के बाई तरफ बैठने की इज्जत बखशी सं० १८०० में जैपुर ने बूंदी दबा कर कोटा लेना चाहा पर हार कर सापिस आये सं० १८०५ में महाराव ने हुल कर से सिफारश कर के बूंदी उल्टी जैपुर से बूंदी वालों को दिलाई सं० १८१३ में महाराव ला लावल्ल फौत हुये ॥

**महाराव अजीत सिंह** ८ वर्ष की अवस्था में अंता की जागीर से गोद

त्राकसं० १८१३ में पाट विराजे और ढाड़ वर्ष राज करके स्वर्गवाश हुये इन्हीं के समय में हिस्मत सिंह भाला के मरने पर जालिम सिंह भाला उनका भतीजा किलेदार हुआ ॥

महाराव शत्रु साल १८१६ में पाट विराजे जैपुर की फौज कोटा पर छद्माई परन्तु जालिम सिंह भाला की वहांदुरी से जिसने हुल कर को मदद के लिये बुला लिया था चंदवारह नामी स्थान से लोट गई सं० १८२२ में देवलोप हुये महाराव गुमान सिंह अपने भाई शत्रु साल की जगह राज पाकर जालिम सिंह किलेदार की जागीर जब्त कर ली वह मेवाड़ में चले गये परन्तु फिर कोटा को लोट आये और मरहटों से इंदौर रुपया देकर महाराव की सुलह कर दी जिस से फिर नांदद की पुरानी जागीर महाराव ने उन्हें बखशी सं० १८२९ में महाराव ने बीमारी की हालत में अपने चेटे उमैद सिंह को जिन की अवस्था १० वर्ष की थी जालिम सिंह की गोद में बिठाया और आप देवलोप हुये ॥

महाराव उमैद सिंह इन के समय में दीवान जालिम सिंह को राज का कुल कुलों अधिकार हो गया दीवान ने २५ लाख के बदले ३५ लाख की खालस आमदनी बख्शी फकीरों, मेहतारों, रेडियों, आदि पर टिकत लगया जागीरदारों की जागीरें हवालीं हुल करने चलाई करके १० लाख मांगा परन्तु ग्रीरखा की सिफारिश से तीन लाख लेकर चला गया जालिम सिंह के पास २० हजार फौज बहादुर पठानों की थी सं० १८७४ में जालिम सिंह ने अंग्रेजों को बहुत मदद दी जिस से खुश होकर सरकार ने दिगः पंच पहाड, अदवा, गंगारार इनाम में दिये परन्तु जालिम सिंह ने महाराव उमैद सिंह के नाम इन परगनों की सगद लाडी हिसटगर साहब से कयली खुद नही लीये; इसी सम्मत में सरकार से कोटा का अहद नामा हुआ जिसमें जालिम सिंह के खानदान में सदा लों दीवानी का

ओहदा रहना सरकारने मनजूर किया जिससे रियासत आलरा पाटन की बुन्याद पड़ी सं० १८८६ में राव उमेद सिंह लावलद फौत होगये ॥

**महाराव किशोर सिंह** १८८६ में पाट वैठ कर जालिम सिंह आला के अस तियागत लेने की कोशिश की परन्तु नही ले सके कियो कि अंग्रेजी अफसर जालिम सिंह की मदद पर रहे महाराव नाराज होकर सं० १८७८ में बिन्दरा बन चले गये परन्तु थोडे दिनों में वापिस आकर दीवान को बेदखल करना चाहा दीवान ने भी लड़ने की तैयारियां कर लीं जिस की मदद पर सरकारी फौज की दो पलटने छे रिसाले और एक तोपखाना था दीवान के पास ८ पलटने १५ रिसाले और ३२ तोपें थी इन सब को साथ लेकर दीवान ने महाराव पर हल्ला किया महाराव के बहादुर राजपूतों ने भी बड़ी बहादुरी दिखलाई बड़ी घमसान की लड़ाई हुई महाराव साहिब अपने साथियों समेत चंबल नदी के पार उतर गये और जुवार के खेतों की आड पकड कर फिर लडे जिससे अंग्रेजी रिसाले कामु ह फिर गया करनैल बिर्च साहिब घायल हुये किलार्क साहिब और रीड साहिब दो सरदार मारे गये महाराव के छोटे भाई प्रथ्वी सिंह भी काम आये महाराव अपने साथियों समेत मेवाड में हो कर नाथद्वारा में पहुंचे और कोटा को नाथद्वारा के नाम श्री क्रिशनार पुन कर दिया (जिसके बदले में १००० रु० सालाना कोटा के गठ का किराया अब लों नाथद्वारा में दिया जाता है) कुछ दिन पीछे महाराणा भीम सिंह जी की सलाह से मेजर टाड साहिब ने दीवान और महाराव की सुलह करा दी जेठ सुदी ८ सं० १८८० को ८५ वर्ष की अवस्था में दीवान जालिम सिंह देव लोप हुये यदि सरकार से कोटा का अहदना मानहुआ होता और दीवान से केवल ओहदः दीवानी के बहाल रखवाने का जिम्मा सरकार न करती तो दीवान के कोटा ले लेने में कोई संदेह न

था-जालिम सिंह क मरले पर उसका वेठा माथो सिंह दीवान हुआ उस  
ने रईस को राजी रखवा सं० १८८५ में महाराव किशोर सिंह और थोड़े दिनों  
पीछे दीवान माथो सिंह दोनों परलोक वाश हुये -॥

महाराव राम सिंह इनके गादी बैठने पर माथो सिंह का वेठा और जालि  
म सिंह का पोता मदन सिंह दीवान हुआ परन्तु महाराव और दीवान में हमेशा  
बिगाड रहने से दीवान के लिये कोटा राज के तीसरे हिस्से की अर्थात् १२ लाख सा-  
लाना की जागीर सरकार अंगरेजी और महाराव की मंजूरी से सं० १८९४ में निकाली  
गई-और मदन सिंह से दीवानी कोटा की वावत हमेशा के लिये दस्तैफा लिया गया  
सरकार अंगरेजी से मदन सिंह को महाराज राना का खिताब मिला और असी-  
हज़ार रूपिया सरकारी खराज कायम किया गया- महाराव राम सिंह जी सम्बत-  
१८८२ में फौत हुए-॥

महाराव शत्रु साल जी सं० १९२२ में पाट विराने-यहना तजरवा कारो के वस  
में फंसका मरणा कराने लगे-रियासत क़रज़ा से ज़ेरवार हो गई-नव सं० १९२६  
में सनन्द साहब ने सरकार में बहुत बड़ी शिकायत लिखी-महाराव साहब ने भी-  
तंग आकर साहब की सज़ाद से सरकारी बन्दोबस्त होने की दरखास्त की-जिस  
पर सं० १९२८ में नवाब ग़व़शी फ़ौज शहीदां जी जो जैपुर में बरग़शी फ़ौज और  
प्रधान रह चुके थे सरकार की तरफ से सुपरन्टेन्डेंट रियासत होकर आये-इन्होंने  
ने कोटा का राज ८ निज़ामतो में तकसीम करके नया बन्दोबस्त किया-दीवानी-  
फ़ौजदारी और मालके महकमे कायम किये-नवें बारव रूपिया जो राज के ज़िम्मे कर्ज  
था उस के उतारने का यह बन्दोबस्त किया कि कर्जदारों को रूपिया पीछे ॥५८६॥  
करके अजमेर के राय वहादुर सेठ समीर मल जी जोटा से इकट्ठा रूपिया कर्ज  
लेकर सबको चुका दिया-फ़ौज के खर्च में ८ लाख की कमी की गई-रसोड़ा आदि

का खर्च भी घटाया और अच्छा बन्दोबस्त किया परन्तु बुधामदी लोगो ने-  
 महाराव जी के दिल में यह बहेम डाल दिया कि जालिम सिंह भाला के समान नवाब  
 भी कोटा का मालिक बन बैठेगा - इससे महारावजी चबराये और नवाब की शिका-  
 यत बड़े साहब को लिखी इसपर नवाब ने सं० १८३२ में इससे फादे दिया और कप-  
 तान सबट साहब बहादुर नियत हुए - इन्ही ने भी अच्छा बन्दोबस्त किया फिर  
 मेजर पावलट साहब बहादुर और फिर मेजर बेली साहब बहादुर सं० १८३६ में सु-  
 रारि हुए - जिन्हो ने मीरजाफर हुसेन और बाबू अबदुल्ला इत्यादि अफीसरो -  
 को सरकारी इलाके से बुलाकर अच्छा बन्दोबस्त कराया - कोटा में ४० लाख आम  
 दनी के १४८३ गांव है जिनमें से चौथा हिस्सा जागीरदारों व धर्मार्थ के कबजे  
 में है - ८ जून सन १८८८ ई० को महारावजी ने बीमारी की हालत में महाराज -  
 गान सिंह जी के छोटे कुंवर उदै सिंह जी को गोद लेकर नाम उनका उमैद सिंह जी  
 गवा और अंजूरी के लिखे सखार में खरीता भेजा - परन्तु जवाब आने से पहिले ११  
 जून सन १८८९ ई० को ही बड़ी दिन चढ़े महाराव शत्रुहाल देवलोप हो गये - अन्त  
 समय महारावजी ने एक लाख रुपया दान किया - ब्राह्मणों की ११ कन्याओं का  
 विवाह करा दिया - १६ हजार ब्राह्मणों को भोजन दिया था इनके देवलोप होने  
 के पीछे रामचन्द्र जी राज वैद और धा भाई धीसाजी महारावजी को जहर दे ने की  
 इसलत में कैद हुए परन्तु सबूल न होने से छूट गये -

**महाराव उमैद सिंह जी** - जेठ सुदी ८ सुताविक ८ जून सन १८८९ ईस्वी  
 को १६ वर्ष की अवस्था में पाट विराजे - मेरु कालिज में तालीम पाते हैं - सरदार  
 हो नहार भालू महांते हैं - चरजाव - राजकाबन्दोबस्त सरकार के हाथ में है ॥

### राज्य भालरा पाटन

राजपूतान के दाहिरा व पूरब में समस्त रियासतो से पिछजी और आमदनी के निहाय

से दूसरे राजे की रियासत भालरा पाटन है- इसके उत्तर में घाटा-मकुन्दरा और कोटा-और पश्चिम में राज्य हुनकर-वगवालियार और पूर्व में राज्य टोंक वगवालियार वदहिरा में भी इलाका टोंक है-रकबा २५०० मील मुख्वा आबादी ३४५०० आदमीओं की-और आमदनी खालसा १८ लाख रुपया सालाना है-फौज सवार पैदल ४०००, जागीरदारों के कब्जे में केवल एक लाख की जागीर है ८० हजार रु० सरकार अंगरेजी को खराज दिया जाता है-रईस को सरकार अंगरेजी से राज राना-का खिताब और १५ तोपें सलामी का फुरब हासिल है-इस रियासत की जमीन बनिहा ज पैदावारी सबसे अच्छी है-क्यों कि भालों ने अपनी मस्जी के अनुसार कोटा की रियासत में से अच्छी पैदावारी की जागीर निकाली थी-यही कारण है कि सिधर-होने की अवस्था में जो जागीर १२ लाख की थी अब उसी में २० लाख उत्पन्न होते हैं- राजधानी शह भालरा पाटन जिस को जालिम सिंह जी ने बसाया था वकौल-करनल इंदुन साहब वहादुर बहुत ही खूबसूरत जैपुर नगर के समान बसा है-और साहूकारों के अधिक होने से वणिज व्यापार बहुत होता है-

### तवारीख भालरा पाटन

कोटा की तवारीख में दूसरे राज के स्थिर करने वाले का हाल हम लिख चुके हैं अतः अब-यहां दुबारा लिखना फिजूल समझकर मुख्य तस्विर लिखते हैं भालराजपूतों का पराचीन ग्राम भालावाड-इलाके का ठिथावाड है-राज राना जालिम सिंह जी हलोद के ग्लासरदार की औलाद में से थे-हलोद वालों में से भाऊ सिंह नामक सराजपूत ने आलमगीर बादशाह के फौत होने के पीछे आज से डेढ़ सौ बरस पहिले नोकरी की तलाश में अपना देश छोड़ा था भाऊ सिंह का बेटा माधो सिंह कोटा के महाराव भीम सिंह के पास आकर नौकर हुआ और उस की बहिन के साथ महाराव के बेटे दुरजन साल की शूरी हुई-इस सम्बन्ध के कारी नांदता

ग्रामकी जागीर और फौजदारी उनको मिली . . . . कोटा में उनको मांभाजी क  
हा जाता था - माधोसिंह के पीछे मदनसिंह और उसके मरने पर हिम्मतसिंह  
किलेदार व फौजदार हुआ - इन्होंने मरहटों के साथ अह्दनामा करके कोटा को उन  
का स्वराज गुज़ार बनाया - और राज्य को मरहटों से बचाया - जिससे दरबार कोटा में  
इनको इज्जत मिली - हिम्मतसिंह के देवलोप होने पर जालिमसिंह जी उनके  
भतीजे किलेदार और फौजदार नियत हुए - और जैपुर की फौज से लड़ने में नाम प्रया  
परन्तु महाराव गुमानसिंह जी से बिगाड़ होने के कारण जालिमसिंह जी मेवाड़ में च  
ले गये - और रईस दैलवाड़ की मारफत दरबार मेवाड़ की नौकरी कर ली - किन्तु  
थोड़े ही दिनों पीछे कोटे को छोड़ आये - और महाराव गुमानसिंह और मरहटों में सु  
लह कर गयी - जिससे नांदला की जागीर और फौजदारी जो जल्ल हो गई थी दोबारा  
पारू - और महाराव ने मरने के समय अपने बेटे महाराव उमैद सिंह को जो १० वर्ष  
के थे इनकी गोद में बिठाकर राजकाज जालिमसिंह जी को सौंपा - जालिमसिंह जी  
ने उमैदसिंह जी के एज में कि पचास वर्ष लो रहा बड़ी ताकत पैदा की - (देखो तवारीख  
कोटा) और महाराव किशोरसिंह के अह्द में ८५ वर्ष की अवस्था पाकर सं० १८२० में -  
जालिमसिंह जी अदभुत चरित्र दिखलाकर स्वर्गवास हुए - इनके पीछे इनके पुत्र  
माधोसिंह दीवान कोटा नियत हुए - और सन १८२८ में देवलोप हो गये - माधो  
सिंह के देवलोप होने पर उनके बेटे मदनसिंह दीवान नियत हुए - परन्तु महारा  
व और दीवान में कभी मिलाप न ही हुआ - नित प्रति दिन बखेडगरहताथा अतएव -  
कोटा के महाराव रामसिंह जी के अह्द में सरकार अंगरेजी ने यह फैसला कराया  
कि कोटा के राज के सिद्दार् की जागीर जिसकी आमदनी १२ लाख सालाना होती है -  
मदनसिंह को अलग देकर दीवानी से हमेशा के लिये इस्तीफा ले लिया जाय - सं० १८६५  
में महाराज जी सरकार अंगरेजी की सलाह से महाराव कोटा ने मंजूर करके मदनसिंह जी



को १२ लाख की जागीर रियासत कोटा में से निकाल दी - और बंदा खुद मुख्तार रईस माने गये - और सं० १९०१ में ७ वर्ष राज कर के मदन सिंह जी देव जो पंहुस - ॥

महाराजराना प्रथवी सिंह जी सं० १९०१ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और सं० १९३३ में ३० वर्ष राज कर के स्वर्गवास हुं - इनके अहद में फजूल खान की कारी रियासत १४ लाख की कर ज़दार हो गई थी तो भी इन्होंने अच्छे २ मकानात बनवाये - बागात लगावाये - आगरा - काशी जी - दिल्ली - आबू - नाथद्वारा - आदि की यात्रा और सैर की - राजपूताना के प्राचीन रईस इनको बराबर कुर्ब देने में उज़र करते थे - परन्तु महाराजा प्रथम सिंह जी स्वर्गवासी मेवाड़ नधीश ने महाराजराना प्रथवी सिंह जी को ताज़ीम देकर अपने बार्द तरफ बराबर विवाया जिससे अब को दर रईस उज़र नहीं कर सकता ॥

महाराजराना ज़ालिम सिंह जी इनका नाम पंडित लेकबर बख्श सिंह जी या ठिकाने बरौन इलाके काठियावाड़ से सरकार की मंजूरी लेकर गोद लिये गये परन्तु महाराजा रा प्रथवी सिंह जी स्वर्गवासी की एक महारानी साहबाने कहा कि हमको हमल है - इस वास्ते मसनद नशीनी बहुत दिनों तक मुजतबी रही - अंत को रानी साहबा की वान बे एतबार साबित होने पर इन्हीं को वारिस कर दिया और नाम इनका राजराना ज़ालिम सिंह जी रखवा - यह सं० १९३३ में गोद लिये गये थे और जब लोना बालगी में मेक कालिज में इन्म पढ़ते रहे - रियासत का बनदोबस्त सरकार के हाथ में रहा - पहिले कपवान सबट साहब बहादुर (जो अब कारनल सबट साहब ज़ीहन्ट मगरबी राजपूताना हैं -) रियासत के मुन्तज़िम रहे - राहब मौसूफ ने बड़े २ छात्रक अहिलकारों को एकत्र किया - राजभवन - बागात - सड़के - बनवार्द - दीवानी - फौजदारी का बहुत अच्छा बन्दोबस्त किया रियासत का कर ज़ाखन्दी कर के उतारने का बन्दोबस्त किया - रियासत सरसबज़ हो गई - इनके पीछे कप्तान - सफ - मारटगल साहब रियासत के मुन्तज़िम रहे सं० १९४३ में सरकारी बन्दोबस्त चढ़ गया और राजराना ज़ालिम सिंह जी को रियासत के पूरे अधिकार सरकार ने इनायत किये

परन्तु महाशोक कि इन्हीं ने राजपाकर सरकार की मरजी के अनुसार काम नहीं किया- जिसका पूरा २ व्रतांत हमनही कर सकते अन्तको उन बातों का यह फल प्राप्त हुआ कि स. १८४४ में सरकार के हुकम से मेजर टाल्वर साहब बहादुर ने आलरा पादन में पहुँचकर राजराना जालिम सिंह जी को माजूल कर दिया और राज के कार्यों का अधिकार अपने हाथ में लिया - जब से आज जो सरकारो बन्दोबस्त है राज का काम एक कौन्सिल के द्वारा चलता है - जिसके मेम्बर बड़े २ लायक और विद्वान लोग हैं - जैसे धामाई - हरलाल जी साहब - वमुन्शी कालीचरन जी आदि - राजराना के लिये तनखाह मुकुर्रि है - राज के कामों में कोई सरोकार नहीं - यदि अब भी राजराना साहब अपने को सम्भालें और सरकार अंगरेजी के अफीसरो की सम्मति पर चलें तो अंगरेजी सरकार जो दयावान और न्यायशील सरकार है अवश्य करके इनको हमारा करेगी सरकार से इनको खरीते के लिये फाफे पर महाराजराणा बिसियार मेहरबान हो स्तान महाराजराणा जालिम सिंह बहादुर सलामतु अल्लह तआला और श्रीनाम पर महाराजराणा साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत लिखा जाता है - खरीता सुनहरी कागज़ पर और थैली कमरबाब की होती है -

## राज्य करौली

राजपूताना के पूर्व हिस्सा में करौली का राज एक छोटा परन्तु पुराना राज्य है - जिसके उत्तर में भरतपुर और जैपुर - पश्चिम में जैपुर - दक्षिण में जैपुर और पूर्व में गवालियार और धौलपुर का मुल्क है एकदा १५०० मील मुरब्बा - आबादी ४०६७० आदिमीशों की और आमदनी खालसा ५ लाख रूपिया सालाना - फौज सवार व पैदल दोनों २००० से अधिक है - इस राज में जागीरदारों के चार ठिकाने - हाडगैती - अमरगढ़ - रानोतरा - दनायती - अब्बल दरजे के हैं - और राज का बन्दोबस्त ४ तहसीलों के द्वारा होता है -

करौली- मंडरायल- आदतगिर- माचलपुर- इसरियासत की बहुधा जमीन पंचरो-  
ली है- प्रायः पूर्व और दक्षिण में चम्बल नदी के काशी बरसात में नाले और गढे पड़ जाते  
हैं इसी राज्य में यादों राजपूतों के सिवाय गुजर-जाट-माली-मीना-आदि भी बस्ते हैं  
करौली जो राजधानी है गवालियार से ८९ मील के फासले पर पश्चिम में बस्ता है- नर्मदा  
के गिरि ब्रह्मों के होने से दूर तक लहलहाती हुई हरियाली दिखाई देती है- नदी नालों और  
दलदल के होने से इस देश में शत्रुओं का गुजर नही हो सकता करौली के गिरि पुख्ता श-  
हर पनाह है- और बाहर दो पहाड़ियों पर रईस की गढ़ियां मौजूद हैं- करौली की पूरी और  
परसिद्ध तवारीख नदी मिलती तो भी जोंकुड़ मिली है लिखी जाती है- ॥

### तवारीख करौली

करौली के रईस जैसल मेरवालों के समान यादों नसल के चन्द्रवंसी राजपूत हैं वह निज  
(मथरा) ही के आस पास रहे- मुसलमानों ने जब बयाने से इनको निकाला तो इन्होंने  
ने चम्बल नदी के कनारे करौली और सबलगढ़ बसाया- परन्तु सं० १५१० में मालवा के  
बादशाह खिलजी ने करौली फतह करके खालसा में मिला ली और यह लोग पहाड़ों  
में फिरते रहे- अकबर बादशाह ने राजपूताना फतह किया- तो करौली वालों  
को भी कुछ जागीर और मन्सब दिया- राजा गोपाल जादों अजमेर में बादशाहों  
फिलेदार रहकर सं० १६२६ में मृत्यु को प्राप्त हुआ- तब उसका बेटा कल्याणदास  
सं० १६६६ में बादशाही मन्सबदार बना- और बहुत सी लड़ाइयों में बादशाहों की चा-  
करी बहादुरी से की- मुसलमानों की सल्तनत कमजोर हुई तो महाराजा सोधिया  
ने सबलगढ़ दबाकर करौली महाराजा की कबजे में छोड़ दी उस दिन से रईस करौ-  
ली २५ हजार रूपिया सालाना खराज पेशवा को देने लगे सं० १८७३ में सरकार-  
अंगरेजी ने राजपूताना से मरहटों का कब्जा उठाया तो महाराजा करौली भी अहद  
नामा करके सरकार की हिफाजत में आये- और खराज माफ होकर माचलपुर का

परगना जिसको मरहटों ने खराज के बदले दबारावा था - उल्टा दिलाया गया सं० १८८१ में लावलद गुजर गये - ॥

**महाराजा परताप पाल** सं० १८९० में पाट बिराजे और सं० १९०४ म मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

**महाराजा नरसिंह पाल** - यहराज का अधिकार पाने नहीं पाये थे कि सं० १९०५ में देवलौप होगये - ॥

**महाराजा भरत पाल** सं० १९०८ में गादी बिराजे - परन्तु महाराजा नरसिंह पाल के वे औलाद मरने पर लार्ड डिल्होसी साहब गबनर जनरल ने पुरानी कानून के अनुसार करौली को ज़बती का हुकम भेज दिया क्योंकि उक्त लार्ड साहब की सम्मति यह थी कि जिस रईस के असली औलाद न हो उसका मुल्क ज़बत कर लिया जाय - मोद लेकर रईस न बनाया जाय - परन्तु पारलेमेन्ट ने लार्ड साहब की राय को नामंजूर किया - और रईस करौली को गोद लेने का अधिकार मिला (इसी लाट साहब ने भांसी - नागपुर आदि रियास्तों को रईसों के लावलद मरने पर ज़बत किया था) ॥

**महाराजा मदन पाल** सं० १९१० में पाट बिराजे इन्होने सन १८५७ ई० के गद्दर में सरकार को मदद दी थी जिसके बदले में १ लाख ७० हजार छपिया सरकारी कर जमाफ हुआ - और १५ तोपों की जगह १७ तोपों की सलामी होगई - नेकनामी का खिलअत पाया - १९२२ में सितारे हिन्द का तमगा मिला - यह महाराजा साहब १५ वर्ष राज कर के सं० १९२६ में स्वर्गवाश हुए - ॥

**महाराजा जैसिंह पाल** १९२६ में गोद आकर गादी बिराजे और १९३२ में ६ वर्ष राज कर के देवलौप हुए - ॥

**महाराजा अर्जुन पाल** सं० १९३३ में पाट बिराजे और जागीरदारान भवरतन - और इनायती को जो सरकशी करने थे फौजी दबाव से ताबे किया - सं० १९३८ में -

दरबार के विरुद्ध रईयत व जागीरदारों ने अजन्दी में फरयाद की जिस पर महाराजा से राज का अधिकार लेकर एजन्ट साहब को सोंपा गया - जिन्होंने पंचायत द्वारा राज का बन्दोबस्त किया सं० १८४३ में महाराजा अर्जुनपाल देव लोपुष्ट। महाराजा भंवरपाल साहब (चरंजीव) सं० १८४३ में पाट विराजे - यह रईस रहम दिल और नेक मित्राज है - रियासत का बन्दोबस्त साहब एजन्ट की निगरानी में लायक अहिंसाकार करते हैं - राज करौनी में ४५० गांव हैं जिन में से खासता के २५० ग्रामों की आमदनी ५ लाख रुपियाँ साल है - बाकी गांव जागीरदारों के कब्जे में हैं - जिनकी सालाना आमदनी डेढ़ लाख है छोटे कड़े जागीरदारों की तादाद ४० है - सरकार की तरफ से खरीता के लिफाफे पर "बमुत्रालै - महाराजा साहब मुशफक मेहरवान मुखलिसान सलामत महाराजा यदुं कुलचन्द्र भालची सिंह मालजी देव सल्लसहु अल्लाह तआला" और श्री नामे - पर महाराजा साहब मुशफक मेहरवान मुखलिसान सलामत लिखा जाता है - कागज़ सुनहरी थैली कमखावकी होती है -

## राज्य टोंक

राजपूताना के मध्य में टोंक मुसलमानों की रियासत है - जिसका बन्दोबस्त टोंक - रामपुरा - नीमाहेडग - कूकडा - सरेज - पडगवा - कूक - पसमनो के द्वारा होता है - एक परगना से दूसरा परगना बहुत दूर और दूसरी रियासतों से घिरा हुआ है - इसलिये इस राज्य की कोई हद स्थिर नहीं हो सकती - टोंक जो राजधानी है - जैपुर राज के दक्षिणी इलाके से घिरा हुआ है - रामपुरा दक्षिण की ओर बूंदी से मिला हुआ है - नीमाहेडग पश्चिम में मेवाड़ और उत्तर में नीमच से मिला हुआ है - कूपरा - बूंदी का लणपादन और गवालियार से घिरा हुआ है - पिडगवा हुलकर

और गवालियार के राज से घिरा हुआ है - सरोज के चारों ओर गवालियार बहुत  
कर का मुल्क मालवा और सागर का जिला फैला हुआ है - तीन परगने रोंक, सरोज,  
नीम्बाहेडा, १० लाख के औरवा की तीन परगने पांच लाख की आमदनी के है - स्व  
राज और फौज खर्च इस राज्य को भाग है - जमीन सब परगनों की पैदावारी के  
लिये अच्छी है - रोंक चम्बल नदी के कच्चे बस्ती है - और नदी के सरावहने से -  
गेहूं और खरबुजा बहुत उत्पत्ति होता है - छपरा के पूरब में होकर पारबती  
नदी बहती है - इससे भी पैदावार को बड़ा फायदा है - इस राज्य में सस्सत गांव  
११७३ है और सब परगनों की जमीन मिलकर २३३० मील मुरब्बा, आबादी -  
३ लाख ३८ हजार - आमदनी खालसा १५ लाख सालाना - फौज सवार पैदल  
४००० खराज माफ - सलामी १० तोपें सर होती हैं ॥

### तवारीख रोंक

रोंक के रईस बुनेरवाल पठान हैं जिनका निकास बुनेरवाले का बुलसे हुआ है -  
महम्मद शाह बदायूँ के अहम में तालैरवां पठान चोरहर इलाके को से हिन्दो  
स्तान में आकर अली महम्मद रवां सहेला की फौज में नौकर हुआ - उनके  
मरने पर उनके बेटे हैदर रवां ने रुहेलो से सम्भल जिले मुरादाबाद में थोड़ी सी  
जागीर पाई - सं० १८२२ में हैदर रवां के बेटे अमीर रवां उत्पन्न हुए - अमीर रवां ने  
जवान होकर मालवा की रियास्तों में नौकरियां कीं और जोर पकड़ते पकड़ते -  
वह सबदबा हासिल किया कि मालवा और राजपूताना के बड़े २ शूरवीर राजा इनसे  
डरते थे - सरकार अंगरेजी ने भी इनकी बहादुरी और जोर देखकर सन १८०० ई०  
में इनके साथ अहम नामा किया - और जो जो परगने हल करने फौज खरच के लिये  
अमीर रवां को दे रखे थे - सरकार ने हमेशा के लिये उन्हीं के कब्जे में करा दिये और  
सन १८१० में बहादुर मुख्तार रईस माने गये - जवाब अमीर रवां सं० १८४२ में

बीस वर्ष की अवस्था में इस सिपाही और एक भाई को साथ ले कर घर से नौकरी की तलाश में निकले थे मालवा के रईस के यहां नौकरी की- फिर नोपाड़ा के नवाब हयात महम्मद खां की नौकरी की फिर राघोगढ़ के राजपूतों की चाकरी में रहे- फिर चालारा बड़गंला के नौकर रहे- इसके पीछे वह सं० १८५४ में हुलार की चाकरी में गये और यही से उनके भाग्य ने पलटारवाया- सं० १८०६ में जैपुर के महाराजा जगत सिंह जी से दोस्ती की- और नवाब की मदद से कछवाही ने मारवाड़ की सीमा पर फतह पाई- जिस पर महाराजा मान सिंह जी ने नवाब को पगड़ी बदन भाई बनाया- और जैपुर पर मुसीबत आई दोनों रियासतों से लाभ उठाने के पीछे वैदपुर के महाराजा भीम सिंह की कंचरानी जी **किशान कंचरजी** की कतल कराया- जिससे आजलों अमीर खां को नाजिम कहा जाता है- इसके पीछे नवाब ने नागपुर के कपर चटारई की सरकार अंगरेजी ने यह जोर धन का देख कर यहां तक दबाया- कि सन १८९७ में उनको सरकार के साथ अहदनामा करना पड़ा- जिसके अनुसार छूट मार उन की बन्द होगई- तब प्रयय यह है कि नवाब अमीर खां ने बीस वर्ष नौकरी और दस वर्ष छूट मार और १० वर्ष टोंक का राज कर के सं० १८८६ में ६७ वर्ष की अवस्था में देह त्याग कर परलोक कारास्ता लिया- मरने के समय नवाब अमीर खां के ११ बेटे ८ बेटियां ५० पोता पोती- और ३० बेटियों की औलाद थी ॥

**नवाब वजीरुद्दौला वजीर महम्मद खां** सं० १८९० में अपने पिता नवाब असीर खां की जगह पाट बिराजे- यह धर्म कर्म में बहुत ही सावधान थे- इन्होंने शराब खांजा- चरस आदि नशा की बिकरी और लेन देन अपने राज्य में बन्द कर दिया- कोई पात्र या वैश्या राज में नहीं रहने पाती थी- नवाब रात दिन मौलवीयों की सोहबत में रह कर धर्म के अनुसार राज का काम करते थे- गंदर सन १८५७ के उपद्रव में नवाब ने सरकार की अधिक सहायता की जिससे रईस-

टोंक को भी दूसरे रईमों के समान औलाद न होने पर गोद लेने का अख्तियार मिला और नीम्बाहेडे का परगना जिस पर टोंक के दरखशी की सरकशी के बदले में कर नल और साहब पोलीटेकल एजन्ट ने मेवाड़ वालों का कब्जा करा दिया था वापिस दिला दिया गया - क्योंकि जागीर की बगावत से रियासत को बागी नहीं समझा जाता - १८ जून सन १८६४ ई० को ३० वर्ष राज करके नवाब वजीर महम्मद खां देवलो पदुस ॥

**नवाब महम्मद अली खां** यह सात भाईयों में से बड़े भाई पाटली के भोजाने पर सं० १८२० में राज बिराजे और राज के कामों में भली भांति चित्त लगाया परन्तु सं० १८२९ में इनके खराज राजा ठाकुर लाला में और इनमें सरवर शाह प्रधान-कीनालायकी से भगडग खडग हुआ - ठाकुर ने चाकरी में कमी की और नवाब ने नजराना बढ़ा दिया - यह भगडग चल ही रहा था कि हकीम सरवर शाह प्रधान टोंक ने हगा करके ठाकुर को टोंक में बुलाया - और ठाकुर का काका रेवत सिंह का मद रों और १३ साथियों समीत दीवान के मकान पर बुलाकर कत्ल किया गया - इस फिसाद की खबर जल्दी से सरकार को मिली और एक अंगरेज आफीसर फौरन टोंक में जा पहुँचा - जिससे फिसाद बढने नहीं पाया - ठाकुर को लावा जाने की आज्ञा दी गई - और फिसाद की तहकीकात करके सरकार ने यह न्याय किया कि नवाब महम्मद अली खां टोंक की गादी से उतार दिये जायें और १० तोपों सलामी के बदले में ११ तोपें सलामी की जाय - दीवान सरवर शाह उमर कैद करके किसी किले में रखा जाय और लावा की जागीर एजन्टी के मातहत कर दी जाय - इस हुकूम की तात्तिल हुई - महम्मद अली खां बनारस को भेजे गये और ६० हजार रु० साल रियासत से उनकी तनख्वा मुकरर की गई - हकीम सरवर शाह दीवान बनारस में उमर कैद किया गया - जहाँ वह सं० १८८८ ई० में मर गया - लावा का ठाकुर एजन्टी हाडोती में रेख भर देता है - वहाँ से टोंक के खजाने में जमा कर दी -



जाती है- दरबारों के से कोई वास्ता नहीं- मुहम्मद अलोखां बनारस में न-  
ज़र बन्द हैं ॥

नवाब हाफिज मुहम्मद इबराहीम अली खां साहब बहादुर- वह  
अपने बाप के गार्दी से उतारे जाने पर १२ भाइयों में सबसे बड़े- होने के कारण २०  
वर्ष की अवस्था में सं० १८२३ में पाट विराजे- परन्तु भाई बेटों की सरकशी से जो  
साहबजादे कहनाते हैं और पलाख की जागीर पर कब्ज़ा रखते हैं राज्य का बन्दो  
बस्त न कर सकें इसलिये नवाब के काका साहबजादे मुहम्मद अबीदुल्ला खां-  
साहब बहादुर दीवान न्यत किये गये इन्होंने रियासत का बहुत अच्छा बन्दो  
बस्त किया- जनवरी सन १८७७ ई० के दिल्ली दरबार में नवाब साहब सामिल हुए  
जहां पर १० तोपें सलामी की बहाल होगई- साहबजादे अबीदुल्ला खां दीवान-  
को सरकार ने प्रसन्न होकर- के० सी० एस० आर्द० का खिताब वावशा -  
पिछले २० वर्ष में १५ लाख रुपया का कर्ज रियासत पर हो गया था- दीवान  
और कौन्सिल ने अजमेर के राय बहादुर सेठ समीरमल जी लोढा से सं० १८७३  
में रुपया उधार लेकर करजदारों की खन्दी कररी और खजाना राज्य का सेठजी  
की निगरानी में रखा गया- जब लो० इनका रुपया न चुके- सन १८८७ ई० से न-  
वाब साहब ने एक कौन्सिल (पंचायत) अपनी मातहत में स्थिर की है- उसी के-  
द्वारा राज का कारुवार होता है- इस कौन्सिल के सभापती खुद नवाब साहब और  
नायब सभापती साहबजादे अबीदुल्ला खां जी दीवान हैं- सन १८९० ई० में नवाब  
साहब को अजमेर में बुलाकर बड़े बाद साहब लार्ड लुइस डौन साहब बहादुर  
ने सितारे हिन्द दर्जे अब्बल का तगमा इनायत किया- रियासत का काम आजक-  
ल ठीक चल रहा है- करजा भी उठरता जाना है- कुल आमदनी २० लाख रुपया की  
है जिसमें १५ लाख खालसा और ५ लाख जागीरदारों की है- सरकार की ओर से

खरीता के लिकाफे पर "बमुताले नवाब साहब मुशफक मेहरबान मुख  
लिसान नवाब अमीनुद्दौला वजीरुलमुल्क नवाब महम्मद इब्राहीम अली खां  
बहादुर सोलत जंग सल्लमहु अल्लहत आला" और श्रीनाम पर "नवाब साहब मुश  
फक मेहरबान मुख लिसान सलामत" लकव लिखा जाता है कागज़ सुनहरी और  
धैली कमरवाब की होती है ॥

## राज्य अलवर

राजपूताना के पूरब और उत्तर दिसा में आमदनी के लेहाज से दूसरे दर्जे  
की रिवाजत अलवर है - जिसके उत्तर में सिरकारी जिला गुडगाँवां और कोद-  
कासिम राज्य जैपुर का इलाका और पश्चिम में नाभा पटियाला और जैपुर-  
का राज्य है - दक्षिण में जैपुर - और पूरब में भारतपुर राज्य की अमलदारी है -  
लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ८० मील - चौड़ाई पूरब से पश्चिम की ६५ मील -  
कबा ३५७३ मील मुरब्बा - आबादी ई० २८३२ आदमीओं की - और आमदनी २०  
लाख रुपया सालाना - फौज सवार पैदल ४००० (शहन्शाही खिदमत के अलावा)  
है - सलामी की १५ तोपें और खराज माफ है - इस राज में **मुंगा** और **साजी**-  
नदियों के बहने से जिनमें से पहिली नदी सदा बहती रहती है - पैदावारी खूब होती  
है - अलवर का राज्य चार भिन्न २ इलाकों में है (१) **दूदाड** में मालाखेड़ा - राज  
गढ़ - राजपुरा - रीला (२) **नीहडन** में धाना गाजी - परताबगढ़ - अजबगढ़  
और चलदेवगढ़ (३) **राठ** जिसमें माडन - वीरोड - मंडावर - करनीकोट  
नीमराना - हरसोरा - जीदोली - ततारपुर - हाजीपुर - हमीरपुर - बालसाज -  
और रामनगर हैं - (४) **मेवात** - जिसमें अलवर - बहादुरपुर - रामगढ़

\* नाभा और पटियाले को सन् १८५७ की खैरख्वादी में यह मुल्क सरकार ने बखशा है पहिले नवाब मन्तर  
काथा - महम्मद मराद अली - ॥

गोवंदगढ़ - पीपलखेडग - किशनगढ़ - इसमार्ईलपुर - तजारा - और पेंतो  
करा परगने हैं - राजका बन्दोबस्त करनेके लिये १२ तहसीलें हैं ॥

### गोवंद और खानजादः जातिक इतिहास

अब नरराज्य के इलाक़ों में गैब जातिके लोग अधिक रहते हैं जो सुलतान म-  
हम्मद तुग़लक़ के समय में मुसलमान हुए थे - इतिहास बतलाता है - कियह  
राजपूतों और मीनों से मिलकर एक नानि पैदा हुई है - सदांमन्द से यह जाति  
दुकेनो और चोंग में परसिद्ध है - जैसे इस देशके जाट-गूजर-और मीने हैं -  
राज खलवर के परगने तजारा में एक दूसरी जाति खानजाद के नाम से परसि  
द्ध है - जो श्री ब्रह्म चन्द्र जी के वंस में चन्द्र वंसीयादों राजपूतों की नसल है खान  
जादः नाम पड़ने के दो प्रमाण इतिहासों में मिलते हैं - एक यह कि खान नामी  
कोई यादों नसल का राजपूत मुसलमान होगया था - अनख उसका और उसकी  
औला का नाम खानयादों पड़ गया - जिसको परजा सहस्सरो वर्ष विदीत हो  
ने से खानयादों कहन खानजादः कहने लगी जैसे अजै मेर को अजमे  
और गंधार को यांधार और असी को हांसी कहने लगे - दूसरी कथन-  
यह है कि फ़ीरोज़ शाह बादशाह तुग़लक़ के समय में दोतीन राजपूत-  
मुसलमान हुए थे उनको बादशाहने खानेजाद की पदवी बख़शी थी - उन  
की आज्ञा आज भी खानाजाद अर्थात् खानजादा कहलाती है जिसका अर्थ  
चाकर है - दोतीन वानों में से कोदेवात हो परन्तु यह साबित है कि उक्त खानजा  
दायादों वंस राजपूत है - और उनके सम्बन्ध आजलों चौहान - भादी आदि मुसल  
मान व हिन्दू राजपूतों के साथ होते हैं - जो हरयाने के देश में फैले हुए हैं - और  
रुपड़काहलाते हैं - खान जादों जातिके सरदार ५०० वर्ष से सूरवीर के नाम से पर  
सिद्ध हैं - नवाब हमनरवा नेवाती जिसका नाम पुराने इतिहासों में सूर्य के समान

चमकला हुआ दिखाई देता है - उदैपुत्र के महाराजा हिन्दू पति संगराम सिंह जी के साथ होकर बाबर बादशाह की लड़ाई में १००० सवारों के साथ काम आया था - इसी सूरवीर की बेटी के <sup>गम</sup> से बीरमरावा का पुत्र अबदुल रहीम खान खाना उतपन्न हुआ था - और जो अकबर बादशाह का मुसा हब था - जिस ने हिन्दोस्तान के हातारों और सूरवीर कवियों में नाम पाया और एक कवित्त के बदले में चाडा चारन मारवाड वाले को ५० लाख रुपया दिया था - दून दो जातियों के उपरान्त अहीर - जाट - आदि भी बस्ते हैं - राजधानी शहर अलवर <sup>अलवर</sup> श्री परबत के ठीक नाव में बस्ता है - और ५० हजार आदमी उसमें रहते हैं - पहाड के ऊपर मजबूत किला के अन्दर एक महल चार कुन्द - एक तालाब मुलेम सागर और एक बावड़ी है - वर्तमान नरुको के कच्चे से <sup>पहले</sup> जैपुर का किलेदार उसमें रहता था - अलवर की कच्ची शहर पनाह और खाई है - जिस को महाराजा परताप सिंह ने सं० १८३२ में तयार कराया था - कम्पिनी बाग और बने विलास से जो मोती डुंगरी पर है शहर की बहुत रौनक होगई है - दून बागों की सी नारंगियां कहीं नहीं होती ॥

### तुवारीख अलवर

अलवर के रईस जाति के कछवाहे हैं जो आंबेर के बारहवे राजा उदयकरन के परपोते नरु जी की औलाद में होने से नरु के कहलाते हैं - इनका कुरसी नामा यह है - महाराजा उदयकरन के बेटे वीर सिंह - उनके महाराज - उनके नरुजी - उनके लालाजी - उनके ऊदाजी - उनके बाडवां - उनके फतह सिंह - उनके कल्याण सिंह - उनके उग्र सिंह - उनके जोरावर सिंह - उनके मोहब्बत सिंह - उनके रावराजा पस्ताव सिंह - ग्यारह पीढी लो यह जैपुर के मातहत जागीरदार रहे परन्तु चारहवी पीढी में रावराजा पस्ताव सिंह ने अपनी अमली जागीर माचेरी व रामपुरा पर अपने भाइयों उग्र सिंह

तेजसिंह-जोरावरसिंह-मोहनबतसिंह को छोड़ा- और अपनी तलवार के जोर से- जैपुर भरतपुर के राजमें से बहुत सा इलाका दबाकर १८३२ में रियासत अलवर की बुनियाद कायम की- और रियासत स्थिर रहने के लिये उन्होंने नवाब नजफखानों के साथ बहादुरी से चाकरी करने और नवाब-को भरतपुर और आगरा पर कब्जा दिवाने के बदले में बिछी के पिछले बादशाह शाह आलम से सनद और पंजहज़ारी मन्सब और माहीभरात का कुख हासिल किया- जिससे जैपुरवालों का अलवर पर दावाना रहा और सं० १८३६ में जबकि मरहटे लूटमार कर रहे थे- इन्होंने बड़ी बहादुरी-से बहुत सा मुल्क इधर-उधर से दबा लिया- और २० लाख रुपया नकद पर-गने विसवा को लूटकर खजाना भर लिया जिससे रियासत को पूरी ताकत हासिल हो गई- रावराजा परतापसिंह जी पूसवदी ५ सं० १८४७ में पचास वर्ष की उमर पाकर देव जोष हुआ ॥

महाराज वरवतावरसिंह सं० १८४७ में गोद आकर पाट विराजे- सं० १८६० में ग्राम सवांड़ी इलाके अलवर में मरहटों और अंगरेजी फौज से ब्या-नक युद्ध हुई- उसमें नवाब अहमद खानों वकील अलवर- और ठाकुर विनयसिंह जी ने अंगरेजों को बहुत मदद दी- जिससे सरकार ने खुश होकर- देनालेने खराज के अहदनामा किया- और ८ परगने रावराजा को इन ग्राम में दिये- जिनमें लुहारू-रादरी-नीमराना भी हैं- और नवाब को लुहारू और फीरोज़पुर के परगने इन ग्राम में मिले- महाराज वरवतावरसिंह माघ सुदी २ सं० १८७१ में मृत्यु को प्राप्त हुए ॥

महाराज विनयसिंह सं० १८८० में पाट विराजे- दूसरे दावीदार बल-वन्तसिंह को चार लाख की जागीर तजारा दी गई थी जो बलवन्तसिंह के वे ओझा

मरने से २ वर्ष पीछे राज अलवर में पीछी भित्ति गई - सावन बरी ई सं० १८१४ को ५० वर्ष की अवस्था में देवलोप हुए ॥

**महारावराजा शिवदान सिंह** १३ वर्ष की अवस्था में सं० १८१४ में अपने पिता की जगह पाट विराजे - यह महाराजा साहब फ़जूलख़ची और दातारी और वरनजमी के कारी दोबेर रियासत से माज़ूल किये गये - और दोही बेर रियासत का अधिकार मिला - अन्त माज़ूली ही की हालत में सं० १८३९ में स्वर्गबाश हुए ॥

**महारावराजा मंगल सिंह** १४ दिसम्बर सन १८०४ ई० को गोद लिये जाकर पाट विराजे - महारावराजा शिवदान सिंह जी के काका ठाकुर लखधीर सिंह जी गादी के दावीदार थे - पर अंगरेजी अफ़सरों ने उनको बूझा समझकर गादी से महसूम रखा - ठाकुर साहब ने महारावराजा के हज़ूर में नज़र पेश नही की और ख़फ़ा होकर सरकार के हुकम से अजमेर में चले आये - और उसी हालत में मृत्यु को प्राप्त हुए - महारावराजा मंगल सिंह जी ने मेज कालिज में अंगरेजी विद्या सीखी - और सं० १८३५ में राज के अधिकार पाये - सं० १८४२ में जी० सी० एस० आई० का तमगा सरकार से पाया - और सं० १८४५ में सरकार ने महाराजा का शिताब बरवशा - २२ ता० मई सन १८८२ ई० को नैनीताल के पहाड़ पर जहाँ वह दो वर्ष से आबी हवा की बहली के लिये जाया करते थे - ज़िगर की बीमारी से देवलोप हुये - ॥ और लाश अलवर में लाकर दफ़न किया गया ॥

**महाराजा जै सिंह जी** (चरजीव) १३ ता० जून सन १८९२ ई० को १० वर्ष की अवस्था में अपने पिता की जगह राज विराजे - रईस होनहार बालू होते हैं राज का काम एक कौन्सिल द्वारा चल रहा है - जो करनल फ़रीज़र साहब पोलीटिकल एजन्ट की निगरानी में है - अलवर में आज कल एक बिचित्र मुकद्दमा चल रहा है - महाराजा साहब के नैनीताल में देवलोप होने से एक दिन वह अलवर

में राज्यके हीवान कुंजबिहारीलाल सड़कपरमारेगये- इसमुकदमाकीतह  
कीकातअंगरेजीपुलीसकेअफीसरोनेकरकेरामचन्द्रआदिईमनुष्योंपरकुंजबि-  
हारीलालकेमारनेकादोषनगायाहै- मुकदमादौरासिपुर्दहोगयाहै ॥

## राज्य भरतपुर

राजपूताना परदेशके पूरबदिसामें भरतपुरविचलेदरजेकाराजहै जिसकेऊत  
मेंगुडगावां जिलाअंगरेजीपश्चिममेंअलवरऔरजैपुर- दक्षिणमेंजैपुरकरो-  
लीधौलपुरकेइलाकेऔरपूरवमेंजिलाआगराऔरमथराहै- लम्बाई७५  
मीऔरचौड़ाई४८मील-रकबा १९७४मीलमुरब्बा- आबादी६४५५४० आद  
मीओंकी-गामदनी २२लाख-फौजसवारवपैदल ५००० है- खराजमाफहै-  
सलामीकी १० तोपैसरहोतीहै- इसराजमेंहोकरचारनदियां वानगंगा-घम  
वीर-कावन्द-औरछ्पादेखबहीहै- जिससेपानीकीकोईकमीनहीं- इसके  
उपरान्तदेसकीनीचीजमीनहोनेसे १२महीनेबरसातकापानीभरारहताहै  
औरबहुधायहपानीखेतोंकोनुकसानपहुंचातरहताहै- दक्षिणदिसामें  
पहाडियांहैं जिनमेंजंगलीब्रह्मोंकेअधिकतरहोनेसेपशुओंकीघासचारा  
हरमौसममेंबहुतमिलताहै- बयानाकागढऔरदीगइसराज्यमेंपुरा  
नेऔरपरसिद्धस्थानहैं राजधानीभरतपुरनगरनीचीजमीनपरनीनमील  
लम्बाऔरएकमीलसेअधिकचौड़ाईमेंबस्ताहै- शहरपनाहयद्यपिकच्चीहै-  
परन्तुबलकेगिर्दजोखार्दहै वहसदापानीसेभरीरहतीहै औरलेड़ाईकेसम-  
यबाहरकेतालावोंकापानीकोड-देनेसेनगरएकरापूबनजाताहै- जिससे  
शह्रोंका नगरजोपहुंचनाकठिनऔरदुःभरहोजाताहै- इसनगरकोमहाराज  
रामचन्द्रकेभाईभरतनेअपनेनामपरबसायाथा- परन्तुकिलाआदिगामसूर्जमल

के बनाये हुये हैं ॥

### कवरीख

भारतपुर वालों के पुरखे कौमजाट संसनी नामी ग्राम के रहने वाले हैं - यह खेती बाड़ी के सिवाय लूटमार भी करते थे - राजा रामजाट को सं० १७४५ में आलमगीर बादशाह के पोते बेदार बख्श ने डकैती का दोश लगाकर कतल किया और गढ़ी संसनी को उजाड़ दिया था - आलमगीर के मरने पर फिर इन लोगों ने लूटमार शुरू की थी परन्तु फर्रुख सेयर बादशाह के वजीर सैयद अबदुल्ला ने चूड़गमन जाट को जो राजा राम के कतल होने से जाटों का मुखिया बना था लूटमार से बन्द रहने और रास्तों की हिफाजत करने का ज़िम्मेवार ठहरा कर सहदारवां का खिताब और कुछ गांव जागीर में बख्शे - परन्तु यह लोग अपनी शरारत से बाज़ न आये इसलिये बादशाह ने सं० १७७४ में जैपुर के महा राजा सवाई जैसिंह को भेजा कि चूड़गमन को सज़ा दें - चूड़गमन वजीर से मिला हुआ था अतएव कुछ बन्दोबस्त न हो सका - चूड़गमन ने जोर पाकर अपने भतीजे बदनसिंह को कैद कर लिया - ३ वर्ष पीछे बदनसिंह कैद से छुटकर सवाई जैसिंह को अपनी सहायता के लिये चढा लाया - ईमदीने महासाराहा - अन्त को इतौन नामी स्थान को महाराज ने बेजै कर लिया - और चूड़गमन अपने पुत्र मोहकमसिंह समीत भाग गया - सन १७२३ ई० में बदनसिंह जाटों का ईस नियत किया गया - महाराज सवाई जैसिंह ने इस को राज तिलक दिया - बदनसिंह ने बहुत से ग्राम इधर उधर से हबाये - परन्तु दुलाहाबाद के बादशाही सूबेदार ने इसको मारकर भगा दिया - अन्त को बदनसिंह मरहटों से मिल गया - जिस से अन्त भारतपुर की बुनियाद स्थिर होगई - जेठ सुदी १० सं० १८१२ में मर गया ॥

सूरजमल सं० १८१२ में अपने पिता की जगह राज बिराजे और सन १७३३ में



छापा मार कर खीमा जाट से भरतपुर कीन लिया और सं० १८२० में इलाहाबाद के सूबेदार नजीबुद्दौला से लड़ कर मारे गये ॥

राजा जवाहर सिंह पूरा बदी १३ सं० १८२० को गादी विराजे और सं० १८२५ में किला आगरा में तख्तवार से घायल होकर परलोक वास हुए ॥

राजा रतन सिंह भादों बदी ९ सं० १८२५ में पाट विराजे ७ महीने राज कर ने के पंद्रह म्क की गियागर गुशार्द के हाथ से चैत सुदी ५ सं० १८२६ में कतल हुये - इनके आदमी श्री ने गुशार्द को वहीं मार डाला ॥

राजा केसरी सिंह सं० १८२६ में गज विराजे - बादशाह के कज़ीर नज़फ़र खाने सं० १८२६ में आगरे का परगना दबालेने के दोष में भरतपुर के सिवाय समस्त तख्त जब्त कर लिया था परन्तु इनकी मां रानी किशोरी की लाचारी से नवाब ने राज-वापिस दे दिया चैत बदी १५ सं० १८३५ में देवलोप होगया ॥

राजा रनजीत सिंह सं० १८३५ में पाट विराजे नवाब नज़फ़र खा को दंड लाख रु नज़राना का देकर राज तिलक पाया सं० १८४१ में शाह आलम बादशाह को महाराजा साहब दीग की खैर कराने को लाये - बादशाह ने खुश होकर बदल वेग से तिनके कबजे में दीग का गट्टा राजा को दीग दिला दिया - और दाऊद वेग से आगरे का किला महाराजा में धिया को दिला दिया जिस से नाराज़ होकर गुलाम कादर रुहेला ने बादशाह की आंखें निकाल दीं और दिल्ली के लाल किले को लूट लिया - परन्तु अन्त को गिज़रे में बन्द होकर बड़े दुखों से मारा गया - सं० १८६१ में अंगरेज़ी सैन ने भरतपुर पर हमला किया - जिसके सैन पत्नी लार्ड लीक साहब थे - बड़ी घमसान की लड़ाई हुई - ३००० आदमी अंगरेज़ी फौज के मारे गये - नौगी भरतपुर निजब नष्टो सका - अन्त को महाराजाने १३ लाख रूपिया देकर अंगरेज़ों से सलह कर ली - अन्त सुदी १५ सं० १८६२ में देवलोप हुआ - ॥

**महाराजारनधीरसिंह** सं० १८६२ में राजविराजे और सम्बत १८८० में देवलोप हुस - ॥

**महाराजा बलदेवसिंह** सं० १८८० में पाटविराजे और सं० १८८१ में देवलोप हुस - ॥

**राव दुर्जनसाल** - पाटवी तो बलवन्तसिंह थे परन्तु दुर्जनसालने जो महाराजा बलदेवसिंह के भतीजे थे फौज और सरदारों की सहायता से बलवन्तसिंह को गादी से उतार कर खुद मालिक बन गये सरकार ने फौज भेज कर दुर्जनसाल को निकालने का बन्दोबस्त किया किन्तु फौज के आने में देर हुई इस दोष में जनरल **एकटरलोनी** साहब मौजूफ हुस - और उसी दुःख से मर गये - अन्त को २५ हजार अंगरेजी फौज ने आकर भरतपुर लिया और दुर्जनसाल को पकड़ कर आगरे के किले में कैद कर दिया और बलवन्तसिंहजी पाटविराजे ॥

**महाराजा बलवन्तसिंह** सं० १८८२ में पाटविराजे और सम्बत १८९० में देवलोप हुस - ॥

**महाराजा जस्वन्तसिंहजी** (चरनजीव) सं० १८९० में पाटविराजे नाबालगी में सरकारी अफसरो की राय से राज का बन्दोबस्त हुआ - थाने - तहसील - कचहरियां - दीवानी - फौजदारी - माल आदिको बन्दोबस्त किया गया - सं० १८९५ में महाराजा साहब को राज के अख्तियारान दिये गये - सं० १८९८ में महाराजकुमार **रामसिंहजी** उत्तपन्न हुस - १८७७ ईस्वी में महाराजा साहब को सितारे हिन्द रज्जे अंबवका तमगा मिला - भरतपुर राज के समस्त ग्राम ३७० है इनमें १०० मन्दरो वधमार्थ के निमित्त हैं - बाकी खालसा हैं - कोई सरदार या जागीरदार नहीं है - महाराज को फौज से बहुत मुहब्बत है - सरकार की ओर से खरीता के लिफाफे पर "बसुताले महाराजा साहब मुशफक मेहरबान मुखलिसान महाराजा ब्रज इन्द्र -"

सवाई जसवन्त सिंह बहादुर बहादुरजंग महामहोदय अक्षहस्तशाला" और श्री नामे पर महाराजा साहब मुशफ़क़ मेहरबान सुखलिसान सलामत खिरवा जाना है- का गज़ सुनदरी येनी कमखाव की होती है- ॥

## राज्य धौलपुर

राज्य पूताना की पूरब दिसा में एक छोटी सी रियासत है- जिसके उत्तर में सरका सीज़िन्ना आगरा और पश्चिम भरतपुर करौली - दक्षिण और पूरब में गवालियार राज का इलाका है - इस राज की लम्बाई ५४ मील - चौड़ाई ३२ मील - रकबा १६२६ मील मुरब्बा - आमदनी ६ लाख रूपया - और फौज सवार व पैदल ३००० के लगभग है - ख़राब माफ़ - पदवी महाराज राना - सलामी की तोपें १५ सर होती हैं - इस राज की दक्षिण और पूरब दिसा की सीमा पर चम्बल नदी ६० मील बों बह कर - गवालियार और आगरे की सीमा बन गई है - पश्चिम व दक्षिण दिसा में पहाड़ियां हैं - और बाकी ज़मीन सीधा मैदान है - वर्षा होने पर पैदावारी अधिक होती है - आंब के ब्रह्म इस देश में अधिक हैं जिससे समस्त ज़मीन लाहलहाती हुई दिखाई देती है - **धौलपुर - बाड़ी - राजरवेडा** - तीन बड़े परगने हैं - राजधानी **धौलपुर** आगरा और गवालियार की सड़क पर गवालियार से ३० मील उत्तर में और आगरे से ३४ मील दक्षिण में बसता है - धौलपुर की - दक्षिण दिसा में एक मील पर चम्बल नदी बड़े जोर से बहा करती है - नदी के बाईं ओर बहुत मज़बूत किला बना हुआ है - और कई महल और मसजिद हैं - जिनमें एक मसजिद सन १६३० ई० में शाह जहां बादशाह ने बनाई थी यह उन जोगों के निशान हैं जिनको सैकड़ों वर्ष इस काल खागया - हां - इतिहास उनके नामों और कामों की भली भांति दरसा रहा है - ॥

## तवारीख

धौलपुर वालों का निकास गोहर नामक ग्राम से है - जो किला गवालियार से २२ मील पर बसता है - इन के पुरखे ने जो जाट जाति का जमींदार था बाजे राव ने शायी चाकरी में रहकर इज्जत पाई थी और सं० १७८६ में बाजे राव ने इनको गोहर जागीर में बखशी सं० १७९७ में अहमद शाह वारशाह अबदाली ने पानीपत के निकट बड़ी बमरान की लड़ाई लड़ कर मरहटों को भगा दिया उस समय गोहर का एक जाट जागीरदार लोकेन्द्र नामी गवालियार का किला हवा कर राना गोहर कहलाने लगा - राना पदवी इसको दिल्ली के वारशाह ने बखशी थी - महाराज राना लोकेन्द्र सिंह से सं० १७२३ में मरहटों ने दूसरी बेर जोर पकड़ कर गोहर व गवालियार छीन ली - परन्तु ३ लाख रूपिया लेकर अपना खराज गुज्जार बना कर गोहर लौटा दी - और गवालियार को अपने कब्जे में रक्खा सं० १७३५ में सरकार अंगरेजी ने इनसे सन्धि कर के अपनी ओर मिला लिया - और मरहटों से लड़ कर गवालियार भी इनको दिला दिया - परन्तु ३ वर्ष पीछे दुश्मनों से मिला रहने का दोष लगा कर सरकार ने इनका साथ छोड़ दिया - यह खबर सुन कर माधोराव सेंधिया ने हमला किया - और गोहर व गवालियार दोनों इनसे छीन लिया - और राना को कैद कर दिया - २२ वर्ष लों यह कैद में रहे - और बड़े २ लाख भुगत कर अन्त को सरकार अंगरेजी ही की सहायता से दूसरी बेर रईस बने - इन के देवलोप होने की मित की पतान ही मिलना - ॥

महाराज राना कीरत सिंह सं० १७५८ में सरकार अंगरेजी ने गवालियार का किला अपने कब्जे में कर लिया - और गोहर लोकेन्द्र सिंह के बेटे की अर्ज निह को दार दिया - किन्तु सं० १७६२ में जन दौलतराव सेंधिया और सरकार में अहमद नामा होकर मुलह हो गई - तो सरकार ने गोहर और गवालियार दोनों सेंधिया के हवाले कर दिये - राना गोहर के पास कुछ भी न रहा - राना गोहर ने कोई कसूर नहीं किया था जिस के बहले - में

उनका राजमहदों को दिया गया दूसी बात का विचार के सरकार ने गोहद के राना से नया अहद नामा किया और उस हानि के बदले में जो गोहद के छिन जाने से हुई थी सरकार ने राना जी गोहद को धौलपुर- बाड़ी- राजा खेड- तीन परगने इनायत किये- तात प्रप यह है- कि ४४ वर्ष यह गोहद के राना कहलाये और आज से ८४ वर्ष पहिले गोहद छोड़कर धौलपुर के राने सवने- सं० १८६२ में महाराज राना कीरत सिंह मृत्यु का प्राप्त हुआ - ॥

महाराज राना भगवन्त सिंह सं० १८६२ में पाटवै सं० १८५७ ई० के उपद्रव में गवालियार से जो अंगरेज भागवारन के पास आये थे- उनको हिफाजत से राना जी से इनको भी दूसरे रईसों के समान गोद लेने की सनद मिली- सं० १८६७ में धौलपुर और गवालियार दरबार में सबहुशमनी हो गई जिसके कारा महाराज राना ने गवालियार के महानो को खुश देने के लिये पारसनाथ जी का मन्दिर तोड़ दिया- इससे महाराजा साहब गवालियार का कोप भड़का- परन्तु सरकार ने फिसाद नहीं होने दिया सं० १८६६ में इनको सरकार से दर्जे अब्बल का तमगा मिना गजरा नाम की वैश्या की दोस्ती से रियासत के बहुधा कामों में खरीबी आ गई थी और क़ज़ा भी कई लारव का होगया था देवहंस कामदार ने राना जी को दबा लिया था- अन्न का रजन्द साहब ने देख कर बुरे आदमीओं को राज से निकाला कामदार कैद किया गया- पटियाला का मुन्शी अबदुल नवीरवां और राजा इनकराव के भाई गजाधर दीवान नियत किये गये- उन्होने नये सिरे से राज के कामों को हुरुस्त किया परन्तु पहिले अबदुल नवीरवां और पीछे महाराज राना देवलोप हुआ - ॥

महाराज राना नेहाल सिंह (चिरन जीव) इनके पिता जो पाटवी थे अपने पाप महाराज राना भगवन्त सिंह जी की सामने स्वर्ग बास हो चुके थे- अतः सब वयस सं० १८२०

में आपने दादा की जागह दो वर्ष की अवस्था में पाट विराजे इनकी नावालग्नी में पढ़ाई राजा उनकर राव फिर मेजर डेन्ही साहब पोलीटिकल एजन्ट - इनके अतली क और राज के मुन्तज़िम रहे - महाराजा अंगरेज़ी - फ़ारसी - हिन्दी में भली भाँति लिख पढ़ सकते हैं - सन् १८४० में इनको राज का अधिकार मिला - परन्तु फ़ज़ूल ख़ान रची और बड़ इन्तज़ामी के कारण मारटेली साहब पोलीटिकल एजन्ट की निगरानी में काम होने लगा - और दो वर्ष से रायबहादुर मुन्शी बिशान स्वरूप साहब जो अजमेर के ज़िले में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे राज्य के दीवान नियत हुए हैं - इनके प्रीम से रियासत का काम अच्छी तरह से चल रहा है - सरकार की ओर से ख़रीता के लिफ़ाफ़े पर "बमुताले महाराजा साहब मुशफ़क़ बिसियार मेहरबान मुख़लिसान नरई सुहोला सिपहरा रुल मुल्क महाराजधिराज श्री सवाई राना लोकेन्द्र बहादुर दिलेर जंगजी देवसल्लम हु अल्लाह तआला" और अ़ीनामे पर "महाराजा साहब मुशफ़क़ बिसियार मेहरबान मुख़लिसान सलामत" लिखा जाता है - कागज़ सुनहरी थैली कम ख़ाब की होती है - ॥

## राज्य परतापगढ़

परतापगढ़ का इलाक़ा जिसको काँठल कहते हैं - मेवाड़ के दक्षिणपूर्व में है - इसके पश्चिमोत्तर में मेवाड़ - दक्षिण में बाँसवाड़ा - और पूरब में रतलाम - हुल्कर आदि मुल्क मालवा फैला हुआ है - लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील चौड़ाई पूरब से पश्चिम को २५ मील - रक़बा १४६० मील मूरब्बा - आबादी १५०००० आदमी - ज़ोंकी - आमदनी ख़ालसा ३५०००० रु० सालाना - फ़ौज सवार व पैदल ६०० आदमी सम्भे जाते हैं - परतापगढ़ का वह भाग जो बाग़ड़ कहलाता है - पहाड़ी और सूना है - भील इस राज्य में अधिक रहते हैं पहाड़ी ब्रह्मों के उपरान्त वाँसयहाँ

का पसिद्ध है- वह भाग जो कांठल कहलाता है- नीची धरती है- जिसमें गंदू आदि उत्पत्ति होने है- राजधानी परतापगढ़ ऊंची धरती पर सत्तेहस मुन्दर से १६५८ फीट ऊंचा और नीमच से ३३ मील पर दक्षिण में वस्ता है- रईसके महल नगर से आध मील पर है- देवलिया यहाँकी पुरानी राजधानी है- खराजतकारी ५६५०० रु. मन्गामी १५ तोपें हैं- ॥

### तदारीख

परतापगढ़ वाले सीसोदि चाराग पूल सूर्यवंसी खान्दान की खोदी शाख हो ने से महारावत कहलाते हैं- आजसे चार सौ वर्ष पहिले चीतौड़ की दूसरी लड़ाई में परतापगढ़ वालों के एक पुरखा बाधसिंह जी बहादुर शाह गुजराती की लड़ाई में महाराना विक्रमादित्य के कायम मुकाम बन कर मारे गये थे इसकाणी से जैसे मेवाड़ वाले अपने आपको श्री ईकलंगजी का दीवान कहते हैं उसी प्रकार परतापगढ़ वाले भी अपने नाम के साथ दीवान कालकूब लिखते हैं- ॥

महारावत खेम करन सं० १४८० में चीतौड़ के महाराना मोकल जी मारे गये तो उनके दो बेटों कूभा व मोकलजी में से कूभा जी गादी विराजे- और मोकलजी को सादडी जावद जागीर में मिली- जहाँसे वह तरकी करके परतापगढ़ चले गये- और दूसरे राज्य की जड़ जमाई- ॥

महारावत सूरजमल सं० १५१५ में पितृके मरने पर बड़ी सादडी के मालिक बने- परन्तु चीतौड़ के पाटवी प्रथी राज से बखेड़ा रहने के कारण यह दक्षिण दिशा के पहाड़ों में चले गये- और देवलिया बसाया- महाराना चीतौड़ ने इनकी जागीर ज़ब्त कर ली- ॥ \*

महारावत बाधसिंह सं० १५७० में पाट विराजे परन्तु अपनी पुरानी जागीर के ज़ब्त होने से नाराज़ हो कर बादशाह मालवा के पास चले गये वहाँ इनको

बादशाह ने डेढ़ लाख की जागीर बरवशी और इन्होंने बाधवाडन ग्राम बसाया-  
 सं० १५१५ में चीतौड-गढ़ की लडाई में बहादुर शाह बादशाह गुजराती से लड़कर  
 काम आये - जहाँ वह महाराना साहब की सहायता के लिये मालवा में आये थे-  
**महारावत राय सिंह** १५८२ में चीतौड-गढ़ के मुकाम पर पाट बिराजे - हु-  
 मायूं बादशाह के डर से गुजराती में बाड़ से भागे - तो यह चीतौड महारा<sup>ना</sup> को सौंपकर  
 अपनी जागीर को चले गये - ॥

**महारावत बीकाजी** १६०८ में पाट बिराजे - और मेवाड़ छोड़ कर मंदसौर  
 के बादशाही हाकिम से जा मिले - इनके साथ सूरजमल का पोता कान्हल भी भी  
 म्बाहेडन की जागीर छोड़ कर चला गया था - महारावत ने उक्त हाकिम के कहने से  
 सोनगरा राजपूतों से सुहागपुर छीन लिया और इसी तरह खेरोट - कोररी - नजौह  
 रवा लिये - और अपने काका कान्हल को धर्मोत्तर जागीर में दी - सं० १६१० में देव  
**मीना** को मारकर पहाड़ी मुल्क पर कब्जा कर लिया - इन्होंने बादशाही चाकरी -  
 में कृष्णदास के बेटे समरसी को दिल्ली भेजा - १६३५ में देवलोप हूए ॥

**महारावत तेज सिंह** सं० १६३५ में राज बिराजे और १५ वर्ष राज कर के देवलो  
 प हूए - तेजसागर इन्हीं ने बनवाया था - ॥

**महारावत भान सिंह** १६५० में पाट बिराजे - और सं० १६६० में मकवन  
 खां जागीरदार मंदसौर के साथ जोध सिंह सीसोदिया को मारकर काम आये - ॥

**महारावत सिंधा** सं० १६६० में पाट बिराजे - और १८ वर्ष राज कर के देव-  
 लोप हो गये - ॥

**महारावत जसवन्त सिंह** सं० १६७८ में पाट बिराजे - सं० १६८८ में महाराना  
 जगत सिंह ने उनको उदैपुर में बुला कर चंपा बाग में ठहराया - इनके पाटवी कंवर -  
 महा सिंह भी साथ थे - रात हुई तो महाराना ने राम सिंह राठोड को बहुत सी फौज



साथ देकर वागमैं भेजा कि महारावत जी को चुककरो । त्यों कि महाराना के दिल  
में महारावत के वादशाह से मिजजाने का रंज था - महारावत अपने पादवी और सा  
थियो समीत लड़ कर काम आर - ॥

**महारावत हरी सिंह** यह अपने पिता और चडे-भाई के उदै पुरमें मारे जाने पर स०  
१६८० में राजविराजे और दिल्लीमें पहुंचकर महाराना के इत्याचार और भाई और  
पिता के मरवा डालने का हाल अर्ज कराया जिस पर वादशाह ने इनको इन आम और सी  
ज अतव मन्सब देकर हाकिम मन्दसौर के नाम हुकम लिखा कि मेवाड का क्वजा  
देवलिया से उठवा दो - दिल्ली से लौटकर महारावत ने उक्त हाकिमी सहायना से -  
मेवाड का क्वजा उठा दिया - और ३२ गांव और भी मेवाड के देवालिये - सं० १७३०  
में देवलपोह - ॥

**महारावत परताप सिंह** १७३० में पाटविराजे ईंडर विवाहने को गये थे  
नौदतै समय मुलूमर के रावत किशन सिंह के पोते मनोहर दास को साथ ले आये  
उनको सं० १७३५ में कदलिया आदि जागीर में दिया जो चूंडावतो की जागीर में आ  
जली है - सं० १७५३ में अपने नाम पर परतापगढ़ बसाया - और गढ़ बनाया सं० १७६४  
में देवलपोह - ॥

**महारावत प्रथवी सिंह** सं० १७६४ में पाटविराजे - १७७० में फर्रुख सेयर  
वादशाह ने दिल्ली में हाजिर होने पर रावत के उपरान्त राव की पदवी और खिल अत  
वर वशा और राज्य में एक साल जारी करने का अधिकार दिया - सं० १७७३ में मृत्यु  
को पराप्त हु - ॥

**महारावत गम सिंह** १७७३ में पाटविराजे और ईमही निराज करके उसी स  
म्वत में देवलपोह - ॥

**महारावत उमेश सिंह** १७७४ में पाटविराजे - और पांचवर्ष राज करके - वे

औलाद ही देवलोप हुए - ॥

**महारावत गोपालसिंह** सं० १७७८ में राज विराजे - सं० १७८८ में पेशवा हुलकर - महाराव तीनों के साथ होकर महाराना उदैपुर ने डूंगरपुर घेर लिया - तब महा रावल शिवसिंह जी के बुलाने से यह डूंगरपुर गये और महारावल जी के - समय भाने से डूंगरपुर वांस्तवाड़े का खराज पेशवा को देना स्वीकार किया - महासरा उठ गया - गोपाल गंज बाजार बसाया - ३४ वर्ष राज कर के स्वर्गवास हुए ॥

**महारावत सालमसिंह** १८१४ में गद्दीनशीन हुए - परना पगढ की नई - शहर पनाहवनवाई - सालमपुरा बसाया - दिल्ली जाकर आलमगीर सानी से - एक साल का हुकम लाये - सालम शाही रुपया आज लो हर जगह चलता है - महता सूरत सिंह को जिसने महाराना के विरुद्ध बगावत की थी सजा दी - हुलकर और - संधिया उदैपुर पर चढ़ाये - तो इन्होंने महामना अडसीजी को मदद दी - जिस से रावत की पट्टी जो बादशाह ने बखशी थी बहाल रही - और धरयावद की जागीर - पाई - द्वारकाजी में एक सदावर्त जारी किया - जो आज लो है - १७ वर्ष राज कर के देवलोप हुए - ॥

**महारावत सावंतसिंह** - दोरे भाई लालसिंह को अरनोद जागीर में मिली - और आषसं १८३९ में राज विराजे - उदैपुर में सरदारों को चाकरी के लिए भेजने से धरयावद महाराना भीमसिंह ने जवत कर ली - इनके समय में मरहटों ने राज्य परना पगढ को बहुत बरवाद किया - १५ हजार सालाना बादशाही ख राज के बदले ७२ हजार खराज हुलकर ने लगा दिया - जिस के बदले में रुपया छोड़े - ऊंद - धान दिया जाता था - तो भी पूरा नहीं पड़ता था - अन्त को मरहटों के इत्याचार से कुटने के लिये सं० १८७५ में कप्तान मेगडा लड की मारफत महारावत ने सरकार से सन्धि की - पाटवी कंवर रूप सिंह ने महारावत के विरुद्ध

फिर सादर उठाया - सरकार अंगरेजी ने गिरनार के गढ़ में कंवरजी को कैद कर दिया  
जहां वह सं० १८८२ में मर गये - महारावत जी सं० १८४४ में ई० वर्ष की अवस्था में  
परलोकवास हुए - ॥

**महारावत दलपत सिंह जी** कंवर दीप सिंह जी के दो बेटे थे बड़े के सरी सिंह  
जी और छोटे दलपत सिंह जी - महारावत सावंत सिंह जी ने पाटविकों के गिर-  
नार में मर जाने पर बड़े पोते के सरी सिंह जी को आपगोदलिया और छोटे दलपत  
सिंह जी को डूंगरपुर महारावल जसवंत सिंह जी की गोद भेजा - परन्तु के सरी सिंह  
जी सं० १८६० में मृत्यु को पराप्त हुए - जिनके कोई औलाद ही नहीं - अतएव  
महारावत दलपत सिंह जी डूंगरपुर से उलटे आकर परतापगढ़ की गादी पर सं०  
१८०० में विराजे - और सरकार की मंजूरी से अपनी जगह डूंगरपुर की गादी पर-  
शावली के कंवर उदै सिंह जी को गोद लेकर सं० १८०३ में बिठा दिया और सरदा-  
रो के सरकार के कहने से आपसों का काम करते रहे - क्योंकि डूंगरपुर  
के महारावल जिन को इन्होंने गोद लिया था - कम उमर थे - अन्त को आठ वर्ष लों  
डूंगरपुर का काम चलाकर परतापगढ़ में आ गये - और फिर नहीं गये - क्योंकि  
महारावल उदै सिंह जी डूंगरपुर के रईस भी होशियार होकर अपनी रियासत-  
का काम अच्छी तरह चलाने लगे थे - सं० १८१७ ई० के उपद्रव में सरकार को मदद  
दी - जिस से नेकनामी का खरीता सरकार से आया - तात्पर्य यह कि १८ वर्ष डूंगरपुर  
में और २० वर्ष परतापगढ़ में राज्य कर के महारावत जी सं० १८२० स्वर्ग वास  
हुए - ॥

**महारावत उदै सिंह जी** १७ वर्ष की अवस्था में सं० १८२० में पाट विराजे - पहि-  
ले पहिले इन्होंने भीलों और दूसरे छुरेयों को दण्ड देकर रियासत का अच्छा बंदो-  
बस्त किया - सं० १८३२ में श्रीमान करनल **ईडन साहब** बहादुर रजीडन्ट राजपूताना

ने कारनल निकसने साहब रज़ीउन्त मेवाड- समीत डूंगरपुर में जाकर महारावत जी को राजका-अधिकार दिया- दूसरी वर्ष आगरा के दरबार में शामिल होकर श्रीमान गवरनर जनरल से भेंट की- सं० १८२४ में एजन्ट साहब के शिकायत करने पर- निज़ामुद्दीन बनूरुद्दीन कामदार निकाले गये- और रतलाम कारहनेवाला उंकार नामी महाजन कामदार हुआ- जिसकी ७ वर्ष पीछे एक सिपाही ने मार डाला- और सिपाही ने फांसी पाई- फ़जूल खन्वी और अकाल में हानि उठाने से रियासत क़रज़दार हो गई- इसलिये सं० १८४३ में सेठ भीकाजी फ़रामजी पारसी कामदार हुए- यह पहिले माही कांटा में असिस्टेन्ट पोलीटिकल एजन्ट थे- वहां से पिन्यान- पाने के पश्चात् परतापगढ़ के कामदार न्यत हुये- परन्तु सरदारी और रईअत की नाराज़ी के कारणा काम नहीं चला सकें- सन १८७८ ईस्वी में महारावत जी देव- लोप हुये- ॥

**श्री महारावत रघुनाथ सिंह जी** (चरंजीव) महारावत जी स्वर्ग वाशी के- असल से कोई औलाद न थी- ~~यह~~ नामी ~~अज्ञेय~~ <sup>अज्ञेय</sup> की पासवान ~~अज्ञेय~~ के पेट से- एक कंवर प्रथवी सिंह जी हैं- <sup>अज्ञेय</sup> अतएव **अनोद** से महाराज रघुनाथ सिंह जी को- लाकर सन १८७८ ईस्वी में गादी पर बिठाया- यह महाराज बड़े- दाना और लायक- और दूर अन्देश सरदार हैं- इन्होंने गादी पर बैठते ही फ़जूल खन्वी कम कर दी- और रियासत का क़रज़ा उतारने का बन्दोबस्त किया- रियासत की खुशनसीबी से पांडेयाजी श्री मोहनलाल विशनोलाल जी जो पहिले उदेपुर की महन्दराज सभा के सिक्रट्री थे- सं० १८८१ ई० से राज्य के प्रधान न्यत हुये हैं- यह महाशय अंगरेज़ी, फ़ारसी, संस- क्रत आदि सम्पूर्ण विद्या के पण्डित और राजसी-तर्नीति से खूब बाकिफ़ हैं- आशा है- कि इनके परीश्रम से राज्य का क़रज़ा मात्र उतर जाय- और रियासत सरसबज़- हो- सरकार अंगरेज़ी की तरफ़ से महारावत जी के नाम खरीता जाता है- उसके

सिंहाफे पर "बमुताले राजा साहब विसिथार मेहरबान दोस्तान राजा पुनाथ सिंह बहादुर सल्लमहु अल्लाहत आला" और श्रीनामे पर राजा साहब विसिथार मिहरबान दोस्तान सलामत" लिखा जाता है - ॥

- परतापगढ़ के अव्वल दर्जे के सीसोदिया सरदारों के ठिकाने यह हैं ॥  
धमोतर - भांतला - बरल्या - कल्याणपुर - रायपुर - आवेराना - अचलोदा - अरनोद - सालमपुर - कलजोर - इन ठिकानों की जागोर में कुल ग्राम ४८ हैं -  
जिन में १२२१८ आदमी बस्ते हैं - आमदनी सालाना इन ठिकानों की १००००० रुपयों की है - जिनमें से २२८५१ रुपिया रेख का भरने है - सबमें धमोतर का ठिकान बडग है - ॥

## राज्य वांसवाडन

इसके उत्तर में मेवाड और डुंगरपुर - पश्चिम में रेवाकांवा व गुजरात - दक्षिण में - जहाजपुर और रतलाम - पूर्व में परतापगढ़ का राज्य है - लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ५० मील - चौड़ाई पूर्व से पश्चिम को ३५ मील - रकबा १४५० मील सरबा आबादी १ लाख ४४ हजार आदमी ओं की - आमदनी सालाना २६०४००० रुपया - फौज सवार व पैदल ५०० गिनी जाती है - गुराज सरकारी ४२४०० रुपया - सजाजी १५ तो पै सर होती है - इस राज्य में मही नदी के बहने से पैदावार की खेती होती है - जो वांसवाडन से ८ मील पर बहती है - राजधानी वांसवाडन नगर में ६००० आदमी बस्ते हैं - राजभवन ऊंची जगह पर उत्तिम और सुन्दर बने हुए दिखाई देते हैं - जिनके निकट पक्के घाटों का ताबाब मौजूद है - खुशहाल गढ़ - कालंजरा - संगवाडन - तीन नगर इस राज्य में पसिद्ध हैं - ॥

## तवारिख

वांसवाडन के महाराज जी डुंगरपुरवालों के समान सूर्य वन्सी राजपूत अर्थात्

खांपकेसरदारहैं- आजसे३५६ वर्ष पहिले **डूंगरपुर** में शामिल थे- जिसकी बुनि  
 याद ११७५ वर्ष पहिले पड़ी है- बांसवाडन वालों का कथन है कि हमारे पुखा **जगमा  
 ल जी** ने तलवार के वल से डूंगरपुर का आधार राज स्थापित किया- डूंगरपुर वाले कह  
 ते हैं- कि हमारे बड़े **प्रथ्वीराज** जी ने प्रसन्न होकर अपने छोटे भाई **जगमाल**  
 को आधार राज वावश दिया- मेवाड वालों का कहना है कि जब यह दोनों भाई राज्य  
 के विषय में लड़ने लगे- तो हमने दोनों को आधार बांट दिया- परन्तु तारीख फ  
**रिश्ता** में **अकबर बादशाह** के बजीर अब्दुल फज़ल ने असल हाल यूँ लिखा  
 है- कि जब सं० १५८४ में डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह जी महाराना संगरामसिंह  
 जी के साथ **बाबर बादशाह** से बयाना में लड़ कर काम आये- तो उनके बड़े  
 पुत्र **प्रथ्वीराज** पाट विराजे ३ वर्ष पीछे सुलतान बहादुर शाह गुजराती- डू  
 गरपुर पर चढ़ आया- प्रथ्वीराज जी लाचार होकर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर हो  
 गये- उस समय जुगा लूट मार करता था- और पहाड़ों में छिपा रहता था- वह पकड़े  
 और मारे जाने के भय से चीतोड़ के महाराना रतन सी के पास चला आया- और  
 महाराना की सिफ़ारिश से बादशाह ने उसकी तकसीर क्षमा करके **प्रथ्वीराज** जी और  
**जगमाल** को आधार राज्य बांट दिया- और आप कई दिन बांसवाडन में शिकार  
 खेल कर चला गया- (देखो तारीख़ फ़रिश्ता मक़ाला ४) यह ग्रंथ ३०६ वर्ष पहि  
 ले अकबर के बड़े मंत्री के हाथ से लिखा गया है- जिसकी सनद मान्द अंगरेज़ भी स्वी  
 कार करते हैं- इसी ग्रंथ में लिखा है कि सं० १६३३ में जब अकबर बादशाह अजमेर  
 और मेवाड को विजय करके मालवा को जाना था- तो जगमाल के पोते **परताप सिंह**  
 ने हाज़िर होकर अता अत कबूल की- और चाकरी देकर दूसरे रईसों की बराबर कुरब पाया  
 सं० १६५० में **परताप सिंह** के पोते **उग्र सैन** ने सरकशी करके बादशाही मुल्क को  
 लूटना प्रारम्भ किया- इस रौश में मालवा के सूबेदार मिर्ज़ा **ग़ाह** रुख़ने बादशाह

के हुकूम से बांसवाड़न जयत कर लिया - महारावल परतापसिंह अपने पोते समीत-  
 भय के मारे पहाड़ने में जा छिपे - और वहीं से बादशाही राज्य में नूटमार करने लगे - उ-  
 क्त सूबेदार खबर पाकर मालवा को गया पीछे से महारावल ने बांसवाड़न में लिया - दूस-  
 रे वर्ष सूबेदार बर्डी फौज लेकर बांसवाड़न पर चढ़ाया - परन्तु महारावल ने नज़रना  
 देकर अतायना कबूल कर ली और फिर अंगरेजों का राज्य होने लो कें भी न मकहुरामी -  
 नहीं की - सं० १६८५ में महारावल के पोते **समरसी** जहांगीर बादशाह के इज्जत में दि-  
 ल्ली में हाज़िर हुए - ३००० नकद ३ हाथी १ पौन्दान १ खंजर नज़र किया - बादशा-  
 ह बहुत प्रसन्न हुए - और **शाह** जहां ने गादी पर बैठकर उन को १००० ज्ञात का म-  
 न्सब १००० सवार का अधिकार - सोवर्ण कालंगर जडनक २५ हजार का - १ लाख न-  
 कद - और ८० हजार का सरोपा वरशा - महारावल जी के पोते **अजब सिंह** ने उदै-  
 पुर की सीमा पर भगड़न किया - जिसका बैर महाराना **अमर सिंह** जी ने घेना वा-  
 हा - परन्तु बादशाही वजीर नवाब **असदुरां** ने दोनों को सम भाकर राजी नामा-  
 बरा दिया - मुगलों का पतापशोक समुद्र में डूबने के समय सं० १८५० में महाराना  
**भीम सिंह** जी ने जो **ईडर** न्याहने पधारये - महारावल जी से कई हजार नज़रा-  
 ना लेकर छोड़न - ॥

**महारावल उमैद सिंह** जी पाट बैठकर दिल्ली के मालकों का भरोसा नही दे-  
 रवा - तो मरहटों को मुल्क से निकालने के लिये - जिन्होंने मात्र देश को घूटकर बसाद  
 कर दिया था - सं० १८६८ में अपना वकील खडौ धा के अंगरेजी रज़ीदन्ट के पास -  
 भेज कर सरकार से अहद नामा करना चाहा - परन्तु वहां से जवाब मिला कि दिल्ली  
 को जाओ - पांच वर्ष पीछे सं० १८७४ में इनके वकील ने दिल्ली जा कर रज़ीदन्ट द्वारा-  
 सरकार से अहद नामा किया - इसी वर्ष में सरकार और महाराजा आर से जो अहद  
 नामा हुआ था - उसके अनुसार धार ने ३५ हजार का खराज जो डूंगमपुर बांसवाड़न

से लिखा जाता था सरकार को दे दिया - महारावल उमैद सिंह जी का देहान्त इसी वर्ष में हो गया - ॥

**महारावल भवानी सिंह जी** सं० १८७५ में पाट बिराज कर दूसरा अइहनामा सरकार से किया - सरकार ने धारवाले खराज के उपरान्त सं० १८८० में ८००० रुपया फौज खर्च भी वां सवा डंग पर लगाया - किन्तु आमदनी के कम होने से कुछ दिन पीछे माफ हो गया - इनके समय में फूजूल खर्ची और कामदारों की नालायकी से कुर्ज़ हो गया - अतएव महारावल डूंगरपुर ने वन्दो बस्त में मदद दी - सरकार ने कप्तान सैपर्स साहब सज्जन्त को वां सवा डंग भेजा - उनको एक सिपाही ने मार डाला - जिसको काले पानी का शंङ दिया गया - परन्तु रासते में से भाग गया - सं० १८८३ में महारावल देवलोप हुर - ॥

**महारावल बहादुर सिंह** गोद आकर सं० १८८४ में पाट बिराजे और कई वर्ष राज करके देवलोप हुर - ॥

**महारावल लक्ष्मन सिंह जी** (वरंजीव) सन १८८२ ई० में गादी बिराजे - ३ पुत्र महारानी साहबों और एक पासवान जी से है - महाराज कंवार हिन्दी उरदू निख पढ सकते हैं - महारावल जी पुगनी बातों को बहुत पसन्द करते हैं - १८८३ में महारावल जी ने मुसलमानों की ईदगाह (मसीत) को जो दूट गई थी राजकारुपया ल गाकर मरमत कराकर दुरुस्त करा दी - जिससे मुसल्मान राय त इनसे बहुत खुश है - इस राज में समस्त ११८१ ग्राम हैं - जिनकी सालाना आमदनी ५ लाख है - इन में से ५३३ ग्राम खालसा के हैं उनकी आमदनी २६७४०८ रुपया और - ११२ ग्राम धर्मी र्थ - नौकरी - वचान आदिकी जागीर में हैं - इनकी आमदनी २५ हजार सालाना है - और ५४३ ग्राम राजपूतों की जागीर में हैं - इनकी आमदनी ३ लाख सालाना है - इनमें १४ सरदार अन्वत और १८ दूसरे हैं



सबलदर्जावालों के नाम गौरा यहां लिखे जाते हैं- (१) मोटागांव- (२) मे  
तवाला (३) अर्थीना (४) गढी (५) सोरपुर (६) खांडू (७) गनोरा  
(८) किसानगढ़ (९) तलवाडन (१०) ओरीवाडन (११) खुशहालगढ़  
(१२) नवागांव (१३) मोर (१४) खेडगरोहनिया - इनमें चौहानों  
(२) सीसोदियों (२) राठोड़ों और (१) मेहताया (१) सकतावतों का ठिका  
ना है इन १४ ठिकानों के कुवजे में २४ ग्राम हैं और खुशहालगढ़ के  
रावत राजवन्त सिंह जी के सिवाय सब खेत भरते हैं ॥  
सरकार अंगरेजों की ओर से खरीते के लिफाफे पर "बसुताले राजा साहब वि  
सियार मेहरान दोस्तान राजाली मनसिंह बहादुर सल्लमहु अल्लाह न आला  
ग़ैसी नामे पर "राजा साहब वि सियार मेहरान दोस्तान सलामत" लिखा -  
जाता है- कागज़ सुनहरी थैली कम खाब की होती है ॥

## राज्यसिरोही

राजपूताना के पश्चिम में एक छोटी सी रियासत है- जिसके पश्चिमोत्तर में  
मारवाड़ - दक्षिण में पालनपुर - माही कांटा और कडो चा पूरब में मेवाड़ और  
मारवाड़ है- रकबा ३०३४ मील मुरवा - आवादी ८० हजार आदमी यों की - आ  
मदनी (१) स्वारूपया सालाना - फौज सवार और पैदल ५०० - इसके उपरान्त  
१ लाख कैलग भग नागीरदारों की आमदनी है - ॥ समस्त राज्य में जंगल  
और अरबली परचन फैला हुआ है - जिनमें सबसे बड़ा परचन दक्षिण और पू  
रब में आबू है - जो सतह समुन्दर से ५००० फीट ऊंचा है - इसी पहाड़ पर  
जनाब साहब सजन्त गवरनर जनरल या रज़ीडन्ट साहब बहादुर राजपूताना रहा  
करते हैं- लक्वी तालाब और देववाडन के प्राचीन जैन मन्दिरों से परचन की

सो भावत है - इस पहाड़ की आवोहवा बहुत ही उत्तम है - राज्य के इलाके में जो भिये - भील - और मीने बहुत बसते हैं - जिनका पुराना पेशा बुरमार और चोरी का है - प्राचीन समय में सिरौही के मानहतराज पूत भील और मीनों की बेटियों से विवाह करने लगे थे - उनसे जो औसाह हुई - वह एक दूसरी जाति हो कर आसिया कहलाती है - बहुधा आसियों के पास अच्छी जागीरें हैं यह लोग कभी राज्य के अधिकार में नहीं रहे - राजधानी सिरौही नगर अजमेर से २०० पहाड़ के पश्चिमी ढलाव में बस्ता है - इसमें ५००० आदमी रहते हैं यह नगर १५ सदी के आरंभ में सारनवा परबत के नाम से बसा और फिर सरनवी नाम रक्वा - जो बदल कर सिरौही बन गया - महारावजी के महल ऊंची जगह पर है - तलवार यहां की हिन्दोस्तान भर में पसिद्ध है - ॥

### तवारीख

सं० १२५० में शहाबुद्दीन गौरी ने अजमेर के राजा प्रथवीराज चौहान को मार कर दिल्ली और अजमेर आदि विजय कर लिये - तो चौहान लोग भाग भाग कर राजपूताना के पश्चिम में आये - जहां परबत और बन होने से उनको पनाह मिली - इनमें से देवराज नामी चौहान ने सं० १३४० में आबू दवा लि या - और परमारों को निकाल दिया - इसी देवराज ने सिरौही राज्य की बुनियाद जमाई - उसकी औलाद आज लों देवडा कहलाती है - देवराज के बीके उसका बेटा राव लूंभा और फिर राव सुलखा रावरनमल - तीन पीढ़ी लों आबू ही पर राज करते रहे - परन्तु राव सुभतान ने सं० १४६२ में सिरौही बसा कर वहां रहना शुरु कर दिया - संवत् १४८२ में राव सहस्रमल ने नवीन सिरौही को बसाया - जो आज भी मौजूद है - मोहता नैन सी अपनी ख्यात के अन्दर १४५२ में वर्तमान सिरौही का आवार होना लिखते हैं

सं० १५०० में राव लाखा ने आबू पहाड पर अपने नाम से एक नई तालाब बनवाया - जिसको अब **नरवी** कहते हैं - मतलब यह कि राव संहसमल से राव-मुलतान लों सौ वर्ष में **बारवा** - **जगमाल** - **अरवैराज** - **रायसिंह** - **दूदा** - **उदैसिंह** - **मानसिंह** और **ईसगारी** पर बैठे - **मानसिंह** ने अपने भाई की बेगमानी को जो हमल से भी जिसके पैद से पाटवी बन पन्न होता बड़े इत्याचार से मार डाला - परन्तु आप भी कई दिन पीछे कतल हुआ - ॥

**मुलतान** देवडा **मानसिंह** के कतल होने पर सं० १६२२ में पाट बिसजे और १२ वर्ष पीछे **ताजरावां** जालौर वाले के साथ होकर (जिनकी औलाद आज दिन पालनपुर में राज करती है) एक बार बादशाह से सरकारी की बादशाह ने **तरसूवां** और **बीकानेर** के राव **उदैसिंह** को फौज देकर भेजा उन्होने ताजरावां और राव सरतान को पकड़ कर बादशाह के हज़ूर में हाज़िर कर दिया - दूसरी बेर भी ऐसा ही हुआ - इस पर बादशाह ने मेवाड के महाराना **उदैसिंह** के बेटे - **जगमाल** को जो बादशाह की चाकरी में रहते थे - सिरौही का आधा मुल्क बांट दिया - परन्तु १६४१ में **बीजा रेकडा** ने सरतान की ओर से बादशाह की चाकरी - गुजरात में की जिससे अपना मुल्क **जगमाल** से वापिस पाया - २० वर्ष राज कर के सरतान देवलोप हुआ - ॥

**रावराजसिंह** १६६७ में राज बिराजे - इनके पीछे **अरवैराज** - फिर **उदैभान** फिर सं० १७३३ में **राववैरीसाल** - फिर सं० १८७६ में **रावमुलतान** दूसरे सं० १७५४ में **रावशत्रुसाल** - सं० १७६२ में **रावमानसिंह** - सं० १८०६ में **प्रथवीसल** सं० १७८२ में **भारजागांव** से गोद आकर **जगतसिंह** और **बिराजे** - फिर **रावहर** - **साल** - फिर **रावउदैभान** - १८६५ में **पाट बिराजे** - परन्तु रईयत को दुरव देने के कारणा सरदारों ने १० वर्ष पीछे इनको गारी से उतार कर कैद कर दिया - २० वर्ष कैद

रहकर १८०३ में मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

**राव शिवसिंह** राजसिंह के गादी से उतारे जाने पर सं० १८७४ में पाटविराजे-  
और सं० १८८० में सरकार से अहदनामा दोस्ती और मातहती का किया - १२ वर्ष  
पीछे सरकार ने रावजी को ५० हजार रुपया बिना ब्याज उधार देकर राज का कर्ज  
चुकावा - सरकार शठाकरो को जेर किया - परन्तु अहदनामा होने से पहिले-  
जितने ठाकुर पालनपुर के मातहत बन गये थे - वह बापिस रावजी के मातहत न  
हो सके - सं० १८०१ में रावजी ने आबूपर साहब रजीडन्ट बहादुर कारहना मंजूर-  
किया - इस शर्त पर कि जमीन का मूल्य मिले - और आबूपर मोर कबूतर आदि-  
न मारे जाये - आंगरेजी आदमी बिना दाम दिये सिरोही की रईयत से कोई चीज़ न  
ले सके - सं० १८१० में २ लाख का कर ज्ञा हो जाने से राव साहब ने अपनी रियासत  
का इन्तजाम सरकार के हवाले किया - और राज्य की आमदनी १ लाख से कम सा-  
बित होने पर सरकारी खराज ३० हजार से १५ हजार रह गया - सन १८५७ ई० के-  
राद में राव साहब की खैरवाही साबित होने से सरकारी खराज और भी माफ हो-  
कर ७५०० रुपया रह गया - इस मौके पर राज मोल्मद मीर **न्यामत अली** की-  
कारगुजारी प्रसंसा के योग्य है - ७ वर्ष पीछे सं० १८१७ में राजन्दी से निकलकर रा-  
ज्य का अधिकार रावजी को मिला - राव साहब ने अपने कंवर चमैद सिंहजी को राज  
का काम संहलाया - और आप इसी साल में परलोकवास हुए - ॥

**राव उमैद सिंह** १८१० में पाटविराजे - इनके छोटे भाईयो ने चोडो जागीर-  
लेने से इनकार करके बहुत दिनों तक फिसाद रहवा - परन्तु सरकार की सहायता  
के भय से अन्त को चुप हो रहे - पहिले मीर न्यामत अली और फिर कछ भुज के मुन्शी  
**महम्मद अमीन** रीवान रहे - सं० १८२२ में पिछले रीवान ने फौजदारी रीवानी-  
और महकमे माल का कन्होवस्त किया - १८३२ में राव साहब परलोकवास हुए - ॥

राव केसरी सिंह जी (नरंजीव) १८३२ में १८ वर्ष की अवस्थामें पाट विराजकर राज्य के इन्तजाम में चित्त लगाया- और मेवाड़ से मुन्शी न्यायमंत अली को उलटा बुलाकर काम सोंपा जिसने खैरखाही से काम करने के बदले में सरकार से १८३० में खान बहादुर का खिताब पाया- खरखी में जहाँ पीहले नंगल था- रेल आने और आवू का रास्ता होने से बड़ानगर बस गया और ग्रामदनी भी बढ गई है- महाराव जी ने अपने राज का बन्दोबस्त बहुत अच्छा किया- मि लाप चन्द- मौलवी अब्दुल है- करी खुद्दा खां- सिंदी पूनम चन्द आदि अहिष्कारों की होशियारी से बन्दोबस्त रहा- जोवली परमहाराव और उनके काका राज साहब ने जेज सिंह जी ने जो बड़े लायक और विधवान सरदार हैं- बहुत खुशी की जिससे प्रसन्न होकर सरकार ने सन १८८० ई. में राव साहब को महाराव साहब का खिताब बख्श आ- चौदो दिनों से महाराव साहब ने अपने काका राज साहब की जेज सिंह जी को जुही शाय अफसर नियत किया है- आशा है- कि यह लायक सरदार राज की उत्तति का कार्ग्य होंगे- इस राज्य में ८ परगनों के मातहत ३६० ग्राम हैं जिनमें से १०० खालसा और २०० जगगीरदारों और ६० ब्राह्मण आदि के कब्जे में हैं- इन तीनों के लिफाफे पर सरकार की ओर से बंमुताने- महाराव साहब बिसियार मेहरबान हैं- स्तान महाराव केसरी सिंह बहादुर सलामतु- और श्रीनाम पर महाराव साहब बिसियार मेहरबान दोस्तान सलामत- भिरवा जाता है- कागज़ रंगीन- थैली कम ख़्वाब की होती है-

## राज्य शाहपुरा

यह छोटी सी रिषासत मेवाड़ के उत्तर में और अजमेर के दक्षिण और पूरब में है- शाहपुरा वाले सीसोदिया कुल में महाराजा अमर सिंह (१) के तीसरे पुत्र-

सूजमल की औलाद है - महाराज सूजमल के बेटों - सुजान सिंह - भाऊ सिंह - और वीरमदेव में से पहिला पलाना के ठिकाने पर रहा - दूसरे को दरबार मेवाड से नारेजी की जागीर मिली - तीसरा मेवाड से नाराज होकर बादशाह के हज़ूर में पहुँचा - और अच्छी चाकरी करने के बदले में २५०० कामन्सब पाकर मृत्यु को प्राप्त हुआ - इनके बड़े भाई -

सुजान सिंहजी जो अबलो मेवाड के मातहत थे महाराना जगत सिंहजी से बिगाड करके सं० १६२६ में दिल्ली पहुँचे - और टोडा के राजा राय सिंह की मार फ़त जोरिस्ते में इनके भाई जगत थे - शाहजहाँ बादशाह से तलाम हुआ बादशाह ने उनको उक्त सम्बत में फूलिया की जागीर बख़्शी जो बहुत दिनों पहिले मेवाड से जवत होकर बादशाही खालसामें मिला ली थी - उस समय फूलिया की आमदनी १ लाख की थी - सं० १६३२ में सुजान सिंह ने शाहजहाँ के नाम पर फूलिया के परगने में शाहपुरा बसाया - और सं० १७१५ में जब शाहजहाँ के मरने पर उनके बेटों में तरत के लिये भगडन खडग हुआ - तो राजा सुजान सिंह बड़े शाहजहाँ के दाराशिकोह की और से मालवा में और मजबूत से रुक कर पाँचों बेटों समेत काम आये - ॥

राजा दौलत सिंहजी १७२१ में पाटविराजे और सं० १७४२ में मृत्यु को प्राप्त हुए - ॥

राजा भारत सिंहजी १७६७ में शाह-आमम बादशाह के हज़ूर से राजा का खिलवाब और ताड्डे तीन हज़ारी मन्सब पाकर अपने पिता की जगह पाटविराजे परन्तु इनके बेटे ने इन से राज की न लिया - अन्त उसी अवस्था में सं० १७८७ में देवलोप हुए - ॥

राजा उमर सिंहजी आपसे गादी की न कर महारानकी चाकर अच्छी तरह से

की जिसके बदले में दरबार में बाढ़-से पैरव भरने के बदले में काछोना की जागीर पाई- सं० १८२५ में दरबार में बाढ़-की फौज के साथ होकर छेजेन में भरहरो से लड़-कर काम आये- ॥

**राजारनसिंह** सं० १८२५ में दादा की जगह पाट बैठे- और ५ वर्ष राज करके परलोकवास हुस- ॥

**राजा भीमसिंहजी** सं० १८३१ में पाट बैठे- और ५ वर्ष राज करके परलोकवास हुस- ॥

**राजा अमरसिंहजी** १८५३ में गद्दी विराजे और महाराजा साहब की इच्छा अनुसार बहुत से जुटो को जोर करने के बदले में **राजा धराज** की पदवी पाई- परन्तु थोड़े दिनों पीछे महाराजाने नाराज होकर उनसे अगोचा और जहाज का परगना ज़ब्त कर लिया- और सं० १८८४ में राजा साहब देवलो पद हुस ॥

**राजा माधोसिंहजी** इनके गद्दी बैठने पर सरकार अंगरेजी ने शाहपुरा ज़ब्त कर लिया- परन्तु ३ वर्ष पीछे बाद शाही फरमान पेश करने पर उलटा दिया गया- सं० १८०३ में देवलो पद हुस- ॥

**राजा धराज जगतसिंहजी** १८०३ में पाट विराजे और सं० १८०४ में सरकार ने इनसे अहद नामा किया और १००० रुपया सालाना खराज (उन तीन हज़ार दो सौ की रकम के सिवाय जो काछोना की जागीर के बदले में महाराजा साहब की भरी जाती है) लगाया- ८ वर्ष राज करके राजा धराज परलोकवास हुस ॥

**राजा धराज लक्ष्मणसिंहजी** १८१० में पाट विराजे- सं० १८२५ में कामिनी अजमेर (सरकार) की निगरानी से निकल कर शाहपुरा की रियासत रुजन्दी हखै- ती की निगरानी में की गई- इनके अहद में रियासत बहुत करज़दार हो गई- कई बेर सरकार ने दिलापत की- परन्तु कुछ बन्दी बस्तन हुस- अन्त को खुद पोर्बिट कल

रोजन्ट शाहपुराको खानाहुस- किन्तु रास्ते में समाचार मिले कि २ ता: नवम्बर-  
सं० १८ ई० ई० को राजा धराज का देहान्त हो गया- और एक खरीता भी राजा-  
धराज स्वर्ग वाशी की ओर से जिसको कहा गया कि उन्हों ने जीतेजी मिरवाया-  
साहब के रोबरू शहाह आखस में मिरवाया कि हम राजा खुशी से बिश्व्यां गम्भीर  
सिंह के बेटे राम सिंह को गोद ले कर अपना वारिस ठहराते हैं परन्तु एक धाभाई का  
महार के सिवाय और किसी ने इस खरीते के सच्चे होने की गवाही नहीं दी- अतः सब तह  
की कात के बाद खरीता जाली साबित होकर ठाकुर साहब धनौष के पुत्र नाहर सिंह  
जी को गोद लिया गया- जो राजा उमेश सिंह के छोटे बेटे जालिम सिंह जी के बन्स में  
से है- और ७ महीने पीछे बिश्व्या के कंवर राम सिंह को गोदी छोड़-नी पड़ी-॥

**राजा धराज श्री नाहर सिंह जी** (चस्जीव) सं० १८२० में पार विराजे  
ना तजरबाकारी के कार्ण सरकार ने सालगराम जी कामदार को सत्साहकार-  
रखा- परन्तु दूह थोड़े दिन पीछे मर गया- तो भी राजा धराज नाहर सिंह जी ने घर दू-  
हिन्दी चित्त लगा कर सीखा- राज्य का काम भी चलाया- इनको सं० १८३३ में राज्य का  
पूरा अधिकार मिला- कई सारवरूपये काजो कर जया उतार दिया- पण्डित भी  
इन किशान एककशमीरी सरकार की सलाह से प्रधान नियत हुये- परन्तु  
सं० १८२० में कई जागीरदारों ने आवृत कशिकायतें की- जिस पर पण्डित जी  
ने इस्तेफा दिया- और बाबू रामजी वनलाल अजमेर गवर्नमेंट का डिज के  
मास्टर दीवान किये गये- इसी सं० में राजा धराज ने स्वामी दयानन्द सरस्वती  
जी महाराज की शिक्षा पाकर मूरती पूजन को छोड़- दिया- और आर्य्य समान को  
अपने मेरका बागीन्वा की मती १००० रुपया दान किया- सन् १८४० ई० में जागी  
रदारों की शिकायत करने पर मेजर थारन्टन साहब रुजन्ट हाउनेती के हुकम से  
बाबू रामजी वन निकाले गये- और खुशी भोलानाथ दीवान नियत हुस-



राजधिराज के दो राज कंवार हैं बड़े उमेद सिंह जी मेरु कालिज में शिक्षा-  
 पाते हैं खुद राजा धराज राज के कामों में चित्त लगाते हैं- रिपांसत अच्छी हाथ  
 त में हैं- परगने शाहपुर कारकवा ४०० मील मुरब्बा और काछोलाका ३००-  
 मील मुरब्बा है- आमहनी खालसा डेढ लाख रुपया की लगभग है- और इत  
 नीही जागीरदारों के कब्जे में हैं सरकार की और से खरीते के लिफाफे पर "रजा  
 साहब मुशफक मेहरबान राजा धराज नाहर सिंह ज्योसलामत" और यही श्रीना-  
 मे पर लिखा जाता है-

## शेखावाटी

इस मुल्क की तीन छोटी रिपास्तें- खडैला- सीकर- खेतडंग- शेखावतों  
 की हैं यद्यपि पहिले के समान यह खुद मुखतार नहीं हैं- जैपुर राज्य की मातहत हैं  
 परन्तु फिर भी इनको अपने २ राज्य में दो चार बड़े मामलों के सिवाय पूरे अधि-  
 कार हैं- दीवानी फौजदारी अपने २ राज्य की इन्हीं के अधिकार में हैं- राज्य जै-  
 पुर कानाज़िम जो फुज़ नों नगर में रहता है- उसके पास वही सुकंद मे जाते हैं- जि-  
 नकां यह ठिकाने फैसलान कर सकें- यह बाबूरेत के टीलों का मुल्क जैपुर के उत्तर  
 दिशा में है- जहां आद जैठ से लेकर आधे आसोजलों पूर्ण वर्षा होने से बा-  
 जरा- मौठ- तिल- मूंग आदि कृष्यन्त्र होते हैं- बैलों के सिवाय ऊंटों द्वारा भी  
 हल जोते जाते हैं- इस देश के उत्तर में बीकानेर और पश्चिम में मारवाड- का रे-  
 गिस्तानी मुल्क है- पानी यहां भी बीकानेर के समान झोंडा और सारी होता है-॥

## तवारीख

आंधेर के बारें राजा उदैकरन के पोते और मोकल जी के बेटे शेख  
 जी कखवाहा के नाम से यह मुल्क शेखावाटी कहलाता है- क्योंकि उसी की औ-  
 जाद इस मुल्क में अधिकतर बस्ती है- शेखावतों से पहिले इस देश में कायम स्थानियों

कारज था- जो चौहान बंस से है- और मुसल्मान होगये हैं- **मोकलजी** ने-  
 श्रीलाद के लिये एक मुसल्मान पीर **बुरहानुद्दीन** की बहुत पहल की थी जो खुग-  
 मान देश में आकर इस जंगल में रहते थे- फकीर की दुआ से बड़ा उत्तपन्न हुआ-  
 जो मोकलजी ने शेरव बुरहानुद्दीन के नाम पर उसका नाम शेरवाया शेरवजीर कहा-  
 उसको श्रीलाद आजलों **शेरवावत** कहलाते हैं- यह लोग उक्त दरवेश की-  
 शिक्षा के अनुसार मुसल्मानों के पीर पैगम्बरों की पूजा करते हैं- बच्चा उत्पन्न  
 होता है- उसको शेरव बुरहानुद्दीन की कबर के पहिले भंगला पहना देते हैं- सुर-  
 क मास नहीं खाते- और भटका भी नहीं छूते- बुरहान के मरने पर उसकी पक्की-  
 कबर बनाई है- जिस पर आजलों चढ़ावा चढ़ाते हैं- और साल भर में वहाँ मेला भरता  
 है- खंडेला- खेतड़ी- सीकर- मनोहरपुरा के जागीरदार शेरवजी के बंस में पसिद्ध हैं-  
 और समस्त कछवाहों की रवां पो में शेरवावत अधिक हैं और अपने बल के भरोसे पर-  
 लुंग सरक शरहे हैं- एक बार बादशाह के समय में राजा गिरधर-राव मनोहरदास-  
 राव ईशाल-नामी शेरवावत थे- जिन्होंने बादशाही दरबार में मन्सब और कुरब-  
 नावाया- मुसल्मानों की बादशाहत जब शोक समुद्र में डूबने लगी- तो **महम्मद**  
**शाह** बादशाह के अहह में जैपुर के महाराजा सवाई **जैसिंहजी** ने शेरवावतों-  
 का बल तोड़ कर अपना खराज गुज्जार बना लिया- हर एक जागीरदार के मरने पर  
 उसकी जागीर समस्त श्रीलाद में बराबर तक सीमहोने से कोई ठिकाना कायम  
 नहीं रहा- सीकर-खेतड़ी-खंडेला-तीन ठिकानों ने उक्त रिवाज को नहीं माना- जि-  
 से वह बने रहे- इनमें से सीकर-और खेतड़ी की सालाना आमदनी चार चार लाख  
 रुपया है- जिनमें से ३ लाख सालाना राज जैपुर में ररव का भरते हैं- इसी कारणा से-  
 शेरवावत और राजावत दूसरे जागीरदारों के समान चाकरी नहीं देते- ॥

# (दफा ५)

## सूवाअजमेर

पराचीन इतिहासीं से साबित है- कि हिन्दोस्तान में पुराना और समस्त किलो  
 से पहिला गढ़ **वींटीला** है जो तारा गढ़ के नाम से परिद्ध है- (इसको वींठल गढ़  
 भी पुराने ग्रंथों में लिखा है) **अरब बाल अरब थार** इतिहासकाले एक-  
 दिग्बता है कि इस देश में सब से पहिले जिस किले की नींव पड़ी वह तारा गढ़ है- बहुत  
 से हिन्दी ग्रंथों में ऐसा भी लिखा है कि **बाल सुगरीव** का भाई महाराजा राम  
 चन्द्र जी की सेना का सरदार था उसने अपनी पतनी के नाम से जिसका नाम तारा था  
 तारा गढ़ को बसाया- कुछ ही हो- इसके पराचीन होने में कोई सन्देह नहीं हां वींठ  
 ली गढ़ (या वींठल गढ़) जो बहुत पुराना था उसको राय पिथौरा ने तुड़वाकर नया  
 कि जालाल पत्थरों का उस की जगह बनाया था- जो आज लोहा दूरा फूरा मौजूद है-  
 वह तारा गढ़ जिस पर अब दुल मुल्क के सेनापती **महम्मद कासिम** ने सिंध  
 से उतर कर आज से १२०३ वर्ष पहिले सन ८५ हिजरी में हमला करके दूल्हा राय  
 और उसके पुत्र **लुत्त** को शिकस्त दी थी वह तारा गढ़ नहीं है- यह किला २०० फीट  
 ऊंची टीकरी पर नगर के दक्षिण में मौजूद है- अजमेर के बसाने का ठीक सम्बत  
 किसी ग्रंथ या पत्थर के कुतबे (प्रशस्ति) से नहीं मिलता परन्तु यह साबित है- कि  
**अनहल देव चौहान** के (जिसने स० २०२ में अनहल बाड़ा जिसे अब पटन गुज  
 रात कहते हैं बसाया था) मड़पोते **अजैपाल चौहान** ने सन १४५ ई० में **अज**  
**मेर** परबत में जो **अरबली** परबत की टीकरी के नीचे है- अपने नाम से **अजमेर**  
 को बसाया था- अरबली का अर्थ उमर का पहाड़- अजमेर का अर्थ बकरियों की

गिंध आनेवाला पहाड़ और संस्कृत में पर्वत को भी **मेरू** कहते हैं तो अजमेर नाम  
 का अर्थ **अजैपाल का पहाड़** (या वकारियों की गिंध आने का पहाड़) हुआ  
**टांड साहब** लिखते हैं कि इसी राजाने अपनी रानी **तारा** के नाम से तारागढ़ का  
 किला बनवाया था - पहिले **राय पिथौरा** के बाप समेस्वर देव ने **नाग पहाड़**  
 पर जो पुशकर जी और अजमेर के मध्य में है नया गढ़ बनाना चाहा - परन्तु दिन-  
 को जितना काम बन्ता रात को उसै दैत आकर द्वाजाते - इस गढ़ की भीतें आज  
 लों नाग पहाड़ पर खड़ी हैं द्वाकर राजाने पुराने बीठलगढ़ ही की जगह नया किला  
 बनाया - राजपूताना के मध्य में परसिद्धे नगर होने के कारण दिल्ली के बादशाह सदा  
 अजमेर को खालसा में रखते रहे - और सूबेदार या किलेदार की राजधानी रही -  
 अकबर बादशाह के समय में जब समस्त हिन्दोस्तान की पैमायश होकर हर-  
 मुल्क में भिन्न भिन्न सूबे नियत किये गये - तो अजमेर में भी सूबे का रखना कर्  
 रपाया और इस प्रकार से इसकी सीमा स्थापित की गई - गढ़ **आंबेर** से जैस  
 लमेर बबीकानेर लों १६० कोस लम्बा चौड़ाई अजमेर से बांसवाड़ लों ९५० कोस -  
 पूरब में आगरा - पश्चिम में देपालपुर - मुलतान उत्तर में इलाहाबाद दिल्ली - दक्षिण  
 में गुजरात - सरकारे इसकी सात थीं - अजमेर - चीतोड़ - रंतमभवर जीधपुर  
 नागौर - सिरोही - बीकानेर - इनके मुअल्लिक १२३ मुहाल - आमदनी ५५ क  
 रोड ३ लाख ६० हजार दाम (या डेढ़ करोड रुपया) सालाना मुतसददियों की बोली  
 में पैसे के पचीस्वें भाग का नाम दाम है - सरकार अंगरेजी ने भी देखा देरवी बादशा  
 हों के समान अजमेर को खालसा रखकर यहां चीफ कमिश्नर अथवा रजिडन्ट -  
 को रखवा है परन्तु अब इसकी सीमा और है इस तरह पर है **जम्मावेडग** से  
 बवायचा ग्राम लों दक्षिण से उत्तर को ९० मील लम्बाई और चौड़ाई नदी बि  
 नास जागीर सावर से सरवानो - ७६ मील - पूरब में किशनगढ़ जैपुर दक्षिण में

मेवाड - पश्चिम में जोधपुर - उत्तर में मेरवाड - रकुवा ३७.५ प्रमील मुरवा  
आदारी ४८० ई० ८ आदमीओं की - आमदनी खालसा - ३ लाख सालाना -  
जागीरदारों के कब्जे में ६५००००) को जागीर है - जिनमें से इस्तमरारी जागीर  
दार ११५५००) रुपया सरकार में रख भरते हैं - खास अजमेर में ७२ हजार -  
आदमी बस्ते हैं - ॥

**दरगाह रवाजाजी** - सन हिजरी ५६९ में रवाजा मुईनुद्दीन नामी दर  
वेशापुरा स्थान से यहां आये - रात दिन ईश्वर की भक्ती में रहते थे - अतः सब हिन्दू  
सुसन्मान उन को पीरमानने लगे - अकबर बादशाह से पहिले केवल पक्षी कब  
और उस पर क़तरा ही थी - परन्तु अकबर ने चीतोड़ विजय करके - (जिसको उस  
ने मान्ता मानी थी) रवाजाजी की दरगाह में बहु मुल्य मकान बनाये - कबर -  
पर जहानकुसुम बनाया - जिसमें हीरा - पन्ना - और भाँति भाँति के नग जड़े  
हैं - और चीतोड़ गढ़ के नक्क़ारों की जोड़ी स्वनचिराग - और फाटक - घड़ियाल  
आदि चटार्द - आंगरा से नंगे पांव अजमेर को आया - और कोस कोस पर कुंवा -  
और मीनार बनवाया - जो आजलों मौजूद हैं - हरसक मीनार पर नक़ारा लेकर आ  
दमी बैगथा - जिस वक्त अकबर दरगाह में पहुंचा - तो उस के हुकम से कोस कोस  
पर नक़ारा बजने लगा - जिससे उसकी मांको आंगरे में उसी दम खबर होगई कि  
अकबर इस वक्त दरगाह में है - कबर के गिर्द मरहटों का बनवाया हुआ चांदी का  
कठरा है - इस दरगाह की जागीर में १८ ग्राम ३७ हजार की जागीर के हैं - और  
१०००) रुपया साल है दराबाद दरिबान से आता है - दोनो वक्त ई मन जो का ह -  
लिया पका कर गरीबों को बांटा जाता है - जिसको खंगर कहते हैं - खज ब महीने की  
पहिली से सातवीनो मेला लगता है - ॥

**सुधाकरजी** अजमेर से ३ कोस पश्चिमोत्तर दिसा में हिन्दुओं का बड़ा तीरथ है -

यहां ब्रम्हांजी महाराज ने योग्य किया था और मात्र देवता एकतरफ़ से- शस्त्र में- इस को प्रथवी की दाहनी आंख निखा है- इसी कार्या से इसमें स्नान करने का इतना बड़ा महातम है- जितना समस्त तीर्थों में नहाने से होता है- पुशकर के गिरी- बड़े- २ मन्दर और घाट महाराजाओं और रईसों के बनाये हुए मौजूद हैं- जिन में ब्रम्हांजी और अरुंखिंजी के मन्दिर देखने के योग्य हैं- पन्धे यहां के दो भांति के हैं- एक बड़ी बस्ती दूसरे छोटी बस्ती वाले कहलाते हैं- महाराजा साहब जैपुर- वजोधपुर और बादशाही सनदों में छोटी बस्ती वाले असल पड़े साबित हुए हैं- पुशकरजी की जागीर बहुत पुरानी है- परन्तु पीछे जहांगीर बादशाह और फ़रिख सियर ने खास फ़रमान के जरिये से जागीरें दी हैं- कार्तिक में बहुत बड़ा मेला लगता है- जो ६ दिन लो रहता है- ॥ (कार्तिक सुदी १० से पुन्युलों)

प्राचीन वस्तुओं में से ढाई दिन का भोंफड़ा (इन्द्रकोट का जैन मन्दिर जिस को ग्राम्मुद्दीन अल्लमशा बादशाह ने मसीत बनाया है) और सी से और लोहे की- खानें- आना सागर- और बीस्ला तलाव हैं- बीस्ले के गिरी राज भवन थे- कंवल- के फूल इसमें खिले रहते थे- ११०० पुतलियां मकराने के पत्थर की थीं- एक पुतली के सिर से फ़व्वारा छोड़ने में समस्त पुतलियों के सिरों से फ़व्वारे चल पड़ते थे- यह सोभा इस की मरहटों के समय लोंथी- परन्तु अब तो छुड़- दौड़- का मैदान और जंगल है- हाथ \* **दौलत खाना** इस को अकबर बादशाह ने बनवाया था- (अब सकारी तहसील आदि कचहरियां हैं- और भेगजीन कहलाता है) **दौलत-बाग़** (जहांगीर ने आना सागर के बन्ध कर बनाया था) नारागढ़ की नाल-अजै पाल जोगी की कुटी बग़ैरा बग़ैरा देखने के योग्य हैं- ॥

### तवारीख

सं० ७४० में अजै पाल की कुटी पीटी में दूल्हा शय चौहान अजमेर का राजा

हुआ - इनके समय में खनीफा वर्लाह अबदुलमल्क की सेना कादल सिंध के रास्ते से घोड़ों की सौदागरी के भेस में बढ़ आया - और दूल्हाराप और उसके पुत्र को कत्ल करके गट बंटली बिनय कर लिया - और राजा का भाई मानिकराय सांभर को भाग गया - जिसने देवी के बताने से वहां साकम्बरी देवी का मन्दिर बनाया - इस मामले का पता प्रथीराज रासे के इस दोहे से मिलता है - दोहा  
सम्बत सात सो दूकतालिस मालत पाने वीस । सांभर आया ताने सरस मानिकराय  
स्वरीस - ॥ थोड़े दिनों पीछे राजा **हर्सरज** चौहान ने मुसलमानों से अजमेर की ली ली - नासरुद्दीन हारकर चला गया - हर्सर के पीछे राजा **वीर वीसल** देव गादी पर बैठा परन्तु महमूद गज़नवी के हाथ से कत्ल हुआ - फिर सम्बत १११५ में राजा **बिल देव** पार बैठा - राजपूताना, गुजरात, मालवा आदि के मानिकराय - ओ को साथ लेकर महमूद गज़नवी से युद्ध किया - सात दिन बों धमसान की - लड़ाई रही - आठवें दिन **बिल देव** की सेना भाग गई - **बिल देव** को यवनों ने पकड़ लिया - और कत्ल का हुक्म दिया - परन्तु मुसल्मान मत धारण करने पर उसकी जान बखशी की गई - अजमेर में वा साव वीसना इसीने बनाया था - वीस बर्ष मुसल्मानों का राज रहा - फिर चौहानों ने **सालार गाजी** से की कर **सारंग देव** को गादी पर बिठाया उस के पीछे **आना देव** राजा हुआ जिसके नाम से आनाक्षामर तानाब आज भी अजमेर में है - फिर **जैपाल** उसके पीछे **अनन्द देव** हुआ - इसने पोहकर जी का बंध बंधाया - फिर सने स्वर देव हुआ - इसने अपनी शाही दिल्ली के राजा **अनंग पाल** तंवर की बेटी से की थी - उसी के मेट से सम्बत १११५ में **प्रथीराज** चौहान पारायप्रिय और हिन्दुओं का पिछला महाराजा उतपन्न हुआ - पहल सम्ब १२३३ में ५ लाख मगवार ४ लाख पैदल १५० राजा और ३०० हाथियों की फौज साथ लेकर **तलाव डी** के मैदान

में दूसरी बे शाहाबुद्दीन गौरी से लड़ा - पान्तुहार कर पकड़ न गया - और मुसल-  
 मानों को कैद में मारा - उसका भाई खांडेराय ८१ हजार आदमी और समीत मारा -  
 गया - हिन्दू मुसलमानों में यह पिछला महा युद्ध था - फिर ऐसा नहीं हुआ - शाहा-  
 बुद्दीन ने सन ११८३ में अजमेर को विजय कर के लूटा - और इन्द्र कोट में राजा  
 इन्द्रसेन ब्रधका जो मन्दिर था - उसको तोड़ फोड़ कर बरबाद कर दिया और  
 बंगाला - बिहार - दिल्ली - कनौज आदि को विजय कर के अपनी ओर से अपने  
 गुलाम कुतबुद्दीन को राज सौंप कर आप ईरान को चला गया - कुतबुद्दीन ने  
 चकने सं० १२५२ में मीरांसै ..... इहसेन बंगसवार को अजमेर का किलेदार  
 नियत किया - जिसको सं० १२५८ में राजपूतों ने रात को किले पर चढ़ कर बंधा के  
 या - इसकी दरगाह किला तारागढ़ पर है - और ३ गांव जागीर के हैं - जिनकी आ-  
 मतनी से दरगाह का खर्च चलता है - दूसरी बरब अजमेर राजपूतों से उलटा की -  
 नानज - और कुतबुद्दीन की जगह शामसुद्दीन अलतमश सम्बत १२७६  
 में हिन्दोस्तान का बादशाह हुआ - उसकी ओर से अहमद नामक सूबेदार -  
 अजमेर का था - और सं० १३६७ में अलाउद्दीन खिलजी ने राजपाकर -  
 शाहीन बेग को अजमेर का किलेदार नियत किया - सम्बत १३८८ में म-  
 हमदशाह तुगलक के राज में सूबेदारों ने सरकश होकर मालवा के सूबेदा-  
 र अजमेर - और गुजरात वाले ने नागौर दवा लिया - सं० १४१५ में मेवाड़ के महा-  
 राना कुंभाने महमूद खिलजी से अजमेर ले लिया - पान्तु थोड़े दिनों पीछे -  
 महमूद ने राना से लड़ कर उलटा कीन लिया - और पहिले खान्यामत उल्ला और  
 फिर सं० १५३८ में मल्लूरां को अजमेर का सूबेदार नियत किया - इस मल्लूरां-  
 के बनावट दुपे तलाव छोटा मल्लूर - और बडामल्लूर आज लो मौजूद हैं जिनके -  
 पीछे धाले और बनावट को देख कर अकिल दंगरह जाती है - सम्बत १५८८ में



सुलतान बहादुरशाह गुजराती ने समस्त मेवाड़ औरगढ़ चीतौड़- विज  
 माहत्त महाराना से छीनकर खिजजी से अजमेर और मालवा का सब मुल्क ले लिया  
 परन्तु १५८२ में हुमायुं बादशाह ने मन्दसौर के निकट बहादुरशाह को मार भगाया -  
 और बहुरखम्बायत की ओर भाग गया हुमायुं उलटा बंगाले को गया- पोरु से महारा  
 नाने चीतौड़- और जोधपुर के राव मालदेव ने अजमेर दवा लिया- सं० १६०० में  
 शेरशाह ने बादशाह बनकर अजमेर और नागौर ले लिया- और उसके मरने पर-  
 फिर राव मालदेव ने कबजा कर लिया- परन्तु ८ वर्ष पीछे सं० १६१४ में अकबर-  
 बादशाह के बजीर सरदार महरमकुलीरवां ने राव से जैतारन समेत-  
 छीनकर अजमेर कोरवाजसा में मिला लिया- उस समय से लेकर सं० १८०८ तक  
 कि महम्मदशाह बादशाह की बदचलनी के कापी सुगलों की हकूमत का जहाज-  
 शोक समुद्र में डूब रहा अजमेर खालसा ही रहा और बादशाही सूबेदार यह  
 रहतारहा- परन्तु सं० १८०८ में जोधपुर के महाराजा बरवत सिंह जी ने सूबेदा  
 री का दावा करके अजमेर को मारवाड़ में मिला लिया- और सं० १८१२ में-  
 भोक्की से धियाने मारवाड़ से ले लिया- सं० १८४४ में जैपुर और जोधपुर  
 ने मिलकर टोंक के निकट माधौराव से धिया को मार भगाया- और हुता  
 रा मारवाड़ का कबजा अजमेर पर होगया- परन्तु सं० १८४७ में से धियाने सम  
 सत्त राजपूताना को काबू करके अजमेर को भी मारवाड़ से लिया- और २० वर्ष  
 गज करके सं० १८७५ में अहदनामा के अनुसार सरकार अंगरेजी के हवाले  
 कर दिया- जो शाह आलम बादशाह के कायम मुकाम बनकर आई थी-  
 जून सन १८९८ ई० में सरकारी फौज ने अजमेर पर कबजा किया और-  
 से धिया का सूबेदार बापुराव साचार होकर अजमेर छोड़ गया- तब  
 प्रथम यह है कि १७४५ वर्ष में पठान- जोदी- तगलक- चौहान- मांडोगद

के सुतल्मान बादशाह - मारवाड़ - केराठोड़ - मुगल बंस के बादशाह - लेधिया  
और अंगरेज सात भिन्न भिन्न के बंसों ने अजमेर में राज्य किया - और अब सातवें

वंस में अंगरेजी सरकार का राज्य है - ईश्वर हमेशा कायम रखे - ॥  
अंगरेजी राज्य में आज जो जितने हाकिम हुस है - उनके नाम यह है -

करनल निकसन साहब - वेलडर साहब - मोडलेटिन साहब - कमेन्डस  
साहब - लाकट साहब - मेजर अलगजेण्डर सिपर साहब - सडमेन्टन साहब

साहब - लाकट साहब - मेजर अलगजेण्डर सिपर साहब - लारंस साहब - लायड  
रेवलेन साहब - मैगनाटम साहब - डिकसन साहब - पलोडन साहब - रेवर

साहब - बरुक साहब - रेपटन साहब - सांडरस साहब - पलोडन साहब - रेवर  
साहब - मारण्डेल साहब (जो अब मौजूद है) इन में से पहिले डिकसन साहब

ने फिर मैगनाटन साहब - और फिर सांडरस साहब ने अजमेर के लिले को बहुत  
छुड़ छुड़ाली - तालाब - बाकियां बनवाई - गांव बसाये - जागीरदारों का -

कर्ज उतारा - डिकसन साहब जिन्हीं ने बयांवर या नयानगर बसाया - और  
मैगनाटन साहब हिन्दोस्तानी पोशाक पहिनते थे - और देशी भोजन खाते थे -

धोती पहिनकर रहते थे - और हिन्दोस्तानी हुक्म पीते थे - देशी भाषा बोलते -  
और गरीब किसानों के घरो में चतरावे छे - जिससे आज जो इस देश के लोग उन

को प्रीती से याद करते हैं - और करनल डिकसन साहब की कबर पर जो व्यावर  
ज है - फूल चढ़ाते हैं - ॥

### अजमेर के जागीरदारों का हाल

अकबर बादशाह से पहिले की कोई जागीर अजमेर में नहीं है - अकबर के -  
अहमद से जो राजाओं के भाई वं हकिसों कारी से रिवास्तो कोछ - २ कर बादशाही -  
चाकरी में जाये - उनको अजमेर जिला के खालसा में से जागीरें दी जाती थी -  
मिनाच - खरवा - ससऊदा - गोबिन्दगढ़ बगैरा केराठोड़ों को अकबर बादशाह

ने जागीरें खखशीं - जहांगीर ने किशन सिंह राठोड़ को जागीर दी जो आज हि  
न किशन गढ़ है - **शाहजहाँ** ने महाराना अमर सिंह के बेटे **सुजान सिंह**  
सोसो दिया को खालसा का परगना फूलिया जागीर में इनायत किया - जिसका  
जब शाहपुरा हो गया - इसी बाद शाह ने गो कल दास सोसो दिया को तीन हजार  
शे मंसूद और जागीर दी थी जिसको औलाद अब **सावर** की जागीरदार है -  
**अलमगीर** ने सुजान सिंह और जुझार सिंह राठोड़ को जागीर दी थी -  
जिनकी औलाद अब जूनिया की जागीरदार है - अजमेर में दो प्रकार के जा  
गीरदार हैं - पहिले इस्तमरदार और दूसरे माफीदार कहलाते हैं - माफी  
दारों के कब्जे में एक लाख रुपया सालाना की जागीर - और इस्तमरदारों के  
कब्जे में ५ लाख ६ हजार की जागीर है - इसमें से इस्तमरदार १ लाख १४  
हजार २५४ रुपया ८ आना ११ पाई सालाना सरकार में रख भरते हैं - माफी  
दारों से कुछ नहीं लिया जाता - बडे २ ताजीमी इस्तमरदार (जागीरदारों)  
के नाम यह हैं ॥ **भिनाय - सावर - मसकदा - जूनिया - महरौन - पोस्तागिन**  
**के बालिया - खरवा - गोविन्दगढ़ - रागसोरी - बांधन्याडन - राजगढ़ -**  
**तगैरा** - जिनमें ताजीमी तो वही दस हैं - जिनके नामों पर हमने लकीर खींची  
दी है - इनके सिवाय सान छोटे दजे के इस्तमरदार हैं - जिनकी आमदनी का  
डेल के सिवाय दो हजार से अधिक नहीं है - \*

## राजपूतानेकी मजमूई कैफियत

**राजपूताना** (याराजस्थान) हिन्दोस्तान के पश्चिम भाग के बीच में है  
इसके उत्तर में पंजाब - पश्चिम में सिंधव गुजरात - दक्षिण में माही कांटा -  
और मात्वा - पूरव में गवालियार - और सरकारी राज है - चौडाई गढ़ भरने

\* माफीदार साजाजी की दर्गाद व मीराजी की दर्गाह आदि है वो हरेखन्दी भरने - मः मुयद भली

राज्यवीकानेर से बांसवाड़ जों ४६० मील - लम्बाई धौलपुर से जैसलमेर की  
 पश्चिमी सीमालों ५३० मील तक १३०००० मील सुरब्बा - और सन १८८९ ईस्वी  
 की मरदुम शुमारी (मनुष्यगणित) के अनुसार १२३०० १५० आदमीओं की -  
 आवाही है - जिनमें राजपूत ४८०००० महाजन ८०६००० दूसरी कोमे ६३०००  
 चमार ५६०००० मीना ४२८००० गूजर ४०३००० जाट ४२६००० अहीर -  
 १३९००० इनमें जैन मत वाले ३८४०००० मुसलमान ८६०००० ईसाई १३००००  
 आमदनी समस्त राजपूताना की ३ करोड़ २२ लाख ५५३ रुपया १९ आना ८ पैसे  
 सालाना है - ॥ (इस पेशे कारी जिले अजमेर की आमतानी भी है)

**पहाड़** - राजस्थान में अरबली नामी परबत पूरब और दक्षिण दिशा से  
 शुरू होकर फैलता हुआ पश्चिम की चला गया है - इसकी सबसे ऊंची चोटी  
 आवू है - जो सिरोही राज्य के इलाके में है - यह चोटी सतह समुन्दर से ५५००  
 फीट ऊंची है - इस देश की समस्त पहाड़ियां इसी परबत से निकली हैं - यह पहाड़  
 कहीं तर सब जगह और कहीं सूखा है - और इसकी बहुधा टीकरियों में - लोहा सीसा  
 गंधक - कोयला और बहु मूल्य पत्थर हैं - जिनमें मकराना का संगमरमर - सरवाड़  
 और मेवाड़ का तांबड़ा - और डूंगरपुर का संगमूसा (काला पत्थर) बहुत ही की  
 मती हैं ॥  
**नदियां** - इस देश में बहुत हैं - उनमें सबसे बड़ी - लोनी - विनास - और -  
 चम्बल हैं - इनमें से चम्बल १२ महीने बहती रहती है - चम्बल विंध्याचल  
 परबत से और विनास - अरबली परबत इलाके मेवाड़ से निकल कर -  
 इलावा के निकट जमनाजी मेजा मिली है ॥  
**किले** भी बहुत हैं - जिनमें से तारागढ़ (यह अब फूटा हुआ पड़ा है) बीतौडगढ़ -  
 मंडलगढ़ - रतनगढ़ - आंबेर - भटनेर आदि पुराने और पसिद्ध हैं ॥

नूमक, कीरगनें बहून हैं - परन्तु डीडवाना - पंचभद्रा - फलोरी - सांभर यह चार खाने मारवाड़ राज्य में पसिद्ध हैं जिनमें से सांभर की भील २२ मील लम्बी और ६ मीच चौड़ी है - इसका लोच बहुत ही उत्तम होता है - पहिले बाहशाही खालसा में थी - मुगलों की बादशाहत जाने पर मारवाड़ ने उसपर कब्जा कर लिया - परन्तु थोड़े दिनों पीछे नवाब अलीरखा ने देखकर के अपना थाना बिगया - जब भीखा बल गये - तो मारवाड़ और जैपुर दोनों ने मिलकर सन् १८७६ में एक लाख २५ हजार रुपया पर सरकार को सांभर का ठेका दे दिया - औरना बाका ३ लाख सालाना पर ठेका दिया गया - और १८ मई सन १८७८ ई. को दरबार मारवाड़ ने - डीडवाना - पंचभद्रा - फलोरी और जोनीका भी ५ लाख ३५ हजार ५८५ रुपया सवा पाच थाना सालाना पर सरकार अंगरेजी को ३९ वर्ष के लिये ठेका दे दिया - ॥

### राजपूताना के चार भाग

सरकार अंगरेजी की सम्बलदारी में बन्दोबस्त की आसानी के लिये - राजस्थान के चार हिस्से किये गये - और हर एक हिस्से का निगरानि स में कई रजवाड़े होते हैं एक रजिडन्ट नियत किया गया जिसका ब्रतान्त इसतरह पर है -

जनूबी राजपूताना रजिडन्ट साहब उदैपुर में रहते हैं - और दुगपुर परतापगढ़ - बासवाड़ा आदि रियास्ते इस रजिडन्सी की निगरानी में हैं ॥ \*

मगरीबी राजपूताना रजिडन्ट साहब जोधपुर में रहते हैं और सिरोही जैसलमेर की रियास्ते व मलानी उनकी निगरानी में हैं ॥

मगरीबी राजपूताना रजिडन्ट साहब जैपुर में रहते हैं - किशनगढ़

\* कोटडु - छावनी खेरवाड़ दोनो स्थानों में अक्सिसटन्ट रजिडन्ट मेवाड़ रहते हैं जो भोगियो और पहाड़ी भीलों की नगरानी भी रखते हैं - मुग मुगह अली - ॥

१ उसपर कब्जा कर लिया और आज भी दोनों ही का कब्जा है परन्तु दरबार मारवाड़ ने १०

और शेरवावाटी इनकी निगरानी में है-॥

**राजन्सी हाउसी** - राजन्स साहब देवली में रहते हैं - टोंक-कोटा -  
दूदी - भालावाड़ - ग्राहपुरा आदि इनकी निगरानी में हैं ॥

इनके सिवाय **करोली** - **भरतपुर** - **अजमेर** - **बीकानेर** -  
**कोटा** - **भालावाड़** - में खासतौर पर पोलिटिकल राजन्स रहते हैं -

यह चारो रज़ीडन्सी और राजन्सी साहब रज़ीडन्स राजपूताना के मातहत हैं  
जो ग्वाबू पर रहते हैं और ज़िला अजमेर की चीफ कमिश्नरी का  
अधिकार भी रखते हैं - और जनूबी रज़ीडन्टी के दो अंगरेज़ असिस्टन्ट  
कोटा और खैरवाड़ा में भी रहते हैं - जो सरकारी सैन्य के अफ़ीसर हैं  
और बासवाड़ा वगैरा रियास्तों की निगरानी रखते हैं - जो जो रियास्ते -  
जिन २ रज़ीडन्टों की निगरानी में हैं वह अपने २ वकील रज़ीडन्टी में रख  
ते हैं - और यह सब मिलकर पंच वकला कहलाते हैं - और अपनी रिया-  
स्तों के मुसतरका मुकदमों में फैसल करते हैं - ॥

### राजपूताना में सरकारी फौज

इन्चज़ाम और वक्त पर काम लेने के लिये राजपूताना की हर मैनिमन  
लिखे हुए पांच स्थानों में सरकारी फौज रहती है - नसीराबाद - देवली -  
मेरनपुरा - खैरवाड़ा - अजमेर - इनमें से नसीराबाद और अजमेर की  
फौज क़बायद जान्ती है - बाकी बेक़ाबूद है - नसीराबाद में एक तोपरवा  
ना - गोरो की एक पूरी रिजिमेन्ट - और पूरा ६०० सवारों का रिंसाला रहता है  
समस्त सरकारी सैन्य की तहसील जो उक्त स्थानों में रहती है ६०५० आद  
मी है - इनमें से ६६२ गोरा और बाकी देसी सैन्य हैं - नसीराबाद और  
अजमेर का खर्च सरकार देती है - बाकी फौज का खर्च रियास्तों से इस तरह

पर लिपा जाता है- देवली की फौज के लिये कोटा से २ लाख सालाना-  
 गेरनपुर के लिये जोधपुर से एक लाख १५ हजार - खैरवाड़ के  
 लिये उदयपुर से ५० हजार सालाना लिपा जाता है- (खैरवाड़ की कुल फौज १५०००  
 गिनी जाती है)

### सरकारी खराज

राजस्थान के समस्त राजवाड़ों और जिला अजमेर के जागीरदारों से मि  
 लाकर कुल २१ लाख रुपया सालाना खराज सरकार को वसूल होता है-॥\*

### शाहिन्शाहीनौकरी देने वाली सेना

स० १८७० मे किश्वर्य दुयेज पंज देह नामी स्थान जो काबुल की पश्चिमी सी  
 मा पर है- रूसी बद्र आये थे- तो हिन्दोस्थान में कोलाहल मच गया था- उस  
 समय पहिले पहिल हैदराबाद दक्षिण की रियासत ने सरकार की सहायता में  
 ६० लाख रुपया दिया और कहा कि यह रुपया हिन्दोस्थान की हिफाजत  
 में खर्च किया जाय- सरकार ने दरबार दक्षिण का शुकरिया (धन्यवाद)  
 अदा किया- परन्तु रुपया लौटा दिया- क्यों कि इतनी रकम सनतन की-  
 शान के लिये लाफ है- कि खराज गुज्जर दोस्त रईसों से यों रुपया वसूल करे-  
 परन्तु इस बात को सरकार ने मंजूर किया कि जो रियासत सरकार की सहा  
 यता के लिये अपनी और से फौज देगी (जैसा कि मुसलमान बादशाहों के  
 दरबार में समस्त देसी रियासतें चाकरी करती थी और अपनी २ फौजे लेकर  
 वक्त पर साथ होती थीं) तो सरकार मंजूर कर सक्ती है- उसी दिन से हि  
 न्दीस्थान की बहुत सी रियासतों ने सरकार के हज़ूर में फौजे देने की दर  
 खास्तों भेजनी शुरू कर दी- और सरकार ने भी उनकी दरखास्तों को  
 मंजूर कर लिया- किन्तु यह कहा कि जिस फौज को आप देना चाहते हैं उसको

५ फौज खर्च जिसका ब्योरा ग्रंथ करता ने किताब में लिखा है इस एक में शामिल नहीं है-

सरकारी फौज के समान कवायद सिखाकर लै सरखना चाहिये - ऐसा ही हुआ इन फौजों का नाम शहिन्शाही खिदमत की फौज रखवा गया \* और वरही - तनखाह - इथियार आदि सरकारी सैना के समान दिये गये - और तीन अंगरेज - सरकारी सेना के सरदार सरकार ने देसी खवाडों की उक्त फौजों पर अफसर नियत किये हैं जो साल भर में दो चार बेर इनको संभालते और कवायद लेते हैं इसके उपरान्त यह भी हुकम है - कि रियासत के निकट जो सरकारी छावनी हो वहां यह फौज सरही के मौसम में तीन महीने रहकर कवायद सीखे - हमारे सूबे में निम्न लिखी हुई रियास्तों ने फौजे दी हैं - जोधपुर १ रिसाला - बीकानेर ऊंटों का १ रिसाला (या शत्रुतरसवारों का रिसाला) जैपुर - फौज - की वार बरदारी के लिये १००० रट्ट सामान समीत - अलवर - १ पिवाड़ा - पलटन - भरतपुर १ सवारों का रिसाला - उदैपुर १ पैदल पलटन - जिस रियासत की जो फौज है उसका समस्त खर्च रियासत ही के जिम्मे है - ॥

## राजपूताना में विद्या की उन्नती

सबसे पहिले जैपुर के महाराजा राम सिंह जी स्वर्गवाशी ने जैपुर नगर में - स्कूल जारी किया था जो आज के दिन महाराज कानिज कहलाता है - अब सदर्जे की तालीम इसमें दी जाती है - सन १८७० ई. के पीछे जोधपुर - उदैपुर - बीकानेर - अलवर - भरतपुर - धौलपुर - भांसावाड - टोंक - शाहपुरा - कौली - कोरामें बड़े २ स्कूल जारी हो गये - जिनमें आज के दिन अंगरेजी फारसी - हिन्दी खूब पढ़ाई जाती है - मेवाड - मारवाड - बीकानेर - अलवर - भरतपुर में मातहत हुकूमतों के अन्दर भी पाठशाले जारी हो गये हैं - इन सब स्कूलों के विद्यार्थी आजमेर गवर्नमेन्ट कालिज की निगरानी में हर साल पीछारे नेको आते हैं और प्रति वर्ष विद्या की उन्नति राजपूताना में होती जाती है - ॥

\* अंग्रेजी में इस प्रयत्न सर विस कहते हैं - म० मुराद अली होशियार - ॥

† बड़े सरदार का नाम कारनैल मेल्स साहिब है - ॥ उक्त फौजों की देखभाल इन्हीं के सुपुर्दे है -



नवारी खजैसलमेर-

राजपूतावकसफा(३-८८)

क्रम	नाम	खिताब	नाम	त
गिनी	रियासत	रईस-॥	रईस व जाती	
१	जैपुरमेवाड	महाराजा-	फतहसिंहजी सीसोदिया	अपने रिश्तेदार राजा मालूम मौर अन्त समय सीसोदिया महाराजा फतहसिंहजी जा अब्बजमिना है-
२	जैपुर	महाराजा	माधो सिंह कछवाहा	कातमगा मिना है- ७० ई० में मशीरकैसर की प
३	जोधपुर	महाराजा	जसवन्त सिंह जी (२) राठौड़	गार्जा अब्बजमिना है-
४	सीकानेर	महाराजा	गंगा सिंह जी सीकाराठौड़	४ थपुरसे निकले हैं-॥
५	बूंदी	महाराजा	रघुवीर सिंह जी हाडग	सो दरबार सन १८७७ ई० चा-॥
६	कोटा	महाराव	उमेश सिंह जी हाडग	सु से निकले हैं
७	टोंक	नवाब	खरगढ़ मयानी सांसा हव- पगान	समिना है-॥
८	भारतपुर	महाराजा	जसवन्त सिंह जी जाट	स
९	करोली	महाराजा	भंवर पालजी यादोंवंस राजपूत	स
१०	झलवर	महाराजा	जै सिंह जी कछवाहा नरुका	स सिंह जी स्वर्गवास की सकार ॥ अभी नवाजिग है जैपुर

नम्बर गिन्ती	नाम	खिताब रईस	नाम रईस वजाती	रियासत किस सन और रजि में कायम हुई	कितने मील
११			महाराज राना ज़ाबिम सिंह जी भाला	१८३८ ई. २५००	३४०४
१२	धौलपुर		निहाल सिंह जी जाट	१० ई. १६२ ई. २४ ई.	
१३		महाराजा	लसिंह जी गठौड़	सन १६०० ई. ७२४	११२
१४	जैसलमेर			जी सन ७३१ ई. १२२५२	१०८९
१५	सिरोही	महाराव	केसरी सिंह जी देवड़ा चौहान	सन १२८४ ई. ३० २४	१४३ ई.
१६	डुंगरपुर	महारावल	उदै सिंह जी सीसोदिया	सन १३३५ ई. १००	१३३३
१७	बांसवाड़	महारावल	लक्ष्मण सिंह जी सीसोदिया	सन १५३९ ई. १४५०	१५२०
१८	पस्तापगढ़	महारावल	रघुनाथ सिंह जी सीसोदिया	१४३४ ई. १४००	१७ ई.
१९	अजमेर		मिस्टर मार्ले डेल्सहव बहादुर	१८१८ ई. २७५५	४६ ई.

नोट कमिशनरी के उपरान्त का चहरियां खास अजमेर में और २ व्यावर्मे  
 जो फौज दारी मु कह मो के फैस ले का अधिकार है और यह सब कमिशनरी के

## मयो कालिज अजमेर

राज पूताने में औसा कोई पाठशाला नहीं था जिसमें राजा महाराजों के पुत्र सिखा पाये अतएव सन १८७० ईसवी में हिन्दुस्थान के गवर्नर जनरल श्री मान लार्ड **मयोसाहिब** वहादुर स्वर्गवाशी ने (जिनको कालें पानी अर्थात् इन्दुगान के टापू में एक उमर कैदी मुसलमान ने दुपरी से मार डाला) अजमेर में दरबार किया जिसमें इस सूबे के समस्त राजा महाराजा एकत्र हुये थे इस दरबार में लाट साहिब ने कहा कि रईसों की औलाद के लिये एक कालिज होना अवश्य है इस बात को सब रईसों ने मंजूर करके सालाना चंदा देना स्वीकार किया और ईलाख से अधिक उसी दम एकत्र हो गया और लाट साहिब ही के नाम से अजमेर में मयो कालिज बनाया गया इसमें राजपूताने के रईस जिन की अवस्था २५ वर्ष से कम हो सिद्धा पाते हैं सिपाहियाला करतब भी छिखाये जाते हैं सब रईसों के एक जगह रहने से एक दूसरे में मुहब्बत हो जाती है और पिछला खं बुरजोसैकड़ों बरसों से चला आता या दूर हो जाता है यह सरकार की राजनीति है ॥

## ॥ तवा रीख के मुत अल्लिक ज्ञानने के योग्य बने (मनसब)

इस ग्रंथ में बहुत जगह माही मरातब और मनसब का शब्द लिखा गया है इस लिये हम चाहते हैं कि पाठकों को इन शब्दों के मतलब से वाकिफ करे ॥

विदित हो कि **मनसब** एक मुलकी और फौजी दाजा है **मौलतवी** उबैदुल्लाह फारुही ने तुलफे राजिस्थान में आईन अकबरी के दवाले से लिखा है कि मनसब और माही मरातब दोनों **अकबर बादशाह** के समय में हिन्दुस्थान में प्रचलित हुये हैं एक बरस पड़िले बादशाह १०० और १००० नम्बर के सरदार रखते थे परन्तु अकबर बादशाह ने गादी पर बैठ कर इस रीति को

कायदे के साथ प्रचलित किया मनसब में २ भाग किये एक जात दूसरा सवार का जात से मतलब ओहदेदार की तनख्वाह अर्थात् पंजदजारी को ५ हजार और ७ दजारी को ७ हजार रुपया महीना बादशाही खजाने से जागीर के उपरान्त तनख्वाह मिलती थी और सवार से उसकी फौज की जामइयत सम भी जाती थी-

बादशाही राज्य में फौज के अंदर सबसे जियादह इज्जत इस्कों की थी और उनसे बढकर मनसबदार गिने जाते थे जिसका मनसब अधिक होता था वही युध्य के समय सेनापती नियत किया जाता था **अकबर** के समय से **आलमगीर** के मरने लगे अख्तल दरजे के सरदारों को केवल ५ दजारी मनसब मिलता था और ७ दजारी किसी मंत्री या खास मुसाहिब को दिया जाता था १० - २० - अथवा ३० दजारी मनसब शाहजादों ही को मिल सकता था - राजपूताने के रईसों में से **मि**

**रजा राजा मानसिंह** कछवाहा को **अकबर** ने और **महाराजा जसवंतसिंह** राठौर को शाहजहां बादशाह **अकबर** के पोतेने सात २ दजारी मनसब दिया था और किसीको नही मिला - बीकानेर के **राव रायसिंह** और बूंदी के **राव रतन** ने पांच २ दजारी मनसब का कुर्ब पाया था **आलमगीर** के पीछे **किशनगढ़** वालों को **मुहम्मद शाह** बादशाह ने भी जो उनका भानजा था यह कुर्ब दिया था परन्तु बिना तनख्वाह के केवल जवानी जमा खर्च होने से लोगों की नजरों में उसका कुछ मान नही किया गया (यह भूल है सरकार अंग्रेजी का खिताब भी तो जवानी जमा खर्च है बल्कि खिताब पाने वाले को उल्टा कई हजार रुपया खर्च करना पड़ता है पर जो उसका मान न करे मूर्ख है) - ॥

### माही मरातव

**माही** फारसी में **मछली** को बोलते हैं और "चांदवाली" भी इसका

अर्थ है और मरातिव या मरातवा दरजे को कहते हैं - इसका ब्रह्मान्त पुराने इतिहासों में  
 लिखा है कि ईरान के बादशाह **नोशे रवां** के पोते **खसरो** को जयदेश नि-  
 काला दिया गया तो वह रुम में जहां के बादशाह की बेटी **शीरी** नामी उसे नि-  
 यादी थी चला गया और वहां से फौज की मदद लेकर अपने देश पर चढ़ाई की रु-  
 मी फौज की सहायता से उसने ईरान विजै कर लिया - फतह पाने के समय चन्द्रमां  
 मी (मदली) का या खसरो ने उस चन्द्रमां को अपने लिये जो तिल के अनुसार अच्छ-  
 रागून समझ कर सरदारों को जो निशान दिये उन पर चांदी सोने से चन्द्रमां और म-  
 दली की मूर्तियां बनाकर लगा दी थीं इसी चीज का नाम मादी मरातव पड़ गया - मुग-  
 ल बादशाहों ने भी जो इरानियों के पड़ोसी होने के कारण बहुत धा बातों में उन की न-  
 लउतारा करते थे हिन्दुस्थान में इस को रियाज दिया और पांच या सात हजार मन सब-  
 बालों को मादी मरातव मिलता था - ॥

### सरदार या जागीरदार

राज पताने की मात्र रियास्तों में तीन अथवा चार दरजे के जागीरदार हैं जिन को किसी  
 बदादुरी या रईस की रिश्तेदारी के कारण जागीर मिली है - पहिले दरजे की जागीरें ला-  
 ख से सबा - डेक लाख तक की हैं इनको सान भर में दस दरा या शादी गमी के मौके पर दर-  
 बार में हाजिर होना पड़ता है मेवाड में ३ महीने और जोधपुर - जैपुर में साल भर तक ज-  
 मईयत रखनी पड़ती है पहिले जमाने में यह लोग फौज के सरदार बन कर चाकरी देते  
 थे किन्तु आज दिन अमन व अमान होने से इनको सादिव लोगों की पेशवाई या राज्य  
 के कामों में सलाह देने का काम पड़ता है जैसे सरदार बहुत कम हैं मेवाड में १६ - जोध-  
 पुर में - और जैपुर में २२ - और कोटा में ३ बाकी रियास्तों में इनकी वरावर आमद-  
 नी का कोई सरदार नहीं है - दूसरे रईस की जान के सरदार होते हैं वह महाराज कहला-  
 ते हैं इनकी जागीरें २० हजार से ५० हजार तक हैं यदि कोई रईस लावलद फौत हो जाय

तो इनमें से जो नजदीक का हो उसका बेटा गोद लिया जाता है - ॥

**तीसरे** जागीरदार १० हजार से ५० हजार तक जागीरें रखते हैं यह भी राजधानी में अव्वल दरजे वाले जियादह चाकरी देते हैं और राज्य के कामों में सत्ताह भी दिया करते हैं **चौथे** दरजा के जागीरदार ५ हजार रुपये सालाने की जागीर से जियादह नहीं रखते यह परगनों में हाकिमों के पास चाकरी देते हैं - ॥

**पांचवे** दरजे के जागीरदार ब्राह्मण - चारन - मंदिरों के पुजारी - जोगी - अतीत आदि हैं इनके सिवाय उपर के चारो दरजे वाले जागीरदार रख भरणे के उपरान्त वक्त पर अपने स्वामी की चाकरी भी करते रहते हैं - ॥

## हिन्दुस्थान की मजमूद कैफियत

हिन्दुस्थान का कुल रकबा १५८०००० मील मुरब्बा है जिसमें से अंग्रेजी राज्य के कब्जे में ८५०००० मील मुरब्बा और देशी रियास्तों के कब्जे में ६७०००० मील मुरब्बा जमीन है अंग्रेजी अमलदारी में (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणाना के अनुसार) ५२८०००० घर हैं जिनमें केवल २२०००००० आदमी बसते हैं - और देशी रजवाडों के राज्य में १८०५६२१ घर हैं जिनमें ६६००००० आदमी बसते हैं अंग्रेजी और देशी रजवाडों की समस्त आबादी २६७२८७०८३ आदमियों की है हिसाब से मालूम हुआ कि अंग्रेजी राज्य में फी मील मुरब्बा ८६२०७० और देशी रजवाडों में फी मील मुरब्बा ८५११६ आदमी बस्ते हैं - पिछले (सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणाना को सन १८८१ ई० की मनुष्य गिणाना के मिला ने से ज्ञात हुआ कि अंग्रेजी राज्य में पिछले दस वर्षों के अंदर सेकडे पीछे ८३ और देशी रियास्तों में ३ आबादी की उन्नती हुई इन पिछले दस वर्षों में मरदों से स्त्रीयां अधिक उत्पन्न हुई एक अथभुत बात यह भी पाई गई कि अंग्रेजी राज्य में कन्या २२ फीसेकड़ा अधिक और देशी रजवाडों में लड़के १६ फीसेकड़ा अधिक

उत्पन्न हुये जिसका ठीक कारण मालूम नहीं हुआ कि को 'ऐसा' हुवा<sup>१</sup> सखे बार-बार गवा  
तो ब्रह्मादेश में से केड पीके २३ सिन्ध में १८ अजमेर में १६ मन्दाइन में ५३ बम्बई में  
१२ आसाम और अवध व पंजाब में ११ बंगाल में ८ की अधिकता हुई- ॥ १

**हिन्दुस्थान** के बड़े २ नगों की आबादी निम्नलिखे समान साबित हुई बम्बई -  
 - लारव २९ हजार ७६ आदमी - कलकत्ता ७ लाख ५९ हजार, १५० - आदमी नद  
 रास ५ लाख ५५ हजार ५२० आदमी - हैदराबाद दक्षिण (बादर के मुहल्लों को मि  
 लाकर) ४१५०० लखनौ २० ३० ३० बनारस (काशीजी) २९६५७० अमरा  
 सर ३२६६०० इनके उपरान्त २२ शहर ऐसे हैं जिन की आबादी १ लाख से अ  
 धिक है बड़े नगों में से पटना - अमरावतसर - मिरजापुर में कुछ तरकी न्दी हुई - तोमी  
 सन १८८९ ई० की मनुष्य गिणाना का मुकाबिला सन १८८१ ई० की मरदुम  
 गुमारी से किया गया तो मानूम हुआ कि पिछले १० वर्षों के अंदर हिन्दुस्थान की  
 आबादी में ३ करोड़ ३३ लाख ८६२०९ आदमियों की जियादती हुई इनमें से  
 २५ करोड़ ६६ लाख आदमी अनपढ़ हैं और लाख २६ हजार कृषी - ८ लाख  
 ८५ हजार अंध यक लाख ८६ हजार गूंगे बहिरें और ८६ हजार दीवाने (पाग  
 ल) ७ करोड़ ८ लाख १८ हजार आदमी बेकार हैं ॥ \*

# हिन्दुस्थानमे देशीरियास्ते

हिन्दूस्थान में समस्त रियासतें दोटी बही २०१ हैं जिनमें २५ परमुसलमान हैं।

दूसरे अनुसंधान में हमारा यह अभिप्राय है कि अंग्रेजी राज्य में चैर्या और रं रियां आज की रीति हैं और इस प्रकार के भले बुरे आदमी खुले बन्दों काला मुद कते हैं जिससे उनका बल घट जाता है यदि के अनुसार निर्वन मर्द दो तो स्त्री की मनी अधिक होने से कन्या और मर्द का बल गलित हो गो नष्ट का उत्पन्न होता है (देखो ग्रंथ कानून च) म० मुराद अली - ॥

\* सन १८८२ ई. की मृत्यु विज्ञापना पर ६५००० आदमी कुल हिन्दोस्थान में थे एक २८६० घर  
या ३०० आदमियों की गिनती की मरदम शमारी १० भिन्न जनानों में लिखी गई कुल कागजों मरदम  
शमारी में जगो गिन्ती में २ करोड़ थे और तेल में २६० टन थे कागज से कागज जोड़ कर पिछ्वाये जाये

और ८६५५ हिन्दू राजसों का बच जा है इनमें से ३ मुगल १ बल्लोच १ पदार्थ -  
६६ राजपूत ५ मरदग २ ब्राह्मण ४ जाट १ जोगी ३ शिख १ नन्या १ भूजाश्च  
हीर १ राज बंगशी १ देवर १ खत्री है - ॥

## दुनिया के बड़े नगरी की आबादी

आज दिन समस्त दुनिया में बड़े और प्रसिद्ध ११ नगरी हैं जिनमें निम्न लिखे समान  
आदमी बस्ते हैं (१) लेण्डन राजधानी इंगलिस्थान में ४१ लाख ४८ हजार  
१५३३ (२) पैरिस राजधानी फ्रांस २२ लाख ४४ हजार ५५० (३) बिरल  
न राजधानी जर्मनी १३ लाख १५ हजार ४११ (४) निउयाकी राजधानी इ  
नरी का १२ लाख २६ हजार २८६ (५) असतम्बोलन माकुसतुनतुन्या राजधा  
नी तुर्की रुस १२ लाख (६) बयाना राजधानी इसटिया ११ लाख ३ हजार  
१८५७ (७) सैन्ट पीटर्सबर्ग राजधानी रुस ८ लाख २८ हजार २८६ - ॥  
(८) कलकत्ता बर्मान राजधानी हिन्दुस्थान ७ लाख २५ हजार १८६ - ॥  
(९) फलाडलाफिया मुल्क इमरीका ८ लाख ४७ हजार १७० - ॥  
(१०) बम्बई मुल्क हिन्दुस्थान ८ लाख २१ हजार ७६ (११) मासकू राज  
नी राजधानी रुस ८ लाख ५३ हजार ४६८ - इस हिस्साब से लेण्डन नगर राज  
धानी इंगलैण्ड की आबादी सबसे अधिक पाई जाती है जिससे अंग्रेजों की उन्नती  
का पूरा सबत मिलता है - ॥

## ॥ राजपूताने में राज्य करने वाले राजपूत

### सूर्यवंसी व चन्द्रवंसी राजपूत

हिन्दुस्थान में पहिले पहिले एहवाक नामी राजा सूर्यवंसी ने राज्य की जड़ ज  
माई थी इनकी औलाद सूर्यवंसी कहलाती है - इनके पीछे बुध नामी एक मनुष्य  
ने तातार से आकर राज एहवाक की पुत्री एलानामी से विवाह किया इनकी औ  
लाद



चंद्रवंसी कहलाती है ॥ **सूर्यवंसी** राजपूतों में पाईले गढ़ला तफिरसी सो  
 दियः राठौर कछवाहे आदि हिन्दोस्थान और राजपूताने में राज्य करते आये हैं  
 फिर चंद्रवंसी बंस के राजा भाटी-यादो-अरीजा-समतीजा आदि हैं जो हि  
 न्दोस्थान के प्राचीन रईस माने जाते हैं राजपूताने के सिवाय इस बंस की बड़ी शा  
 स भाटीयों का हुकमत खुरासान-गजनी कोबुनशीस्तान और पंजाब में बहुत बनी  
 तक रही है अगनीकुल की चारखापे सो लखी चौदान-पर्यार पडहार भी  
 इस देश में हुकमत करते आये हैं जिनमें से चौदान तो मुसलमानों के आने तक  
 बड़े दरजे के रईस थे ॥ इनके उपरान्त तंवर भी पुराना बंस है जो घवनों के आ  
 ने तक हस्तनापूर (दिल्ली) का मालिक था इस के सिवाय जावरा ताक यात  
 सफ-भाला-गोड-जतीग्रह-गोदल-काटी-बाल-सरोया-दानी-होड्य  
 ह-चैरवाल-बुंदेले-बडगजर-सोनार-सगरवाल-वैसं-वाडिया-जोहेल  
 नोदल-निकोम्या राजपाली-दादुरया-वाही आदि राजपूतों की बहुत सी खां  
 पे राजपूताने में पाई जाती हैं परन्तु कोई रियासत आज दिन इन के कब्जे में नही है  
 अलबत्ता बुंदेले राजपूतों के कब्जे में यन्ना-चारखारी-ओडका दत्ता यह चार रि  
 यास्ते आज दिन बुंदेल खंड में मौजूद हैं तातपर्यं यह है कि समय के हेर फेर से  
 बहुत से राजपूतों की रियास्ते नाबूद हो कर नाम बनिशान ही जाता रहा तो भी सूर्य  
 वंसी और चंद्रवंसी व अगनीकुल के पंवार-सोलखी चौदान वगैरह इस देश के  
 प्राचीन दाकिम माने जाते हैं ॥

**राजपूताने के सिवाय हिन्दोस्थान में जितनी रियास्ते कायम हैं उनका**

**नाम**

देहराबाद-दसरा-भोपाल-भावलपुर-जुनागढ-रामपुर-जावरा-गधनपुर-पाल  
 नपुर-खंबे-खैरपुर-मालियर-कोदला-बावनी-बालासिनोर-कोडवाई-अजमे

گٹھ اتری راجپور - بانسدا - باریا - بڈوچا بڈوانی - بنارس - بڑوہدا - भावन  
 ग्र-बिजावर - कश्मीर वजन्व - चंवा - छतरपुर - चरखारी - छोटा उदयपुर - कोची  
 न - दतिया - देवास - धार - धर्मपुर - धरवल - दरंग दरह - ईडर - फरीदकोट -  
 ढिठी - गोडाल - गवालियार - इन्दौर भाबुवा - जेंद - कछ - बिलासपुर - कपूरथ  
 ला - खण्ड - खलजीपुर - कोलापुर - कोचबेहार - नेमडी लोनावाड - मैसूर -  
 मंडी - मनीपुर - मोरवी - मेहर - नाभा - नागौद - नरसिंगगढ - नवानगर -  
 पन्ना - पालीताना - पटियाला - पुरबन्दर - राजपीपला - राजकोट - रीवा - रतलाम  
 समथर - सावंतवाडी - सलाना सरमोरनाहन - सीतामौ - सोंठा - सोकेत - बेतर -  
 टावनकोर - श्रीदा - बरद्वान - वंकाणे - राजगढ - जोड - २३ - राजपूतानेकी  
 रिपास्ते १८ कुलजोड - १०१ - ॥

## इति श्री तवा रोख जैसलमेर का तीसरा भाग सम्पूर्ण शुभम् विज्ञापन

कोटा कोट धन्यवाद है श्री जगदीश्वर को जिनकी कृपा से यह ग्रंथ आज स  
 माप्त हुवा बहुत से हालात जो पीछे से मालूम हुये हैं - जैसे भावलपुर खैरपुर  
 व केलनजी वगैरह के हालात उनको हम अगामी चल कर ग्रंथ के अंत में  
 जमीनों अर्थात् किरोड पत्र के तौर पर छाप कर लगा देते हैं पाठक किताब  
 से मिला कर उनको भी पढ़ें ॥ देश हते श्री सेवक लखमीचंद ॥

الحمد لله  
 ہزار ہزار شکر ہے پریشور کا کہ آج تواریخ جیسلمیر کا تیسرا حصہ اپنی ادسکی عنایت سے تمام ہو گیا - عقب  
 سے ججلات معلوم ہوئے ہیں مثلاً تواریخ بہاولپور - خیرپور سندھ - کیلن جی کا اتھاس وغیرہ وغیرہ  
 اونکو ہم آگے چکر بطور ضمیر کے لگا دیتے ہیں ناظرین مضمون کتاب سے لاکر پڑھیں -  
 راقم خیر خواہ ملک سبک لکھی چند -

# जमीमानम्बर ( १ )

तराोट के उनडो का हाल \*

सफ़ा १६६६ पगाने तराोट के हाल में सतर शकेवाद पढ़ना चाहिये

म० लखवाट काजी के सहर में उनडो का राज है कमाल का वेरा बंदा भायां से नाराज हो नोहवर में आरहा बड़ा वेरा सांहरा की सारी नोहवर में कौम कटा के और छोटे चीसे की सारी झुडे की वस्ती को मंत्रां के करी नोहवरीया करीजे सांहरा का फद पोता लखमीर जैसलमेर से पीछा जाते को नोहवर का कामदार मिला कि पिक्काड़ी कटक आता है यह बोला अब अगाड़ी नहीं आने दंगा चुनाचे कटक से मुकाबिला हुआ बलो नौ को मार के मरा श्री दरबार ने उस के बेटे हमीद को बुला कर कुछ वस्ती रोपाव दिया - हमीद ने सांहरा के बड़े बेटे हीने के खमी से को पचड़ी बंधा वार्द - वोह पादवी है फेर तराोट में आबाद कर कोव सौपा - बाबतों से - पानी पर तकरार हुई तो खमी से का पद पोता ताहर खां बहावलपुर गया खान साहब कही तराोट लिख दे जवाब दिया मेरे लिखने से लेस को - तो दिखी भी लिख दूं जब ताहर को कैद किया - सो श्री दरबार ने तकील भेज के छुड़ गया - जब दूसरे छुडे बीसा को भी साथ लाया - तराोट पर खान साहब की फौज आई सो हार कर पीछी जाती गां ओ खेगई - सब ज में खान के सवारी के १२० ऊंट नाये सो बेच के फद कोटा बना या - जब से नवाब का खिताब दिया छुडे सांहरा में जाम ताहर - ब बीसा में जाम बाहर की तनखा रु३ रोज बदांरा में कनोती ब गांम

यह हालात किताब लिखनेवाला कतिब अपनी बेवकूफी से छोड़ गया था इस लिये अभी मे में लिखि गये हैं पाठक अन्य संमेलनकार पढ़ें मुद्दअदमूरखली -

कामर पटे दिया सो इनोफ़ है और नौकरी में रहे तो तनखा होजावे -  
 १३. आदमी तो इन्हे शांति को भी कीट में रहें और काम पड़े ज़हूर हो-  
 जितना हाजिर होवे और जैसलमेर में तो आदमी बघोड़ों को बलदा-  
 रता और दूसरी जगह कोट फ़तहगढ़ पर जोधपुर की फौज़ संगी फतेरा  
 लाने आया और यहां से भी फौज़ गई वक्त मुकाबिले के भारी भाग गये  
 उनडों ने फ़तह पार्इ सोरठा

खिसोया खिल ही होत पग ठाभ्या मामांमद पना ।

ताहर ने तगोट अवचल राखे ईस्वरी ॥ १ ॥

श्रीहरार ने ताहर से फ़रमाया कि किल्ला किशनगढ़ का क्यों होने  
 दिया आज्ञा करी बना हुआ लेदंगा फेर वहां जाकर सुरंग लगा  
 दुं पर कोट वाले चेतने से ताहर बाहर जाना बगैरे मारे गये कामयाब  
 बहुर मगर इतना ही भोसेदार समझ गये कि श्रीजी साहबों के सफ़र-  
 में तम्बू के आगाड़ी आदी रूपसी और पिछाड़ी उनडों का डेरा होता है ॥

सांहरा के बेटे डेहर का डेहर मंधुका मंधुवांगी का  
 जेपे का काहेला और बीसे के बेटे महड-कामहड-हींगो  
 ले का हींगोला कहीजे है दोनों के घर २०० तोऊनड और  
 बरुत से बलाक हार हैं ॥

## जमीमाम्बर (२)

इतहासकीमखालतजो १२ पाडन हैं

सका १६४४ परगनेरामगढके हालमें सतर ४ के चाद पदना चाहिये

मोजे दुकंदोलेके सोलखी राजे मूलराज का कुं. महेसदास खुदवा के पुवार राय सांवतसी भागा भोज की पुत्री परनीजे और तणोट में आरहे दूसके कुं. येतसी को नानी हुलरावतीने खालच कहा जिससे खालतक हीजे - खेतसी के बेटे रूपसी के ३ पुत्र १ देवराज ने श्री चंटीयालराय काथान व १ कुंवा जो चूडाले विजैराय का बनाया हुआ मिसमारथा तयार कराया दूजे विजै देवराज तीजे शिद्ध देवराजका बेटा मायेथी ने राम गढ से पश्चिम कोस ६ मायेथी नामकुंवा बनाया वजुद्धार हुआ सो फुजी जै है और देवराज के ७ बेटों में दूजे रतुनु कुवा २ रतखीया बनाया और बड़े बेटे चासूड का बेटा मारु को सरवाइ के ओढाराणा मार कर तणोट लूटी और मारु का बेटा बीसल अपने नानेरे गांव जसोल में नावालिगंथा सो जवान हुआ तब मोजे हाडे में आकर महारावल श्री बाकुजी से रुपया व फौज की मदद लेकर ओढाराणा को वफात दी और सरवाई चूट दरवाजेका किवाड ले आया - और श्री दरबार में सालीयांना रकम जिसको माल कहते हैं लिख दीया सो हनोज भरता है तथा - तणोट में कुवासक चौतीना जो मौजूद है बनाया और एक पग वाव बनाई थी पानी खारा होने से अंकवाव कह कर बूरी और मोजे राम गढ में श्री दरबार से कोट बनाया जब खालतभी यहां आरहे ॥ बीसल के पुत्र जैत का बेटा

भोजने कुवा ५ भोजरा नाम से बनाया सो बूराहुआ भोचरा कहते हैं ॥  
 और भोजके पुत्र १२ मध्ये बड़े चूड़े का चांचड गांव बारू में रहते हैं दूजे  
 भोजक ने रणास नाम हो कुवा बनाया और दूसके बेटे जैपाल का बेटा भाग  
 चंद ने अगासर नाम कुवा जो रणास से पूर्व १॥ कोस बूरोडा है बनाया-  
 और तीजे भारे का भारा कहीजे और चौथे सालरासी के बेटा अडकमल  
 के ७ बेटों में से चार का बंस चला एक सरणा का सरणा पालत मुसल मान गांव  
 सतोयवगौरे में हैं तीजे मांडरा का बेटा सेठ वसांयत का सेठ वसांयत क-  
 हीजे है और चौथे सूरजन के बेटे सजन का सजन कहीजे व तलाई १ सजन  
 की खुदाई ॥ और दूजे लूमे के ३ बेटों में दूजे राधीर का राधीर क-  
 हीजे है - और तीजे उदैराव व बेटा तीगायत दोनों को पीये ने मारकर  
 जामोतार्दली उदैराव की औलाद का गांव महेरी में भायां के बिराड से न्या  
 रा रहते हैं और बड़े बेटे अजै के १२ बेटे हुए जिसमें एक जोगे का जोगा  
 जो माल में चहारम भरते हैं चौथे कोले के बेटे राधव का राधव सुहन गढ़  
 में वदसवे गोड का गोड और बारहवे मोहे का मीहा व झयारवे पीये के ९  
 बेटे हुए जिसमें दूजे राम के हेम व नेनसी बपेरासर पर है व पांचवे सिदे-  
 का सिदा गांव कांशीध में बहूटे सतै के वस्ती का वस्तांशी गांव छांयरा  
 में है व आठवे आंदे का आंवा और बड़े बेटे धारे के तीन बेटों में से महेस के  
 दो बेटा बडाती भोजराज का पाड़ा भोजराज जो सबका जामोतखेड पर रहते हैं जामो-  
 तका नाम आजपर्यंत नीचे लिखा गया और दूजे गुजे का मुजा कहीजे है भोजराज के  
 भोपत भोपत के देवी दान २ के सुजांरा २ के जगननाथ २ के आपमल २ के भीमा २  
 के सरूपा २ के सेरा २ के मूला-मूला के बाहादरा ॥

## जमीमा तवाशिवजैसलमेर - नं. (३)

जो इस देश में नीमा पहाड़ बहुत लंबा चौड़ा व ऊँचा जिससे पानी का भरना व अच्छे २ राख तो कोरन्दी नाम का भाखर जिसको हुंगर व मगर कहते हैं तफसील जैल है अखिल शहर गेरहरा जिसपर गढ़ है सामने सुली हुंगर से उत्तर सही व गेरह - कोस बाबर गां. चाहडू व काले हुंगर तक वहां से खं चम गां. व मीसर व रूपसी फेरह गां. कुल थर व काकनय वहां से पं. सुहार फेर पू. तेमडे वहां से उ. जायग फेर पू. धनवा व सागां शा वहां से या. गां. हमीर तक चौड़ा तो २ से - कोस और लंबाई में लगता हुआ देश गहरा से चानफे ४. कोस बोगा नाम दरख ग्राम के पास जुदा २ होते हैं तथा इससे जुदा हुंगरी मोलासर नाचनरी भक्तेवां व गेरह कई हैं. तथा काले हुंगर से काकनय तक मगर सजीवन है चुनांचे कबीरेरी साल वं भीमरे गोडो ब्रह्मा कुंड रामकुंड रुचीका कुंड मुंदडी भुवांद में कहत सा ली में भी पानी बहुत रहा राहर में भी वहां से आता था जिसमें अनुमान होता है कि इस मगर व ब्हालों में खोदने से पानी नजदीक ही निकलेगा और सुना भी है कि ब्रह्माजी ने वै शाखी पर योग किया था जब मात्र रिषि देवता व नदी आये थे जल से नदी गोमती यहां गुप्त चलती है इस के गुप्त गति का साखा सिक्ंद पुण्य में है कि रुर्ब रिषि के बेटे अग्नि को मारने के लिये नदीयों को ब्रह्माजी ने आज्ञा की जब सरस्वती व गोमती बीड़ा उठाये अग्नि को थकेल समुद्र में बैठा पा सो सरस्वती के कुंडल में बैठा हुआ है गोमती अग्नि को थकेलने से तपजाती थी तब जमीन में घुस कर ठंढा होने बाद प्रगट होती थी इस से संभव है कि यहां भी गुप्त चलती है खैर क्यों ही हो पानी तो बेशक नजदीक है और प बतो का दाल खाने में लिखा है और परगना त में पहाडियों का नाम नीचे

लिखा है बांकी झाल लंबा चौड़ा ऊंचा बड़ा दिसा बगैरह का नकशा मेलि  
खा जगिगा तथा इस देश के भाखरों व भगरी में बाज २ जगह कुं भटीया  
गुंर्या गुगल बलसी डा के सिवाय कुछ भी पैदा नही होता है - ॥

प्र० जेसलमेर में सूरमाली २ कीतांका हुंगरा ३ बाभगीया ऊहरीका भाखर  
प्र० देवी कीट में १ - - - २ - - -

प्र० लखो में १ रसाधा वालो २ गुधरीयेरमाडी ३ - - -

प्र० देवामे १ भूरी हुंगर २ बालाडी हुंगरी ३ सिलाडी हुंगरी ४ पालाडु  
गरी ५ चाचीली हुंगरी ६ कालो हुंगर ७ हईखा को हुंगर ८ आसदेय को  
९ गोसीरसर १० उदीयेरो ११ जरखवालो १२ जोगसीया वालो १३ चेश  
लो १४ बहाडो १५ जगां वालो - ॥

प्र० वापमे १ चटोररीमाली २ तीषीमाडी ३ कोडीयो भाखर ४ गोदायतमा  
डीबारह ५ तोडरीमाडी ६ मनुजीरो पहाड ७ जादमरो पहाड ८ भोजालवा  
रो पहाड ९ रतेपीरो १० कोठीवाडो ११ मोटीढाढरेनवालो १२ लखुवालो  
१३ कुभारीयेरीमाडी १४ गोतरडीमाडी १५ देगडरीभा १६ कीनोतमाडी  
१७ मोतीसेरीभा १८ यंभणरीभा १९ गोव भा २० चंदरारेटेचरी २१ चांप  
नासरोवलो २२ बोवणीभा २३ चीचोभाभा २४ मेसा गटीया भा होय

इसमंडलमें स्थित संत जमाने साबिकमें बहुत थे

उनमें से टिकाना बनाया सोहाल वरहने वालों के नाम

जमीमानं (४)

अतीत मंडीयां

आमस कामठ रावल जोगीरतन नाथ वालेशहर से बाहिर सं० १३०७ म  
सुद ४ (१) गणेशी नाथने मठ बनाया भोमीया के गांवां के टाला व सेर  
में जो भिक्षा का लगमान है (२) धननाथ (३) फतेनाथ (४) धननाथ



(५) सिधनाथ (६) समनाथ (७) खेनाथ (८) रामनाथ (९) पीथानाथ  
 (१०) सांवतनाथ (११) गेमीनाथ (१२) जीवननाथ (१३) आदनाथ (१४)  
 सतीनाथ (१५) भानीनाथ (१६) याननाथ (१७) फूलनाथ (१८) लालना  
 थ (१९) गोपालनाथ (२०) लहनाथ (२१) जीवनाथ (२२) किशननाथ  
 (२३) गंगानाथ (२४) हीरानाथ (२५) बादलनाथ (२६) खेमनाथ जी  
 अब मौजूद है ॥

(बावड़ी) आस के मठ में जीवननाथ का भार (१) बड़नाथ जुड़ा हुआ (२)  
 दरयानाथ ठिकाना बनाया (३) सिधनाथ (४) सीधरनाथ ९ न्यानी को  
 रक्खी जबसे घर बांधे (५) विजेनाथ (६) रूपनाथ (७) उतरनाथ (८)  
 प्रागनाथ (९) भगवाननाथ है और चतरनाथ के भेरुनाथ का चेला चै  
 नाथ है सुनार वहरजी सेवक है ॥

(धुनीनाथ का मठ) यहा एक कोठा में आसद वेराग नाथ का पादक रहने से  
 वेराग नाथ का मठ भी कहने है गंगा पार से रमता सामी एक धुनीनाथ आ  
 या श्रीमूलराज जी साहब को कैद होकर फिर गुजरने का चमन कोर  
 बताने से सिलावटी के बांस में मठ बना दिया सो पातरीयों का गुरद्वार  
 है फिर नाथजी बीकानेर रुसता को लाने गया ऊसी वक्त भीराज का वरण  
 भाटी ले गया था सो नाथजी के बचन सो सादीया पीछी और जब राजा  
 जी ने मठ को कड़ी फेर दी थी था १ घंथा से चौसर खेलते थे उस के सता  
 की रक्षा से लंगोट खोला और लडका हुआ सो चेल्ला (२) मस्त नाथ  
 परबारी हुआ (३) देवनाथ का चेल्ला मोजनाथ तो सिन्धी पाने से रमता  
 रहा वेदा (४) लालनाथ अब है (५) रक्यानाथ ॥

(महादेव का मठ) रमता सामी (१) हावस गिर आया सो हाल अमर

सिंहजी के हाल में लिखा है (२) लालगिरम इंत दुवा (३) जगहूपगिर (४) धानगिर (५) हरनाथगिर (६) जनगिर (७) रिथगिर (८) दरीगिर (९) भावगिर (१०) पैमगिर (११) धनीगिर सं० १८-६५ से कच्चा मट था सो पक्का बनाया (१२) रतनगिर अब म्हंत है छड़ी नगारा भी है इनको कहा गया कि इस मंडल के ठिकाने में अतीत हुये वहाँ सोनाम वरीत रसम वगेर हाल पंचायती बड़ी में लिखो - भंडारनाथ के तो ठिकाने में बाकी सबके - वैसाखी का मेला में होता है - और जमाती इनसे जुड़े है सो गुरु महाराज के निशान फते है - ॥

**(कपुरीया का मठ)** रमता फकड (१) सुंदरपुरी जो सिधथे गांव में आरहे (२) बालपुरी ने जो राम कुंडा का साध को ईशतयमजी वड़ाया था एक चमार की पुकार पर ५ माई भोमियां जुन की गती मरने से जमीन में दूब पाया व गांव में सीव व वसी जुदी करी (३) दरवरपुरी ने शहर में (४) गुणेशपुरी ने गांव में पक्का मठ बनाया (५) निरमलपुरी (६) चंचलपुरी के दरीयालपुरी तो जोगी राज रमता रहै ता है (७) बालपुरी तक सिधथे (८) सागरपुरी त्रीनाग के काठीये को बचाता है तथा गुणेशपुरी के हुआ चेलाज मनपुरी का दूत्रपुरी ने गांव सुंदरे का सोढा गाये ले गया किसन सिंहजी सोढा को पनाह दी जिससे गांव सतोरे में समाधली जब से सतोरे में अतीत नही रहै सकता और कुवा का पानी भी बिसावा होगया चमारों ने थुई कीट हल करी थी उसका कुवा अच्छा है चेला गोयंदपुरी के मनदापुरी के जो रावरपुरी के चेला सो अब है - ॥

**(मोजेमया जलार में)** सेजनाथ वनोख में देववन - व वैसाखी में फतेपुरी बाप में हलुनाथ के ठिकाना का चीत्रु जेले लिखा है और गांव देवा में पीर कोठारी में तकबीर ला बोला में ओधड व शहर में अजबपुरी वाले रुखड

कहाते हैं तथा संत पुरीरत नाथदेवचंदेसपुरी कामठ नीलकंठ दुर्गपुरी चंपापुरी श्रीकर  
नाथवगैरेके ठिकाने शहर में श्रीरगांवमें बहुत अतीत रहते हैं सो कहां तक लिखे ठीक गांव  
भाटली में मोतीगिरसि चंदे - ॥

(जमीमा) नं० (५) साध

(रामकुंड) रामानंदी रमतराम (१) इशत रामजी जो संत थे यहा आकर श्रीश्रग  
रसिंदजी सादिव के गुरु हुये ठिकाना वमंठ बनाया बहुत वर्ष बाद खाली समाध बना  
नामालूम चोला कहां छोड़ा (२) तुलशीदास (३) वालकदास तक सिधन्धी (४) राम  
दास के समय में सिंधक किलोडमी याने रमदल बनवा दिया जहां इशत रामजी की गुद  
ही-टोप माला बांधवर विराजे हैं (५) बदरीदास छामदास (६) माधोदास (७) किश  
नदास (८) जीवशदास (९) लक्ष्मणदास ने विनाश की कपने वगैरे मरजाद तोड़ी व शहर  
की हवेली बेची तो भीकर जारवा खडीन भीगिरवीर कहाया (११) गोपालदास जी अवमदंत हैं  
मंडल के साधांका जो इस ठिकाने के कंठी चंथे दिल दायमें लेकर राजा भी उतार श्रीरमजा  
दसे चलते हैं शहर में बहुत मान का ठिकाना भीरामकुंड का है - (कवीरपंथी साध) इस  
दास जी ने सिंधदे दरआचार में मसजिद पास पे शाव करने में मुसलमानों का लोचन लंगोटे खोल  
कर १०० इंदीयां दिखाय कल मुसली हुये सो काटो करेगा दाधीसंथकी विनती से गांव खुदडी में  
ठिकाना बांधकर बहुत लोगों को कंठी बांधकिया और गुरु भाइ चोलकदास आकर मझाहीरहा तथा  
चैला श्रीदास के तो चैलानदीरहा और पाटवी मगनीराम के जगजीवन दास भी ग्यानी थे इनके  
चैलारतन दास के अब गरीब दास हैं और दूसरे हरिदास के जेरामदास ने जुदा ठिकाना गां०  
धोवा व पोन्नन में भीकर के लोगों को मंत्रोपदेस करते हैं इनका चैला पातां चदास अब हैं जिसके सारंग  
दास (मुनीजी का ठिकाना) रामसनेदी साधू का चैला जो पण्डित था होकर नसे आकर १२ वरस  
मुनरक्वी सोपलवालो ने छोड़ा यह इमान के चौतरा ठिकाना बनाया और लगमांजी बाध दिया यहां  
स्वयं बहुत हैं पल्लु पीछे कोइ साधू पण्डित नहीं रहा ठिकाने के चोक में पानी का टांका बनाना जरूर है  
तथा वरकत वाले मुसलमान फकीरों का जिक्र किताब में मोका २ पर लिखा गया है बाकी तकिया व पीर मु  
कामतो शहर व इलाके में बहुत जगह हैं सो कहां तक लिखा जावे - ॥

## (जमीना) नं(६) रियासत भावलपुर

इस रियासत कारकवा ३८२ ई ई मील मुरब्बा है जिसमें सन १८८१ ई० की मरहूम शुमारी (मनुष्य गिणना) के अनुसार ४,२५६,६७० आदमी बसते हैं आमदनी सालाना ५७,३४८४ रुपया है खिराज माफ है अहदना में मेहोस्ताना मदद देने का सरकार ने वादा किया है रईस कोम अब्बासिया दाउद पुत्रा कहलाते हैं सलामी की १७ तोपें सरहोती हैं भावलपुर के जनूब व मशरक में जैसलमेर और बीकानेर का रेगिस्तानी मुल्क है और शिमाल व मगरब में सरकारी इलाका है-चुंकि पैगम्बर साहिब के चचा हजरत अब्बास से कोम अब्बासी सुलतान रूम के खानदान से ८४ पुश्त बाद कुरेशी दाऊद खां मुल्क सिंध मोजे जरवी में आरहे शिकार की जगह शहर शिकारपुर बसा दाऊद पोते २० हजार से उपर हैं १ केहर के १२ बेटों के केहर रानी २ अफ के अफानी ३ प्रोज के पीर प्रजानी ४ आर्ब पाशवानीया के आर्बांशी केहर १४० मनुष्यों से खडीन भलारी जो देरावर से उत्तर ३२ कोस हैं जाबैठे बेटे नूरकागा० नूरवाला वसा हजरां अबकोट में हाकिम रहता है-देरावर रावलजी से आया २ रखने का शर्त पर बहुत सा मुल्क लैने बाद रावलजी कहा जैसलमेर ले दो तो यह सब तुम्हारा वर्ना निकल जाओ जिसपर फतेखां ने देरावर ही लेकर बाप के कदने से प्रोज के बेटे फतेखां को मार फरवा किल्ले शिकारपुर में कंधार के बादशाह का सालाना नवाब सैफुल्लाखां दुरानी जो इनकी वरि सहित सोयाथा मास्कर कैद से निकाल लाया था गादी बैठाया मालिक मुल्क करके आप सलामी हुये फिर गळ व शहर बनाये सो लिखे हैं और छोटे २ गांव तो सदहा बसाये इनकी बहादुरी व वल्ली पने के लातकहां तक लिखे जावे गादी धर नवाब याने सांसाहिब के नाम लिखे गये हैं १ फतेखां २ सादिक मुहम्मद ३ भावलखां ने देरावर से उ० इ० ३२ कोस

जनो दरया के गहर भावल पुरबसाया राजधानी करी परन्तु गद्दी बैठने का हस्त  
 रदेरायर मे दी होता है ७ मुबारक खां ५ द्वावल खां मुल्कगीर ने मुल्क व  
 थाया हिसादक मुहम्मद ७ द्वावल खां सालिस बिलखैर बडे ही आकल  
 थे दरअदेशी से सरफार दीलतमदार अंग्रेजी की मदद हाजरी याने मुलतान व  
 गादफील डाइयों में ७ सो हावद पोते मोरगये सरकार आली ने मुल्क दरिया पा  
 को जो सिरख रनजीत सिंह ने ले लिया था दिया सो पीछा देकर रियासत व अख  
 तियार रह ने याने सरकार हस्त अंदाजी न करने व मद देने वगेरह कलमालिख  
 वाली ६ फतेर खां फिर ५ म्बी ने पासवानी यादानी खां ने भी एज्य किया था-  
 २ द्वावल खां १० सादक मुहम्मद ७ वर्ष के सं० १६२२ मे एज्य बैवेज  
 व दरखास्त पर सरकार से मीचन सादिव मुखतार होकर आबादी वतशी वगे  
 रह से आमदनी बहुत वधाइ फिइनको अखतियार मिला बाद पुस्तों का खजाना  
 निकाल कर मोजां करते है खुदा खैर करे -॥

### नकशह गठ व शहरों का जो इलाके जात में नामी है

केहर के मारुफ के खदी बेटे नंकार बंधो के					नंकार	भामरिका ना	इस कि	किसने बनाया	अब किस के पास है
नंकार	नामरिका ना	इस कि	किसने बनाया	अब किस के पास है	५	हासल ग ठ	५० ५० ५० ५०	हासल खां	हासल खां
१	खैरपुर	२५ ५०	खैर मुहम्मद	दुर मुहम्मद	६	मुबारक गठ	६० ५०	मुबारक खां	खा०
२	मीरगठ	५५ ५०	मीर खां	खालसे	७	शहपुरा	२५ ५०	शह मुह म्मद	खा०
३	मौजगठ	२५ ५०	मोजदीन	खा०	८	गढी अख तियार खां	६६ ५०	अखति यार खां	अलावर खा
४	दुरपुर	१६ ५०	दुर मुहम्मद	खा०	९	अलावाह	५० ५०	अलावाह	नजर मुहम्म द

११

१०	कायमपुर	१५	कायमखां	खा०	५	रूकसापुर	७२	से
११	सबजल्हा	१००	सबजल	खा०	६	धानगढ	५०	से
	कोट	५	खां		७	खैरपुरतोहरी	३२	खैरमुहम्मद
१२	खानगढ	१०	खानमुह	खा०	अगले बने हुये			
१३	लतीफगढ	५	मद		१	वी भगोटे	६०	
१४	गोरदागा	५	लतीफखां	खा०	२	भरोट	२५	
१५	शहरफरीद	५	नवलअली		३	न्हवर	७५	
१६	रुद्रहा कोट	१५	फरीदखां	स्माइलखां	४	जजा	४६	
१७	रखनदीगोठ	१५	देदुखां	अलीदाह	किल्ला देह नूर उफे उच . मंदो पीर			
१८	त्रेहाडा	१५	रखनखां	खा०	गिल्यानी व बुषारी है . ॥			
१९	अहमदपुर	२५	त्रेहाडेखां	खा०	केहरसे ५ पुस्त हाला के हाला जीयोनै			
२०	शेकादरेहा	२०	अहमदखां	खा०	१	नवसार	२०	नवलअली
२१	स्माबैदाकोट	५	कादरेखां	खा०	२	हीनगढ	७२	बुटे बहादुर
२२	ताजगढ	५	स्माधेखां	खा०	३	ताजगढ	७०	नाजमुह
प्रजाणीगही धरोनै . ॥				खा०	४	वदली	४६	राज्यजैसल
१	फतैगढ	१००	फतैखा नं० १		५	संजरपुर	५	मेर
२	सुवारकपुर	५०	सुवारकखां नं० ४		६	मुहम्मदपुर	५	खुदा बखश
३	खानपुर	५०	व्हावलखां नं० ५		७	जाफरपुर	५	संजरखां
४	देरः व्हावल	२२	व्हावलखां नं०		८	कबूलवाला	२०	मुहम्मदखां
	खां	५				शहर	५	जाफरखां
								कबूलखां
								लालमुहम्मद
								दकाबंदा

(जमीना) नं० ७ दुकान

राजकी दुकान जो मुख्य कोटार सं ५ से हुवा श्रीगिरधारीजी के मंदिर वरसोडा

व घोड़न हाथियों का शनब संजं मसाला व पेठियों सरोपाव वगैरह जिन्स का-  
खर्च व दूसरे मन्दरों सरदारों व धर्मादे वगैरः के रुज़गार का हिसाब साहू-  
कारि रीत ज्यों तो रक्वाही था सं० ४१ से हर एक हिसाब समझने की सु-  
गम तरकीब की गई है- और कामदार के ई पलटे मगर वधत व उड़-नी का  
हिसाब किसीने नहीं दिया साल भर में २४ से ३० हजार का खर्च है- क-  
इत साली बबी का सरदारों के रहने से ४० के ऊपर रहा - ॥

### जमीमा नं० ८ कोठार अन्न पूर्णा

जो राजका अव्वल खर्च का कदी म म्यान है- खास तवेला व बारगीर वगैरह  
घोंडों का दाना बतेल का खर्च व ज़ताना सरदार व राजबीयों व हज़ूरियों का रुज़-  
गार देनगी चकई धाकरो व धर्मादे का पेठिया व सिपाहियों व कारिगर हर को म-  
का बत बायफ वगैर लोगों को बलांकि हिसाब का दस्तूर बहुत है- सो मुफस्सिल-  
लिखने में जुड़ी किताब चाहिये- ज्यों बहुत लोगों को नगदी तनखाह होगई व जिस  
को नही हुई है- सो भी होने की सलाह है- जिस से पुराना दस्तूर लिखना जरूर भी-  
नही रहा- तथा उड़-नी नहीं निकलने के कारी विजैसिंह पूनमचन्द वगैर- कामदार व-  
दरोगा याने ४। ५ आदमी शामिल होकर कोठार खोलते हैं यहां कोई आंकर पल्ला वि-  
कावे सो निरास नही जाता- और तहसील काम हकमा भी इसके शामिल है- सं० ४१ से हर  
पय बाडे- हिसाब समझने की ठीक तज़वीज़ खखी गई है- इस काम पर बहुत वर्षों से-  
कामदार सुखतार व्यास पोलजी व दरोगा हज़ूरी साबजी है- और जिन्स खरीद फरे-  
ख पर मो काती बल देव रास जिस के ताल के तलाव व साठियों वगैर का काम भी है- ॥

### जमीमा नं० ८ तजवीज़

चौपाया देवा की घोड़ियों व ऊंठ सांडों का बरग व गांयो भैंसियों की चारों जो-  
लारवों रुपये का माल है- इसका जुदा म हकमा होकर वाजिब तजवीज़ से काखवाई

का कायदा लिखे मूजब होने कीजवकि भी श्रीजी साहब मंजूर फरमावेंगे तो बहुत मा  
लव धने वराज का ठाठ रूपक दीखने व बहुत से मुलाजिम परवर्षी पाने व कई काम आ  
सानी से होकर आराम रहने के अलावा बधंती खर्च निकलकर २० पचीस हजार रुपये  
साल का फायदा होहीगा -

राजकाम से अलाहदा फन की आमदनी में खास शहर व जो धपुर बा लोतरा के रास्ते  
ई० हाजा में वंगला व पोह धर्म साला व दूसरे रास्तों सिंध वगैरे के मेकुवा वगैरा जो  
मुनासिब हो - बनाया जावेगा - और हर उपाव से लोगों के कराने उप्रंत राज में रु  
१० हजार साल का देस में जाव जा कुवा बनाने वगैरे आराम व फायदे के काम में लगा  
ने की तजवीज है - सो जमाना अच्छा आने से होगी - ॥

## जमीमा नं० १० महकागिराई

इस काम पर सं० २९ से कभी २ महता फूलचंद जी व अखैराज जी वगैरे ह दौरा  
के तोर पर जाते थे - सो दीवानी फौजदारी का काम करने से प्र० के हाकमों के हुकम से  
जोफ आने के बावस आपस की तंकरा वगैरा क भावते रहेती थी सं० ४९ से यह तज  
वीज ठहराई कि इलाके जात में ४ ग्राई की जावे जिस का रिपोर्ट तो महकमे सदर में  
अदालत में होवे - और मुकदमात दीवानी फौजदारी का हर प्र० के हाकम को शामिल  
रख कर किया करें व पैदा हो सो भी प्र० का हाकिम लेवे - और इन का खर्च कागदार की  
तनखा हम धे भत्ता व जो सवार वगैरे का सुकरा किया जावेगा हर महीने बीरा आने  
पर दजाने खास बाहकूनत वगैरे से दिलाया जावेगा तुन च कोट लाठी से उचार देस  
में महता अखैराज जी को रख कर - लाठी सू दक्षिण प्र० लखात क जहां अकसर चौर  
यां का गुमान रहता है - गिराई का जुदा महकमा किया - और महाजलार पांभा संन  
साहागड घोड्डु का इलाका मूलचन्द जी के तालुक रखा - तथा कोट खास से मोहन  
गद तब से करना रहा था - और इसमें यही तजवीज थी कि गिराई वाले तालुके का काय



के अभाव वा हरसक गाँव का जुगराफिया वर्तमान हानात लिख भेजे और बांगो के-  
 शाराम व फायदा या नै मुल्क में आवादी आमदनी बंधन की बात जो स्वातंत्र्य से  
 या दिल से समझें सो मुफ्त सिद्ध लिख कर कौन्सिल मेरिपोर्ट किया करे तो मुता-  
 सिबत जमीन होती रहेगी- परं कहत साली व कामदारों के आपुसकारक व-  
 कर्तृत्व व से दुखे कि मन्शा मूजब यह काम भी नहीं चला सो नी अच्छे होने के समय  
 मे ही बेहो गा- ॥

### जमीन नं० ११

मुतअहिके इतिहास पूगल रावरा नगदे व के लरा जी व  
 चाचा जी व गैरह

जोत वारिख के सफ १११ पर आनुका है

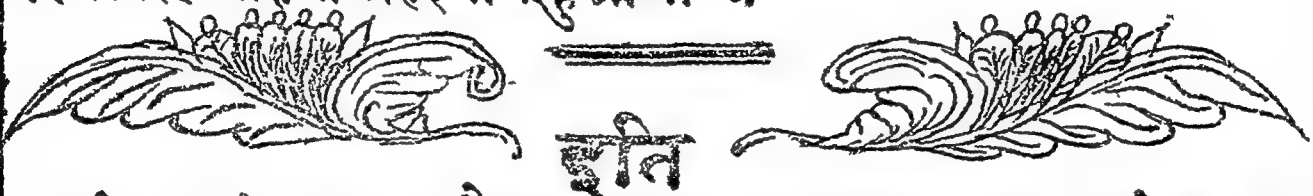
चाचा जी के वसले के शेरवा जी राव भी कनीजी की कृपा से नामी ग्रामा दुस-कछ  
 बायो से वैरले ने आदि बहुत प्रवाडन में वीरत देखा व अपनी मृतु का पूछी जब कनी  
 जी ने कहा कि ये की छाया आक की खट पी पका या रा भूरी मेः का दही स्या घेरा  
 का पन एव जगह मिलै गा तब मेरा- सो ऐसने लहु आतो आपही कहा कि ओपेनु  
 भाता आया जन से मृतु के मौका परसे ओवाया है तथा कि शनातत बार बार मेना मीहु  
 व हमारही तपत तिच भी गोपाल सिंहोत सपूत है- सं० में जै शलमेर भी आवेय- ॥

ऐसे ही ओपेजी के यी माल उर्वा योजी भी सूरवीर हुये- गढ़ नाम के नाम से बरसन  
 सुखनाया व बा दशाही रवज्ञाना मुलतान से लूट लाया- जब फौज आई तो साका कर दे-  
 लुं जैत सिंह बरसन पुर- ॥ बट्टे कर्न अमरा साईदास गां पाल दास चन्द्रसेन-  
 जगत सिंह देवीदास षडग सिंह हिन्दु सिंह खेतसी भोम सिंह हंडवत सिंह कुं-कनी  
 जी रावत जै मलसरजी अव ई० वीकाने रहै- ॥ नीजे धनराज खेतसी- सर सिंह- राधो  
 दास- माधो दास अखै गज-बेहर- किसन सिंह- किरत सिंह- भोनि सिंह- भामजा-

महजीजगमाल. मुकुनजी. कुं. जोरजी. गा. बीठनोक भी अव इ. बीकांवर. ॥

## जमीना नं० १२ रियासतखैरपुरसिंध

यह रियासत ६१५६ बीलसुरवा और सन १८६१ ई० की मरदुमशुमा  
एके मुत्ताविक १३१६ ई० आदमीयों की आवादी. आमदनी सात्ताना ७१६००० रु  
की है. खराज माफ है. मगर जरूरत के वक्त फौज की मदद देने का इकरार है. खैर  
पहांका भीर अली मुरादवा साहब है. जो बिलोची पठान है. सन १८३६ ई०  
में सरकार से पहिला अहदनामा हुआ था. ॥



कोटानकोट धन्यवाद है श्री सच्यतानन्द जगदीश्वर महाराज को जिनकी  
कृपासे आज दिन जबकि २० दिसम्बर सन १८८२ मुत्ताविक ११ रवीरल आदर सन  
१३१० हिजरी बज्रगहन सुदी १२ सं० १६५० विक्रमी वफसली अगहन की २० सन १३०१  
है. यह ग्रंथ समाप्त हुआ. पाठक विचार कर सकते हैं कि जैसलमेर जैसे उज्जदईस का  
इतिहास लिखना श्री महताजी नयनलजी ही से स पुर्ष का काम था इनके प्रोश्रम से  
जाना गया कि हमारे सूबे के पिछले रजीदन्द करनल सर ईडन साहब बहादुर ने इन  
की सच्ची तारीफ की थी. हम भी महताजी साहब को धन्यवाद देते हैं. कि उनकी महन्त  
का फल पराम हुआ. ॥

## خاتمة الطبع

ہزار ہا شکر ہے پروردگار عالم کا جسکی غایت سی آج ۲۰ دسمبر ۱۸۹۲ء کو یہ کتاب ختم ہوئی یہ ہر تہہ تمجیل  
ہی ایسے عاقل اور محقق شخص کا کام تھا کہ جیسلمیر ایسٹ او جڈ ملک کی تواریخ ہندی میں تیار کی۔ ہم یہی کہتے ہیں کہ  
لو مبارکباد ہے۔ اہل العلمین اور خوش رکھو۔ کہ انکی یہ یادگار ہزاروں برس تک دنیا میں بنی رہے گی۔  
غرض نقشبست کر یا یاد ماند ہے کہ ہستی را نمی بینم بقائے غیر  
حررہ خاک محمد مراد علی ہوشیار  
ملک طبع راجہ مانہ گزٹ وراغراستان اجمیر

## तितम्भः तवारीख जैसलमेर नम्बर (१)

अबमें अपार अफ सोसके साथ थोड़ा सापि छलाहा ललिख ताहूँ कि सं०  
 ४७ फागुन को श्रीजीसादिव वैकुण्ठ प्यारे तो मात्रजी वज्रवचै तन की औ  
 सागमहुआ किकलम को लिखने की ताकत नहीं गोयाराज का जहाज ही शोक  
 समुद्र में डूब गया फिर राजा श्रीखुसाल सिंह जी के कुंवर साम सिंह जी को जो ३  
 वर्ष के थे राज बैठा कर बमूजिव वसीअत के नाम शालिवाहन जी रखा और इस रि  
 याल से सवने दिल को तसल्ली व सबर दिया कि इस जमाने में आलीसरकार अं  
 ग्रेज बहादुर मालिक मुल्क बहाकिम वक्तारियास्तो के खास दोस्त हैं - जहां नाचा  
 लगी होती है तो अपनी निगरानी से ऐसी तजवीज फरमाते हैं कि रियासत खातिर  
 ख्याह तरक्की पर आने के सिवाय मात्र लोग जो रियासत में हैं अपने इतबद्द मूजि  
 वद्दक व इतसाफ पाने से आसूदे होकर बआरागर होते हैं और यद्वा तो आगे बमे  
 हजूर श्रीगजसिंह जी सादिव वैकुण्ठ प्यारे व श्रीराजी तसिंह जी को जो २॥  
 वर्ष के थे नाचना से बुलाय राज बैठाये जब भाजी श्रीराना वतजी साहबाने दान  
 ईवदूर अन्देरी से अपना काम हरी भजन को रख कर राजरीत वठाव बद्स्तूर  
 रखने के लिये मुखतार राज श्रीकेसरी सिंह जी के रहने का दरख्वास्त सरकार  
 में की थी सो मनजूर होकर सरकार की मदद व महरबानी से राज बनारहा - फि  
 र सं २१ में श्री वेरी सालजी सादिव राज बिराजे जब बाजे लोगों ने अपना मतल  
 व निकालने को माजीवी की जी को मुखतारी का प्योखा देकर ठाकुर केसरी सिं  
 ह जी की भूठी शिकायतें व सब को बहका कर भारी बरेबड़ा कराया था परन्तु जना  
 ब कला सादिव केर्नेल इडन सादिव बहादुर जी सदर से मंजूरी मंगा कर यहां तशरी  
 फ लाये और बाद तहकीकात शिकायतों के वेसे ही ठाकुर सादिव को कुल मुखतार  
 रख कर महता नथमलजी को राज की सच्ची खैर ख्याही व दयानतदारी देख कर

अपनी राजा मन्दो की सनद लिखवा दी वहीं नरखाँ था सो अब तो कर्ने ल पौलटसा  
 हिज बहादुर जो बहुत वर्षों से रजी डन्ट साँ दिबरियास्तों के रिवाँज से वाकिफ मुनसि  
 फ भिजा जहँ सो जहर नै सही करावेंगे १६ भाँचें ८१ को आये उस वक्त तो कुबर् शि  
 वत न सिंह जी को ले जाने या कोई और खयाल दोगा गोलमोल कारखाई रख कर  
 फरमाया था कि ताहु कसानी अब दै जियो ही रहे इसमें झुंजाना था कि बिल फेल  
 बरिडा होने के गुमान से शैसार खा है परन्तु सहर से मनजूरी मंगा कर सरकार की बु  
 एरेव अपनी नेकनाजी रखने को साबक मजिबत जवीज करावें ही गे - फिर थोड़े  
 ही दिनों बाद कि अभी सोग ही न्हीं बढ़ला था माँजी साँ दिबाने वत्सा अपनी सुखता  
 रीके छोखा खा कर हीवान जगजीवन जी को पैर में सोनाइ नायत कर के आ बूजी  
 भेजे उन्हीं ने अपनी सुखतारी का बन्दो बस्त कर के सरदारों को तर्बन्वा मँदे ने का हु  
 का नेजा तब भी यह उमै दरही कि अभी सहर से हुक्म आने का न्हीं फरमाया है सो  
 जब हुमाँरे रजी डन्ट साँ दिब कलाँ साँ दिब से पक्षी सलाह कर के आवेंगे बेशक स  
 ब तरह का लिहाज हर एक के वाजिब हुक बरिया सत के कही मरिआज का फरमा  
 मँदे ने सब खा मोशरदे - यही खयाल खाम हो कर विजास्त व अहालत से भाव  
 कर पाइ विला का यह नाजेबा बेजाइन्सा फके रिबला फ्र हो ने लगी और रजी  
 डन्ट साँ दिब बहादुर जी भी स० ४८ के पही सुदि २ को फिर तसरी फलाये जब  
 साँ दिब मौसूफ की मुनसफी के भरो से पर राजवी आदि सब सरदार वसाइ कर  
 व फारे वगैरह सँदहा लोग अपना वाजिब हुक बइन्सा फ पाने के लिये नाल सी  
 हो कर हीवान जी की नाफहमी व हाकिम अदालत की बेबन्दो बस्ती वगैर इन्सा  
 फी पेशा की होने पर वाजिबत जवीज की उमैद हुई थी उसी रात को हीवान जी ने  
 साँ दिब जी को दाम मे ले कर कहा कि ये सब लोग ना लीज आपा भूल हैं सिर्फ सि  
 खाये ही शानो हूये बाँकी लुछ न्हीं कर सकें ज्यों ही राजवी व सरदारों को धमका

करदवा लिया और जैसे चाहा साहिव से कराया चुना चे राज के खैर खुवा हो की सलाह से  
 नथमलजी ने भीजी का मछोड़ने वाद किसी के शा की सिफारशी नही है अपनी शिका  
 यत को तद की कात कराने और हिसाब व रोजगार की वावत नवूजी साथ कै फित भेजी  
 सो ले कर १० वजे मिलने का हुक्म दिया था फिर दीवानजी के भूठे कहने से कहलाया  
 कि आप लोगों से फितनह कराने हैं और २० वर्ष से दरफत साफ नही में नाराज हूं मिल  
 ना नही चाहता - नवूजी ने दरचंद कहा की यही लिखा है कि तह की कात हो कर अस्ल  
 भेद और सब भूठ तो समझिये कि सब क्या है परन्तु कुछ भी नही बोले जिस पर फिर कै  
 फियत भेजी सो नही ली जब डाक में चिट्ठी भेजी तो भी खयाल नही किया सो बड़ी गलती  
 करो कियों कि नाराजगी का जो मत बफरमाया सो मद्ज गलत और खुद गर्जियों की को  
 ता अंदेशी का जात है इन सं मिलने में तो दीवानजी को भी काम में आसानी से राज्य  
 का बहुत ही फायदा होता कियों कि ४८ वर्ष सच्ची खैर ख्याही से नो करी दीवानी कर  
 के अपनी खुशी से काम छोड़ा है सो सबके हक में अच्छे होने की सलाह देते - मगर  
 मालूम हुआ कि साहिव में सूफ को राज्य के फायदे व अपनी मुनसफी के गर्ज नही सि  
 फी दीवानजी का कहना : ... रखना या धनह इतना तो जरूर ही था कि श्री हजूर साहि  
 ब पास था खुश हाल सिंद जी का रख कर डोढी पर लायक रख सको मुकर फर  
 माते बस ब लोगों को हि कमत अमली से ही तसल्ली बरवा तिर तो करते सो ही  
 नही कि या जो २ फरिया दीये इन साफन पाकर सब मद्दरुमर दे सो सारी उमर रो  
 ने ही रहेंगे कियों कि किसी ही तरह से औसी ताकत को ई नही रखता कि जो श्री बड़े  
 त्नाट साहिव जी तंक तो क्या बड़े साहिव जी तंक ही पहुंच कर काम या ब हो सके  
 सब लोग यही समझते हैं कि कलां साहिव जी भी हि कमत अमली से अर्ज टोंके  
 कहने को ही सही रखते हैं किसी फरयाही ने दाद नही पाई कियों खराब हुये आगे  
 जैसी न्यत हाकमों की नही दें - बार २ यह कहते हैं कि यह को ताह अंदेशी व हिमत

हार की बात है लिखना तो चाहये फिर चाहे सो हो मगर बहुत लोग ना उमेद हो कर कहने हैं कि कुछ नहीं होगा हो न हार तो देखो कि मुतवा तिरसा त कैत का पड़ना वनधम लजी जैसे सब तरफ लायक सच्चे साम धर्मी का काम छोड़ना और श्री वैरी सालजी साहिब सब के सच्चे मा बाप का धाम पधारना व दो नो माजी साहिबः दानुजी खुमाजी की श्रवण पर चलने से खैर खा हो को लायक न समझ कर खोखे बाजों पर एत बार खने से राज्य काज का अधिकार हाथ से खोना व शिव दान सिंह जी जो बोल चाल में लायक राजवी थे निकालना और कछी जी की लाफ हम काररवाई जो कच्चे सलाह गीरों के बाध सहोती है व पंजाबी की गैर इन साफी साहिब जी को बखूबी मालूम होने पर ही इत को ही सुख तार खना दूसरे किसी ही की वाजिब अर्ज सुन कर इन साफ नकलना बिदेशियों में किसी का अर्थ त बार नहीं होना व गैरः २ खराबी ही खराबी का बाइस हो गया है इस के सिवाय खुदा का कह रहे हैं कि इस १९ महीने में शहर व देश में रुद्ध जार आदमी तो मर गये व बहुत से देहाती लोग इला के सिं थ में जार रहे हैं सो तो फिर सुख होने पर शाश्वत के पीछे भी आवेंगे मगर शहर के लोग सावा बीतने बाद निकलना कहने हैं सो खुदा असा न करे वरनः यह लोग पीछे नहीं आवेंगे - महाशोक की बात है इस रियासत में श्री कृष्ण चन्द्र भगवान् औ तार से आदिले कर देव राज सिद्ध से वैरी सालजी पर्यन्त बडे राना जी ग्रामी राजा दुधे सब ने राज का बोझ बलाज गाल देशियों पर रखने से अपने मुल्क में आप ही दुक्तरान रहे अब वो सारवी मिली जो लूरा कन जी के हाल में लिखी है कि बिल्ला चुंचिरा के जादवों से जै सलमो जायेगा - इस का बदनामी काटी का कर्नेल पौल्ट साहिब जी ने लागाया कि श्री जी उन का कहना नहीं मानने से बहुत क ही रहे थे सो सरहद के निकालने में बहुत सानुकसान देने पर ही दर्यान ला कर श्री जी के वैकुण्ठ पधारने बाद उन की वसीयत नसीहत का कुछ भी लिहाज न कर के साहिब जी का मन शायाज्यों किया वरनः ना बाली

तो श्रीरंग जी तसिंह जी ववैरी साल जी साहिब राज विराजे जब ही था बल  
 कि पिछले वक्त तो आपस की फूट का भी भारी रोना था तो भी नेक नाम ज  
 नाव कलां साहिब ने वसलाह मद्दान नथमल जी दूर अन्देशी से कि भाटी  
 वंस में १ नाम की रियासत भी सिर्फ यही है दस्त अन्दाजी न कर के राजा श्री  
 केसरी सिंह जी को जिम्मेवार रखने से यहां के सब लोग जो देश विदेश में  
 रहते हैं दुआ यखैर से साहिब ममदूह को याद कर रहे हैं और अब जो रिया  
 सत की तरफ़ी के लिये निगरानी रखनी थी तो भी नाम का मुखतारी श्री  
 मानसिंह जी या खुशाल सिंह जी का रख कर बेजा खर्च खटना वाजिब पैदा  
 बखाना कर जा उतारना चोरी चोडे आदि सब तरह से मुल्क का बन्दो  
 बस्त रखना यगैर रु २ जो २ बाते जरूर व फर्ज हैं हिदायत करके साहि  
 ब रजी डंट बदादुर जी को रपोर्ट देने और सलाह व मदद ले कर देसी ठं  
 ग का यद्द से कार्रवाई करने का हुक्म लिखा देते तो दोनों बाते रह स  
 ती थी और अब तो रियासत सरसबज़ हो कर आमदनी दुचन्द से च  
 न्द होनी सहज है कियों कि राज धिराज की मरजी से बालाई खर्च  
 व नुकसान का काम होता था सो न्दी रह कर जो ही तजवीज फायदे  
 व सुधार का रजी डन्ट साहिब की मनशा मूजिब की जावे हो सक्ती  
 है सो अगर इनसे थैसा न्दी होता तो साहिब मौसूफ को अखतिया  
 र ही था कि दूसरा मुखतार कर देते तथा सब जानते हैं कि नथमल जी  
 ने राज वरयत के फायदे व आराम की जो २ बाते सोची व लिखी है  
 उस मूजिब कार्रवाई होती या अब इस तफसील से बोवे तो सदर मेह  
 जरी की रिपोर्ट का मौका जल्दी हासिल हो सक्ता है मगर बड़ा ही अ

फ सो सदैव कि साहिब मौसूफ ने वह कारिवाइ देखी जो सुनी बल कि खुद  
 गर्जियों के धोरवे में आकर दरयाफ न्हीं फरमाया सो तो उमेद है कि हा  
 कि मआला वदसरा रजीउन्त साहिब जो इसरिया सत का अच्छा होना चाहें  
 गे तो पूछे हीं गे परन्तु तअज्जुब है कि पौलट साहिब बहा दुरजी ने रिया  
 सत जो अपुर व सिरोही को देश के रिवाज का लिहाज रख कर बहुत तरह  
 परलाने मे सरदार मुसाहिब वगैरह किसी ही का ह तक वह जे न्हीं किया या  
 बरखिलाफ कर के कियो जुलमी कह लाये और सरकार से सुपरिन्दन दी  
 ही करनी चाही तो किसी युरोपियन साहिब को मुखतार रख ना चाहिये  
 ताकि अशवत से किसी का बुरा न हो कर सब लोग अपना वाजिव हक  
 व इन्साफ पाने से इत्तिउल व सः हर तरह हाजरी दिया वे कि जिस में रा  
 ज व लोगों के फायदे का काम आसानी से हो तारहे ज्यादाः क्या लिखा  
 जावे - भावी जोग भया सो देखा - होगा सो देखेंगे - ॥ परन्तु बिलफैल  
 अच्छे हीने की कोई सूरत नजर में न्हीं आती कारण कि यहां के आला व अ  
 दना मात्र आदमी आपा भूल हो गये कि देसी जात जो ४० पी डी से हक  
 दारी का घमंड रखते थे किसी लायक न्हीं रहने का खयाल ही न हो कर आपा  
 पस के व सब को धवइरखा में यहां तक भर रहे है कि एक दूसरे के जीव  
 जीवाइ जीव का वइज्जत जाने में खुश हो कर इत्तुल व सा गुमाने की को  
 शिश में को ता ही न्हीं करते यह न्हीं समझते कि इस निर्धन देश में जो  
 आगे प्रैसी अकिलवरी होती तो इतनी पुशतों तक वडी नाम वरी के सा  
 थ कियो कर निबाह होता और अकिलवनीयत का फल परमेश्वर देवे  
 ही है कि इस दो वर्ष में स्वपना की माया ज्युं क्या था और क्या हो गया जिस



को अच्छी तरह देखने पर भी किसी को किसी ही तरह से कुछ भी खयाल नहीं  
 सिर्फ अपने पेट का फिकर धर्म अधर्म से रखकर बाह्यात गल मारने व  
 हर एक की गिला करने में जैसे ही भक्त भजन करने में संतोश व आलस न  
 हीं करते ज्युं दोर रहे हैं और यह भी नीत धर्म का कौल है कि **दोहा** कपटी  
 कृत धन अधर्मी । भूख हीन व डीनार । बाल निबल अनीत पति । सुख  
 र दोत नुजार ॥ २ ये से होने से उजड़ने में आश्चर्य क्या है - बड़े हज़ूर श्री वै  
 शी शाल जी साहिब को अपने पुजुर्गों की रियासत रखत वरीत को निभाने व  
 खास कर इस दूर अंदेशी से कि यहां के लोग देश वरों से धन्य कमाय यहां  
 ला कर रख चकते हैं इनकी हर तरह से इज्जत व खा तर रखने से ही जर हेंगे  
 इसलिये कार मुख तार देशी ही जर खना मुना सब जाना चुनां चे **नथम**  
**लजी** के काम छोड़ने बाद गिरा शीलाल जीवन नथम लजी की सिफार  
 श से लायक विदेशी जैसा जान कर **कछी जी** को बुलाया था कि सब  
 के बाजिव हक व कदर व गौरव इनसाफ का लिहाज रखेंगे इन्हीं ने कच्चे स  
 लाहि गोरों की अकिल पर चल कर श्री जी साहिबों की दूर अंदेशी और ख  
 नशा का कुछ भी खयाल नहीं किया और ना जेबा काररवाई जो इस देश  
 के ढंग से विरुध्द करने से मात्र लोग नाउ मेद हो कर हृद से परेशा की हो  
 गये जिससे तरक्की व सुख हो ना तो दरक नार रद्दा काम का आराम व  
 यस भी हर गिज नहीं रहेगा सो जो नेक नामी व अपनी बात का खयाल क  
 रेंगे तो बेशक इस तीफा देवेंगे वरनः दिल में पशे मान हो कर बहुत पछ  
 तावें हींगे कियों कि जैसल मेर को **सिंघों** की सुलाक तो आगे ही कह  
 ने थे इस वक्त में तो यहां के लोग विधाता बल कि परमेश्वर को ही कुछ

نہیں سمجھتے ہیں اس حال میں کہ جسے سلاہ کاروں کی اشکिल پر चल  
 نے سے بڑھ بڑھو بڑھو ہونے کی امداد کے سے ہو سکتی ہے بس खुदा ہی हा फि  
 ज है और जनाब कलां साहिब बहादुर जी तो रजी डन्ट साहिब के  
 भरो से पर हैं और रजी डन्ट पौल्ट साहिब जी किया सो सब ने देख लि  
 या सिर्फ १ हुकम वाजिब दिया था जिसकी भीता मील नहीं हुई अब  
 देखिये नये रजी डन्ट साहिब बहादुर जी क्या सुना सिब जान कर तज  
 बीज करेंगे - ॥

## बिनय पत्र अज्ञतरफ

खाक सार मुहम्मद मुराद अली होशि और मुहम्मद मराज पूताना गजट अजमेर - चुंकि केनेल  
 प्रसी डबल्यु - जनाब पौल्ट साहिब बहादुर रजी डन्ट गरबी राजिस्थान की सलाह व महा  
 राजा धिराज महाराज वलश्री वैरी साल जी साहबों की आज्ञा अनुसार महतान थमल जी दी  
 वान श्री दरबार जैसलमेर ने ५ वर्ष पश्चिम कर के सेवग लखमी चंद जी से यह किताब तयार करा कर  
 ने पास खुदवाई है - इस जिल्द मे ३ भाग तवारीख महाराज गानेरिया सत मौसूफ व जगसफिया  
 मुल्क मांड हिस्से मे रियासत हायराज पूताने की तवारीख के नाम व गैरह जो २ हात्ता है नजर मे गुज  
 रने से मालूम होगे - अगर चेला इलमी के वायसत दरीर व गैरह कायदे से नहीं मगर मि अतमा  
 पासब के समझने को रखी है और यह किताब इस देश के लिये का आर्मी मदयाने बहुत ही वाकफी  
 कायाद गार जान कर पसंद फरमावेगे और नुकस्त हो या कम व बेश करना वाजिब हो सो बराह  
 कहरदानी व मिहरवानी से लिखावेगे ना कि दो बार ह द्वापने में ठीक हो जावे औसी आशा है  
 सं० १८४८ का मिति मः मुराद अली

التاس

یہ کتاب حسب الحکم سر یحضور بہار اول ہیری سال حبی صاحب بہادر سورگ باشی ساہی والی جیلیم خاں بہادر  
 شہنشاہ حبیب بہادر دیوان ریاست ممدوہ نے بڑی جانفشانی و سرکاری کاغذات وغیرہ کے حوالہ سے سیرگ لکھی  
 جی سے پانچ برس کی محنت میں تیار کر کر طبع کرائی ہے اول حصہ میں دالان جیلیم کی تواریخ (۲) جفرانیہ ملک مانڈ  
 (۳) تمام خود مختار ریاستہائے راجپوتانہ کی تواریخ سہ حالات اجیمیر اور اکثر روستا و شرفا ہندوستان کے حالات ضروری  
 بقیہ درج ہیں - سچ تو یہ ہے کہ ایسی مبسوط کتاب آج تک ہندی میں تیار نہیں ہوئی امید کہ ناظرین کوئی غلطی یا کتب تواریخ  
 عنایت اطلاع بخشیں تاکہ دوبارہ طبع ہو سکے - خاکسار محمد مدظلہ ہوشیار راگ دہتم مطبع چاغرا جستان دراجپوتانہ گڑ اجیمیر المرقوم است

